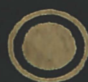
व्याकरण तत्त्वप्रकाश



स्वामी रामनारायण दास शास्त्री







व्याकरण तत्त्व प्रकाश

ग्रन्थकर्ता
स्वामी रामनारायणदास शास्त्री
श्री स्वामी शीतलदास जी का स्थान अस्सी वाराणसी



प्रकाशक
ओंकार प्रेस, प्रयाग

प्रथम संस्करण ११००] १९५८ [मूल्य ४ रुपया ५० नये पैसे



मुद्रक
ओंकार प्रेस, प्रयाग ।

विषय-सूची



ग्रन्थकर्ता
स्वामी रामनारायणदास शास्त्री

भूमिका

स्वतंत्र भारत में देववाणी संस्कृत के पुनरुत्थान की संभावनाएँ बढ़ गई हैं। राष्ट्र की चौदह भाषाओं में उसे भी स्थान दिया गया है और शनैः शनैः वह स्कूलों और कालेजों के पाठ्यक्रमों में सन्निविष्ट की जा रही है। यही नहीं राष्ट्रभाषा हिन्दी तथा अन्यान्य प्रादेशिक भाषाओं की जननी होने के नाते भी उसका प्रचलन उत्तरोत्तर बढ़ रहा है और वह दिन समीप दिखाई पड़ता है जब स्वतन्त्र भारत में ज्ञान, विज्ञान अथवा जीवन के अन्यान्य उपयोगी सामयिक साहित्य की मूल्यवान् रचनाओं से भी उसकी श्रीवृद्धि होने लगेगी।

हमारे देशवासियों के लिए तो अपने उज्ज्वल अतीत से सम्पर्क बनाए रखने के लिए संस्कृत का ज्ञान होना परमावश्यक है, किन्तु संस्कृत की अध्ययन-प्रणाली की जटिलता के कारण सर्वसाधारण के लिए संस्कृत का अपेक्षित ज्ञान प्राप्त करना कठिन पड़ता है। उसके अध्यापन की दो प्रणालियाँ सम्प्रति प्रचलित हैं। एक है संस्कृत के पंडितों की पाठ्य-प्रणाली तथा दूसरी है अंग्रेजी स्कूल कालेजों में प्रचलित पाठ्य-प्रणाली। पहली प्रणाली यद्यपि सुबोधता की दृष्ठि से सर्वश्रेष्ठ है तथापि वह अधिक समय तथा श्रम साध्य है। द्वितीय प्रणाली में विशेषता यह है कि विद्यार्थियों को थोड़े समय और श्रम से ही काम चलाऊ ज्ञान प्राप्त तो हो जाता है किन्तु दोष यह है कि अनभ्यास अथवा प्रमाद के कारण वह शीघ्र ही नष्ट भी हो जाता है।

प्रस्तुत पुस्तक की रचना इन दोनों प्रणालियों के मध्य की है। इसमें पाणिनीय व्याकरण की सर्वप्रिय पुस्तक सिद्धांत कौमुदी के आधार पर ऐसे व्याख्यात्मक पाठ दिए गए हैं, जिनमें विद्यार्थियों की सहज अभिरुचि जाग्रत हो जाती है और इस रुक्ष विषय में भी सरसता का अनुभव करते हुए आगे बढ़ता है। प्रत्येक पाठ में आवश्यक अनुवाद के अंश हिन्दी और अंग्रेजी में इस प्रकार से दे दिए गए हैं कि विद्यार्थियों को उन्हें अधिगत करने में कोई कठिनाई नहीं हो सकती। सिद्धांत कौमुदी की भाँति ही इसमें संज्ञा प्रकरण, संधि प्रकरण, पुलिङ्ग, स्त्री लिङ्ग, नपुँसक लिंग शब्दों के रूप प्रकरण आदि इस क्रम से दिए गए हैं कि धीरे-धीरे अधीत पाठों के आधार पर विद्यार्थियों की शब्द-सम्पत्ति ही नहीं बढ़ती चलती, प्रत्युत उत्तरोत्तर लम्बे-लम्बे वाक्यों का अनुवाद करने में भी वह समर्थ हो जाता है।

शब्द रूपों को समझाने के लिए यथावसर सुप्रसिद्ध श्लोकों को भी माध्यम बनाया गया है, जिनके कारण विद्यार्थियों में सभी रूपों को कण्ठस्थ करने में कोई

विशेष कठिनाई नहीं पड़ती। यही स्थिति नवगणों धातुओं की भी है। सु धातुओं के रूपों को अनुवाद के वाक्यों के सन्दर्भ में इस प्रकार रखा गया है उनके प्रयोग करने की क्षमता विद्यार्थी में स्वतः आ जाय। इसी प्रकार कर्तृवाच और कर्मवाच्य के जटिल नियमों को भी सोदाहरण समझाने का प्रयत्न किय गया है।

काल भेद, लिंग भेद, कारक, समासादि के पाठों को भी यथासम्भव सरल सुगम ढंग से उपादेय बनाया गया है। प्रत्येक पाठ के साथ उपयोगी अभ्यास के प्रश्न दिए गए हैं और स्थल-स्थल पर अँग्रेजी की सुप्रसिद्ध क्रियाओं तथा क्रिया विशेषणों एवं विशेषणों को भी समझाने का प्रयत्न किया गया है। इस प्रकार जहाँ तक संभव हुआ है, पुस्तक को उपादेय और रोचक बनाने का कोई भी उपाय छोड़ा नहीं गया है।

'व्याकरण तत्त्व प्रकाश' संस्कृत के सभी विद्यार्थियों के लिये उपयुक्त सिद्ध होगी। हमारा विश्वास है कि इस पुस्तक के अध्ययन से हाई स्कूल, इन्टरमीडिएट, बी० ए० तथा अन्यान्य समकक्ष परीक्षाओं के परीक्षार्थियों का यथेष्ट लाभ होगा। उनकी व्याकरण और रचना सम्बन्धी सभी कठिनाइयों का इस एक ही पुस्तक द्वारा निराकरण हो जायगा।

यदि हमारी इस रचना से विद्यार्थियों तथा अध्यापक बन्धुओं को कुछ भी सन्तोष हुआ तो मैं अपना बारह वर्ष का परिश्रम सफल समझूंगा।

हरिसेवार्थधर्मेषु, प्रसारे राजकर्मणाम्।
बिषयाणामनेकेषां अधीतौ लग्नचेतसाम् ॥१॥
गम्भीरात्कौमुदीग्रन्थात्, तत्त्वबोधाक्षमात्मनाम्।
आञ्जस्येन विवित्सूनां, शब्दानां भावमुज्वलम् ॥२॥
तेषामल्पधियामल्प, कालैः शास्त्रं विविक्षताम्।
बालानामुपकाराय, वाराणस्यामसीतटे ॥३॥
सिद्धशीतलदासस्य, शिष्यस्यानल्पयोगिनः।
शिष्योदासश्च रामस्य, तथा नारायण प्रभोः ॥४॥
विदुषा तेन महता, रामभक्तिमताऽत्मना।
व्याकरणस्यतत्त्वस्य, प्रकाशः क्रियतेऽधुना ॥५॥

सम्वत्
२०१५
चैत्रशुदि
पौर्णिमा

विनीत—
स्वामी रामनारायण दास शास्त्री

व्याकरण तत्त्व प्रकाश

मंगलाचरण

ओ३म्

गणानां त्वा गणपति ६- हवामहे,
प्रियाणां त्वा प्रियपति ६- हवामहे,
निधीनां त्वा निधिपति ६- हवामहे। वसो मम०

भावार्थ—हे मेरे प्रिय जगत् के स्वामी ? सम्राटों में तुम्हें परम सम्राट् समझकर हम तुम्हारी वन्दना करते हैं। समस्त प्रियों में तुम्हें अत्यन्त प्रिय जानकर तुम्हारी कामना करते हैं। धनों में तुम्हें परम धन मानकर तुम्हारी आकाङ्क्षा करते हैं।

(In English)

O ! You the Lord of universe, we invoke you as an emperor of emperors, adore you as the dearest of all beloveds and demand you as the Supreme treasure.

"समाप्तिकामो मङ्गलमाचरेत्"

भावार्थ—ग्रंथ की निर्विघ्न समाप्ति के लिये मंगलाचरण करना चाहिये।

प्रथमोऽध्यायः

संज्ञा प्रकरणम्

प्रथमः पाठः

सूत्र और प्रत्याहार

(१) अ इ उ ण् (२) ऋ लृ क् (३) ए ओ ङ् (४) ऐ औ च् (५) ह य व र ट् (६) ल ण् (७) ञ म ङ ण न म् (८) झ भ ञ् (९) घ ढ ध ष् (१०) ज ब ग ड द श् (११) ख फ छ ठ थ च ट त व् (१२) क प य् (१३) श ष स र् (१४) ह ल्।*

---

*सूचना – ये १४ सूत्र महादेव जी के डमरू से आये हुए हैं। इन चौदहों सूत्रों से ही प्रत्याहार बनते हैं, प्रत्याहार अगले पृष्ठ पर देखिये।

विशेष कठिनाई नहीं पड़ती। यही स्थिति नवगणों धातुओं की भी है। सुप्रसिद्ध धातुओं के रूपों को अनुवाद के वाक्यों के सन्दर्भ में इस प्रकार रखा गया है कि उनके प्रयोग करने की क्षमता विद्यार्थी में स्वतः आ जाय। इसी प्रकार कर्तृवाच्य और कर्मवाच्य के जटिल नियमों को भी सोदाहरण समझाने का प्रयत्न किया गया है।

काल भेद, लिंग भेद, कारक, समासादि के पाठों को भी यथासम्भव सरल सुगम ढंग से उपादेय बनाया गया है। प्रत्येक पाठ के साथ उपयोगी अभ्यास के प्रश्न दिए गए हैं और स्थल-स्थल पर अँग्रेजी की सुप्रसिद्ध क्रियाओं तथा क्रिया विशेषणों एवं विशेषणों को भी समझाने का प्रयत्न किया गया है। इस प्रकार जहाँ तक संभव हुआ है, पुस्तक को उपादेय और रोचक बनाने का कोई भी उपाय छोड़ा नहीं गया है।

'व्याकरण तत्त्व प्रकाश' संस्कृत के सभी विद्यार्थियों के लिये उपयुक्त सिद्ध होगी। हमारा विश्वास है कि इस पुस्तक के अध्ययन से हाई स्कूल, इन्टरमीडिएट, बी० ए० तथा अन्यान्य समकक्ष परीक्षाओं के परीक्षार्थियों का यथेष्ट लाभ होगा। उनकी व्याकरण और रचना सम्बन्धी सभी कठिनाइयों का इस एक ही पुस्तक द्वारा निराकरण हो जायगा।

यदि हमारी इस रचना से विद्यार्थियों तथा अध्यापक बन्धुओं को कुछ भी सन्तोष हुआ तो मैं अपना बारह वर्ष का परिश्रम सफल समझूँगा।

हरिसेवार्थधर्मेषु, प्रसारे राजकर्मणाम्।
विषयाणामनेकेषां अधीतौ लग्नचेतसाम् ॥१॥
गम्भीरात्कौमुदीग्रन्थात्, तत्त्वबोधात्क्षमात्मनाम्।
आञ्जस्येन विवित्सूनां, शब्दानां भावमुज्ज्वलम् ॥२॥
तेषामल्पधियामल्प, कालैः शास्त्रं विविद्षताम्।
बालानामुपकाराय, वाराणस्यामसीतटे ॥३॥
सिद्धशीतलदासस्य, शिष्यस्यानल्पयोगिनः।
शिष्योदासश्च रामस्य, तथा नारायण प्रभोः ॥४॥
विदुषा तेन महता, रामभक्तिमताऽत्मना।
व्याकरणस्यतत्त्वस्य, प्रकाशः क्रियतेऽधुना ॥५॥

सम्वत् २०१५ चैत्रशुदि पौर्णिमा

विनीत—
स्वामी रामनारायण दास शास्त्री

व्याकरण तत्त्व प्रकाश

मंगलाचरण

ओ३म्

गणानां त्वा गणपति ६॰ हवामहे,
प्रियाणां त्वा प्रियपति ६॰ हवामहे,
निधीनां त्वा निधिपति ६॰ हवामहे। वसो मम॰

भावार्थ—हे मेरे प्रिय जगत् के स्वामी? सम्राटों में तुम्हें परम सम्राट् समझकर हम तुम्हारी वन्दना करते हैं। समस्त प्रियों में तुम्हें अत्यन्त प्रिय जानकर तुम्हारी कामना करते हैं। धनों में तुम्हें परम धन मानकर तुम्हारी आकाङ्क्षा करते हैं।

(In English)

O! You the Lord of universe, we invoke you as an emperor of emperors, adore you as the dearest of all beloveds and demand you as the Supreme treasure.

"समाप्तिकामो मङ्गलमाचरेत"

भावार्थ—ग्रंथ की निर्विघ्न समाप्ति के लिये मंगलाचरण करना चाहिये।

प्रथमोऽध्यायः

संज्ञा प्रकरणम्

प्रथमः पाठः

सूत्र और प्रत्याहार

(१) अ इ उ ण् (२) ऋ लृ क् (३) ए ओ ङ् (४) ऐ औ च् (५) ह य व र ट् (६) ल ण् (७) ञ म ङ ण न म् (८) झ भ ञ् (९) घ ढ ध ष् (१०) ज ब ग ड द श् (११) ख फ छ ठ थ च ट त व् (१२) क प य् (१३) श ष स र् (१४) ह ल्।*

---

*सूचना—ये १४ सूत्र महादेव जी के डमरू से आये हुए हैं। इन चौदहों सूत्रों से ही प्रत्याहार बनते हैं, प्रत्याहार अगले पृष्ठ पर देखिये।

१ अण्=अ इ उ।
२ अक्=अ इ उ ऋ ऌ ।
३ अच्=अ इ उ ऋ ऌ ए ओ ऐ औ।
४ अट्=अ इ उ ऋ ऌ ए ओ ऐ औ ह य व र।
५ अण्=अ इ उ ऋ ऌ ए ओ ऐ औ ह य व र ल।
६ अम्=अ इ उ ऋ ऌ ए ओ ऐ औ ह य व र ल ञ म ङ ण न।
७ अश्=अ इ उ ऋ ऌ ए ओ ऐ औ ह य व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द।
८ अल्=अ इ उ ऋ ऌ ए ओ ऐ औ ह य व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष स ह।

९ इक्=इ उ ऋ ऌ।
१० इच्=इ उ ऋ ऌ ए ओ ऐ औ।
११ इण् = इ उ ऋ ऌ ए ओ ऐ औ ह य व र ल
१२ उक् = उ ऋ ऌ
१३ एङ् = ए ओ
१४ एच् = ए ओ ऐ औ
१५ ऐच् = ऐ औ
१६ हश् = ह य व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द।
१७ हल् = ह य व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष स ह।

१८ यण् = य व र ल।
१९ यम् = य व र ल ञ म ङ ण न।
२० यञ् = य व र ल ञ म ङ ण न झ भ।
२१ यय् = य व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध—
ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प।
२२ यर् = य व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द—
ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष स।

२३ वश् = व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द।
२४ वल् = व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द—
ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष स ह।
२५ रल् = र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द—
ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष स ह।

२६ मय् = म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द—
ख फ छ ठ थ च ट त क प।
२७ ङम् = ङ ण न।
२८ झष् = झ भ घ ढ ध।
२९ झश् = झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द।
३० झय् = झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प।
३१ झर् = झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष स
३२ झल् = झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त—
क प श ष स ह।
३३ भष् = भ घ ढ ध।
३४ जश् = ज ब ग ड द।
३५ बश् = ब ग ड द।
३६ खय् = ख फ छ ठ थ च ट त क प।
३७ खर् = ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष स।
३८ छव् = छ ठ थ च ट त।
३९ चय् = च ट त क प।
४० चर् = च ट त क प श ष स।
४१ शर् = श ष स।
४२ शल् = श ष स ह।❋

द्वितीयः पाठः

व्याकरण का सामान्य परिचय

व्याकरण के मुख्य तीन भाग हैं।

१—वर्ण विचार (Orthography):—इसमें केवल अक्षरों (Letters) का विचार किया जाता है।

२—शब्द विचार (Etymology):—इसमें शब्दों (Words) पर विचार किया जाता है।

३—वाक्य विचार (Syntax):—जिसमें वाक्यों (Sentences) के विचार किये जाते हैं।

❋ सूचनाः—ये ४२ प्रत्याहार हैं, इन प्रत्याहारों से ही पाणिनीय सूत्रों के अर्थ ठीक ठीक निकलते हैं। इन प्रत्याहारों को खूब अच्छी तरह अवश्य कण्ठ कर लेना चाहिये। तब पाणिनीय सूत्रों के अर्थ बहुत सरलता से समझ में आ सकते हैं।

वर्ण विभाग (Orthography):— जिसमें हमें अक्षरों (Letters) की ध्वनियों (Sounds) के द्वारा उच्चारण की ठीक ठीक रीति ज्ञात होती हो उसे वर्ण विभाग कहते हैं।

ध्वनि (Sound) : —हम जो कुछ कानों से सुनते हैं उसे ध्वनि अथवा शब्द कहते हैं।

शब्द दो प्रकार के होते हैं—

(क) ध्वन्यात्मक शब्द, (ख) वर्णात्मक शब्द

ध्वन्यात्मक शब्द उसे कहते हैं; जो स्पष्ट न हो अर्थात् निरर्थक प्रतीत हो। जैसेः—मशीन की खट खट, बांस की चट २ नगाड़ा, मृदङ्ग, ढोल इत्यादि का शब्द।

(ख) वर्णात्मक ध्वनि उसे कहते हैं, जिसमें वर्ण अथवा अक्षरों के बोलने तथा लिखने से अर्थ की प्रतीति (ज्ञान) भली भाँति आ जावे।

वर्ण (अक्षर):—जिस ध्वनि के टुकड़े न हो सकें उसे वर्ण (Syllable) अथवा अक्षर कहते हैं।

अक्षर दो प्रकार के होते हैं:—

(क) स्वर, (ख) व्यञ्जन

स्वर (Vowel) उसे कहते हैं; जो दूसरे वर्णों की सहायता के बिना स्वयं ही बोले जा सकते हैं। इसके तीन भेद निम्नलिखित हैं।

*(क) ह्रस्व स्वर (Short-vowels) अ, इ, उ, ऋ, लृ, ।

(ख) दीर्घ स्वर (Long-vowel) आ, ई, ऊ, ॠ, ।

(ग) संयुक्त स्वर अथवा मिश्रित स्वर (Diphthong or compound vowels) :—ए, ऐ, ओ, औ, ।

---

*सूचना:—ह्रस्व स्वर के बोलने में बहुत कम परिमाण का समय लगता है अतः इसको ह्रस्व स्वर अथवा एकमात्रिक कहते हैं।

दीर्घ स्वर के बोलने में ह्रस्व स्वर की अपेक्षा दुगुना समय लगता है, इसलिये इसको दीर्घ स्वर अथवा द्विमात्रिक कहते हैं।

जहाँ पर अन्तिम स्वर लम्बाकर गाते अथवा पुकारते हैं तब "प्लुत" स्वर अथवा त्रिमात्रिक कहते हैं। परन्तु साधारण बातचीत में प्लुत नहीं होता।

जब दो स्वर मिलकर एक ध्वनि निकलती है, तब उसे संयुक्त अथवा मिश्रित स्वर कहते हैं। जैसे:—

अ+इ अथवा आ+ई=मिला देने से "ए" बन जाता है ।

संस्कृत में प्रधान पांच स्वर निम्नलिखित हैं।

*" अ (a), इ (i) उ (u), ऋ (ri), लृ (lri)"

तृतीयः पाठः

व्यञ्जन (Consonant)

"अचं विना व्यञ्जनस्योच्चारणमपि न सम्भवति"।

भावार्थ :—अचों के विना व्यञ्जन वर्ण का उच्चारण नहीं हो सकता, क्योंकि किसी न किसी स्वर की सहायता अवश्य ली जाती है। जैसे :—"क और कि" के उच्चारण करने में, ककार में अकार का और इकार का भी उच्चारण होता है ।

जो अक्षर स्वरों की सहायता के बिना नहीं बोले जा सकते हैं; उन्हें व्यञ्जन कहते हैं। जैसे :—"क्, ख्, ग्, घ्, ङ्" इत्यादि व्यञ्जनों को "हल्" भी कहते हैं। हल वर्ण का चिन्ह (्) यह लगाया जाता है। हल अक्षरों को हलन्त भी कह सकते हैं।

संस्कृत तथा हिन्दी में ३३ व्यञ्जन वर्ण (Consonant) होते हैं, वे निम्न लिखित हैं :—

कवर्ग=क k, ख kh, ग g, घ gh, ङ ṅ ।
चवर्ग=च ch, छ chh, ज j, झ jh, ञ n̐ ।
टवर्ग= ट ṭ, ठ ṭh, ड ḍ, ढ ḍh, ण ṇ ।
तवर्ग=त t, थ th, द d, ध dh, न n ।
पवर्ग=प p, फ ph, ब b, भ bh, म m ।
अन्तःस्थ=य y, र ṛ ल l, व v ।
ऊष्म=श sh, ष shh, स s, ह h ।

---

*(इंगलिश में भी पाँच स्वर होते हैं। जैसेः—a, e, i, o, u, परन्तु शब्द के मध्य तथा अन्त में आने पर w, y स्वर हो जाते हैं:—Down, draw, dye, day, eye इत्यादि और जब ये दोनों अक्षर w, y शब्द के आरम्भ में आते हैं तो व्यञ्जन (Consonant) हो जाते हैं। जैसेः—war, was, went, yet इत्यादि)

अनुस्वार (ं); विसर्ग (:); अनुनासिक (ँ) Semi-lunar; ये स्वर नहीं होते हैं, परन्तु व्यञ्जन हैं, क्योंकि इनका उच्चारण करने के लिये स्वरों की सहायता अवश्य ली जाती है।

(क) अनुस्वार—कं = (क् + अ + ं)।
(ख) विसर्ग – कः = (क् + अ + :)।
(ग) अनुनासिक – कँ = (क् + अ + ँ)।

(इंगलिश में स्वर और व्यञ्जन मिलकर २६ वर्ण होते हैं।
स्वरों के प्रकरण में स्वर दे चुके हैं, शेष व्यञ्जन (Consonant) निम्नलिखित हैं।
b, c, d, f, g, h, j, k, l, m, n, p, q, r, s, t, v, w, x, y, z)

चतुर्थः पाठः

व्यञ्जनों की संज्ञा और अक्षरों के उच्चारण स्थान

व्यञ्जन वर्णों की संज्ञा निम्नलिखित है।

" क से म " तक अक्षरों की स्पर्श संज्ञा होती है।

" य, र, ल, व, " इन अक्षरों की अन्त.स्थ (Semivowel) संज्ञा होती है। अर्थात् स्वर और व्यञ्जन के बीच में ये अक्षर होते हैं।

" श, ष, स, ह, " इन वर्णों के ऊष्म (Sibilance asdirate) संज्ञा अर्थात इनको उच्चारण करने के लिये भीतर से कुछ अधिक जोर से श्वास लाना पड़ता है।

पाँचों वर्गों के प्रथम और द्वितीय अक्षर तथा " श ष स ह " ये कठोर व्यञ्जन हैं, शेष मृदु व्यञ्जन हैं।

स्वर तथा व्यञ्जन वर्णों के उच्चारण स्थान निम्नलिखित हैं।

स्थानः—मुख के जिस भाग से जो वर्ण बोले जाते हैं; उस भाग को स्थान कहते हैं।

स्थान निम्नलिखित हैं।

स्थान	वर्ण (Alphabet)
*कण्ठ (Gutturals)	= अ, 'आ' क, ख, ग, घ, ङ, ह और विसर्ग (:)

---

*सूचनाः—कण्ठ स्थान से उच्चरित जो ध्वनियाँ हैं; उनको कण्ठ्य (Gutturals) कहते हैं और तालु स्थान से उच्चरित ध्वनियों को तालव्य (Palatals) कहते हैं। इसी प्रकार सर्वत्र जान लेना चाहिये।

तालु (palatals) = इ, ई, च, छ, ज, झ, ञ, य, श, ।
मूर्धा (Linguals) = ऋ, ॠ, ट, ठ, ड, ढ, ण, र, ष, ।
दन्त (Dentals) = * लृ, त, थ, द, ध, न, ल, स, ।
ओष्ठ (Labials) = उ, ऊ, प, फ, ब, भ, म, और उपध्मानीय ।
नासिका (Nasals) = ङ, ञ, ण, न, म, और ऊपर कहे हुए स्थान ।
कण्ठ और तालु = ए, ऐ, ।
कण्ठ और ओष्ठ = ओ, औ ।
दन्त और ओष्ठ = व ।
जिह्वामूलीय = ≍ क ≍ ख ।
उपध्मानीय = ≍ प ≍ फ ।

पञ्चमः पाठः

आभ्यन्तर प्रयत्न

प्रयत्न :—वर्णों के उच्चारण करने में कण्ठादि स्थानों में वाणी का जो व्यापार होता है, उसे प्रयत्न कहते हैं।

ये प्रयत्न दो प्रकार के होते हैं।

(क) आभ्यन्तर (ख) बाह्य

(क) आभ्यन्तर प्रयत्न पांच प्रकार के होते हैं।

(१) विवृत (२) स्पृष्ट (३) ईषत्स्पृष्ट (४) ईषद्विवृत (५) संवृत ।

१ विवृत—स्वरों के उच्चारण काल में मुख खुला रहता है; इसलिये स्वरों (अ, इ, उ, ऋ, लृ, ए, ऐ, ओ, औ) का विवृत प्रयत्न है।

२ स्पृष्ट—"क से म" तक व्यञ्जन वर्णों के उच्चारण समय में कण्ठादि का जिह्वा के साथ पूर्णरूप से स्पर्श (Touch) हो तो उसको स्पृष्ट प्रयत्न कहते हैं, स्पर्श भी कहते हैं।

३ ईषत्स्पृष्ट—जिन वर्णों के बोलते समय मुख में जिह्वा का थोड़ा सा स्पर्श हो तो उनका ईषत्स्पृष्ट प्रयत्न होता है, जैसे—"य, र, ल, व" और इनको अन्त:स्थ भी कहते हैं।

४ ईषद्विवृत—जिन वर्णों के बोलते समय मुख कुछ खुला रहे तो उनको ईषद्विवृत प्रयत्न कहते हैं। जैसे—"श, ष, स, ह,, इन अक्षरों के उच्चारण करने

में वायु का वेग क्रिया में उष्णता उत्पन्न करता है, अतः इन्हें "ऊष्म" भी कहते हैं।

५ संवृत – केवल "अ" उच्चारण करने में बहुत थोड़ा समय लगता है। इसलिये "अ" को संवृत प्रयत्न कहते हैं।

षष्ठः पाठः

बाह्य प्रयत्न

बाह्य प्रयत्न के ग्यारह भेद होते हैं, ग्यारहों प्रयत्नों का नाम आगे के विवरण कोष्ठ में लिखा है।

१ घोष – प्रत्येक वर्गों का तीसरा, चौथा, पाँचवाँ, अक्षर तथा संपूर्ण स्वर और "य, र, ल, व, ह" इनका घोष प्रयत्न होता है और इनको मृदु व्यञ्जन भी कहते हैं।

२ अघोष – वर्गों के प्रथम और द्वितीय वर्ण, और "श, ष, स" इनका अघोष प्रयत्न है, और इन्हें कठोर व्यञ्जन भी कहते हैं।

३ अल्पप्राण – जिन वर्णों के उच्चारण करने में थोड़ा परिश्रम होता है, उनका अल्पप्राण प्रयत्न होता है। वर्गों के प्रथम, तृतीय, पञ्चम, तथा "य, र, ल, व' और अनुस्वार (ं) तथा संपूर्ण "स्वर" इनका अल्पप्राण प्रयत्न है।

४ महाप्राण—जिन वर्णों के बोलने में अधिक परिश्रम होता है; उनका महाप्राण प्रयत्न होता है। वर्गों के द्वितीय, चतुर्थ, अक्षर और "श, ष, स, ह" तथा विसर्ग (:) इनका महाप्राण प्रयत्न होता है।

आभ्यन्तर और बाह्य प्रयत्नों का विवरण कोष्ठ

आभ्यन्तर प्रयत्न	स्पृष्ट प्रयत्न या स्पर्श वर्ग Stopsmutes explosiver					ईषत्स्पृष्ट प्रयत्न Semi-vowel	ईषद् विवृत प्रयत्न Sibilance-aspirate		विवृत प्रयत्न Vocals
बाह्य प्रयत्न	विवार श्वास अघोष Surds Hard		संवार नाद घोष Sonants Soft			संवार, नाद, घोष Sonants	विवार श्वास, अघोष	संवार, नाद, घोष	उदात्त, अनुदात्त स्वरित संवार, नाद, घोष
	अल्पप्राण Unaspirates.	महाप्राण Aspirates.	अल्पप्राण Unaspirates.	महाप्राण Aspirates.	नासिका Nasals. अल्पप्राण Unaspirates.	अन्तःस्थ Liquids. अल्पप्राण Unaspirates.	ऊष्म Sibilance. महाप्राण Aspirates.	ऊष्म Sibilance. महाप्राण Aspirates.	अल्पप्राण Unaspirates.
स्थान वर्ग Organic classe									
कण्ठ्य Gutturals	क k	ख kh	ग g	घ gh	ङ ṅ	ं	:	ह h	अ आ
तालव्य Palatals	च ch	छ chh	ज j	झ jh	ञ ñ	य y	श sh	×	इ, ई, ए, ऐ
मूर्धन्य Linguals	ट ṭ	ठ ṭh	ड ḍ	ढ ḍh	ण ṇ	र r	ष shh	×	ऋ
दन्त्य Dentals	त t	थ th	द d	ध dh	न n	ल l	स s	×	ऌ
ओष्ठ्य Labials	प p	फ ph	ब b	भ bh	म m	व v	×	×	उ, ऊ, ओ, औ

सप्तमः पाठः

शब्दों के आठ भेद

अर्थ के विचार से शब्दों के आठ भेद होते हैं, अर्थात् शब्द आठ प्रकार के अर्थों को बतलाते हैं :—

१ संज्ञा (Noun) २ सर्वनाम (Pronoun) ३ विशेषण (Adjective) ४ क्रिया (Verb)	ये विकारी शब्द हैं, अर्थात् ये किसी भी अवस्था में कोई भी स्वरूप धारण कर सकते हैं।
५ क्रिया विशेषण (Adverb) ६ सम्बन्ध बोधक (Preposition) ७ समुच्चय बोधक (Conjunction) ८ विस्मयादिबोधक (Interjection)	ये अविकारी शब्द हैं, अर्थात् ये किसी भी अवस्था में स्वरूप नहीं बदलते।

१ संज्ञा (Noun) :—किसी व्यक्ति वस्तु, भाव और स्थानों के नामों को संज्ञा कहते हैं। जैसे :—मोहनः, सोहनः, कुर्सी, मेज, बनारस, हिमालय, पर्वत इत्यादि।

२ सर्वनाम (Pronoun) :—जो संज्ञा के स्थान में प्रयोग किया जावे, उसे सर्वनाम कहते हैं जैसे :—वह, वे, उसे, हम, तुम, इत्यादि ;

३ विशेषण (Adjective) :—जो किसी विशेष्य की प्रशंसा करे, उसको विशेषण कहते हैं। जैसे :—श्वेतः अश्वः = सफेद घोड़ा, मोटा मनुष्य, काली गाय इत्यादि।

४ क्रिया (Verb) :—क्रिया वह शब्द है, जिसके द्वारा किसी कार्य का होना पाया जावे। जैसे:—मोहनः याति, मोहन जाता है, शकुन्तला आती है।

५ क्रिया विशेषण (Adverb) :—जो शब्द क्रिया के अर्थ में विशेषता प्रगट करे, उसे क्रियाविशेषण कहते हैं। जैसे :—रामः शीघ्रं धावति = राम तेज दौड़ता है। हरि धीरे २ जाता है।

६ सम्बन्धबोधक (Preposition) :—जो अव्यय शब्द वाक्य के दूसरे शब्द के साथ सम्बन्ध प्रगट करता है, उसे सम्बन्ध बोधक शब्द कहते हैं। सूचना :—संस्कृत तथा हिन्दी में सम्बन्ध बोधक शब्द सम्बन्धी के पश्चात् रक्खा जाता है और इंगलिश में prepostion सम्बन्धी से पूर्व रक्खा जाता है। जैसे :—रामं विना = राम के विना। यहाँ पर "राम" संबन्धी है और "विना" सम्बन्ध बोधक शब्द है।

जैसे : - सः कपाटसन्मुखे उदस्थात्=He stood before the door. वह दरवाजे के सामने खड़ा था। यहाँ पर door सम्बन्धी है इससे पूर्व (before) preposition है।

The book is beside the box. सन्दूक की ओर पुस्तक है। यहाँ पर (beside) box का preposition है।

They walked around the field. वे खेत के चारों ओर टहले। यहाँ पर (around) field का preposition है। इत्यादि जान लेना।

७ समुच्चय बोधक (Conjunction):—वे अव्यय शब्द हैं, जो कि दो शब्दों अथवा वाक्यों को मिलावें। जैसे:—

रामो लक्ष्मणश्च वनं जग्मतुः = राम और लक्ष्मण बन को गये।

वशिष्ठो विश्वामित्रश्च बभूवतुः=वशिष्ठ और विश्वामित्र हुए।

यज्ञदत्तःशोभनमशोभनं वा अस्ति = यज्ञदत्त अच्छा वा बुरा है।

८ विस्मयादिबोधक (Interjection):—जो अव्यय शब्द आश्चर्य, प्रसन्नता, शोक; आदि मन के उत्कट भावों को प्रकट करते हैं उन्हें विस्मयादि बोधक शब्द कहते हैं। जैसे:—

अहा ! ते आगतवन्तः! अहा ! वे आगये।

ओहो ! आप बनारस में ही हैं ? हाय ! मुझे क्या हो गया !

हा ! आज भारत के दो खण्ड हो गये !

अष्टमः पाठः

संज्ञाओं के मुख्य तीन भेद

१ व्यक्तिवाचक संज्ञा (Proper noun)

२ जातिवाचक संज्ञा (Common noun)

३ भाववाचक संज्ञा (Abstract noun)

१ व्यक्तिवाचक संज्ञा (Proper noun):—जो शब्द किसी व्यक्ति अथवा किसी विशेष स्थान का बोध करावें, उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे:—मोहनः, सोहनः, काशी, इलाहाबाद, गङ्गा, हिमालय, इत्यादि।

२ जातिवाचक संज्ञा (Common noun):—जो शब्द एक जाति के प्रत्येक व्यक्ति के लिये प्रयुक्त होता है, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे:— मनुष्य, गाय पुस्तक, इत्यादि।

सूचनाः—सम्पूर्ण जाति के लिये एक बचन की तरह बहुवचन में भी प्रयोग करते हैं। जैसेः—ब्राह्मणो वेदाध्ययनं कुर्यात् अथवा ब्राह्मणाः वेदाध्ययनं कुर्युः = Brahmins should read vedas. ब्राह्मणों को वेद पढ़ना चाहिये

धर्म्याद्धि युद्धाच्छ्रेयोऽन्यत्क्षत्रियस्य न विद्यते। गी० अ०२ श्लो० अथवा क्षत्रियाणां न विद्यते।

क्योंकि क्षत्रियों को धर्म युद्ध से बढ़कर दूसरा कोई कल्याण नहीं है।

३ भाववाचक संज्ञा (Abstract noun):—जिस संज्ञा शब्द के द्वारा किसी वस्तु का गुण, दोष, अवस्था अथवा व्यापार (क्रिया) जाना जाय उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं। जैसेः—

जाड्यम् = जड़ता, मौर्ख्यम् = मूर्खता, चातुर्यम् = चतुरता इत्यादि।

भाववाचक संज्ञाएँ पाँच प्रकार के शब्दों से बनती हैं।

१ जातिवाचक २ विशेषण ३ सर्वनाम ४ अव्यय ५ क्रिया।

१ जातिवाचक से :—मनुष्य से "मनुष्यत्व अथवा मनुष्यता" स्त्री से "स्त्रीत्व" शिशु से "शिशुत्व" (लड़कपन) इत्यादि।

२ विशेषण से :—सुन्दर से "सौन्दर्यम्" (सुन्दरता) मधुर से "मधुरिमा" (मधुरता) नील से "नीलिमा" (नीलत्व) कटु से "कटुत्व" (कटुता = कड़वा-पन) इत्यादि।

३ सर्वनाम से :—ममता, ममत्व, निजत्व इत्यादि।

४ अव्यय से :—शीघ्रता, मौनता, नीचता, (नीचापन) ऊँचता (ऊँचापन)

५ व्यापार (क्रिया) से :—गमनम् (चाल) धावनम् (दौड़ना) शक्तिः, सञ्चयः, भिक्षा, दीक्षा इत्यादि।

(अंग्रेजी भाषा में भी संज्ञा शब्दों के दो अन्य भेद भी हैं।)

१ समुदायवाचक संज्ञा (Collective noun) जैसे :—सभा (society) जनसमुदाय (crowd) इत्यादि।

२ द्रव्यवाचक संज्ञा (Material noun) जैसे :—ताम्रम् (ताम्बा) लोहम् (लोहा) इत्यादि।

परन्तु उपरोक्त दोनों संज्ञाएँ संस्कृत भाषा में जातिवाचक के अन्तर्गत आ जाती हैं।)

अभ्यासः

१ स्वर के कितने भेद हैं ?
२ ह्रस्व तथा दीर्घ स्वर कौन हैं ?
३ संस्कृत वर्णमाला में व्यञ्जनों के कितने वर्ग हैं ?
४ "अनुस्वार, विसर्ग और अनुनासिका" ये स्वर हैं या व्यञ्जन ?
५ "अच" के बिना व्यञ्जन वर्ण का उच्चारण क्यों नहीं होता और इसके क्या लक्षण हैं ?
६ स्थान किसे कहते हैं ?
७ प्रयत्न किसे कहते हैं ?
८ अन्तःस्थ और ऊष्म संज्ञाओं में कौन कौन अक्षर हैं ?
९ स्पर्श संज्ञा में कितने अक्षर हैं ? और नासिका से कौन कौन वर्ण बोले जाते हैं ?
१० किन किन वर्णों का तालु और मूर्द्धा स्थान है ?
११ आभ्यन्तर प्रयत्न कितने प्रकार के हैं ?
१२ बाह्य प्रयत्न में घोष और अघोष के कौन कौन अक्षर हैं ?
१३ कौन कौन वर्ण मृदुव्यञ्जन और कौन २ वर्ण कठोर व्यञ्जन हैं ?
१४ किन अक्षरों का अल्पप्राण होता है और किन किन अक्षरों का महाप्राण होता है ?
१५ "अनुस्वार तथा विसर्ग" इनका कौन महाप्राण और कौन अल्पप्राण है ?
१६ व्यक्तिवाचक, जातिवाचक तथा भाववाचक संज्ञाओं को अच्छी तरह समझा कर बताओ ?

संधि प्रकरणम्

नवमः पाठः

संधि परिचय

संस्कृत तथा हिन्दी के शब्दों में उच्चारण की सुगमता के लिये जब आदि और अन्त्य अक्षर के स्थान में दूसरा अक्षर परिवर्तन (change) होकर परस्पर में मिलते हैं; तब उसे सन्धि (joining of letter) कहते हैं। जैसे :—गण+ईशः। यहाँ पर "ण" में अन्त्य अक्षर "अ", है और ईशः शब्द में आदि अक्षर "ई" है अतः दोनों के स्थान में दूसरा अक्षर "ए" परिवर्तन हो गया फिर "ण्" को "ए" में मिला देने से "गणेशः" शब्द बना। इसी को सन्धि कहते हैं। इन सन्धियों के तीन भेद हैं-—

१ अच् सन्धि (स्वर सन्धि)
२ हल् सन्धि (व्यञ्जन सन्धि)
३ विसर्ग सन्धि

सन्धि का दूसरा नाम संहिता भी है।

संस्कृत व्याकरण में सन्धियों के यद्यपि तीन भेद हैं, तथापि कुछ स्थलों को छोड़कर जहाँ सन्धि करना आवश्यक है, वहाँ सन्धि का प्रयोग करना अथवा न करना कर्ता के इच्छाधीन है। इस सम्बन्ध में विद्वानों ने इस प्रकार लिखा भी है :—

संहितैक पदे नित्या, नित्या धातूपसर्गयोः।
नित्या समासे वाक्ये तु, सा विवक्षामपेक्षते॥

भावार्थ :—एक पद में, जैसे—नै+अकः=नायकः (नेता), उपसर्ग और धातु के मिलाने में, जैसे :—उप+एति=उपैति (समीप पहुँचता है), समास में नित्य संहिता (सन्धि) होती है, जैसे :—मुनि+इन्द्रः=मुनीन्द्रः (मुनिश्रेष्ठ) वह सन्धि वाक्य में तो करना अथवा न करना विवक्षाधीन (इच्छाधीन) है, जैसे :—सः अस्मान् अत्यजत् अथवा सोऽस्मानत्यजत्= उसने मुझे छोड़ दिया।

वाक्य में सन्धि करना यद्यपि इच्छाधीन है तथापि सन्धि का प्रयोग अवश्य करना चाहिये क्योंकि वाक्य में सुन्दरता आ जाती है।

दशमः पाठः

अच् संधि या स्वर संधि

स्वर सन्धि :—जब एक स्वर अपने रूप को दूसरे स्वर में मिलाता है तब उसे स्वर सन्धि कहा जाता है। जैसे: पद्+अधिकारी यहाँ पर "द्" में "अ" को "अधिकारी" के "अ" में मिलाने से "पदाधिकारी" शब्द बना।

अतः इसको स्वर सन्धि कहते हैं।

संस्कृत में सन्धियों के नाम बहुत हैं परन्तु जो दैनिक कार्य में अर्थात् बोल चाल में विशेष रूप से आती हैं वे ही यहाँ पर उल्लिखित हैं:—

*१ (इको यणचि) अथवा यण् सन्धि।

भावार्थ :—इक् (इ, उ, ऋ, लृ) के स्थान में यण् ("इ" को य्, "उ" को व, "ऋ" को र् और "लृ" को ल्) हो जाता है, स्वर परे होने पर।

पाठक गण ध्यान रक्खें कि—सर्वदा भिन्न जाति का ही स्वर परे हो, तभी इस सन्धि का नियम लागू होगा। साथ ही यह भी ध्यान रखना चाहिये कि ह्रस्व "इ, उ. ऋ" की तरह दीर्घ "ई, ऊ, ॠ" के स्थान में भी भिन्न जातीय का स्वर परे होने पर उक्त सन्धि होगी। जैसे :—"यदि+अपि" इन दोनों में सन्धि करते समय हम देखते हैं कि 'यदि' के इकार से परे 'अपि' का अकार भिन्न जातीय का स्वर परे है (क्योंकि इकार का स्थान तालु है और अकार का कण्ठ) अतः तालु स्थान वाले इकार के स्थान में तालुस्थानिक "य्" करके फिर "य्" को अपि के अकार में मिला देने से "यद्यपि" प्रयोग बना।

यदि+अपि=यद्+य्+अपि=यद्यपि। इसी प्रकार सभी जगह जान लेना चाहिये।

अन्य भी उदाहरण निम्नलिखित हैं।

प्रति+एकम्=प्रत्+य्+एकम्=प्रत्येकम् (हर एक)
देवी+अर्पणम्=देव्+य्+अर्पणम्=देव्यर्पणम् (देवी को दिया हुआ)
सु+आगतम्=स्व्+आगतम्=स्वागतम् (अच्छा आगमन)
वधू+आगमनम्=वध्व्+आगमनम्=वध्वागमनम् (बहू का आना)

---

*सूचनाः—इससे आगे जो भी सूत्र कोष्ट में बन्द किये हुये हैं वे सूत्र सर्वत्र पाणिनीय जी के समझना चाहिये।

पितृ+आदेशः=पित्र्+आदेशः=पित्रादेशः (पिता की आज्ञा)
लृ+आकृतिः=ल्+आकृतिः=लाकृतिः: (टेढ़ी आकृति)

सूचना :—सन्धियों में सर्वत्र स्वर के स्थान पर परिवर्तित स्वरहीन वर्ण (voiceless) दूसरे परवर्ती स्वर में मिला दिये जाते हैं।

(एचोऽयवायावः) अथवा अयादि चतुष्टय सन्धि 2

भावार्थ :—एच् (ए, ऐ, ओ, औ) के स्थानों में क्रमशः "ए" को अय्। "ऐ" को आय्। "ओ" को अव्। "औ" को आव् आदेश हो जाते हैं, स्वर परे होने पर।

जैसे :—"ने+अनम्" यहाँ पर "न्" में ए है और "अनम्" स्वर परे है, अतः "ए" को अय् करके मिला देने से "नयनम्" (नेत्र) प्रयोग बना। इसी प्रकार सर्वत्र समझ लेना चाहिये।

शे+अनम्=श्+अय्=शयनम् (सोना)
नै+अकः=न्+आय्+अकः=नायकः (प्रधान)
विष्णो+ए=विष्ण्+अव्+ए=विष्णवे (विष्णु के लिये)
नौ+इकः=न्+आव्+इकः=नाविकः (मल्लाह)

(आद्गुणः) या गुण सन्धि 3

भावार्थ :—अवर्ण से ह्रस्व तथा दीर्घ स्वर परे हो तो पूर्व और पर के स्थान में गुणरूप (ए, ओ) एकादेश होता है, परन्तु ऋकार के स्थान पर "अर्" होता है। इसे गुण सन्धि कहते हैं।

उदाहरण

"उप+इन्द्रः=उप्+ए+न्द्रः=उपेन्द्रः" यहाँ पर "प" में अकार का कण्ठ स्थान है, और "इन्द्रः" के इकार का तालु स्थान है। अतः "अ और इ" के स्थान पर कण्ठ तालु स्थानिक "ए" गुणरूप एकादेश करके पुनः 'प्' को 'ए' में मिला देने से "उपेन्द्र" (वामन भगवान्) प्रयोग बना। इसी प्रकार दूसरे उदाहरणों में समझना चाहिये।

गण + ईशः = गण् + ए + शः = गणेशः (गणों के स्वामी)
महा + इन्द्र = मह् + ए + इन्द्रः = महेन्द्रः (विष्णु)
रमा + ईशः = रम् + ए + शः = रमेशः (वष्णु)
हित + उपदेशः = हित् + ओ + पदेशः = हितोपदेशः (अच्छा उपदेश)
गङ्गा + उदकम् = गङ्ग् + ओ + दकम् = गङ्गोदकम् (गङ्गा जल)
गङ्गा + ऊर्मिः = गङ्ग् + ओ + र्मिः = गङ्गोर्मिः (गङ्गलहर)
देव + ऋषिः = देव् + अर् + षिः = देवर्षिः (नारद)
महा + ऋषिः = मह् + अर् + षिः = महर्षिः (बड़े ऋषि)

(वृद्धिरेचि) या वृद्धि सन्धि

भावार्थ :—ह्रस्व तथा दीर्घ अकार से परे एच् (ए, ऐ, ओ, औ) होने पर पूर्व और पर के स्थान में वृद्धिरूप (ऐ औ) एकादेश होता है।

उदाहरण

अद्य + एव = अद्य् + ऐ + व = अद्यैव (आज ही) यहाँ पर "द्य" में अकार का कण्ठ स्थान है और "एव" में "ए" का कण्ठ और तालु स्थान है। अतः "अ और ए" दोनों के स्थान पर कण्ठ तालु स्थानिक "ऐ" वृद्धिरूप एकादेश करके फिर " द्य् " को "ऐ" में मिला देने से "अद्यैव" शब्द बना। इसी प्रकार अन्यत्र भी जानना।

मत + ऐक्यम् = मत + ऐ + क्यम् = मतैक्यम् (एक मत होना)
तथा + एव = तथ् + ऐ + व = तथैव (वैसा ही)
महा + ऐश्वर्यम् = मह् + ऐ + श्वर्यम् = महैश्वर्यम् (बड़ी सम्पत्ति)
जल + ओघः = जल् + औ + घः = जलौघः (जलसमूह)
वन + औषधिः = वन् + औ + षधिः = वनौषधिः (जंगल की दवा)
महा + ओजः = मह् + औ + जः = महौजः (बड़ा तेज)
महा + औषधालयः = मह् + औ + षधालयः = महौषधालयः (बड़ा औषधालय)

(उपसर्गादृति धातौ)

भावार्थ :—अवर्णान्त उपसर्ग से ऋकारादि धातु परे होने पर पूर्व और पर के स्थान में वृद्धिरूप (आर्) एकादेश होता है। जैसे :—"प्र + ऋच्छति"

यहाँ पर (प्र्+अ+ऋच्छति) 'अ+ऋ' इन दोनों के स्थान में 'आर्' वृद्धिरूप एकादेश होगया। तब 'प्राच्र्छति' (जोर से जाता है) प्रयोग सिद्ध हुआ। परा+ऋच्छति=पर्+आर्+च्छति=पराच्र्छति (अलग जाता है)।

पञ्चदशः पाठः

६—(अकः सवर्णे दीर्घः). 5

भावार्थः—ह्रस्व तथा दीर्घ 'अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ', अक् से सवर्ण (समान जातीय) ह्रस्व तथा दीर्घ 'अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ' परे होने पर दोनों के स्थान में एक दीर्घ स्वर 'आ, ई, ऊ, ॠ' हो जाते हैं।

उदाहरण

परम+अर्थः=परमार्थः (दूसरे की भलाई) यहाँ पर 'म' में अकार का कण्ठ स्थान है और 'अर्थः' में अकार का भी कण्ठ स्थान है अतः दोनों अकार के स्थान पर कण्ठ स्थानिक 'आ' दीर्घ करके फिर 'म्' को 'आर्थः' में मिला देने से 'परमार्थः' प्रयोग सिद्ध हुआ। इसी प्रकार सब जगह जान लेना चाहिये।

परम+आत्मा=परम्+आ+त्मा=परमात्मा (ईश्वर)
विद्या+आलयः=विद्+आ+लयः=विद्यालयः (स्कूल)
मुनि+इन्द्रः=मुन्+ई+न्द्रः=मुनीन्द्रः (मुनि श्रेष्ठ)
क्षिति+ईशः=क्षित्+ई+शः=क्षितीशः (राजा)
मही+इन्द्रः=मह्+ई+न्द्रः=महीन्द्रः (पर्वत)
गुरु+उपदेशः=गुर्+ऊ+पदेशः=गुरूपदेशः (गुरु का उपदेश)
लघु+ऊर्मिः=लघ्+ऊ+र्मिः=लघूर्मिः (छोटी लहर)
बधू+उक्तिः=बध्+ऊ+क्तिः=बधूक्तिः (बहू का कथन)
पितृ+ऋणम्=पित्+ॠ+णम्=पितॄणम् (पिता का ऋण)

षोडशः पाठः

७—(एङः पदान्तादति) 6

भावार्थ—यदि पद के अन्त में 'ए, ओ' आवे और उसके बाद में ह्रस्व अकार परे हो तो अकार को पूर्व रूप हो जाता है और उसके जगह पर (ऽ) चिन्ह लगा दिया जाता है।

उदाहरण

हरे+अव=हरेऽव (हे! हरि मेरी रक्षा करो) यहाँ पर पद 'हरे' के अन्त में 'रे' में 'ए' है और बाद में 'अ' है अतः (अ) को ए का रूप हो

गया और उस दशा में 'हरेऽव' प्रयोग बना। इसी प्रकार सर्वत्र जान लेना चाहिये।

प्रभो+अत्रागच्छ=प्रभोऽत्रागच्छ (हे प्रभो यहाँ आओ)
तक्रं न रोचतेऽस्माकम् (मुझे मट्ठा अच्छा नहीं लगता है)

सप्तदशः पाठः

As it is (no change)

प्रकृति भाव

८—(ईदूदेद् द्विवचनं प्रगृह्यम्)

द्विवचन में ईकारान्त, ऊकारान्त और एकारान्त की प्रगृह्य संज्ञा होती है तथा प्रगृह्य संज्ञा को प्रकृति भाव हो जाता है। (प्रकृति भाव का यह अर्थ है कि विकृति नहीं होती है) जैसे :—'हरी+एतौ' यहाँ पर 'हरी' द्विवचन है और "एतौ" भी द्विवचन है अतः इन दोनों शब्दों की प्रगृह्य संज्ञा होकर फिर प्रकृति भाव हो गया अर्थात् इन दोनों में तबदीली नहीं हुई। इसी प्रकार अन्यत्र भी जान लेना चाहिये।

'हरीएतौ' = ये दोनों सिंह हैं।

'विष्णूइमौ' = ये दोनों व्यापक हैं।

"गङ्गे अमू" = ये दोनों गङ्गाएँ हैं।

अभ्यास

निम्नलिखित सन्धियों का सन्धि विच्छेद करो और उनके नियम भी बतलाओ :—

अभ्युदयः, सुध्युपास्यः, अन्वितः, मात्राज्ञा, सुरेशः, रमेशः, महेशः, हितोपदेशः, सूर्योदयः, देवर्षिः, हरये, नायकः पवनः, स्तावकः, रामैश्वर्यम्, तवैव, यदैव, कृष्णौत्कण्ठ्यम्, उपार्च्छति, विद्याभ्यासः, कवीन्द्रः, भानूदयः, यशोऽभिलाषी, धनुषीएते, इत्यादि।

निम्नलिखित शब्दों में नियमानुसार सन्धियों को मिलाओः—

अति+आवश्यकः, अनु+एषणम्, धातृ+अंशः, ने+अति, पो+इत्रम् पौ+अकः, राका+ईशः, उमा+ईशः, कूप+उदकम्, महा+उत्सवः, राजा+ऋषिः, मम+एव, नक्षत्र+ओघः, परम+ऐश्वर्यम्, राम+औत्सुक्यम्, प्र+ऋच्छत्, देव+आलयः, श्री+ईशः, भानु+उदयः, के+अत्र सन्ति, को+अपि, एते+स्तः, साधू+आगच्छतः।

व्यञ्जन संधि प्रकरणम्

(Joining of consonants)

अष्टादशः पाठः

व्यञ्जन से परे स्वर अथवा व्यञ्जन आने से जो व्यञ्जन में विकार (Change) होता है, उसे व्यञ्जन (हल्) सन्धि कहते हैं।

१—(स्तोः श्चुना श्चुः)

भावार्थ—'स' और तवर्ग (त, थ, द, ध, न) के स्थान में 'श' और चवर्ग (च, छ, ज, झ, ञ) का योग हो तो क्रमशः 'स्' के स्थान में 'श्' होता है और तवर्ग के स्थान में चवर्ग होता है।

उदाहरण

बालकस + शेते = बालकश्शेते (लड़का सोता है) यहाँ पर 'स' का योग 'शे' के साथ है अतः 'स्' को 'श्' करके पुनः मिला देने से 'बालकश्शेते' प्रयोग बना इसी नियम के अनुसार अन्यत्र भी जान लेना चाहिये।

कस् + चित् = कश् + चित् = कश्चित् (कोई पुरुष)

उत् + चारणम् = उच् + चारणम् = उच्चारणम् (बोल)

भवत् + छविः = भवच् + छविः = भवच्छविः (आप की शोभा)

शरत् + चन्द्रः = शरच् + चन्द्रः = शरच्चन्द्रः (शरद् ऋतु का पूर्ण चन्द्रमा)

सद् + जनः = सज् + जनः = सज्जनः (अच्छा आदमी)

शत्रून् + जयति = शत्रूञ् + जयति = शत्रूञ्जयति (शत्रुओं को जीतता है)

याच् + ना = याच् + ञा = याच्ञा (माँगना)

एकोनविंशति पाठः

२—(ष्टुना ष्टुः)

भावार्थ—सकार और तवर्ग के स्थान में षकार और टवर्ग के योग में क्रमशः 'स्' को 'ष्' होता है और तवर्ग को टवर्ग हो जाता है।

उदाहरण

रामस् + षष्ठः = रामष्षष्ठः (छठा राम) यहाँ पर 'स्' से परे 'ष' का योग है; अतः 'स्' को षकार करके पुनः मिलादेने से 'रामष्षष्ठः' प्रयोग बना। इसी प्रकार अन्यत्र समझ लेना चाहिए।

बालस् + षष्ठः = बालष् + षष्ठः = बालष्षष्ठः (छठवाँ बालक)
तत् + टीका = तट् + टीका = तट्टीका (उसकी टीका)
उत् + डयनम् = उड् + डयनम् = उड्डयनम् (उड़ान)
इष् + तः = इष् = टः = इष्टः (मनोरथ)
पेष् + ता = पेष् + टा = पेष्टा (चूर्ण करने वाला)
चक्रिन् + ढौकसे = चक्रिण् + ढौकसे = चक्रिण्ढौकसे (हे चक्रिन् ! आप जाते हैं ।)

विंशतितमः पाठः

३-(झलांजशोऽन्ते)

भावार्थ :—पदों के अन्त में 'क, च, ट, त, प' के आगे वर्ग का तीसरा, चौथा वर्ण हो अथवा कोई स्वर हो तो भी वह व्यञ्जन वर्ण अपने वर्ग का तीसरा वर्ण हो जाता है, परन्तु अनुनासिक और 'य, र, ल, व' वर्ण को छोड़ कर तीसरा वर्ण होता है ।

उदाहरण

वाक् + ईशः = वागीशः (बृहस्पति, सरस्वती) यहाँ पर 'क्' के आगे स्वर 'ई' है, अतः 'क्' को तीसरा वर्ण 'ग्' करके फिर 'ग्' को 'ई' में मिला देने से 'वागीशः' प्रयोग बना । इसी प्रकार अन्य प्रयोगों में भी समझ लेना चाहिये ।

दिक् + अम्बरः = दिग् + अम्वरः = दिगम्बरः (नग्न)
अच् + अन्तः = अज् + अन्तः = अजन्तः (जिसके अन्त में स्वर हो)
षट् + दर्शनम् = षड् + दर्शनम् = षड्दर्शनम् (छः दर्शन)
अप् + जम् = अब् + जम् = अब्जम् (कमल)

एकविंशतितमः पाठः

४-(तोर्लि)

भावार्थ :—यदि 'त्, द् और न्' के बाद में 'ल' परे हो तो, 'त् द् और न्' के स्थान में 'अनुनासिक ल्' हो जाता है ।

उदाहरण

विद्वान् + लिखति = 'विद्वाँल्लिखति' यहाँ पर 'न्' के बाद लिखति का 'ल्' है अतः 'न्' को अनुनासिक 'ल्' करके पुनः 'ल्' को लिखति के लकार से मिला देने से 'विद्वाँल्लिखति' शब्द बना । इसी प्रकार सर्वत्र जान लेना चाहिये ।

तत्+लीनः=तल्+लीनः=तल्लीनः (लगा हुआ)
उत्+लेखः=उल्+लेखः=उल्लेखः (लेख, प्रतिलिपि)

द्वाविंशतितमः पाठः

५–(यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा)

भावार्थः—यदि पद के अन्त में वर्गों का प्रथम वर्ण हो और बाद में 'न, म' आदि अनुनासिक अक्षर हों तो वर्ग के प्रथम वर्ण को क्रम से उसी वर्ग का पाँचवाँ वर्ण हो जाता है।

उदाहरण

दिक्+नागः=दिङ्+नागः=दिङ्नागः (दिशाओं का हाथी)
यहाँ पर वर्ग का प्रथम वर्ण 'क्' है और बाद में 'न' है।
अतः 'क्' को वर्ग का पाँचवाँ वर्ण 'ङ्' करके फिर 'ङ्' को नाग में मिलाने से "दिङ्नागः" शब्द ठीक बना। इसी प्रकार सर्वत्र समझना चाहिये।

एतद्+मुरारिः=एतन्+मुरारिः=एतन्मुरारिः (यह मुरारि है)
जगत्+नाथः=जगन्+नाथः=जगन्नाथः (जगत् के स्वामी)
षट्+मासः=षण्+मासः=षण्मासः (छः महीना)

त्रयोविंशतितमः पाठः

६—(शश्छोऽटि)

भावार्थ—यदि 'त्,द्' के बाद में 'श' हो तो 'त् द्' को 'च्' होता है और विकल्प से 'अट्'परे होने पर 'श्' को 'छ्' हो जाता है।

उदाहरण

सत्+शास्त्रम्=यहाँ पर 'त्' के बाद में 'श' है अतः तकार को चकार कर और शकार को छकार करके फिर 'च्' को छकार में मिला देने से 'सच्छास्त्रम्' (अच्छा शास्त्र) प्रयोग ठीक बना। इसी प्रकार सर्वत्र समझ लेना चाहिये।

तद्+शिवः=तच्+छिवः=तच्छिवः (उसका कल्याण)
तद्+श्रुत्वा=तच्+छ्रुत्वा=तच्छ्रुत्वा (उसको सुनकर)

चतुर्विंशतितमः पाठः

७– (झयोहोऽन्यतरस्याम्)

भावार्थ–अनुनासिक वर्णों को छोड़कर झय् (झ, भ, घ, ढ, ध, ज, ब, ग, ड, द, ख, फ, छ, ठ, थ, च, ट, त, क, प) से परे 'ह' को (घ, झ, ढ, ध, भ) विकल्प से हो जाते हैं और पूर्व वर्ण को उसी वर्ग का तीसरा वर्ण हो जाता है।

उदाहरण

वाक्+हरिः=यहाँ पर 'क्' से परे 'ह' को 'घ' करके फिर ककार को कवर्ग का ही तीसरा वर्ण 'गकार' करके पुनः गकार को घकार में मिला देने से "वाग्घरिः" (वाणी का ईश्वर) प्रयोग बना। इसी प्रकार सर्वत्र समझना चाहिये।

अच्+ह्रस्वः=अज्+झ्रस्वः=अज्झ्रस्वः (ह्रस्व स्वर)
तत्+हितः=तद्+धितः=तद्धितः (उसका हित)
षट्+हलानि=षड्+ढलानि=षड्ढलानि (छः हल)
अप्+हरणम्=अब्+भरणम्=अब्भरणम् (चुराना, जलभरण)

पञ्चविंशतितमः पाठः

८—(मोऽनुस्वारः)

भावार्थ—यदि पद के अन्त में मकार हो और उसके पश्चात् कोई व्यञ्जन वर्ण हो तो 'म्' को अनुस्वार हो जाता है।

उदाहरण

हरिम्+वन्दे=हरिंवन्दे (हरि को नमस्कार करता हूँ) यहाँ पर पद के अन्त में 'म्' है और पश्चात् व्यञ्जन वर्ण 'व' है। अतः मकार को अनुस्वार कर देने से 'हरिंवन्दे' प्रयोग बना। इसी प्रकार अन्य उदाहरणों में समझना चाहिये।

रामम्+वन्दे=रामंवन्दे (राम को प्रणाम करता हूँ)
सम्+योगः=संयोगः— (मिलाप)
सम्+गमः=संगमः (मिलन)
मधुरम्+हसति=मधुरं हसति (मधुर हँसता है)
ग्रामम्+गच्छति=ग्रामंगच्छति (गाँव जाता है)

षड्विंशतितमः पाठः

९—(छे च, पदान्ताद्वा)

भावार्थः—ह्रस्व स्वर के बाद यदि छकार परे हो तो छकार से पूर्व 'च्' जोड़ देते हैं और दीर्घ स्वर के बाद छकार हो तो विकल्प (optionally) से 'च्' लगाया जाता है।

उदाहरण

वृक्ष+छाया=वृक्षच्छाया (पेड़ की छाया) यहाँ पर ह्रस्व स्वर 'क्ष' में 'अ' है और बाद में छाया का छकार है अतः 'छ' से पूर्व 'च्' को जोड़ दिया तो 'वृक्षच्छाया' प्रयोग बना। इसी प्रकार लक्ष्मीच्छाया का प्रयोग जानना चाहिये।

यहाँ पर दीर्घ स्वर से परे व्यञ्जन 'छ' है अतः 'छ' से पूर्व 'च्' को जोड़ दिया फिर 'लक्ष्मीच्छाया' प्रयोग बना और जहाँ पर 'च्' नहीं जोड़ा गया वहाँ पर 'लक्ष्मीछाया' रूप बना। इसी प्रकार अन्यत्र भी जानना चाहिये

१०—(ङमोह्रस्वादचिङमुण्नित्यम्)

भावार्थः—ह्रस्व स्वर के आगे 'ङ् ण् न्' हों इसके पश्चात् कोई स्वर हो तो क्रमशः एक और ङ् ण् न् हो जाते हैं।

जैसे :—'प्रत्यङ्+आत्मा' प्रत्यङ्ङात्मा 'सुगण्+ईशः' सुगण्णीशः गच्छन्+अस्ति=गच्छन्नस्ति।

अभ्यास

निम्न लिखित शब्दों का नियमानुसार सन्धि विच्छेद करो।

गोविन्दश्शेते, सच्चिदानन्दः, आकृष्टः पेष्टा,
वाग्दानम्, जगद्बन्धुः जगदीशः, महाँल्लाभः

तच्छविः, उच्छिष्टः, एतच्छान्तम्, वाङ्मयम्, चिन्मयम्, उद्धारः, संपद्धानिः, हृदयंगमः, संयोगः, विच्छेदः,

निम्नलिखित शब्दों को नियमानुसार सन्धि जोड़ो —

उत्+चारणम्, सत्+चित्, सत्+चरित्रम् इष्+तः, पेष्+ता, सत्+आचारः वाक्+दानम्, तत्+हानिः, उत्+हारः तत्+श्रुत्वा; एतत्+शान्तम्, उत्+शिष्टः, चित्+मयम्, वाक्+मयम् कृष्णम्+वन्दे, वि+छेदः।

विसर्ग सन्धि प्रकरणम्

सप्तविंशतितमः पाठः

विसर्ग के बाद स्वर अथवा व्यञ्जन के आने पर जो विसर्ग (:) में परिवर्तन होता है, उसे विसर्ग सन्धि कहते हैं।

१—(विसर्जनीयस्य सः)

भावार्थ :—विसर्ग से परे यदि 'च, छ, ट, ठ, त, थ' हो तो विसर्ग को क्रम से 'श् ष् स्' हो जाते हैं।

उदाहरण

पवनः+चलति (हवा चलती है) यहाँ पर विसर्ग से परे 'च' है अतः विसर्ग (:) को 'श्' करके फिर 'श्' को चकार में मिला देने से "पवनश्चलति" प्रयोग बना। इसी प्रकार दूसरे उदाहरणों में समझना चाहिए।

विष्णुः+त्राता=विष्णुस्+त्राता=विष्णुस्त्राता (विष्णु रक्षक है)
तरोः+छाया=तरोस्+छाया=तरोश्छाया (वृक्ष की छाया)
धनुः+टङ्कारः=धनुष्+टङ्कारः=धनुष्टङ्कारः (धनुष का शब्द)
मनः+तापः=मनस्+तापः=मनस्तापः (मन का दुःख)

अष्टविंशतितमः पाठः

२—(वा शरि)

भावार्थ :—यदि विसर्ग से परे 'श्, ष्, स्' हो तो विसर्ग को विकल्प (Optionally) से 'श् ष् स्' हो जाते हैं।

उदाहरण

बालः+शेते=बालश्शेते अथवा बालः शेते। यहाँ पर विसर्ग से परे 'श' है अतः विसर्ग (:) को 'श्' करके पुनः 'श्' को दूसरे शकार में मिलाने से 'बालश्शेते' प्रयोग बना। इसी प्रकार सर्वत्र समझना चाहिये। दुः+शासनः=दुश्शासनः या दुःशासनः (दुशासन) रसाः+षट्=रसाष्षट् या रसाः षट् (छः रस)। निः+सन्देहः=निस्सन्देहः या निःसन्देहः (सन्देह रहित)।

एकोनत्रिंशत्तमः पाठः

३ —(अतोरोरप्लुतादप्लुते)

भावार्थः—विसर्ग से पूर्व ह्रस्व 'अ' और बाद में भी ह्रस्व 'अ' हो तो विसर्ग (:) को 'उ' होता है फिर 'अ+उ' को कण्ठ ओष्ठ स्थानिक 'ओ' गुण हो जाता है। इस सन्धि में परवर्ती 'अ' को पूर्व रूप करके पुनः पूर्व रूप का चिन्ह (ऽ) लगा दिया जाता है।

उदाहरण

कः+अपि=कोऽपि (कोई भी) यहाँ पर विसर्ग से पूर्व 'क' में 'अ' है और बाद में 'अपि' का 'अ' है अतः विसर्ग (:) को 'उ' करके फिर 'अ+उ' के स्थान में कण्ठ ओष्ठस्थानिक 'ओ' गुण कर देते हैं। पुनः 'अपि' के अकार को पूर्व रूप करके (ऽ) चिन्ह लगा दिया जाता है, तब 'कोऽपि' शब्द बना। इसी प्रकार सर्वत्र समझ लेना चाहिये।

रामः+अस्ति=रामोऽस्ति (राम है)

कः+अवदत्=कोऽवदत् (कौन बोला)

यशः+अभिलाषी=यशोऽभिलाषी (कीर्ति को चाहने वाला)

त्रिंशत्तमः पाठः

४ —(हशि च)

भावार्थः—यदि विसर्ग (:) के पश्चात् किसी वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवाँ अक्षर अथवा 'य व र ल ह' इनमें से कोई अक्षर हो तो विसर्ग को 'उ' हो जाता है।

उदाहरण

मनः+हरम्=मनोहरम् (सुन्दर) यहाँ पर विसर्ग (:) के पश्चात 'ह' है, अतः विसर्ग को 'उ' करके पुनः 'मन' के नकार में जो 'अ' है उसका स्थान कण्ठ है और 'उ' का स्थान ओष्ठ है अतः 'अ+उ' दोनों के स्थान में कण्ठ ओष्ठ स्थानिक 'ओ' गुण हो गया तब 'मनोहरम्' प्रयोग सिद्ध हुआ, इसी प्रकार अन्यत्र भी जानना चाहिए।

मनः+रथः=मनोरथः (इच्छा);

मनः+गतः=मनोगतः (मन में गया हुआ);

मनः+भवः=मनोभवः (कामदेव);

तेजः+मयः= तेजोमयः (तेजमय);

पयः+दः=पयोदः (बादल);

एकत्रिंशत्तमः पाठः

विसर्गों का लोप

५—विसर्ग से पूर्व यदि ह्रस्व 'अ' हो और बाद में ह्रस्व अकार को छोड़कर अन्य कोई भी स्वर हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है।

उदाहरण

'आचार्यः+आगच्छति' यहाँ पर 'य्' के अकार से परे विसर्ग है और बाद में दीर्घ आकार है अतः विसर्ग का लोप कर देने से 'आचार्य आगच्छति' प्रयोग सिद्ध हुआ। इसी प्रकार अन्य स्थलों में समझना चाहिये।

बालकः+आगच्छति=बालक आगच्छति (लड़का आता है)

रामः+उदकेन पादौ प्रक्षालयति=राम उदकेन पादौ प्रक्षालयति। (राम पानी से पैरों को धोता है)

ऋषयः+ईश्वरं भजन्ति=ऋषय ईश्वरं भजन्ति। (ऋषि लोग ईश्वर को भजते हैं)

पाचकः+ओदनं पचति=पाचक ओदनं पचति। (रसोइया भात पकाता है)

द्रष्टव्य—पाठक गण ध्यान रक्खें कि विसर्ग के लोप हो जाने के पश्चात् पुनः स्वरों में सन्धि नहीं होती है।

६—यदि विसर्ग से पूर्व दीर्घ आकार हो और बाद में कोई स्वर हो अथवा वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवाँ वर्ण या 'य, व, र, ल, ह' हो तो भी विसर्ग का लोप हो जाता है।

उदाहरण

'किङ्कराः+अनुसरन्ति' यहाँ पर विसर्ग से पूर्व 'रा' में दीर्घ आकार है, और विसर्ग के बाद में ह्रस्व स्वर है अतः विसर्ग का लोप कर देने से 'किङ्करा अनुसरन्ति' शब्द बना। इसी प्रकार अन्य स्थलों में भी जान लेना चाहिये।

बुधाः+इच्छन्ति स्वर्गम्=बुधा इच्छन्ति स्वर्गम् (पण्डित जन स्वर्ग चाहते हैं)

गुणाः+एव=गुणा एव (गुण ही)

बालकाः+नगरं गच्छन्ति=बालका नगरं गच्छन्ति। (लड़के नगर को जाते हैं)

बालिकाः+हसन्ति=बालिका हसन्ति (लड़कियाँ हँसती हैं)

देवाः+रक्षन्ति जनान्=देवा रक्षन्ति जनान् (देवता मनुष्यों की रक्षा करते हैं)

७—यदि 'र्' परे 'र' हो तो पूर्व 'र्' का लोप करके पुनः पूर्व ह्रस्व स्वर को दीर्घ स्वर कर दिया जाता है।

उदाहरण

पुनर्+रमते=यहाँ पर 'पुनर्' से परे रमते का 'र' है अतः पुनर् के 'रेफ' का लोप करके फिर न में 'अ' दीर्घ स्वर कर देने से 'पुना रमते' (फिर खेलता है) प्रयोग बना। इसी प्रकार अन्यत्र जानना चाहिये।

नृपतिर्+रक्षति=नृपती रक्षति (राजा रक्षा करता है)

साधुर्+रमते=साधू रमते (साधु रमण करता है)

८—विसर्ग से पूर्व ह्रस्व तथा दीर्घ आकार को छोड़कर अन्य किसी भी स्वर से परे कोई स्वर हो, अथवा वर्ग का तीसरा, चौथा पाँचवाँ अक्षर हो या 'य र ल व ह' हो तो भी विसर्ग को 'र्' हो जाता है, और परवर्ती स्वर में मिला दिया जाता है।

उदाहरण

निः+आशा=यहाँ पर विसर्ग को 'रेफ' करके 'आ' में मिला देने से 'निराशा' (आशा रहित) शब्द बना। इसी प्रकार अन्यत्र भी जानना चाहिये।

दुः+उपयोगः=दुरुपयोगः (बुरा व्यवहार)

निः+गुणः=निर्गुणः (गुण रहित);

मुनिः+याति=मुनिर्याति (मुनि जाता है);

साधुः+भाषते=साधुर्भाषते (ठीक बोलता है)

९—यदि विसर्ग से पूर्व 'इ, उ हो और बाद में 'क, ख, प फ' हो तो विसर्ग को 'ष्' होता है।

उदाहरण

निः+कलङ्कः= यहाँ पर विसर्ग से पूर्व 'नि' में 'इ' है अतः विसर्ग को "ष्" करके पुनः 'ष्' को 'क' में मिलाने से 'निष्कलङ्कः' (कलङ्क-रहित) प्रयोग बना, इसी प्रकार और भी जगह समझना चाहिये।

निः+फलः= निष्फलः (फल रहित)

दुः+करः=दुष्करः (कठिन)

१० प्रायः विसर्ग से परे 'क, ख, प, फ, श, ष, स' हो तो विसर्ग का विसर्ग ही रहता है।

उदाहरण

अन्तः + करणम् = अन्तःकरणम् (हृदय)
दुः + खम् = दुःखम् (दुःख)
रामः + पठति = रामःपठति (राम पढ़ता है)

द्वित्रिंशत्तमः पाठः

१०—(एतत्तदोःसुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि)

भावार्थः यदि ह्रस्व अकार से भिन्न कोई वर्ण परे हो तो 'एषः और सः' इन दोनों शब्दों के विसर्ग का लोप हो जाता है।

उदाहरण

एषः + धर्मः सनातनः = एष धर्मः सनातनः (यह सनातन धर्म है)
सः + उवाच = स उवाच (उसने कहा)
एषः + वदति = एष वदति (यह कहता है)

अभ्यास

निम्नलिखित शब्दों का नियमानुसार सन्धि विच्छेद करोः—

कृष्णश्छिनत्ति, तरोश्छाया, निस्सारः, निश्छलः, कोऽर्थः, छात्रोऽहम्, शुद्धोऽहम्, को गतः, मनोरथः, नरा आयान्ति, अत एव, देवा इह, वीर उत्सहन्ते, यश इच्छति, हरी रम्यः, निःसन्देहः, निराधारः, भानुरुदेति, स्वर्गतः।

निम्नलिखित शब्दों की नियमानुसार सन्धि जोड़ोः—

विष्णुः + त्राता, छात्राः + तिष्ठन्ति, बुद्धः + अहम्, कः + अहम्, कः + त्वम्, सः + अहम् मनः + भवः, तेजः + मयम्, मनः + रमा, बालकाः + यान्ति, अश्वाः + ह्रेषन्ति, अतः + एव, भानुर् + राजते, निः + धनः, निः + आधारः, दुः + करः, एषः + ददाति, सः + वदति।

णत्व प्रकरणम्

त्रयस्त्रिंशत्तमः पाठः

(Change of न् in to ण्)

१—साधारण नियमः—"ऋ, ॠ, र, ष" इन चारों वर्णों से परे 'न्' को 'ण्' हो जाता है।

उदाहरण

नृ+नाम्=यहाँ पर 'न्' में 'ऋ' है इससे परे 'नाम्' के 'न्' को 'ण्' कर देने से 'नृणाम्' (मनुष्यों के) शब्द बना। इसी प्रकार अन्यत्र भी जान लेना चाहिये।

मातृ+नाम्=मातृणाम् (माताओं के)
भ्रातृ+नाम्=भ्रातृणाम् (भाइयों के)
चतसृ+नाम्=चतसृणाम् (चारों की)
चतुर्+नाम्=चतुर्णाम् (चारों के)
दोष्+नाम्=दोष्णाम् (दोषों के)
पुष्+नाति=पुष्णाति (पुष्टि करता है)

२—स्वर, कवर्ग, पवर्ग, और 'य, व, र, ह्' या 'आङ्, नुम्' ये सब बीच में व्यवधान (रुकावट) हों तो भी 'न' को 'ण' हो जाता है।

उदाहरण

राम+आयनम्=यहाँ पर 'आ' और 'य' का व्यवधान होते हुए भी 'न' को 'ण' हो गया तब 'रामायणम्' प्रयोग बना। 'वारीणि' यहाँ पर 'ई' के रुकावट में भी 'न' को 'ण कर देने से 'वारीणि' शब्द बना।

प्र+मानम्=प्रमाणम्। और भी—

'रामेण, दर्पेण, रयेण, गर्वेण, गुरुणा, ग्रहणम्' इत्यादि।

इन वर्णों से अतिरिक्त मध्य में कोई वर्ण हो तो नकार होने पर भी 'न' को 'ण' नहीं होता है।

जैसे :—'अर्थेन, रसेन, किरीटेन, अर्जुन ने, स्पर्शेन' इत्यादि में णत्व नहीं हुआ।

३—पद के अन्त में भी 'न' को 'ण' नहीं होता है। जैसे :—

"रामान्, कृष्णान्, हरीन्, गुरून्, वृद्धान्, भ्रातॄन्" इत्यादि में 'न' को "ण' नहीं हुआ।

Dative	ए (ाय)	(ा भ्याम्)	(ेभ्यः)
	बालकाय	‡बालकाभ्याम्	बालकेभ्यः
Ablative	(ात्)	(ाभ्याम्)	(ेभ्यः)
	बालकाद्	‡बालकाभ्याम्	बालकेभ्यः
{ Possessive or Genitive	अस् (स्य)	ओस् (योः)	(ानाम्)
	बालकस्य	बालकयोः	बालकानाम्
Locative	इ (े)	ओस् (योः)	(ेषु)
	बालके†	बालकयोः	बालकेषु
Vocative		ौ	ाः
	हे बालक !	हे बालकौ !	हे बालकाः !

सातों विभक्तियों के चिह्न हिन्दी में निम्न लिखित हैं :—

प्रथमा विभक्ति	ने
द्वितीया विभक्ति	को, प्रति
तृतीया विभक्ति	ने, से, साथ, द्वारा
चतुर्थी विभक्ति	के लिये, को
पञ्चमी विभक्ति	से, पृथक्
षष्ठी विभक्ति	का, की, के, रा, री, रे, ना, नी, ने
सप्तमी विभक्ति	में, पै, पर, विषय, बीच में,
सम्बोधन	हे, भो, अयि, अरे, ओ हो,

ध्यानकोष—ह्रस्व अकारान्त शब्दों में सम्बोधन के एकवचन में विसर्ग (:) नहीं लगाया जाता है। जैसे हे बालक ! इत्यादि। प्रथमा विभक्ति के एक वचन में 'बालक' के आगे विसर्ग (:) लगा देने से "बालकः" प्रयोग बना। इसी प्रकार ह्रस्व अकारान्त शब्दों के रूप एक वचन में सब स्थानों पर जान लेना चाहिये।

"संस्कृतभाषायां विभक्तिं विना शब्दान् न प्रयुञ्जीत"

भावार्थः—संस्कृत अथवा हिन्दी भाषा में विभक्ति के विना शब्दों का प्रयोग नहीं करना चाहिये।

वास्तव में क्या संस्कृत हो और क्या हिन्दी दोनों भाषाओं में वाक्य के शब्दों के आगे कोई न कोई विभक्ति अवश्य ही होती है। किसी भी वाक्य में विभक्ति के बिना शब्द का प्रयोग नहीं हो सकता है।

जिस वाक्य के शब्द में विभक्ति नहीं दीखती है; वहाँ पर विभक्ति लुप्त रहती है। जैसेः—नरेन्द्रः (मनुष्यों के स्वामी = राजा) राजपुरुषः (राजा का पुरुष = सिपाही)। मोटर स्टैण्ड (मोटर ठहरने की जगह) इत्यादि।

‡ .... चतुर्दश पाठ दीर्घ प्रकरण देखिये।
† .... एकादश पाठ गुण प्रकरण देखिये।

निम्नलिखित ह्रस्व अकारान्त शब्दों के रूप (Declensions ,"बालक" शब्द के समान ही बना लेना चाहिये ।

*१—राम (Ram) २—कृष्ण (Krishna) ३—बाल (Lad) ४ सूर्य (Sun) ५—चन्द्र (Moon) ६—पुत्र (Son) ७—शिष्य (Pupil) ८—मनुष्य (People) ९—अध्यापक (Teacher) १०—पाठ (Lesson) ११—मेघ (Cloud) १२—शिव (Shiva) १३—देव (God) १४—वंश (Family) १५—पवन (Air) १६—समय (Time) १७—कूप (Well) १८—नर्तक (Dancer) १९—वृक्ष (Tree) २०—चाप (Bow) २१—शर (Arrow) २२—दास (Servant) २३—ग्राम (Village) २४—गज (elephant) २५—दण्ड (Stick) २६—सर्प (Snake) २७ कर (Hand हाथ) २८—याग (offering यज्ञ) २९—सचिव (Minister-मंत्री) इत्यादि ।

* द्रष्टव्य— जिन अकारान्त शब्दों में 'ऋ, ॠ, र, ष' हो तो तृतीया के एक वचन में और षष्ठी के बहु वचन में 'न' को 'ण' हो जाता है ।

द्वितीयः पाठः

वाक्य विभाग (Syntax)

वर्तमान काल (Present Tense)

* प्रथमा विभक्ति के उदाहरण * (Examples of nominative case)

१—बालकः क्रीडति = The boy plays. लड़का खेलता है ।

२—बालकौ क्रीडतः = Both the boys play. दोनों लड़के खेलते हैं ।

३—बालकाः क्रीडन्ति = All the boys play. सब लड़के खेलते हैं ।

* कर्म कारक के उदाहरण * (Examples of objective case)

१—गोविन्दः कृष्णं स्पृशति = Govind touches Krishna. गोविन्द कृष्ण को छूता है ।

२—मनुष्यौ ग्रामौ गच्छतः = Both men go to the two villages. दोनों आदमी दो गाँव को जाते हैं ।

३—रामाः स्वपुत्रान् आह्वयन्ति = All Ramas call all their sons. सब राम अपने सब पुत्रों को बुलाते हैं ।

* करण कारक का उदाहरण * (Examples of instrumental case)

१—जनः दण्डेन सर्पं हन्ति = The man kills the snake with a stick. आदमी डण्डे से साँप को मारता है ।

२—मनुष्यौ दण्डाभ्याम् युध्येते = Both men fight with sticks. दोनों आदमी दण्डों से युद्ध करते हैं।

३—बालाः करैः सारमेयान् ताडयन्ति = All lads beat the dogs with the hands. लड़के हाथों से कुत्तों को पीटते हैं।

❀ संप्रदान कारक के उदाहरण❀(Examples of the dative case)

१—शिष्यः यागाय याति = The pupil goes for offering (Sacrifice) शिष्य यज्ञ करने के लिये जाता है।

२—शिक्षकः शिष्याभ्याम् उपदिशति = The teacher preaches both the pupils. शिक्षक दोनों शिष्यों को उपदेश देता है।

३—अध्यापकः शिष्येभ्यः उपदिशति = The teacher advises to all pupils. अध्यापक सब शिष्यों को उपदेश करता है।

❀अपादान कारक के उदाहरण❀(Examples of the ablative case)

१—गोपालः ग्रामाद् आगच्छति = Gopal comes from the village. गोपाल गाँव से आता है।

२—दासौ द्विग्रामाभ्यामागच्छतः = The both servants come from the two villages. दोनों नौकर दो गाँव से आते हैं।

३—मोहनो बालकेभ्यः पृथक् भवति = Mohan separates himself from all the boys. मोहन सब लड़कों से अलग होता है।

❀ सम्बन्ध कारक के उदाहरण ❀ (Examples of possessive case)

१—अयं गजो रामस्याऽस्ति = This is Ram's elephant. यह हाथी राम का है।

२—मनुष्ययोः अयंगजोऽस्ति = This elephant is of (belongs to) both the men. यह हाथी दोनों मनुष्यों का है।

३—जनानामयं नर्तको विद्यते = This dancer is of all the people. सब मनुष्यों का यह नर्तक है।

❀अधिकरण कारक के उदाहरण❀ (Examples of locative case)

१—नृपो गजे आरोहति = The king rides on the elephant. राजा हाथी पर सवार होता है।

२—नृपः सचिवयोर्मध्ये उपविशति = The king sits between both the ministers. राजा दोनों मंत्रियों के बीच में बैठता है।

३—सर्वे जनाः स्वगृहेषु उपविशन्ति=All the people sit in their houses. सब आदमी अपने घरों में बैठते हैं।

❀ सम्बोधन कारक के उदाहरण ❀ (Example of vocative case)

१—हे बालक ! त्वं किं करोषि ? O' boy ! "what thou doest" ? हे लड़के ! तू क्या करता है ?

२—बालकौ ! युवां कुत्र गच्छथः ? O' both the boys ! where do you go ? हे दोनों बालको ! तुम दोनों कहाँ जाते हो ?

३—हे बालकाः ! यूयमत्र आगच्छथ। O' boys ! come here. हे बालको ! यहाँ आओ।

द्रष्टव्यः—उपरोक्त सातों विभक्तियों के रेखाङ्कित शब्द उदाहरण हैं और उन वाक्यों में जो क्रियायें आ चुकी हैं उनके ही कुछ धातु (Roots) पाठ और कुछ क्रिया पद के रूप (Conjugations) भी यहाँ पर दिखलाते हैं।

तृतीयः पाठः ✓

वर्तमान काल (Present tense or indicative mood)

क्रीड्=खेलना, To play परस्मैपदी धातु।

क्रिया पद के रूप (Conjugations)

प्रथम पुरुष (Third person)

एक वचन Singular N.	द्वितीय वचन Dual N.	बहुवचन Plural N.
क्रीडति	क्रीडतः	क्रीडन्ति

मध्यम पुरुष (Second person)

क्रीडसि	क्रीडथः	क्रीडथ

उत्तम पुरुष (First person)

क्रीडामि	क्रीडावः	क्रीडामः

अनद्यतनभूतकाल (Past perfect tense)

प्रथम पुरुष	अक्रीडत्	अक्रीडताम्	अक्रीडन्
मध्यम पुरुष	अक्रीडः	अक्रीडतम्	अक्रीडत
उत्तम पुरुष	अक्रीडम्	अक्रीडाव	अक्रीडाम

द्रष्टव्य :—यदि आपको भूतकाल की क्रिया नहीं मालूम है तो वर्तमान काल की क्रिया (Verb) के अन्त में 'स्म' लगा देने से भूतकाल की क्रिया का बोध हो जाता है।

जैसे :—स गच्छति स्म = वह गया, या वह गया था।
तौ क्रीडतःस्म = वे दोनों खेले, या वे दोनों खेले थे।
इसी प्रकार सर्वत्र समझ लेना चाहिये।

सामान्य भविष्यत् काल (Simple future tense)

क्रिया पद के रूप

	एक वचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	क्रीडिष्यति	क्रीडिष्यतः	क्रीडिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	क्रीडिष्यसि	क्रीडिष्यथः	क्रीडिष्यथ
उत्तम पुरुष	क्रीडिष्यामि	क्रीडिष्यावः	क्रीडिष्यामः

गम् (गच्छ्) जाना (To go)

वर्तमानकाल

प्रथम पुरुष	गच्छति	गच्छतः	गच्छन्ति
मध्यम पुरुष	गच्छसि	गच्छथः	गच्छथ
उत्तम पुरुष	गच्छामि	गच्छावः	गच्छामः

अनद्यतनभूतकाल

प्रथम पुरुष	अगच्छत्	अगच्छताम्	अगच्छन्
मध्यम् पुरुष	अगच्छः	अगच्छतम्	अगच्छत
उत्तम पुरुष	अगच्छम्	अगच्छाव	अगच्छाम

सामान्य भविष्यत्काल

प्रथम पुरुष	गमिष्यति	गमिष्यतः	गमिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	गमिष्यसि	गमिष्यथः	गमिष्यथ
उत्तम पुरुष	गमिष्यामि	गमिष्यावः	गमिष्यामः

सूचना:—जिन पाठकगण को अधिक धातु रूप जानना हों तो गण प्रकरणों में देखें।

द्रष्टव्य—निम्नलिखित क्रिया पद के रूप (Conjugations) यहाँ पर केवल 'लट्, लङ्, लृट्' लकारों के प्रथम पुरुष के एक वचन में हैं।

कुछ धातु (Roots) पाठ निम्न लिखित हैं :—

संस्कृत	हिन्दी	इंगलिश	वर्तमानकाल	अनद्यतन भूतकाल	सामान्य भविष्यत्काल
उपसर्गयुक्तधातु आ+ह्वय	बुलाना	To call for	आह्वयति	आह्वयत्	आह्वास्यति
आ+गम् (आगच्छ्)	आना	To come	आगच्छति	आगच्छत्	आगमिष्यति
आ+या	आना	To come	आयाति	आयात्	आयास्यति
उप+दिश्	उपदेश करना	To preach	उपदिशति	उपादिशत्	उपदेक्ष्यति
आ+रुह	सवार होना	To ride	आरोहति	आरोहत्	आरोक्ष्यति
उप+विश्	बैठना	To sit	उपविशति	उपाविशत्	उपवेक्ष्यति
पृथक्+भू (भव)	अलग होना	To separate	पृथक् भवति	पृथगभवत्	पृथक् भविष्यति
स्पृश्	छूना	To touch	स्पृशति	अस्पृशत्	स्प्रक्ष्यति, स्पर्क्ष्यति
हन्	मारना	To kill	हन्ति	अहन्	हनिष्यति
युध्	युद्ध करना	To fight	युध्यते	अयुध्यत	योत्स्यते
ताड्	पीटना	To beat	ताडयति	अताडयत्	ताडयिष्यति
अस्	होना	To be	अस्ति	अभवत्	भविष्यति
कृ	करना	To do	करोति	अकरोत	करिष्यति

इनके अतिरिक्त दसों लकारों के रूप (Conjugations) दस गणों में देखिये।

निम्नलिखित श्लोक में 'राम' शब्द के सातों विभक्तियों के रूप बतलाइए और हिन्दी में अर्थ भी लिखिये।

रामो राजमणिःसदा विजयते, रामं रमेशं भजे।
रामेणाऽभिहता निशाचर चमू, रामाय तस्मै नमः॥
रामान्नास्ति परायणं परतरं, रामस्य दासोऽस्म्यहं।
रामे चित्तलयः सदा भवतु मे, भो राम ! मामुद्धर॥
महावीरो रामलक्ष्मणौ स्वस्कन्धयो रारोपयति स्म।

अभ्यास

संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

वर्तमान काल

(१) मैं जाता हूँ (२) वे दोनों गोविन्द को पीटते हैं। (३) तुम दोनों क्या पढ़ते हो ? (४) लड़के विद्यालय को जाते हैं। (५) मोहन पैदल जाता है (६) श्याम गोविन्द के साथ आता है। (७) राम सुरेश को कलम देता है (८) देव के लिये नमस्कार है। (९) मोहन सिंह से डरता है (१०) यह आनन्द का लड़का है। (११) घनश्याम पेड़ पर चढ़ता है (१२) तुम सब पढ़ने का काम करते हो (१३) हम सब लिखने का काम करते हैं।

भूत काल

(१) सूर्य उदय हुआ (२) माधव बाजार गया था (३) शिष्य ने अपना पाठ पढ़ लिया ४) राम ने बाण से रावण को मारा। (५) श्याम ने गरीबों को वस्त्र दिया (६) गोविन्द के हाथ से पुस्तक गिर पड़ी (७) सोहन गाँव से स्कूल चला गया (८) राम का धनुष था (९) कृष्ण की बंशी थी (१०) कृष्ण कदम्ब के पेड़ पर चढ़ गया (११) उसने अपना काम कर लिया। देवेन्द्र ने दोनों बालकों को अपने कन्धों पर बैठाया था।

भविष्यत्काल

(१) राम पढ़ेगा (२) गोविन्द सोयेगा (३) देवेन्द्र विद्यालय जायेगा। (४) मोहन सोहन के साथ जायेगा (५) सुरेन्द्र महेन्द्र को पुस्तक देगा (६) नरेन्द्र इन्द्र के लिये लड्डू लायेगा (७) रामनारायण प्रयाग से आयेगा (८) महीपाल विद्यालय से आयेगा। (९) मोहन का भाई होगा (१०) राकेश की किताब होगी। (११) भूदेव आसन पर बैठेगा (१२) प्रेमराज घर में होगा।

द्रष्टव्य—कठिन शब्दों की संस्कृत निम्न प्रकार है। परन्तु जहाँ अव्यय (Preposition) रहता है; वहाँ 'नमः' के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है और जहाँ पर 'नमः' क्रिया (verb) रहती है, वहाँ पर द्वितीया विभक्ति (Inflection) होती है।

जैसेः—श्री गणेशाय नमः (चतुर्थी विभक्ति है)। स नमस्करोति देवान् (द्वितीया विभक्ति है)

हिन्दी	संस्कृत	हिन्दी	संस्कृत
मैं	अहम्	वे दोनों	तौ उभौ
तुम दोनों	यूवाम्	क्या	किम्
पैदल	पादाभ्याम्,पदाति	देता है	ददाति
नमस्कार है	नमः	डरता है	बिभेति
यह	अयम्	तुम सब	यूयम्
हम सब	वयम्	उदय हुआ	उदेति स्म
पढ़लिया	अपठत्	गिर पड़ी	अपतत्
दिया	अददात्	बैठा था	आस्ते स्म / उपविशति स्म
था	आसीत्	चढ़ गया	आरोहति स्म
बैठाया था	आरोपयति स्म	पढ़ेगा	पठिष्यति
सोयेगा	शयिष्यते	देगा	दस्यति
लायेगा	आनेष्यति	भाई	भ्राता
बैठा होगा	स्थास्यति		

अँग्रेजी के वाक्य (Sentence) बनाने में पहिले कर्ता (Subjcct), फिर क्रिया (Verb), फिर कर्म (Object), फिर क्रिया विशेषण (Adverb), इत्यादि लगाये जाते हैं। जैसेः—

He kills the lion well. वह शेर को अच्छी तरह से मारता है।

परन्तु संस्कृत में यह नियम है कि सातों (विभक्तियों) (Inflexions) के चिन्ह (Signs) होते हैं। वे ही चिन्ह 'कर्ता कर्म' आदि को साफ साफ प्रगट कर देते हैं। इस लिये 'कर्ता, कर्म, क्रिया' का बोध विभक्ति द्वारा ही होता है। अतः वाक्य बनाने में कर्ता, कर्म और क्रिया का कोई निश्चित स्थान निर्दिष्ट नहीं होता है। जैसेः—

रामो सिंहं हन्ति, सिंहं रामो हन्ति, हन्ति सिंहं रामः। इन तीनों वाक्यों का एक ही अर्थ है 'राम सिंह को मारता है' परन्तु वाक्य की रचना में भेद है। इसी प्रकार से और भी स्थानों पर जान लेना चाहिये।

अंग्रेजी में विभक्तियों (Inflexions) का कोई खास निश्चित चिन्ह (sign) नहीं होता परन्तु उसके स्थान पर अव्यय Preposition लगाकर अर्थ निकालते हैं। जैसेः—लोभात क्रोधो भवति—

१—The anger comes out of greed. लोभ से क्रोध होता है। यहाँ पर 'of' का अर्थ 'से' निकलता है।

२ I never heard of it. मैंने इस विषय में कुछ नहीं सुना। यहाँ पर 'of' का अर्थ 'विषय में' निकलता है।

३—Man of intelligence. बुद्धिमान् मनुष्य। यहाँ पर 'of' का अर्थ कुछ भी नहीं निकलता है।

४ - I have headache. मेरे सिर में दर्द है। यहाँ पर 'मेरे और में' की कोई खास इंगलिश नहीं हैं।

५ – The climate of Allahabad is better than that of Delhi. इलाहाबाद की जलवायु देहली की जलवायु से अच्छी है। यहाँ पर पहिले 'of' का अर्थ, 'की' निकलता है और दूसरे 'of' का अर्थ 'से' निकलता है। इसी प्रकार और जगह भी समझ लेना चाहिये।

चतुर्थः पाठः

दीर्घ अकारान्त (Noun Ending in Vowel आ)

'विश्वपा' संसार की रक्षा करने वाला

	एक बचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	विश्वपाः	विश्वपौ	विश्वपाः
द्वि०	विश्वपाम्	विश्वपौ	विश्वपः
तृ०	विश्वपा	विश्वपाभ्याम्	विश्वपाभिः
च०	विश्वपे	विश्वपाभ्याम्	विश्वपाभ्यः
पं०	विश्वपः	विश्वपाभ्याम्	विश्वपाभ्यः
ष०	विश्वपः	विश्वपोः	विश्वपाम्
स०	विस्वपि	विश्वपोः	विश्वापासु
सं०	हे विश्वपाः !	हे विश्वपौ !	हे विश्वपाः !

इसी प्रकार 'गोपा' गौ की रक्षा करने वाला और 'शंखध्मा' (शंख-बजाने वाला) इत्यादि शब्दों के रूप (Declension) चलते हैं।

'हाहाः' (गन्धर्व) शब्द के रूपों में कुछ अन्तर है।

प्र०	हाहाः	हाहौ	हाहाः
द्वि०	हाहाम्	हाहौ	हाहान्
तृ०	हाहा	हाहाभ्याम्	हाहाभिः
च०	हाहै	हाहाभ्याम्	हाहाभ्यः
पं०	हाहाः	हाहाभ्याम्	हाहाभ्यः

ष०	हाहाः	हाहौः	हाहाम्
स०	हाहे	हाहौः	हाहासु
सं०	हे हाहाः !	हे हाहौ !	हे हाहाः !

इसी प्रकार 'थाना' (Police Station) शब्द के रूप (Declension) समझना चाहिये।

पञ्चमः पाठः

ह्रस्व इकारान्त (Noun ending in vowel 'इ')

सुप् प्रत्यय (suffixes) और 'मुनि' (sage) शब्द के रूप भी एक साथ निम्न-लिखित हैं।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	सु (ः)	ई (ी)	अस् (अयः)
	मुनिः	मुनी*	मुनयः
द्वि०	म्	ई (ी)	ईन् (ीन्)
	मुनिम्	मुनी*	मुनीन्
तृ०	ना	भ्याम्	भिस् (भिः)
	मुनिना	मुनिभ्याम्	मुनिभिः
च०	अये	भ्याम्	भ्यः
	मुनये	मुनिभ्याम्	मुनिभ्यः
पं०	एः (ेः)	भ्याम्	भ्यः
	मुनेः	मुनिभ्याम्	मुनिभ्यः
ष०	एः (ेः)	ओस् (ोः)	इनाम्
	मुनेः	मुन्योः †	मुनीनाम् *
स०	(ौ)	ओस् (ोः)	षु
	मुनौ	मुन्योः †	मुनिषु
सं०	ए (े) !	ई (ी) !	अस् (अयः) !
	हे मुने !	हे मुनी !	हे मुनयः !

इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दों के रूपों (Declensions) का अभ्यास करना चाहिए।

१—ऋषि (Saint) २—यति (Hermit सन्यासी) ३—कवि (Poet) ४—विधि (Fate ब्रह्मा) ५—रवि (Sun) ६—गिरि (Mountain पर्वत) ७—अग्नि (Fire) ८—अतिथि (Guest) ९—कपि (Monkey बन्दर) १०—असि (Sword) तलवार।

---

*अच् सन्धि—१५वाँ पाठ दीर्घ प्रकरण देखिये।

† १०वाँ पाठ यण् प्रकरण देखिये।

परन्तु पाठक गण ध्यान रक्खें कि 'सखि' शब्द के रूप उपरोक्त शब्दों से भिन्न प्रकार के होते हैं।

'सखि' (friend मित्र)

	एक वचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	सखा	सखायौ	सखायः
द्वि०	सखायम्	सखायौ	सखीन्
तृ०	सख्या	सखिभ्याम्	सखिभिः
च०	सख्ये	सखिभ्याम्	सखिभ्यः
पं०	सख्युः	सखिभ्याम्	सखिभ्यः
ष०	सख्युः	सख्योः	सखीनाम्
स०	सख्यौ	सख्योः	सखिषु
सं०	हे सखे !	हे सखायौ !	हे सखायः !

पतिः (Lord)

प्र०	पतिः	पती	पतयः
द्वि०	पतिम्	पती	पतीन्
तृ०	पत्या	पतिभ्याम्	पतिभिः
च०	पत्ये	पतिभ्याम्	पतिभ्यः
पं०	पत्युः	पतिभ्याम्	पतिभ्यः
ष०	पत्युः	पत्योः	पतीनाम्
स०	पत्यौ	पत्योः	पतिषु
सं०	हे पते !	हे पती !	हे पतयः !

उदाहरण

१ गोपाःगाम् आनयति = Milkman brings the cow. ग्वाला गाय लाता है।

२ शंखध्माः शंखान् प्रदध्मुः = The Conchmen blew Conches. शंख बजाने वालें ने शंख बजाये।

१—आदिः कविः वाल्मीकिरासीत् = Valmiki was the first poet.
आदि कवि बाल्मीकि जी थे।

२—मुनयः मौनव्रतं धारयन्ति = The sages take a vow of silence.
मुनि लोग मौनव्रत को धारण करते हैं।

३—विधिः संसारमरचयत् = The fate created the world. ब्रह्मा ने संसार को बनाया।

४—अग्निः पाणिं दहति = The fire burns the hand. अग्नि हाथ को जलाती है।

५—अग्निना हस्तः भस्मीभवति = The fire has burnt the hand. अग्नि से हाथ जल गया है।

६—असिभिः युद्धोऽभवत् = There was a sword-fight. तलवारों से युद्ध हुआ।

७—गोविन्दोऽतिथिभ्यो जलं ददाति = Govind gives the water for guests (to the guests). गोविन्द अथितियों के लिये पानी देता है।

८—श्यामो हरेः पृथग्भवति = Shyam separates himself from Hari. श्याम हरि से अलग होता है।

९—रवेः प्रकाश आयाति = Light comes from the Sun. सूर्य से प्रकाश आता है।

१०—सुग्रीवो रामस्य सखा आसीत् = Sugrive was Ram's friend. सुग्रीव राम का मित्र था।

११—कवीनां वचनेषु माधुर्य-भवति = There is a sweetness in poet's voice. कवियों के वचनों में मधुरता होती है।

१ —अनुकूले विधौ नराणां सर्वाणि कार्याणि सिध्यन्ति = All acts of men depend on the mercy of God. दैव के अनुकूल होने पर मनुष्यों के सब काम सिद्ध हो जाते हैं।

अभ्यास

निम्नांङ्कित का सरल संस्कृत में अनुवाद कीजिये।

(१) हरि पाणि से कपि को छूता है। (२) कवि हरि को प्रणाम करता है। (३) सेनापति ने तलवार को हाथ में उठा लिया था। (४) ऋषि अञ्जलि से जल पीता है। (५) रवि यति के साथ जाता है। (६) ब्रह्मर्षि पैदल आते हैं। (७) विधि अतिथि के लिये भोजन लाता है। (८) यति रवि को जल देता है। (९) सेनापति से हरि तलवार पकड़ता है। (१०) ब्रह्मर्षि गिरि से उतरता है। (११) तलवार हाथ से गिर पड़ी (१२) हरि से रवि नहीं डरता है। (१३) रवि का मित्र हरि है। (१४) ऋषि का मित्र विधि है। (१५) यतिलोग पहाड़ों में रहते हैं। (१६) (१६) रवि हरि के कन्धे पर बैठा है। (१७) हरि थाने में गया है।

उपरोक्त हिन्दी वाक्यों में कठिन क्रियापद के रूप निम्नलिखित हैं :—

हिन्दी	संस्कृत	हिन्दी	संस्कृत
प्रणाम करता है	प्रणमति	उठा लिया था	उदस्थात्
पीता है	पिबति	आते हैं	आयान्ति
लाता है	आनयति	पकड़ता है	गृह्णाति
उतरता है	अवतरति	रहते हैं	निवसन्ति
बैठा है	उपविष्टवानस्ति		

षष्ठः पाठः

दीर्घ ईकारान्त (Noun ending in vowel 'ई')

पपी (The sun सूर्य ।)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	पपीः	पप्यौ	पप्यः
द्वि०	पपीम्	पप्यौ	पपीन्
तृ०	पप्या	पपीभ्याम्	पपीभिः
च०	पप्ये	पपीभ्याम्	पपीभ्यः
पं०	पप्यः	पपीभ्याम्	पपीभ्यः
ष०	पप्यः	पप्योः	पप्याम्
स०	पपी	पप्योः	पपीषु
सं०	हे पपीः !	हे पप्यौ !	हे पप्यः !

इसी प्रकार 'वातप्रमीः (The black deer काला मृग, शीघ्रगामी मृग) शब्द के रूप जान लेना चाहिये। परन्तु 'सुधी' (a man of wit= अच्छी बुद्धिवाला) शब्द के रूपों में कुछ अन्तर है।

	एक वचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	सुधीः	सुधियौ	सुधियः
द्वि०	सुधियम्	सुधियौ	सुधियः
तृ०	सुधिया	सुधीभ्याम्	सुधीभिः
च०	सुधिये	सुधीभ्याम्	सुधीभ्यः
पं०	सुधियः	सुधीभ्याम्	सुधीभ्यः
ष०	सुधियः	सुधियोः	सुधियाम्

स०	सुधियि	सुधियोः	सुधीषु
सं०	हे सुधीः !	हे सुधियौ !	हे सुधियः !

इसी प्रकार 'कुधी' (Despicable wit नीच बुद्धिवाला है)।

'मन्दधी' (Dullard मन्द बुद्धिवाला) ' सुश्री (Richman लक्ष्मीवान्)। 'यवक्री (Barley buyer) जौ खरीदने वाला। इत्यादि शब्दों के रूप (Declensions) सुधी शब्द के समान चला लेने चाहिये।

सप्तमः पाठः

ह्रस्व उकारान्त (Noun ending in vowel 'उ')

सुप् प्रत्यय (Suffixes) और 'भानु' (The sun) शब्द के रूप साथ साथ निम्न लिखित हैं।

	एक वचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	सु (:)	†ऊ (ू)	अवः
	भानुः	भानू	भानवः
द्वि०	म्	†ऊ (ू)	†ऊन् (ून्)
	भानुम्	भानू	भानून्
तृ०	ना	भ्याम्	भिस् (भिः)
	भानुना	भानुभ्याम्	भानुभिः
च०	अवे	भ्याम्	भ्यः
	भानवे	भानुभ्याम्	भानुभ्यः
पं०	ओः (ोः)	भ्याम्	भ्यः
	भानोः	भानुभ्याम्	भानुभ्यः
ष०	ओः (ोः)	ओः (वोः)*	†ऊनाम (ूनाम्)
	भानोः	भान्वोः	भानूनाम्
स०	औ (ौ)	ओः (वोः)*	षु
	भानौ	भान्वोः	भानुषु
सं०	ओ (ो)	ऊ	अवः
	हे भानो !	हे भानू !	हे भानवः !

इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दों के रूप (Declension) चला लेने चाहिये।

सूचना—* अच्सन्धि में १०वाँ पाठ यण् सन्धि देखें।

† १५वां पाठ दीर्घ सन्धि देखिए।

१—सूनु (Son बेटा) २—प्रभु (Lord स्वामी) ३—गुरु (Preceptor) ४—इन्दु (Moon चन्द्रमा) ५—वायु (Wind हवा) ६—पांसु (Dust धूलि) ७—साधुः (Sage) ८—बन्धु (Relative कुटुम्बी) ९—सिन्धु (Sea समुद्र) १०—विधु (Moon चन्द्रमा) ११—शत्रु (Enemy बैरी) १२—इषु (Arrow बाण) १३—बाहु (Arm भुजा) १४—परशु (Axe कुल्हाड़ी) १५—पशु (beast Animal) चौपाया जानवर) १६—लघु (Younger छोटा) १७—शिशु (Child बच्चा) इत्यादि ।

उदाहरण

१—हे सूनो ! त्वं कुत्र गच्छसि ?O' Son ! where dost thou go ? हे पुत्र ! तू कहाँ जाता है ?

२—अहं स्वगुरोः गृहं गमिष्यामि = I shall go to the house of my preceptor. मैं अपने गुरु जी के घर जाऊँगा ।

३—एष वसन्त ऋतुरस्ति = This is the spring season. यह बसन्त ऋतु है ।

४—पांसवः शिरसि आरोहन्ति = The dusts ascend upon the head. धूलियाँ शिर पर पड़ती हैं ।

५—हरिः इषुभिः शत्रून् अहन् = Hari killed the enemies with the arrows. हरि ने बाणों से शत्रुओं को मारा ।

६—अहं गुरुणा सह गच्छामि = I go with the teacher (Guru) मैं गुरु के साथ जाता हूँ ।

७—साधवे नमः Salute for the saint.
साधु के लिये नमस्कार है ।

८—विष्णुः साधुभ्यो वस्त्राणि ददाति = Vishnu gives clothes to hermits. विष्णु साधुओं को वस्त्र देता है ।

९—मम कनिष्ठःसूनुः पशोर्बिभेति My younger son fears the beast. मेरा छोटा लड़का पशु से डरता है ।

१०—इन्दुः सिन्धोः प्रादुर्भूतः = The moon is born of the ocean. चन्द्रमा समुद्र से उत्पन्न हुआ है ।

११—वायोः सखा अग्निरस्ति = Fire is the friend of the wind. वायु का मित्र अग्नि है ।

१२—साधुषु मनुष्याणां विश्वासो भवति = People believe the holymen. सज्जनों पर मनुष्यों का विश्वास होता है ।

अभ्यास

निम्नलिखित वाक्यों का सरल संस्कृत में अनुवाद कीजिए :—

(१) सूर्य दिन का प्रभु है। (२) भानु ईख चूसता है। (३) बेटा साधुओं से धर्म पूछता है। (४) हरि भिक्षुओं को अन्न देता है (५) गुरु जी के बाहु में दर्द होता है। (६) नल ने पुल को बनाया। (७) शत्रु कुल्हाड़ी से लकड़ी फाड़ता है। (८) हवा से धूल उड़ती है। (९) विधु का शत्रु राहु है। (१० प्रभु के बाण से शत्रु भागते हैं। (११) यह छोटा शिशु गुरु जी का है। (१२) चन्द्रमा समुद्र से निकला है। (१३) राजा इक्ष्वाकु के बन्धु मनु थे।

कठिन हिन्दी शब्दों के संस्कृत पर्यायवाची निम्नलिखित हैं।

हिन्दी	संस्कृत	हिन्दी	संस्कृत
ईख	इक्षुः	चूसता है	चूषति
पूछता है	पृच्छति	दर्द होता है	तुदति
पुल को	सेतुम्	बनाया	अरचयत्
लकड़ी	दारु (काष्ठम्)	फाड़ता है	भिनत्ति
उड़ती है	उत्पतति	भागते हैं	पलायन्ते
निकला है	प्रादुर्भूतः		

अष्टम पाठः

दीर्घ ऊकारान्त (Noun Ending in Vowel 'ऊ')

'स्वयंभूः' = स्वयम् उत्पन्न होने वाला (One who is born-himself)

	एक वचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	स्वयम्भूः	स्वयम्भुवौ	स्वयम्भुवः
द्वि०	स्वयम्भुवम्	स्वयम्भुवौ	स्वयम्भुवः
तृ०	स्वयम्भुवा	स्वयम्भूभ्याम्	स्वयम्भूभिः
च०	स्वयम्भुवे	स्वयम्भूभ्याम्	स्वयम्भूभ्यः
पं०	स्वयम्भुवः	स्वयम्भूभ्याम्	स्वयम्भूभ्यः
ष०	स्वयम्भुवः	स्वयम्भुवोः	स्वयम्भुवाम्
स०	स्वयम्भुवि	स्वयम्भुवोः	स्वयम्भूषु
सं०	हे स्वयम्भूः !	हे स्वयम्भुवौ !	हे स्वयम्भुवः

इसी प्रकार अन्य दीर्घ ऊकारान्त शब्दों के रूप (Declensions) समझ लेना चाहिये।

परन्तु बर्षाभू: (Frog मेढक) शब्द के रूपों (Declensions) में कुछ अन्तर है—

प्र०	बर्षाभू:	बर्षाभ्वौ	बर्षाभ्वः
द्वि०	बर्षाभ्वम्	बर्षाभ्वौ	बर्षाभ्वः
तृ०	बर्षाभ्वा	बर्षाभूभ्याम्	बर्षाभूभिः
च०	बर्षाभ्वे	बर्षाभूभ्याम्	बर्षाभूभ्यः
पं०	बर्षाभ्वः	बर्षाभूभ्याम्	बर्षाभूभ्यः
ष०	बर्षाभ्वः	बर्षाभ्वोः	बर्षाभ्वाम्
स०	बर्षाभ्वि	बर्षाभ्वोः	बर्षाभूषु
सं०	हे बर्षाभूः !	हे बर्षाभ्वौ !	हे बर्षाभ्वः !

इसी 'प्रकार दृनभू, करभू' इत्यादि और भी दीर्घ ऊकारान्त शब्दों के रूप (Declension) चला लेना चाहिये।

नवमः पाठः

ह्रस्व ऋकारान्त (Noun Ending in Vowel 'ऋ')

सुप् प्रत्यय (Suffixes) और पितृ (Father) शब्द के साथ साथ रूप (Declensions) भी निम्नलिखित हैं।

	एक वचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	(०)	औ (ौ)	अस् (अः)
	पिता	पितरौ	पितरः
द्वि०	म्	औ (ौ)	न्
	पितरम्	पितरौ	पितॄन्
तृ०	आ (ा)	भ्याम्	भिस् (भिः)
	पित्रा	पितृभ्याम्	पितृभिः
च०	ए (े)	भ्याम्	भ्यः
	पित्रे	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
पं०	उस् (उः)	भ्याम्	भ्यः
	पितुः	पितृभ्याम्	पितृभ्यः

ष०	उस् (उः)	ओस् (ोः)	नाम्
	पितुः	पित्रोः	पितॄणाम्
स०	इ (ि)	ओस् (ोः)	षु
	पितरि	पित्रोः	पितृषु
सं०	(:)	औ	अस् (अः)
	हे पितः !	हे पितरौ !	हे पितरः !

इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दों के रूप (Declensions) चला लेना चाहिये।

१—भ्रातृ (Brother भाई) २—नृ (Man नर) ३—जामातृ (Son-in-law जमाई, दामाद) ४—देवृ (Brother-in-law देवर) इत्यादि

कर्तृ (Doer) करने वाला

	एक वचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	कर्ता	कर्तारौ	कर्तारः
द्वि०	कर्तारम्	कर्तारौ	कर्तॄन्
तृ०	कर्त्रा	कर्तृभ्याम्	कर्तृभिः
च०	कर्त्रे	कर्तृभ्याम्	कर्तृभ्यः
पं०	कर्तुः	कर्तृभ्याम्	कर्तृभ्यः
ष०	कर्तुः	कर्त्रोः	कर्तॄणाम्
स०	कर्तरि	कर्त्रोः	कर्तृषु
सं०	हे कर्तः !	हे कर्तारौ !	हे कर्तारः !

द्रष्टव्य :—पाठक गण ध्यान रक्खें कि यहाँ पर 'पितरौ' के समान 'कर्तारौ' नहीं हुआ है और 'पितरः' के समान 'कर्तारः' नहीं हुआ है।

निम्नलिखित शब्दों के रूप 'कर्तृ' शब्द के समान ही चला लेना चाहिये।

१—दातृ (Giver देने वाला) २—गन्तृ (Goer जाने वाला) ३—वक्तृ (Speaker बोलने वाला) ४—श्रोतृ (Hearer सुनने वाला) ५—हन्तृ (Killer मारनेवाला) ६—सवितृ (The sun सूर्य) ७—विजेतृ (Conqueror जीतने वाला ८—स्रष्टृ (Creator उत्पन्न करने वाला ९—निर्मातृ (Maker or creator निर्माण करने वाला) १०—होतृ Sacrificer or priest यज्ञ करने वाला) ११—भर्तृ (Lord or Husband स्वामी, पति) इत्यादि जान लेने चाहिये।

उदाहरण

१—भ्राता स्वभ्रात्रा सह गच्छति = The brother goes with his brother. भाई अपने भाई के साथ जाता है।

२—पुत्रः स्वपितरं प्रीणाति = The son gratifies his father. पुत्र अपने पिता को प्रसन्न करता है।

३—दाता होतृभ्यः पुस्तकानि ददाति = The giver gives books to the priests. दाता यज्ञ करने वालों को पुस्तकें देता है।

४—मोहनः स्वजामात्रे वस्त्राणि ददाति = Mohan gives clothes to his son-in-law. मोहन अपने जमाई को वस्त्र देता है।

५—रामः स्वभ्रातुः पृथग् भवति = Ram separates himself from his brother. राम अपने भाई से अलग होता है।

६—वक्तुः मुखे माधुर्यमस्ति = There is a sweetness in the mouth (speach) of the speaker. वक्ता के मुख में मधुरता है।

७—स्वभ्रातरि विश्वासं कुरु = Believe your brother. अपने भाई पर विश्वास करो।

८—देवुः भ्राता मम पतिरस्ति = Brother-in-law's brother is my husband. देवर का भाई मेरा पति है।

अभ्यास

निम्नाङ्कित का सरल संस्कृत में अनुवाद कीजिए :—

(१) वर्षा काल में मेढक बोलते हैं। (२) लक्ष्मण अपने भाई के साथ वन को गया। (३) लोग नेताओं के पीछे पीछे चलते हैं। (४) ब्रह्मा ने वेदों को बनाया। (५) भाषण देने वाला भाषण देता है। (६) सुनने वाले सुनते रहते हैं और जाने वाले चले जाते हैं। (७) पुत्र बाप के लिये धोती लाता है। (८) विजेता युद्ध करने के लिये संग्राम में आते हैं। (९) भीम के भाई अर्जुन पर कर्ण ने बाण चलाया। (१०) मारने वाले प्राङ्गण में आते हैं।

हिन्दी	संस्कृत	हिन्दी	संस्कृत
पीछे पीछे चलते हैं	अनुगच्छन्ति	बनाया	अरचयत्
धोती	परिधानम्	लाता है	आनयति
चलाया	अक्षिपत्		

तृतीयोऽध्यायः

अथ अजन्त स्त्रीलिङ्ग प्रकरणम्

(Feminine ending in vowels)

प्रथमः पाठः

रूप साधन के नियम = (Rules of Declensios)

आकारान्त (Nouns ending in vowel 'आ')

सुप् प्रत्यय (Suffixes) और साथ साथ लता (Creeper) शब्द के रूप (Declensions) निम्नलिखित हैं :—

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	(०)	ए (े)❀	अस् (ा :)†
	लता	लते	लताः
द्वि०	म्	ए (े)❀	अस् (ाः)†
	लताम्	लते	लताः
तृ०	या	भ्याम्	भिः
	लतया	लताभ्याम्	लताभिः
च०	यै	भ्याम्	भ्यः
	लतायै	लताभ्याम्	लताभ्यः
पं०	यास् (याः)	भ्याम्	भ्यः
	लतायाः	लताभ्याम्	लताभ्यः
ष०	यास् (याः)	योः	नाम्
	लतायाः	लतयोः	लतानाम्
स०	याम्	योः	सु
	लतायाम्	लतयोः	लतासु
स०	ए (े)	ए (े)	(:)
	हे लते !	हे लते !	हे लताः !

इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दों के रूप (Declensions) चला लेने चाहिये ।

❀ द्वादश पाठ गुण प्रकरण देखिये ।

† पञ्चदश पाठ दीर्घ प्रकरण देखिये ।

१—पाठशाला (School) २—रमा (Lakshmi) ३—शाला (Place) ४—कथा (Story) ५-शिला (Stone) ६—वनिता (Woman) ७—भार्या (Wife) ८—कला (Art) ९—तृष्णा (Thirst) १०—प्रभा (Light) ११—देवता (Deity or god) १२—आज्ञा (Command) १३—माला (Garland) १४—इच्छा (Desire) १५—सभा (Meeting) १६—शोभा (Beauty) १७—विद्या (Learning) १८—लज्जा (Shame) १९—आशा (Hope उम्मेद) २०—महिला (Lady) इत्यादि

उदाहरण

१—लताः वृक्षेषु आरोहन्ति = The creepers ascend the trees लताएँ पेड़ों पर चढ़ती हैं।

२—बालिकाः पाठशालां गच्छन्ति = The girls go to the school. लड़कियाँ पाठशाला जाती हैं।

३—भर्ता स्वभार्यया सह याति = Husband goes with his wife, पति अपनी पत्नी के साथ जाता है।

४—भर्ता स्वभार्यायै शाटिकामानयति = Husband brings saree for his wife, पति अपनी स्त्री के लिये साड़ी लाता है।

५—भर्ता भार्यायाः पृथग् भवति = Husband separates himself from his wife, स्वामी अपने स्त्री से अलग होता है।

६—अस्मिन् संसारे तृष्णायाः किञ्चिदन्तो नास्ति = There is no end of thirst (desire) in this world, इस संसार में तृष्णा का कोई अन्त नहीं है।

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिए :—

चला लक्ष्मीश्चला प्राणाः, चलो देहेऽथ यौवनम्।
चलाचलश्च संसारः कीर्तिर्धर्मश्च निश्चलः॥

निम्नाङ्कित वाक्यों का सरल संस्कृत में अनुवाद कीजिए।

(१) भार्या लज्जा करती है (२) शकुन्तला लताओं के बीच में बैठी है (३) महिलाएँ महलों में रहा करती हैं (४) रमा की शोभा देखो (५) प्रजा राजा की आज्ञा पालन करती है (६) शारदा की प्रसिद्धि विद्या से

होती है (७) याचना से शकुन्तला गिरती है (८) गोविन्द अपनी ललना के लिये वस्त्र लाता है (९) लड़कियाँ स्कूल से आती हैं (१०) वराङ्गनाएँ अपने पति की आज्ञा मानती हैं (११) लज्जा नारियों का भूषण है (१२) स्त्रियाँ नाक में आभूषण धारण करती हैं (१३) मनोरमा भूख और प्यास से व्याकुल हो रही है।

हिन्दी	संस्कृत	हिन्दी	संस्कृत
याचना से	याच्ञया	नाक में	नासिकायाम्
भूख से	क्षुधया	प्यास से	तृष्णया (तृषया)

द्वितीयः पाठः

ह्रस्व इकारान्त (Noun Ending in Vowel 'इ')

'मति' (Intellect बुद्धि)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	मतिः	मती	मतयः
द्वि०	मतिम्	मती	मतीः
तृ०	मत्या	मतिभ्याम्	मतिभिः
च०	मत्यै, मतये	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
पं०	मत्याः, मतेः	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
ष०	मत्याः, मतेः	मत्योः	मतीनाम्
स०	मत्याम्, मतौ	मत्योः	मतिषु
सं०	हे मते !	हे मती !	हे मतयः !

इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दों के रूप (Declension) चला लेने चाहिये।

१—बुद्धि (Talent मति) २—नीति (Policy) ३—रात्रि (Night) ४—भक्ति (Devotion) ५—मुक्ति (Salvation) ६—कीर्ति (Fame) ७—प्रीति (Love प्यार) ८—सृष्टि (Universe संपूर्ण जगत्) ९—गति (Motion, Movement) १०—भूमि (Earth) ११—सुकृति (A good action, virtue) इत्यादि।

उदाहरण

१—ललना प्रकृत्या चारुरस्ति = Woman is beautiful by nature स्त्री स्वभाव से सुन्दर होती है।

२—रमायाः अधिका बुद्धिर्भवति = Lakshmi has much talents रमा की अधिक बुद्धि होती है।

३—सृष्ट्यां तस्याः कीर्तिः विस्तृतवती अस्ति = Her fame has spread in the universe. संसार में उसकी कीर्ति फैल गई है (फैल चुकी है)

४—चन्द्रो निशायाः पतिरस्ति = Moon is the lord of the night चन्द्रमा रात्रि का स्वामी है

५—निशि चन्द्रमा प्रकाशते = The moon shines in the night. चन्द्रमा रात्रि में प्रकाश करता है।

अभ्यास

निम्नाङ्कित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए।

(१) स्त्रियाँ स्वभाव से चञ्चल होती हैं (२) कन्या शक्ति की उपासना करती है (३) और शक्ति से भक्ति माँगती है (४) ओषधियाँ रात में खिलती हैं (५) अवनि में सुकृति से कीर्ति होती है (६) सृष्टि में सुकृति से मुक्ति होती है। (७) अपकीर्ति से मृत्यु होती है।

तृतीयः पाठः

दीर्घ इकारान्त (Noun Ending in Vowel 'ई')

नदी (River)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	नदी	नद्यौ	नद्यः
द्वि०	नदीम्	नद्यौ	नदीः
तृ०	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः
च०	नद्यै	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
पं०	नद्याः	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
ष०	नद्याः	नद्योः	नदीनाम्
स०	नद्याम्	नद्योः	नदीषु
सं०	हे नदि !	हे नद्यौ !	हे नद्यः !

इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दों के रूप चला लेने चाहिए।

१—नारी (Woman) २—गृहिणी (Lady, wife) ३—मही (The earth पृथिवी) ४—जननी (Mother माता) ५—दासी, (maid चेरी) ६—

पुरी (Town नगरी) ७—कौमुदी (Moonlight चाँदनी, चन्द्रमा का प्रकाश) इत्यादि ।

उदाहरण

१—जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी = Mother and the mother land are both superior to heaven. जननी और जन्मभूमि स्वर्ग से भी अधिक बढ़कर है ।

२—जननी दासीमाह्वयति = Mother calls the maid servant. माँ नौकरानी को बुलाती है ।

३—नारी स्वकरेण लतां स्पृशति = The woman touches a creeper with her hand. स्त्री अपने हाथ से लता को छूती है ।

४—नदी पुर्याः क्रोशो दूरी भवति = The river is at a distance of one Kosha (two miles) from the town. नदी पुरी से कोस भर दूरी है ।

५—वनिताः स्नानाय नद्यां गतवन्त्यः सन्ति = Women have gone the river to bathe. स्त्रियाँ स्नान के लिये नदी पर गई हैं । (जा चुकी हैं)

अभ्यास

निम्नलिखित श्लोक का हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

धैर्यं यस्य पिता, क्षमा च जननी, शान्तिश्चिरं गेहनी ।
सत्यं सूनुरयं, दया च भगिनी, भ्राता मनः संयमः ॥
शय्या भूमितलं, दिशोऽपि वसनं, ज्ञानामृतं भोजनम् ।
एते यस्य कुटुम्बिनो वद सखे ! कस्माद् भयं योगिनः ॥

निम्नाङ्कित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए ।

(१) बहिन माँ की गोदी में है । (२) नारियाँ स्नान के लिये नदी को जाती हैं । (३) चिन्ता चित्त को जलाती है । (४) गलियों में लड़कियाँ खेलती हैं । (५) रानी नौकरानी को बुलाती है । (६) दासी रानी से अलग होती है । (७) शकुन्तला सखियों को बुलाती है ।

कठिन शब्दों के संस्कृत रूपांतर

हिन्दी	संस्कृत	हिन्दी	संस्कृत
गोदी में	उत्सङ्गे, क्रोडे	जलाती है	दहति
गलियों में	वीथीषु	रानी	महिषी, राज्ञी
सखियों को	आलीः		

चतुर्थ पाठः

ह्रस्व उकारान्त (Noun ending in vowel 'उ')

धेनु (Cow गाय)

	एक वचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	धेनुः	धेनू	धेनवः
द्वि०	धेनुम्	धेनू	धेनूः
तृ०	धेन्वा	धेनुभ्याम्	धेनुभिः
च०	धेन्वै, धेनवे	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
पं०	धेन्वाः, धेनोः	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
ष०	धेन्वाः, धेनोः	धेन्वोः	धेनूनाम्
स०	धेन्वाम्, धेनौ	धेन्वोः	धेनुषु
सं०	हे धेनो !	हे धेनू !	हे धेनवः !

इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दों के रूप चला लेने चाहिये ।

१—तनु (Body शरीर) २—रेणु (Dust धूलि) ३—हनु (Chin-ठोड़ी) ४—रज्जु (Rope रस्सी) इत्यादि ।

द्रष्टव्य—ह्रस्व उकारान्त पुंलिङ्ग (Noun ending in vowel उ,) 'भानु' और स्त्रीलिङ्ग में 'धेनु' शब्दों के रूपों (Declensions) के अन्तर पाठकों को ध्यान पूर्वक देखना चाहिये ।

१—रज्ज्वा धेनुः बध्यते = The cow is tied by a rope. रस्सी से गाय बाँधी जाती है ।

२—रेणवः तनुमाच्छादयन्ति = The dusts cover the body. धूलियाँ शरीर को ढाँक लेती हैं ।

पञ्चमः पाठः

दीर्घ ऊकारान्त (Noun ending in vowel 'ऊ')

बधू (Son's-wife) बहू

प्र०	बधूः	बध्वौ	बध्वः
द्वि०	बधूम्	बध्वौ	बधूः
तृ०	बध्वा	बधूभ्याम्	बधूभिः
च०	बध्वै	बधूभ्याम्	बधूभ्यः
पं०	बध्वः	बधूभ्याम्	बधूभ्यः

ष०	बध्वः	बध्वोः	बधूनाम्
स०	बध्वाम्	बध्वोः	बधूषु
सं०	हे बधु !	हे बध्वौ !	हे बध्वः !

इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दों के रूप (Declensions) समझ लेने चाहिये—

१—चमू—(Army सेना) २—तनू (Body शरीर) ३—श्वश्रू (Mother-in-law सास) इत्यादि।

षष्ठः पाठः

ह्रस्व ऋकारान्त (Noun ending in vowel 'ऋ')

मातृ (Mother माता)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	माता	मातरौ	मातरः
द्वि०	मातरम्	मातरौ	मातॄः
तृ०	मात्रा	मातृभ्याम्	मातृभिः
च०	मात्रे	मातृभ्याम्	मातृभ्यः
पं०	मातुः	मातृभ्याम्	मातृभ्यः
ष०	मातुः	मात्रोः	मातॄणाम्
स०	मातरि	मात्रोः	मातृषु
सं०	हे मातः !	हे मातरौ !	हे मातरः !

इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दों के रूप (Declensions) चला लेना चाहिये।

१—दुहितृ (Daughter लड़की) २—ननान्दृ (Sister-in-law ननद अर्थात् पति की बहिन); परन्तु स्वसृ (Sister बहिन) शब्द के रूपों (Declensions) में कुछ अन्तर है—

स्वसृ (Sister बहिन)

प्र०	स्वसा	स्वसारौ	स्वसारः
द्वि०	स्वसारम्	स्वसारौ	स्वसॄः

इसके अतिरिक्त और सब विभक्तियों में 'मातृ' शब्द के समान ही रूप (Declensions) चला लेना चाहिये।

उदाहरण

१—दुहिता स्वमातुः गेहे न वसति = The daughter does not live in her mother's house. लड़की अपनी माँ के घर में नहीं रहती है।

२—चम्वः युद्धाय रणभूमौ यान्ति = Armies go in the battle-field for fighting. सेनाएँ युद्ध के लिये संग्राम भूमि में जाती हैं।

३—ननान्दुः पतिः स्वगेहादायाति = The sister-in-law's husband comes from his house. ननद का पति अपने घर से आता है।

४—मम पितुः स्वसा स्वगृहं याति = My father's sister goes to her house. मेरे पिता की बहिन (बुआ) अपने घर जाती है।

अभ्यास

निम्नाङ्कित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिये :—

(१) नदियाँ पहाड़ों से निकलती हैं। (२) लड़की अपनी माँ के साथ काम करती है। (३) माँ की बहिन (मौसी) आती है। (४) ननद अपने घर जाती है। (५) जामाता लड़की का पति है। (६) बहू ननद के साथ आई थी। (७) बहू सास की सेवा करती है। (८) सास धेनु के लिये घास लाती है।

रमा रुचिर्नदी धेनुर्वाग्धीः सरिदनन्तरम्।
क्षुत्प्रावृट् च शरच्चैव, दशैते स्त्रीषु नायकाः॥

अर्थ :—रमा, रुचि, नदी, धेनु, वाक्, धी, सरित्, क्षुत्, प्रावृट्, शरद्, ये दश शब्द स्त्री लिङ्ग में प्रधान हैं।

सप्तमः पाठः

पुंलिङ्ग तथा स्त्री लिङ्ग

(Masculine and Feminine Gender)

ओकारान्त (Noun ending in 'ओ')

गो (Bull or Cow बैल या गाय)

प्र०	गौः	गावौ	गावः
द्वि०	गाम्	गावौ	गाः
तृ०	गवा	गोभ्याम्	गोभिः
च०	गवे	गोभ्याम्	गोभ्यः
पं०	गोः	गोभ्याम्	गोभ्यः
ष०	गोः	गवोः	गवाम्

स०	गवि	गवोः	गोषु
सं०	हे गौः !	हे गावौ !	हे गावः !

इसी प्रकार 'द्यौ Sky आकाश, नौ (Boat)' इत्यादि शब्दों के भी रूप समझने चाहिये।

द्रष्टव्यः—हम एक शेष समास को ही दोनों लिङ्ग मान सकते हैं।

जैसे :—माता च पिता च=पितरौ=(माता और पिता)

हंसी च हंसश्च=हंसौ (हंसी और हंस) इत्यादि।

इसी को ही 'हम उभयलिङ्ग' (Common Gender) भी कह सकते हैं।

उदाहरण

१—गोभ्यो जलं देहि=Give water to the cows. गायों को पानी दो।

२—नावा जना गङ्गापारं यान्ति=People cross the Ganges on boat. मनुष्य नाव से गंगा पार जाते हैं।

अभ्यास

निम्नाङ्कित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिये।

१—सेनाएँ नाव से पार जाती हैं। २—गायें प्रतिदिन दूध देती हैं। ३—नावें नदी में चलती हैं। ४—सूर्य आकाश में चमकता है।

हिन्दी	संस्कृत	हिन्दी	संस्कृत
चलती हैं	तरन्ति	आकाश में	द्यावि
चमकता है	द्योतते		

———

चतुर्थोऽध्यायः

अजन्त नपुंसक लिङ्ग प्रकरणम्

(Neuter Gender ending in vowels)

प्रथमः पाठः

ह्रस्व अकारान्त (Noun ending in vowel 'अ')

फल (Fruit)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	फलम्	फले	फलानि
द्वि०	फलम्	फले	फलानि
तृ०	फलेन	फलाभ्याम्	फलैः
च०	फलाय	फलाभ्याम्	फलेभ्यः
पं०	फलात् = फलाद्	फलाभ्याम्	फलेभ्यः
ष०	फलस्य	फलयोः	फलानाम्
स०	फले	फलयोः	फलेषु
सं०	हे फल !	हे फले !	हे फलानि !

इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दों के रूप समझना चाहिये

१—वन (Forest जंगल) २—लवण (Salt नमक) ३—मित्र (Friend) ४—मौन (Silence चुप) ५—भोजन (Food खाना) ६—कुसुम (Flower फूल) ७—धन (Wealth or Property सम्पत्ति) ८—तक्र (Whey छाँछ, मट्ठा) ९—नवनीत (Butter मक्खन) १०—अङ्गुलीय (Ring अँगूठी) ११—कङ्कण (Bangle चूड़ी) १२—वलय (Bracelet पहुँची कङ्गन) इत्यादि ।

उदाहरण

१ मित्रमुद्यानं गच्छति = The friend goes to the garden मित्र बाग को जाता है ।

२ मोहनस्य उभे नेत्रे स्फुरतः = Mohans, both the eyes blink मोहन की दोनों आँखें फड़कती हैं ।

३ गावः तृणानि चरन्ति = Cows graze the grass गायें घास को चरती हैं ।

४—रामः पुष्पाणि चिनोति = Ram Picks the flowers राम फूलों को चुनता है।

अभ्यास

निम्नलिखित श्लोक का हिन्दी में अनुवाद कीजिए :—

शरीरञ्च नवच्छिद्रं, व्याधिग्रस्तं कलेवरम्।
औषधं जाह्नवीतोयं, वैद्योनारायणो हरिः ॥

निम्नलिखित वाक्यों का शुद्ध व सरल संस्कृत में अनुवाद कीजिए:—

(१) लड़के भोजन चाहते हैं (२) शेर वन को छोड़ता है। (३) मनुष्य बाग में टहलते हैं (४) कमला पाप से डरती है। (५) मोहन खेत को बोता है (६) लड़के पैरों से फुटबाल खेलते हैं। (७) आँखें रूप को देखती हैं (८) नमक के बिना सब व्यञ्जन फीके होते हैं (९) सीता फलों को चुनती है।

हिन्दी	संस्कृत	हिन्दी	संस्कृत
चाहते हैं	इच्छन्ति	छोड़ता है	त्यजति
टहलते हैं	विहरन्ति	बोता है	वपति
खेत	क्षेत्रम्	फुटबाल	पादकन्दूकम्
रूप	रूपम्	फड़कती हैं	स्फुरतः
फीके होते हैं	निरस्यन्ति		

द्वितीयः पाठः

ह्रस्व इकारान्त (Noun ending in vowel, 'इ')

वारि (Water पानी)

प्र०	वारि	वारिणी	वारीणि
द्वि०	वारि	वारिणी	वारीणि
तृ०	वारिणा	वारिभ्याम्	वारिभिः
च०	वारिणे	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
पं०	वारिणः	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
ष०	वारिणः	वारिणोः	वारीणाम्
स०	वारिणि	वारिणोः	वारिषु
सं०	हे वारे! हे वारि!	हे वारिणी!	हे वारीणि!

इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दों के रूप (Declensions) ज्ञात कर लेने चाहिए।

१—अक्षि (Eye आँख)। २—अस्थि (Bone हड्डी)। ३—सक्थि (Thigh जाँघ)। ४—दधि Curd दही) इत्यादि।

तृतीयः पाठः

ह्रस्व उकारान्त (Noun ending in 'उ')

मधु (Honey शहद)

प्र०	मधु	मधुनी	मधूनि
द्वि०	मधु	मधुनी	मधूनि
तृ०	मधुना	मधुभ्याम्	मधुभिः
च०	मधुने	मधुभ्याम्	मधुभ्यः
पं०	मधुनः	मधुभ्याम्	मधुभ्यः
ष०	मधुनः	मधुनोः	मधूनाम्
स०	मधुनि	मधुनोः	मधुषु
सं०	हे मधो! हे मधु!	हे मधुनी!	हे मधूनि!

इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दों के रूप (Declensions) चला लेने चाहिये।

१—वस्तु (Thing चीज) २—जानु (Knee घुटना) ३—अश्रु Tear आँसू) ४—अम्बु (Water पानी) ४—दारु (Wood लकड़ी)—६ सानु (Top of the mountain पर्वत की चोटी) इत्यादि।

चतुर्थः पाठः

ह्रस्व ऋकारान्त (Noun ending in vowel 'ऋ')

धातृ (Creator) ब्रह्मा)

प्र०	धातृ	धातृणी	धातॄणि
द्वि०	धातृ	धातृणी	धातॄणि
तृ०	धात्रा, धातृणा	धातृभ्याम्	धातृभिः
च०	धात्रे, धातृणे	धातृभ्याम्	धातृभ्यः
प०	धातुः, धातृणः	धातृभ्याम्	धातृभ्यः
ष०	धातुः, धातृणः	धात्रोः, धातृणोः	धातॄणाम्

स०	धातरि, धातृणि	धात्रोः, धातृणोः	धातृषु
सं०	हे धातः ! हे धातृ ! हे धातृणी !		हे धातृणि !

उदाहरण

१—सा वारि पिबति = She drinks water. वह पानी पीती है।

२—मोहनः तक्रं पिबति (Mohan drinks the whey. मोहन छाछ (मट्ठा) पीता है।

३—गोविन्दो दध्ना ओदनं खादति = Govind eats rice with curd. गोविन्द दही से चावल खाता है।

४—जन्तवोऽक्षिभ्यां पश्यन्ति = The creatures see with their eyes. प्राणी आँखों से देखते हैं।

५—मञ्जूषायां (पेटिकायां) वस्तूनि सन्ति = The things are in the box. सन्दूक में चीजें हैं।

६—मोहनः स्वकीयाऽक्षिभ्यामश्रूणि मुञ्चति (निःसारयति) = Mohan sheds tears from his eyes. मोहन अपनी आँखों से आँसू बहाता है।

अभ्यास

निम्नलिखित श्लोकों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए :—

येषां न विद्या न तपो न दानम्, ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः।
ते मृत्यु लोके भुवि भार भूता, मनुष्य रूपेण मृगाश्चरन्तिः ॥१॥

विद्या नाम नरस्य रूपमतुलं प्रच्छन्नगुप्तं धनं,
विद्या भोगकरी यशस्सुखकरी विद्या गुरूणां गुरुः।
विद्या बन्धुजनो विदेशगमने विद्या परं दैवतं,
विद्या राजसु पूजिता नहि धनं विद्या विहीनः पशुः ॥२॥

निम्नाङ्कित वाक्यों को हिन्दी में अनुवाद कीजिये।

(१ गायें पानी पीती हैं और घास खाती हैं। (२) तब दूध देती हैं। (३) दूध से दही होती है। (४) दही से मट्ठा बनता है। (५) पुनः घी निकलता है। (६) मोहन को दही नहीं मिलती है। (७) तब मोहन की आँखों से आंसू गिरते हैं। (८) सन्दूक में कपड़े हैं। (९) गोविन्द पहाड़ की चोटी पर चढ़ता है। (१०) राम घुटनों से चलता है। (११) लकड़ियों से घर बनता है। (१२) कृष्ण दही से रोटी खाता है।

पञ्चमोऽध्यायः

हलन्त पुंलिङ्ग प्रकरणम्

(Masculine Gender ending in consonants)

प्रथमः पाठः

पयोमुच् (Cloud बादल, मेघ)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	पयोमुक्=ग्	पयोमुचौ	पयोमुचः
द्वि०	पयोमुचम्	पयोमुचौ	पयोमुचः
तृ०	पयोमुचा	पयोमुग्भ्याम्	पयोमुग्भिः
च०	पयोमुचे	पयोमुग्भ्याम्	पयोमुग्भ्यः
पं०	पयोमुचः	पयोमुग्भ्याम्	पयोमुग्भ्यः
ष०	पयोमुचः	पयोमुचोः	पयोमुचाम्
स०	पयोमुचि	पयोमुचोः	पयोमुक्षु
सं०	हे पयोमुक् !	हे पयोमुचौ !	हे पयोमुचः !

इसी प्रकार जकारान्त 'वणिज्' (Merchant बनिया) तकारान्त मरुत् (Wind वायु) इत्यादि शब्दों के रूप (Declensions) चला लेना चाहिये।

उदाहरण

१—पयोमुचः जलानि वर्षन्ति= The clouds pour rains. बादल पानी वर्षाते हैं।

२—पयोमुक्षु जलमस्ति= There is water in the clouds. बादलों में पानी है।

३—इन्द्रप्रस्थे बह्वो वणिजः सन्ति= There are many merchants in Delhi. देहली में बहुत बनिये रहते हैं।

४—मरुतो वान्ति= The winds blow. हवायें बहती हैं।

द्वितीयः पाठः

तकारान्त 'महत्' (Large बड़ा)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	महान्	महान्तौ	महान्तः

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
द्वि०	महान्तम्	महान्तौ	महतः
तृ०	महता	महद्भ्याम्	महद्भिः
च०	महते	महद्भ्याम्	महद्भ्यः
पं०	महतः	महद्भ्याम्	महद्भ्यः
ष०	महतः	महतोः	महताम्
स०	महति	महतोः	महत्सु
सं०	हे महन् !	हे महान्तौ !	हे महान्तः !

तकारान्त 'भगवत्' (God भगवान्)

प्र०	भगवान्	भगवन्तौ	भगवन्तः
द्वि०	भगवन्तम्	भगवन्तौ	भगवतः
तृ०	भगवता	भगवद्भ्याम्	भगवद्भिः
च०	भगवते	भगवद्भ्याम्	भगवद्भ्यः
पं०	भगवतः	भगवद्भ्याम्	भगवद्भ्यः
ष०	भगवतः	भगवतोः	भगवताम्
स०	भगवति	भगवतोः	भगवत्सु
सं०	हे भगवन् !	हे भगवन्तौ !	हे भगवन्तः !

तकारान्त (King राजा)

प्र०	भूभृत्	भूभृतौ	भूभृतः
द्वि०	भूभृतम्	भूभृतौ	भूभृतः
तृ०	भूभृता	भूभृद्भ्याम्	भूभृद्भिः
च०	भूभृते	भूभृद्भ्याम्	भूभृद्भ्यः
पं०	भूभृतः	भूभृद्भ्याम्	भूभृद्भ्यः
ष०	भूभृतः	भूभृतोः	भूभृताम्
स०	भूभृति	भूभृतोः	भूभृत्सु
सं०	हे भूभृत् !	हे भूभृतौ !	हे भूभृतः !

नकारान्त 'राजन्' (king राजा)

प्र०	राजा	राजानौ	राजानः
द्वि०	राजानम्	राजानौ	राज्ञः
तृ०	राज्ञा	राजभ्याम्	राजभिः

च०	राज्ञे	राजभ्याम्	राजभ्यः
पं०	राज्ञः	राजभ्याम्	राजभ्यः
ष०	राज्ञः	राज्ञोः	राज्ञाम्
स०	राज्ञि, राजनि	राज्ञोः	राजसु
सं०	हे राजन् !	हे राजानौ !	हे राजानः !

इसी प्रकार ' आत्मन् ' (Soul) इत्यादि शब्दों के रूप चलेंगे ।

नकारान्त ' शशिन् ' (Moon चन्द्रमा)

प्र०	शशी	शशिनौ	शशिनः
द्वि०	शशिनम्	शशिनौ	शशिनः
तृ०	शशिना	शशिभ्याम्	शशिभिः
च०	शशिने	शशिभ्याम्	शशिभ्यः
पं०	शशिनः	शशिभ्याम्	शशिभ्यः
ष०	शशिनः	शशिनोः	शशीनाम्
स०	शशिनि	शशिनोः	शशिषु
सं०	हे शशिन् !	हे शशिनौ !	हे शशिनः !

इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दों के रूप (Declenions) चलेंगे ।

१—श्रीमत् (Fortunate श्रीमान्) २—बुद्धिमत् (Wise बुद्धिमान्) ३—धीमत् (Intelligent धीमान्) ४—आयुष्मत् (Longlived आयुष्मान्) ५—गतिमत् (Agog गतिमान्) ६—धनवत् (Rich धनवान्) ७—ज्ञानवत् (One who has perfect knowledge or learned-ज्ञानवान्) इत्यादि ।

अभ्यास

निम्नलिखित श्लोकों का हिन्दी में अनुवाद कीजिये और रेखाङ्कित शब्दों की विभक्तियाँ भी बतलाइए ।

रामो हरिः करी भूभृत्, भानुः कर्ता च चन्द्रमा ।
तस्थिवान् भगवान् आत्मा, दशैते पुंसिनायकाः ॥
उद्धरेदात्मनाऽऽत्मानं, नात्मानमवसादयेत् ।
आत्मैव ह्यात्मनो, बन्धुरात्मैवरिपुरात्मनः ॥
शुचीनां श्रीमतां गेहे, योगभ्रष्टोऽभिजायते ।
जितात्मनः प्रशान्तस्य, परमात्मा समाहितः ॥
अथवा योगिनामेव, कुलेभवति धीमताम्

श्रद्धावान् भजते यो माम् ।

शशिना च निशा निशया च शशी, शशिना निशया च विभाति नभः ।
कविना च विभुः विभुना च कवि, कविना विभुना च विभाति सभा ॥

सुखार्थिनः कुतो विद्या विद्यार्थिनः कुतः सुखम् ।
अपन्थानं (कुमार्गं) तु गच्छन्तं सोदरोऽपि विमुञ्चति ॥

निम्नांकित वाक्यों का शुद्ध व सरल संस्कृत में अनुवाद कीजियेः—

(१) पवित्र योगी श्रीमानों के घर में जन्म लेता है। (२) अथवा ज्ञानवान् योगियों के ही कुल में जन्म होता है। (३) प्रशान्त जितेन्द्रिय पुरुष परमात्मा के ध्यान में लगा रहता है। (४) अपने द्वारा स्वयं अपने आत्मा को ऊँचा उठावे। (५) अपने को गिरावे नहीं। (६) क्योंकि अपना आत्मा ही स्वयं अपना बन्धु है और अपने आप स्वयं ही शत्रु है।

हलन्त स्त्रीलिङ्ग प्रकरणम्

(Feminine Gender ending in consonants)

चतुर्थः पाठः

चकारान्त 'वाच्' (Voice, speech वाणी)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	वाक्	वाचौ	वाचः
द्वि०	वाचम्	वाचौ	वाचः
तृ०	वाचा	वाग्भ्याम्	वाग्भिः
च०	वाचे	वाग्भ्याम्	वाग्भ्यः
पं०	वाचः	वाग्भ्याम्	वाग्भ्यः
ष०	वाचः	वाचोः	वाचाम्
स०	वाचि	वाचोः	वाक्षु
सं०	हे वाक् !	हे वाचौ !	हे वाचः !

दकारान्त 'विपद्' (Misfortune)

प्र०	विपत्=विपद्	विपदौ	विपदः
द्वि०	विपदम्	विपदौ	विपदः
तृ०	विपदा	विपद्भ्याम्	विपद्भिः
च०	विपदे	विपद्भ्याम्	विपद्भ्यः
पं०	विपदः	विपद्भ्याम्	विपद्भ्यः
ष०	विपदः	विपदोः	विपदाम्
स०	विपदि	विपदोः	विपत्सु
सं०	हे विपत् !	हे विपदौ !	हे विपदः !

इस प्रकार अन्य हलन्त स्त्री लिङ्ग शब्दों के रूप समझ लेने चाहिये।

अभ्यास

निम्नलिखित श्लोक का हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

विपदि धैर्यमथाऽभ्युदये क्षमा, सदसि वाक्पटुता युधि विक्रमः।
यशसि चाभिरुचिर्व्यसनं श्रुतौ, प्रकृतिसिद्धमिदं हि महात्मनाम्॥

संस्कृत में अनुवाद कीजिये।

(१) प्रावृट् काल में सरिताओं में आप (पानी) भरा रहता है (२) शरद् काल में सरिताओं से जल निकल जाता है। (३) क्षुधा से यह व्याकुल है (४) विपद् में धैर्य रखना चाहिये (५) संसद् में चतुरता रखनी चाहिये (६) शरद काल में दिशाएँ निर्मल हो जाती हैं (७) दृगों में त्विट् (कान्ति) नहीं है।

हलन्त नपुंसक लिङ्ग प्रकरणम्

(Neuter Gender ending in consonants)

पञ्चमः पाठः

सकारान्त 'पयस्' (Milk or water)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	पयः	पयसी	पयांसि
द्वि०	पयः	पयसी	पयांसि
तृ०	पयसा	पयोभ्याम्	पयोभिः
च०	पयसे	पयोभ्याम्	पयोभ्यः
पं०	पयसः	पयोभ्याम्	पयोभ्यः
ष०	पयसः	पयसोः	पयसाम्
स०	पयसि	पयसोः	पयःसु
सं०	हे पयः !	हे पयसी !	हे पयांसि !

इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दों के रूप (Declensions) चला लेने चाहिये।

१—वयस् (Age अवस्था) २—नभस् (Sky आकाश) ३—मनस् (Mind मन) ४—उरस् (Breast छाती ५—वक्षस् (Bosom छाती) ६—अयस् (Iron लोहा) ७-तमस् (Darkness अँधेरा) ८—यशस् (Fame कीर्ति) ९—तपस् (Penance तप) १०—छन्दस् (Meter छन्द) इत्यादि।

नकारान्त 'नामन्' (Name नाम)।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	नाम	नामनी, नाम्नी	नामानि
द्वि०	नाम	नामनी, नाम्नी	नामानि
तृ०	नाम्ना	नामभ्याम्	नामभिः
च०	नाम्ने	नामभ्याम्	नामभ्यः
पं०	नाम्नः	नामभ्याम्	नामभ्यः
ष०	नाम्नः	नाम्नोः	नाम्नाम्
स०	नाम्नि, नामनि	नाम्नोः	नामसु
सं०	हे नामन् ! हे नाम !	हे नामनी, हे नाम्नी !	हे नामानि !

इसी प्रकार अन्य नकारान्त नपुंसक लिंग शब्दों के रूप जान लेने चाहिये।

ज्ञानं दधि पयोवर्म, धनुर्वारि जगत्तथा।
मधु नाम मनोहारि, दशैते तु नपुंसके॥

भावार्थ :—ज्ञान, दधि, पयस्, वर्मन्, धनुष्, वारि, जगत्, मधु, नामन्, मनस्, हारिन्, ये सब नपुंसक लिंग में प्रधान हैं॥

अभ्यास

निम्नलिखित श्लोकों को हिन्दी में अनुवाद कीजिए :—

परमेश्वर नामानि सन्त्यनेकानि पार्वति !।
परन्तु रामनामेदं सर्वेषामुत्तमोत्तमम्॥ १॥
नारायणादि नामानि कीर्तितानि बहुन्यपि।
आत्मा तेषां च सर्वेषां रामनाम प्रकाशकः॥ २॥
पयसा कमलं कमलेन पयः, पयसा कमलेन विभाति सरः।
मणिना वलयं वलयेन मणिः, मणिना वलयेन विभाति करः॥ ३॥

संस्कृत में अनुवाद कीजिये—

(१) जगत् में कुछ यश कर लेना चाहिये (२) आपके मन में क्या है ? (३) नभ में तारे खिले हुए हैं (४) गर्म लोहे पर जल जल जाता है (५) पयस् और कमल से सर की शोभा होती है (६) तप से हृदय का अन्धकार दूर हो जाता है (७) धनुष् पर वाण रखो।

निम्नलिखित श्लोकों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए और बताइए कि इनमें कौन से शब्द पुंलिंग स्त्रीलिंग और नपुंसक लिंग तथा किस विभक्ति में है।

नागो भाति मदेन कं जलरुहैः पूर्णेन्दुना शर्वरी
शीलेन प्रमदा जवेन तुरगो नित्योत्सवैर्मन्दिरम्।
वाणी व्याकरणेन हंसमिथुनैर्नद्यः सभा पण्डितैः।
सत्पुत्रेण कुलं नृपेण वसुधा लोकत्रयं धार्मिकैः॥ १॥
सत्याद्‌उत्पद्यते धर्मो, दया दानाद्विवर्धते।
क्षमया तिष्ठते धर्मः क्रोधाद्धर्मो विनश्यति॥ २॥
धर्मे रागः श्रुतेश्चिन्ता, दाने व्यसनमुत्तमम्।
इन्द्रियार्थेषु वैराग्यं संप्राप्तं जन्मनः फलम्॥ ३॥

———

षष्ठोऽध्यायः

सर्वादि गण प्रकरणम्

सर्वनाम (Pronouns)

प्रथमः पाठः

द्रष्टव्य :—सर्वनाम वे शब्द हैं, जो संज्ञा के स्थान में प्रयोग किये जाते हैं।

सर्वनाम शब्दों के भेद

१—अनिश्चय वाचक सर्वनाम (Indefinite pronoun) २—प्रश्न वाचक सर्वनाम (Interrogative pronouns) ३—कर्ता संबन्धी सर्वनाम (Reflexive pronoun) ४—सम्बन्ध वाचक सर्वनाम (Relative pronoun) ५—पुरुष वाचक सर्वनाम (Personal pronoun) ६—संकेत निश्चय वाचक सर्वनाम (Demonstrative definite pronoun)

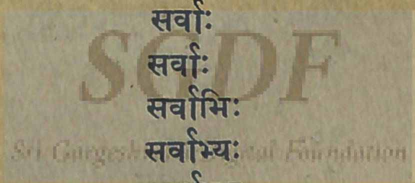
'सर्व' अनिश्चयवाचक शब्द

सर्व (All) पुलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	सर्वः	सर्वौ	सर्वे
द्वि०	सर्वम्	सर्वौ	सर्वान्
तृ०	सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वैः
च०	सर्वस्मै	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
पं०	सर्वस्मात्=सर्वस्माद्	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
ष०	सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्
स०	सर्वस्मिन्	सर्वयोः	सर्वेषु
सं०	हे सर्व !	हे सर्वौ !	हे सर्वे !

स्त्रीलिंग

प्र०	सर्वा	सर्वे	सर्वाः
द्वि०	सर्वाम्	सर्वे	सर्वाः
तृ०	सर्वया	सर्वाभ्याम्	सर्वाभिः
च०	सर्वस्यै	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्यः
पं०	सर्वस्याः	सर्वा याम्	सर्वाभ्यः



ष०	सर्वस्याः	सर्वयोः	सर्वासाम
स०	सर्वस्याम्	सर्वयोः	सर्वासु
सं०	हे सर्वे !	हे सर्वे !	हे सर्वाः !

नपुंसक लिङ्ग

प्र०	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि
द्वि०	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि

शेष रूप पुंलिङ्ग के समान ही चला लेने चाहिये।

द्रष्टव्य :—सर्वादिगण में कुछ शब्दों के संस्कृत में सम्बोधन होते हैं और कुछ शब्दों के सम्बोधन नहीं होते हैं परंतु हिन्दी में सर्वादिगण के सम्बोधन बिल्कुल ही नहीं होते।

अभ्यास

निम्नलिखित श्लोकों का हिन्दी में अनुवाद कीजिये :—

सर्वे च सुखिनः सन्तु, सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःख भाग् भवेत्।
अहं सर्वस्य प्रभवः, मत्तः सर्वं प्रवर्तते।
इति मत्वा भजन्ते मां, बुधा भाव समन्विताः।
नमः पुरस्तादथ पृष्ठतस्ते, नमोऽस्तुते सर्वत एव सर्व* !
अनन्तवीर्यामित विक्रमस्त्वं, सर्वं समाप्नोषि ततोऽसि सर्वः॥

* यहाँ पर 'सर्व' यह सम्बोधन है।

पुंलिङ्ग

पूर्व (East)

प्र०	पूर्वः	पूर्वौ	पूर्वे, पूर्वाः
द्वि०	पूर्वम्	पूर्वौ	पूर्वान्
तृ०	पूर्वेण	पूर्वाभ्याम्	पूर्वैः
च०	पूर्वस्मै	पूर्वाभ्याम्	पूर्वेभ्यः
पं०	पूर्वस्मात्, पूर्वात्	पूर्वाभ्याम्	पूर्वेभ्यः
ष०	पूर्वस्य	पूर्वयोः	पूर्वेषाम्
स०	पूर्वस्मिन् = पूर्वे	पूर्वयोः	पूर्वेषु
सं०	हे पूर्व !	हे पूर्वौ !	हे पूर्वे, हे पूर्वाः !

स्त्री लिङ्ग

प्र०	पूर्वा	पूर्वे	पूर्वाः
द्वि०	पूर्वाम्	पूर्वे	पूर्वाः

तृ०	पूर्वया	पूर्वाभ्याम्	पूर्वाभिः
च०	पूर्वस्यै	पूर्वाभ्याम्	पूर्वाभ्यः
पं०	पूर्वस्याः	पूर्वाभ्याम्	पूर्वाभ्यः
ष०	पूर्वस्याः	पूर्वयोः	पूर्वासाम्
स०	पूर्वस्याम्	पूर्वयोः	पूर्वासु
सं०	हे पूर्वे !	हे पूर्वे !	हे पूर्वाः

नपुंसक लिङ्ग

प्र०	पूर्वम्	पूर्वे	पूर्वाणि
द्वि०	पूर्वम्	पूर्वे	पूर्वाणि

शेष रूप पुंलिङ्ग की तरह जान लेना चाहिए।

इसी प्रकार 'दक्षिण (South) और उत्तर (North)'। इन दोनों शब्दों के रूप चलेंगे। परन्तु "पश्चिम" (West) शब्द के रूप 'बालक' शब्द के समान बनेंगे।

जैसे :—उदयति यदि भानुः पश्चिमे दिग्विभागे।

उदाहरण

१—सर्वे जनाः गच्छन्ति = All men go. सब आदमी जाते हैं।

२—सर्वेषां बालकानां मध्ये कः श्रेष्ठतमोऽस्ति ? Who is the best amongst all the boys ? सब बालकों में कौन श्रेष्ठ है ?

३—सर्वासां स्त्रीणामाभूषणानि कुत्र सन्ति ? Where are the ornaments of all women ? सब स्त्रियों के आभूषण कहाँ हैं ?

४—सर्वासु दिक्षु वायुर्वाति = The wind blows in all directions. हवा सब दिशाओं में बहती है।

५—मोहनः सर्वाणि पुस्तकानि आनयति = Mohan brings all the books. मोहन सब पुस्तकों को लाता है।

६—सूर्यः पूर्वस्यां दिशि उदेति = The sun rises in the East. सूर्य पूर्व दिशा में निकलता है।

७—पश्चिमेऽस्तमेति च = And sets in the west. और पच्छिम में अस्त हो जाता है।

अभ्यास

निम्नलिखित श्लोकों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए :—

अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा, हिमालयो नाम नगाधिराजः॥

एवं ज्ञात्वा कृतं कर्म, पूर्वैरपि मुमुक्षुभिः।

कुरु कर्मैव तस्मात्त्वं, पूर्वैः पूर्वतरं कृतम् ॥
महर्षयः सप्त पूर्वे, चत्वारो मनवस्तथा ।
मद्भावा मानसा जाता, येषां लोकइमाःप्रजाः ॥
दक्षिणस्यां दिशि लङ्कानाम नगरमस्ति ।

द्वितीयः पाठः

प्रश्न वाचक सर्वनाम (Interrogative pronoun)

किम् (Who or which) कौन, किसने, किन्होंने ?

प्र०	कः	कौ	के
द्वि०	कम्	कौ	कान्
तृ०	केन	काभ्याम्	कैः
च०	कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः
पं०	कस्मात्=द्	काभ्याम्	केभ्यः
ष०	कस्य	कयोः	केषाम्
सं०	कस्मिन्	कयोः	केषु

स्त्रीलिङ्ग

किम् (Who or which)

प्र०	का	के	काः
द्वि०	काम्	के	काः
तृ०	कया	काभ्याम्	काभिः
च०	कस्यै	काभ्याम्	काभ्यः
पं०	कस्याः	काभ्याम्	काभ्यः
ष०	कस्याः	कयोः	कासाम्
सं०	कस्याम्	कयोः	कासु

नपुंसकलिङ्ग

प्र० किम् (What or which) क्या, कौन ?

	किम्	के	कानि
द्वि०	किम्	के	कानि

शेष सब विभक्तियों के रूप (Declensions) पुंलिङ्ग के समान ही होते हैं ।

द्रष्टव्य—'त्यदादेः संबोधनं नास्ति' (त्यद्, तद्, यद्, एतद्, इदम्, अदस, एक, द्वि, युष्मद्, अस्मद्, भवतु, किम्) इन शब्दों के सम्बोधन (Vocative case) तीनों लिङ्गों में नहीं होते हैं ।

उदाहरण

१—कः पुरुषोऽस्ति ? (Who is that man) ? कौन आदमी है ?

२—त्वं कं जनं पश्यसि ? (Whom doest thou look) ? तू किस आदमी को देखता है।

३—केषु केषु गृहेषु बालकाः सन्ति ? (In which houses there are boys) ? किन किन घरों में बालक हैं ?

४—कासां बालिकानामेषः शब्दोऽस्ति ? (Which girls have spoken this word) ? किन किन लड़कियों का यह शब्द है ?

५—गोविन्दोऽत्र कां शिक्षामलभत ? (What sort of education did Govind get here) ? गोविन्द ने यहाँ कैसी (किस प्रकार की) शिक्षा प्राप्त की।

६—कानि पुस्तकानि त्वया पठितानि ? (Which books thou readest) ? कौन सी पुस्तकें तूने पढ़ी है ?

७—किंनिमित्तं त्वं गच्छसि ? (For what reason doest thou go) ? किस कारण से तू जाता है ?

८—के द्वे फले त्वया भक्षिते ? (Which two fruits didst thou eat) ? कौन से दो फल तूने खाये ?

अभ्यास

निम्नलिखित श्लोकों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए :—

कः कालः कानि मित्राणि, को देशः को व्ययागमौ।
कस्याहं का च मे शक्तिरिति चिन्त्यं मुहुर्मुहुः ॥
का ते कान्ता कस्ते पुत्रः संसारोऽयमतीव विचित्रः।
कस्य त्वं कः कुत आयातः तत्त्वं चिन्तय मनसि भ्रातः ॥
भज गोविन्दं भज गोविन्दं गोविन्दं भज मूढ़मते।

संस्कृत में अनुवाद कीजिए :—

कौन समय है ? कौन मित्र हैं ? कौन देश है ? क्या व्यय और आय है ? मैं किसका हूँ ? क्या मेरी शक्ति है ? ये सब मनुष्य को बारम्बार सोचना चाहिये। गुरु कौन है ? जो हित का उपदेश देने वाला है। शिष्य कौन है ? जो गुरु का भक्त है।

तृतीयः पाठः

कर्ता सम्बन्धी सर्वनाम

"भवत्" आप (Reflexive pronoun)

प्र०	भवान्	भवन्तौ	भवन्तः
द्वि०	भवन्तम्	भवन्तौ	भवतः
तृ०	भवता	भवद्भ्याम्	भवद्भिः
च०	भवते	भवद्भ्याम्	भवद्भ्यः
पं०	भवतः	भवद्भ्याम्	भवद्भ्यः
ष०	भवतः	भवतोः	भवताम्
स०	भवति	भवतोः	भवत्सु

द्रष्टव्य :—यद्यपि 'भवत्' शब्द का अर्थ 'आप' है, परन्तु आदर (Honour or Honorary) सूचक अर्थ में मध्यमपुरुष (Second person) का प्रयोग किया जाता है। परन्तु क्रिया प्रथम पुरुष की ही आती है। जैसे :—

उदाहरण

१—अत्राऽगच्छतु भवान्=(You are welcome here) ? आप यहाँ आइए।

२—कमन्विष्यन्ति भवन्तः ? (Whom are you searching for ?) आप किसको ढूँढ रहे हैं ?

३—भवद्भिः किं कृतम् ? (What did you do) ? आपने क्या किया ?

४—भवतः किं नामधेयम् ? (What is your name)? आप का क्या नाम है ?

चतुर्थः पाठः

सम्बन्ध वाचक सर्वनाम (Relative pronouns)

जो शब्द, एक शब्द का दूसरे शब्द के साथ सम्बन्ध बतलाता है, उसको सम्बन्ध वाचक सर्वनाम कहा जाता है ! 'यत् और तत्' शब्दों का आपस में नित्य सम्बन्ध होता है। अधिकतर नपुंसक लिङ्ग में ही सम्बन्ध वाचक सर्वनाम का प्रयोग किया जाता है।

जैसे :—उपायेन हि यच्छक्यं न तच्छक्यं पराक्रमैः

(What can be done by stratagem, can not be done by valour) जो काम उपाय से किया जा सकता है, वह पराक्रमों द्वारा नहीं किया जा सकता ।

यत् (Which or what, who) जो, जिसने, जिन्होंने

पुंलिङ्ग

प्र०	यः	यौ	ये
द्वि०	यम्	यौ	यान्
तृ०	येन	याभ्याम्	यैः
च०	यस्मै	याभ्याम्	येभ्यः
पं०	यस्मात्=द्	याभ्याम्	येभ्यः
ष०	यस्य	ययोः	येषाम्
सं०	यस्मिन्	ययोः	येषु

स्त्रीलिङ्ग

प्र०	या	ये	याः
द्वि०	याम्	ये	याः
तृ०	यया	याभ्याम्	याभिः
य०	यस्यै	याभ्याम्	याभ्यः
पं०	यस्याः	याभ्याम्	याभ्यः
ष०	यस्याः	ययोः	यासाम्
सं०	यस्याम्	ययोः	यासु

नपुंसक लिङ्ग

प्र०	यत	ये	यानि
द्वि०	यत्	ये	यानि

शेष विभक्तियों के रूप (Declensions) पुंलिङ्ग के समान ही होते हैं ।

पुरुष वाचक सर्वनाम (Personal pronoun)

तद् (He) वह

पुंलिङ्ग

प्र०	सः	तौ	ते
द्वि०	तम्	तौ	तान्
तृ०	तेन	ताभ्याम्	तैः
च०	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
पं०	तस्मात्=द्	ताभ्याम्	तेभ्यः
ष०	तस्य	तयोः	तेषाम्
स०	तस्मिन्	तयोः	तेषु

स्त्रीलिङ्ग (Feminine Gender)

प्र०	सा She	ते	ताः
द्वि०	ताम्	ते	ताः
तृ०	तया	ताभ्याम्	ताभिः
च०	तस्यै	ताभ्याम्	ताभ्यः
पं०	तस्याः	ताभ्याम्	ताभ्यः
ष०	तस्याः	तयोः	तासाम्
सं०	तस्याम्	तयोः	तासु

नपुंसक लिङ्ग (Neuter gener)

प्र०	तत्	ते	तानि
द्वि०	तत्	ते	तानि

शेष विभक्तियों के रूप (Declensions) पुंलिङ्ग के समान ही होते हैं।

द्रष्टव्य :—"तद्" शब्द का प्रयोग केवल अन्य पुरुष (Third person) में ही होता है इसी को संस्कृत में प्रथम पुरुष भी कहते हैं।

उदाहरण

१—येभ्यो दरिद्रेभ्यः त्वं दातुमिच्छसि तेभ्य एव देहि। Givest alms to those poor only whom thou wantest to give जिन दरिद्रों को तू दान देना चाहता है उनको ही दान दे।

२—यस्मै पुत्रिकायै दुग्धं दीयते सैव एषा विद्यते। This is the same girl who is benig given milk जिस लड़की के लिये दूध दिया जाता है वही यह है।

अभ्यास

निम्नलिखित श्लोकों को हिन्दी में अनुवाद कीजिए :—

यत्करोषि यदश्नासि यज्जुहोषि ददासि यत्।
यत्तपस्यसि कौन्तेय तत्कुरुष्व मदर्पणम्॥
यं यं वाऽपि स्मरन्भावं, त्यजन्त्यन्ते कलेवरम्।
तं तमेवैति कौन्तेय सदा तद्भाव भावितः॥
न तेन वृद्धो भवति येनास्य पलितं शिरः।
यो वै युवाप्यधीयानः तं देवाः स्थविरं विदुः॥

शुद्ध हिन्दी में अनुवाद कीजिए:—

(१) जिसके बाल पके हैं वह वृद्ध नहीं है (२) निश्चय ही जो जवान होकर भी अध्ययन शील है अर्थात् ज्ञानवान् है, उसको देवाः (ज्ञानीजन) वृद्ध

समझते हैं। (३) मनुष्य मरते समय में जिस जिस भाव को स्मरण करता है, अन्त में उसी भाव को प्राप्त करता है।

पञ्चमः पाठः

'युष्मद्' (Thou or you) तू या तुम

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	त्वम्	युवाम	यूयम्
द्वि०	त्वाम् = त्वा	युवाम् = वाम्	युष्मान् = वः
तृ०	त्वया	युवाभ्माम्	युष्माभिः
च०	तुभ्यम् = ते	युवाभ्याम् = वाम्	युष्मभ्यम् = वः
पं०	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
ष०	तव = ते	युवयोः = वाम्	युष्माकम् = वः
स०	त्वयि	युवयोः	युष्मासु

द्रष्टव्यः—"युष्मद्" शब्द का प्रयोग केवल मध्यम पुरुष (Second person) में ही होता है, दूसरी जगह नहीं होता है।

'अस्मद्' (I or we) मैं या हम

प्र०	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वि०	माम् = मा	आवाम् = नौ	अस्मान् = नः
तृ०	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
च०	मह्यम् = मे	आवाभ्याम् = नौ	अस्मभ्यम् = नः
षं०	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्
ष०	मम = मे	आवयोः = नौ	अस्माकम् = नः
स०	मयि	आवयोः	अस्मासु

द्रष्टव्य = 'अस्मद्' शब्द का प्रयोग केवल उत्तम पुरुष (First person) में ही होता है अन्यत्र नहीं। और 'युष्मद्, अस्मद्' के रूप (Declensions) तीनों लिङ्गों में एक ही समान होते हैं।

अभ्यास

निम्नलिखित श्लोकों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए :—

श्री शस्त्वाऽवतु माऽपीह, दत्तात्तेमेऽपि शर्म सः।
स्वामी ते मेऽपि स हरिः, पातु वामपि नौ विभुः॥
सुखं वां नौ ददात्वीशः, पतिर्वामपि नौ हरिः।
सोऽव्याद् वो नः शिवं वो नो, दद्यात् सेव्योऽत्र वः स नः॥

निम्नलिखित हिन्दी वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए :—

(१) श्री विष्णु भगवान् इस लोक में तुझे (तेरी) और मुझे (मेरी) भी रक्षा करें (२) वह तुझे और मुझे भी शर्म (कल्याण) देवे। (३) वह तेरा और मेरा भी स्वामी है (४) विभु व्यापक भगवान् तुम दोनों की और हम दोनों की रक्षा करे (५) ईश्वर तुम दोनों को और हम दोनों को सुख देवे (६) वह हरि भगवान् तुम दोनों का और हम दोनों का रक्षक है ! (७) वह हरि तुम सबों की और हम सबों की 'अव्यात्' रक्षा करे। ८—वह हरि तुम दोनों को और हम दोनों को कल्याण देवे। ९—इस लोक में वह हरि तुम्हारे और हमारे सेवा करने के योग्य है।

प्रथम पुरुष के उदाहरण

१—स पठति = He reads वह पढ़ता है।

२—तौ पठतः = They both read or Both of them read. वे दोनों पढ़ते हैं।

३—ते पठन्ति = They all read—वे सब पढ़ते हैं।

४—सा पठति = She reads—वह पढ़ती है।

५—ते पठतः = They both read वे दोनों पढ़ती हैं।

६—ताः पठन्ति = They all read वे सब पढ़ती हैं।

७—इदं पुस्तकं स्वकीयमस्ति = This book is mine or. this is my book यह पुस्तक अपनी है।

८—तावकीयमिदं पुस्तकमस्ति = This book is thine or This is thy book. यह पुस्तक तेरी है।

मध्यम पुरुष के उदाहरण

१—त्वम् पठसि = Thou readest. तू पढ़ता है, या तू पढ़ती है।

२—युवाम् पठथः You both read. तुम दोनों पढ़ते हो (पढ़ती हो)।

३—यूयम् पठथ = You all read तुम सब पढ़ते हो (पढ़ती हो)

उत्तम पुरुष के उदाहरण

१—अहं पठामि = I read मैं पढ़ता हूँ या मैं पढ़ती हूँ।

२—आवां पठावः = We both reod. हम दोनों पढ़ते हैं (पढ़ती हैं)

३—वयम् पठामः = We all read. हम सब पढ़ते हैं (पढ़ती हैं)

षष्ठः पाठः

निश्चय संकेतवाचक सर्वनाम

(Demonstrative definite pronoun)

जिस सर्वनाम के द्वारा किसी वस्तु की ओर निश्चय पूर्वक संकेत किया जाता है, उसे निश्चय संकेत वाचक सर्वनाम कहते हैं।

इदमस्तु सन्निकृष्टं, समीपतरवर्ति चैतदो रूपम्।
अदसस्तु विप्रकृष्टं तदिति परोक्षेविजानीयात्॥

भावार्थ—इदम् और एतद् का समीपवर्ति 'यह' अर्थ होता है। अदस् और तद् का दूरवर्ति 'वह' अर्थ होता है।

जैसे—अयं पुरुषोऽस्ति = This is a man. यह एक आदमी है।

एष बालकोऽस्ति = This is a boy. यह एक लड़का है।

असौ अधुना बालको विद्यते = That is yet a child वह अभी बालक है।

इदम् (This) यह

पुंलिङ्ग

प्र०	अयम्	इमौ	इमे
द्वि०	इमम् = एनम्	इमौ = एनौ	इमान् = एनान्
तृ०	अनेन = एनेन	आभ्याम्	एभिः
च०	अस्मै	आभ्याम्	एभ्यः
पं०	अस्मात् = अस्माद्	आभ्याम्	एभ्यः
ष०	अस्य	अनयोः = एनयोः	एषाम्
स०	अस्मिन्	अनयोः = एनयोः	एषु

स्त्रीलिङ्ग

प्र०	इयम्	इमे	इमाः
द्वि०	इमाम् = एनाम्	इमे = एने	इमाः = एनाः
तृ०	अनया = एनया	आभ्याम्	आभिः
च०	अस्यै	आभ्याम्	आभ्यः
पं०	अस्याः	आभ्याम्	आभ्यः
ष०	अस्याः	अनयो = एनयोः	आसाम्
स०	अस्याम्	अनयोः = एनयोः	आसु

नपुंसक लिङ्ग

प्र०	इदम् = एनम्	इमे = एने	इमानि = एनानि
द्वि०	इदम् = एनम्	इमे = एने	इमानि = एनानि

शेष विभक्तियों के रूप (Declensions) पुंलिङ्ग के समान ही समझना चाहिये।

उदाहरण

१—तस्य इमौ बालकौ स्तः Both of these children are his ये दोनों लड़के उसके हैं।

२—इमे बालकाः पठनाय यान्ति = All of these boys go for study = ये सब लड़के पढ़ने के लिये जाते हैं।

३—इयं बालिका पठति = This girl reads यह लड़की पढ़ती है।

४—इमे बालिके गच्छन्त्यौ स्तः = Both of these girls are going ये दोनों बालिकाएँ जा रहीं हैं।

५—इमाः बालिकाः लिखन्ति = All of these girls write. ये सब लड़कियाँ लिखती हैं।

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिये :—

अच्छेद्योऽयमदाह्योऽयमक्लेद्योऽशोष्य एव च।
अव्यक्तोऽयमचिन्त्योऽयमविकार्योऽयमुच्यते॥

अन्वय = अयम् अच्छेद्यः, अयम् अदाह्यः, अयम अक्लेद्यः, च अयम् अशोष्यः, एव अस्ति। अयम् अव्यक्तः, अयम् अचिन्त्यः, अयम् अविकार्यः, उच्यते।

सप्तमः पाठः

पुलिङ्ग

एतद् (This) यह

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	एषः	एतौ	एताः
द्वि०	एतम् = एनम्	एतौ = एनौ	एतान् = एनान्
तृ०	एतेन = एनेन	एताभ्याम्	एतैः
च०	एतस्मै	एताभ्याम्	एतेभ्यः
पं०	एतस्मात् = एतस्माद्	एताभ्याम्	एतेभ्यः
ष०	एतस्य	एतयोः = एनयोः	एतेषाम्
स०	एतस्मिन्	एतयोः = एनयोः	एतेषु

स्त्रीलिङ्ग

प्र०	एषा	एते	एताः
द्वि०	एताम् = एनाम्	एते = एने	एताः = एनाः
तृ०	एतया = एनया	एताभ्याम्	एताभिः
च०	एतस्यै	एताभ्याम्	एताभ्यः
पं०	एतस्याः	एताभ्याम्	एताभ्यः
ष०	एतस्याः	एतयोः = एनयोः	एतासाम्
स०	एतस्याम्	एतयोः = एनयोः	एतासु

नपुंसक

प्र०	एतद् = एनत्	एते = एने	एतानि = एनानि
द्वि०	एतद् = एनद्	एते = एने	एतानि = एनानि

शेष विभक्तियों के रूप (Declensions) पुंलिङ्ग के समान चलेंगे।

उदाहरण

१—अस्मात् नगरात् त्वं किं नयसि ? What doest thou carry from this city ? इस नगर से तू क्या ले जाता है ?

२—इयं नारी स्वपतिगृहं याति = This woman goes to her husband's house. यह स्त्री अपने पति के घर जाती है।

३—त्वमिमानि फलानि खाद = Eatest thou these fruits. तू इन फलों को खा।

४—एते नृपा युद्धाय यान्ति = These kings go for fighting. ये राजा लोग युद्ध के लिये जाते हैं।

५—एताभिः स्त्रीभिः गीतं कृतम् = These women sang a song. इन स्त्रियों ने एक गीत गाया।

६—एतज्जलं शुद्धं वर्तते = This water is prure यह पानी शुद्ध है।

अष्ठमः पाठः

अदस् (That or those) वह, वे

पुंलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	वहुवचन
प्र०	असौ	अमू	अमी
द्वि०	अमुम्	अमू	अमून्
तृ०	अमुना	अमूभ्याम्	अमीभिः

च०	अमुष्यै	अमूभ्याम्	अमीभ्यः
पं०	अमुष्मात्=अमुष्माद्	अमूभ्याम्	अमीभ्यः
ष०	अमुष्य	अमुयोः	अमीषाम्
स०	अमुष्मिन्	अमुयोः	अमीषु

स्त्रीलिङ्ग

प्र०	असौ	अमू	अमूः
द्वि०	अमूम्	अमू	अमूः
तृ०	अमुया	अमूभ्याम्	अमूभिः
च०	अमुष्यै	अमूभ्याम्	अमूभ्यः
पं०	अमुष्याः	अमूभ्याम्	अमूभ्यः
ष०	अमुष्याः	अमुयोः	अमूषाम्
स०	अमुष्याम्	अमुयोः	अमूषु

नपुंसकलिङ्ग

प्र०	अदः	अमू	अमूनि
द्वि०	अदः	अमू	अमूनि

शेष विभक्तियों के रूप (Declensions) पुंलिंग के समान ही समझना चाहिये।

उदाहरण

१—असौ पुरुषो धार्मिकोऽस्ति=That is a religious man. वह मनुष्य धार्मिक है।

२—अमीषां चित्तानि कोमलानि सन्ति=Their hearts are soft उनके हृदय कोमल हैं।

३—अमीभ्यो बालकेभ्यः पयो देहि=Give milk to those children. उन लड़कों के लिये दूध दो।

४—अमूषां स्त्रीणामेतद् धनमस्ति=This oney is (belongs) to those women. यह धन उन स्त्रियों का है।

५—अमूः नद्यः शुष्काः संजाताः=Those rivers have dried वे नदियाँ सूख गई हैं।

६—अमूनि पुष्पाणि अत्रानय=Bring those flowers here. उन फूलों को यहाँ लाओ।

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि, नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो, न शोषयति मारुतः॥
असौ मया हतः शत्रु र्हनिष्ये चापरानपि,
ईश्वरोऽहमहं भोगी सिद्धोऽहंबलवान्सुखी
अमी हि त्वां सुरसङ्घा विशन्ति।
पूर्णमदः पूर्णमिदं, पूर्णात् पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते॥

नवमः पाठः

अनिश्चयवाचक सर्व नाम

(Indefinite pronouns)

जिस सर्वनाम से निश्चित वस्तुओं का ज्ञान नहीं होता है, उसे अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहा जाता है। जैसे:—

सर्वः = सब। कश्चित् = कोई। किमपि = कुछ।

'किम्' शब्द के रूपों के आगे 'चन, चित्, अपि' को जोड़ देने से ही अनिश्चय वाचक सर्वनाम बनते हैं। जैसे :—

१—सर्वे गतागताः सन्तः आसन् = सब आ जा रहे थे।

२—योगी न भवति कश्चन = No body is a saint = कोई भी पुरुष योगी नहीं होता है।

३—नहि कश्चित्क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत्। No body can live for a moment without any work. कोई भी पुरुष क्षणमात्र भी कर्म किये विना नहीं रहता है।

४—कोऽपि पुरुषः गच्छतु = Any body may go or some man may go. कोई भी आदमी चला जाय।

५—कतिपयाः छात्रा उत्तीर्णाः सन्ति = Some students have passed कुछ छात्र उत्तीर्ण हैं।

६—कतिपयाः जनाः समागताः केचित् न आयाताः = Some men came and some did not come कुछ लोग आये और कुछ नहीं आये।

इन वाक्यों में किसी व्यक्ति विशेष का ज्ञान नहीं होता है, इसलिये ये अनिश्चय वाचक सर्वनाम हैं।

सप्तमोऽध्यायः

विशेषण प्रकरणम्

विशेषण (Adjective)

प्रथमः पाठः

विशेषण वे शब्द हैं जो किसी विशेष्य (Noun) अथवा सर्वनाम (Pronoun) की विशेषता या गुण बतलाते हैं।

विशेषण के भेद

१—गुण वाचक विशेषण (Adjective of quality)
२—परिमाण वाचक विशेषण (Adjective of quantity)
३—सङ्केत वाचक विशेषण (Demonstrative Adjective)
४—संख्या वाचक विशेषण (Numeral Adjectives)

अँग्रेजी में विशेष्य के अनुसार विशेषण के लिङ्ग (Gender) वचन (Number) और कारक (Case) में कोई परिवर्तन नहीं होता है, परन्तु हिन्दी के विशेषण में कहीं कहीं पर परिवर्तन हो जाता है, और कहीं नहीं भी होता है। जैसे—श्रेष्ठ बालक, श्रेष्ठ कन्या, सीता बुद्धि मती है। तेरी बुद्धि प्रखर है। यहाँ पर 'श्रेष्ठ बालक, सीता बुद्धिमती' में परिवर्तन नहीं हुआ। 'श्रेष्ठ कन्या, और तेरी बुद्धि प्रखर' में परिवर्तन हो गया, परन्तु संस्कृत में यह नियम है कि विशेष्य के अनुसार ही विशेषण के भी लिङ्ग, वचन और विभक्तियाँ होती हैं। जैसे—

१—सुन्दरः बालकः (A beautiful boy सुन्दर लड़का)
२—सुन्दरी स्त्री (A beautiful woman सुन्दर स्त्री)
३—सुन्दराणि पुष्पाणि (Beautiful flowers सुन्दर फूल)

गुणवाचक विशेषण (Adjective of quality)

जिन शब्दों के द्वारा किसी वस्तु अथवा पुरुष-स्त्री का गुण या दोष प्रकट हो तो उसे गुणवाचक विशेषण कहते हैं। जैसे—

१—अयं मनोहरो बालकोऽस्ति (This is a beautiful boy) यह एक सुन्दर (मनोहर) बालक है।

२—अयं निकृष्टो बालकोऽस्ति = This is a bad boy यह एक बुरा लड़का है।

कुछ गुणवाचक विशेषण शब्द निम्नलिखित हैं—

शब्द	पुलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
ठण्डा	शीतलः Cold	शीतला Cold	शीतलम् Cold
गर्म	उष्णः Hot	उष्णा hot	उष्णम् hot
अच्छा, भला	शोभनः Well	शोभना Well	शोभनम् Well
बुरा, नीच	निकृष्टः Bad	निकृष्टा bad	निकृष्टम् bad
सफेद	श्वेतः White	श्वेता White	श्वेतम् White
काला	कृष्णः Black	कृष्णा Black	कृष्णम् Black
लाल	रक्तः Red	रक्ता Red	रक्तम् Red
पीला	पीतः Yellow, pale	पीता Yellow, pale	पीतम् Yellow, pale
हरा	हरितः Green	हरिता green	हरितम् green
नीला	नीलः Blue	नीला Blue	नीलम् Blue
मीठा	मधुरः Sweet	मधुरा Sweet	मधुरम् Sweet
खट्टा	अम्लः Sour	अम्ला Sour	अम्लम् Sour
कड़ुआ	कटुः Bitter	कट्वी bitter	कटु bitter
तीता, चरपरा	तिक्तः Biting	तिक्ता Biting	तिक्तम् Biting

अभ्यास

संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(१) खाली हाथ है (२) यह ठण्डा पानी है। (३) सूर्य गर्म है (४) चन्द्रमा ठण्डा है। (५) लाल मिर्च चरपरी होती है (६) कोयल काली होती है। (७) गायें हरी घास चरती हैं। (८) यह सफेद कपड़ा है। (९) उस गुलाब का फूल लाल है (१०) यह आम मीठा है (११) वह आमला खट्टा है। (१२) करेले का शाक कड़ुआ होता है।

द्वितीयः पाठः

तुलनात्मक विशेषण

Degrees of Comparison

किसी विशेषण शब्द का उत्तम, मध्यम दिखाने के लिये तीन श्रेणियाँ नियत हैं।

(क) साधारण विशेषण (Positive degree) अयं बालकः पटुरस्ति—This boy is clever यह लड़का चतुर है।

(ख) तुलनात्मक विशेषण—जब एक अथवा दो में से किसी एक की अधिकता (बड़ाई) या न्यूनता (छोटाई) दिखाई जाती हो तो उस विशेषण के पश्चात् "तर और ईयस्" प्रत्यय जोड़ देने से (Comparative degree) हो जाता है परन्तु इसमें पञ्चमी विभक्ति होती है। जैसे— गोपालः श्यामात्पटुतरोऽस्ति = Gopal is cleverer than Shyam गोपाल श्याम से चतुर है।

(ग) अतिशय वाचक विशेषण—

जब बहुतों में से किसी एक को अधिकता या न्यूनता दिखलानी हो तो उस विशेषण के पश्चात् "तम और इष्ठ" प्रत्यय जोड़ दिये जाते हैं, तब (Superlative degree) होती है। इनमें षष्ठी और सप्तमी दोनों विभक्तियाँ हो सकती हैं। जैसेः—रामः सर्वेषां भ्रातृणाँ (सर्वेषु भ्रातृषु) ज्येष्ठतमोऽस्ति = Ram is the eldest of all the brothers. राम सब भाइयों में बड़ा है।

कुछ तुलनात्मक शब्द निम्नलिखित हैं—

हिंदी तुलनात्मक	सामान्यविशेषण	तुलनात्मक विशेषण	अतिशयवाचक विशेषण
	Positive	Comparative	Superlative
चतुर	पटुः	पटुतरः, पटीयान्	पटुतमः
	Clever	Cleverer	Cleverest
बड़ा	महान्	महत्तरः, महीयान्	महत्तमः
	Great	Greater	Greatest
	Large	Larger	Largest
अच्छा	श्रेष्ठः	श्रेष्ठतरः, श्रेयान्	श्रेष्ठतमः
भला	सुष्ठुः	सुष्ठुतरः	सुष्ठुतमः
	Good	Better	Best
बुरा	निकृष्टः	निकृष्टतरः	निकृष्टतमः
नीच	Bad	Worse	Worst
छोटा	कनिष्ठः	कनिष्ठतरः, कनीयान्	कनिष्ठतमः
	Young	Younger	Youngest
बुड्ढा	वृद्धः	वृद्धतरः	वृद्धतमः
	Old	Older, elder	Oldest, eldest
अधिक	बहुः	बहुतरः	बहुतमः
	Much, many	More	Most
दूर	दूरः	दूरतरः	दूरतमः
	Far	Farther	Farthest

इसी प्रकार और भी शब्दों के रूप बना लेने चाहिये।

सामान्य विशेषण के उदाहरण

१—मोहनः श्रेष्ठो बालकोऽस्ति = Mohan is a good boy. मोहन एक अच्छा लड़का है।

२—सोहनो निकृष्टो बालकोऽस्ति = Sohan is a bad boy सोहन एक बुरा लड़का है।

तुलनात्मक विशेषण के उदाहरण

१—रामो लक्ष्मणात् ज्येष्ठतरोऽस्ति = Ram is elder than Lakshman राम लक्ष्मण से बड़ा है।

२—कर्णपुरम इन्द्रस्थाद् उष्णतरो वर्तते = Kanpur is hotter than Delhi कानपुर देहली से गर्म है।

३—लवपुरनगरस्य जलवायुः लक्ष्मणपुरात् वरमस्ति = The climate of Lahore is better than that of Lucknow. लाहौर का जलवायु लखनऊ से अच्छा है।

अतिशयवाचक विशेषण के उदाहरण

१—रामः सर्वेषां भ्रातॄणां (सर्वेषु भ्रातृषु) ज्येष्ठतमोऽस्ति = Ram is the eldest of all the brothers:. राम सब भाइयों में बड़ा है।

२—वाराणसी सर्वेषां पत्तनानां (सर्वेषु पत्तनेषु) रम्यतमाऽस्ति = Banaras is the best (grandest) of all the cities बनारस सब शहरों में अच्छा है।

३—गङ्गा भारतवर्षे सर्वासां नदीनां (सर्वासु नदीषु) पवित्रतमा विद्यते (वर्तते) = The Ganga is the most sacred river of all the rivers in India गंगा जी भारतवर्ष में सब नदियों में पवित्र हैं।

४—मम सर्वेषां पुत्राणां (सर्वेषु पुत्रेषु) ज्येष्ठतमः पुत्रो द्वादश वर्षे मृतः = My eldest son died at the age of twelve. मेरा सबसे बड़ा बेटा बारह साल की आयु में मर गया।

५—मम सर्वेषां पुत्राणां (सर्वेषु पुत्रेषु) अयं ज्येष्ठतमोऽस्ति = This is the eldest of my sons. यह मेरे सब पुत्रों में बड़ा है।

६—सर्वेषां वृक्षाणां (सर्वेषु वृक्षेषु) असौ महत्तमो वृक्षो विद्यते = That is the biggest tree in the grove वह सब पेड़ों में सबसे बड़ा पुराना पेड़ है।

द्रष्टव्य—'महत्तमः और श्रेष्ठतमः' इन दोनों शब्दों का हिन्दी में एक ही अर्थ होता है परन्तु 'महत्तमः' बेजान चीजों के लिये और 'श्रेष्ठतमः' केवल पुरुषों के लिये ही प्रयुक्त हो सकता है।

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिए और तुलनात्मक विशेषण बताइये:—

श्रेयान् स्वधर्मो विगुणः, परधर्मात् स्वनुष्ठितात्।
स्वधर्मे निधनं श्रेयः, परधर्मो भयावहः।
सर्वेषु कुसुमेषु शिरीषकुसुमं म्रदिष्ठम् भवति।
न चैतद् विद्मः कतरन्नो गरीयो,
यद्वा जयेम यदि वा नो जयेयुः।
एतेषां वस्त्राणामेकतमं ग्रहीतव्यम्।
अनयोः प्रश्नयोरेकतरस्योत्तरं देहि।

शुद्ध व सरल संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(१) यह बड़ी पुस्तक है (२) यह गरीब है (३) वह धनी है (४) वह पुस्तक उससे छोटी है (५) मैं उससे गरीब हूँ (६) वह मुझसे धनाढ्य है (७) देवेन्द्र सुरेश से छोटा है (८) राकेश सुरेन्द्र से पतला है (९) तुम मुझसे बड़े हो (१०) वह मुझ से छोटा है (११) गोविन्द श्याम से अच्छा लड़का है (१२) मोहन श्याम से बुरा लड़का है (१३) राम सब लड़कों में बड़ा बुद्धिमान है (१४) मेरा भाई कक्षा में सब से चतुर है (१५) मैं सब भाइयों में से छोटा हूँ ।

तृतीयः पाठः

परिमाणवाचक विशेषण—(Adjective of Quantity)

जो शब्द किसी वस्तु का परिमाण अथवा माप बताते हैं उन्हें परिमाण वाचक विशेषण कहते हैं । इसके दो भेद हैं—

(क) निश्चय परिमाण वाचक (Definite Quantitative Adjective)

(ख) अनिश्चय परिमाणवाचक (Indefinite quantitative Adjective) जैसेः—इदं दुग्धं प्रस्थपरिमितमस्ति । This milk is one seer यह दूध सेर भर है । (निश्चयवाचक) ।

१—इदं किञ्चिज्जलमस्ति = This is some water यह कुछ पानी है (अनिश्चयवाचक) ।

कुछ परिमाण वाचक शब्द निम्नलिखित हैं—

संस्कृत	हिन्दी	इंगलिश
पादिका =	पाई	Pie
पणकः =	पैसा	Pice
आणकः =	आना	Anna
द्व्याणकी =	दुअन्नी	Two anna piece
चतुराणकी =	चवन्नी	Four anna piece
अष्टाणकी =	अठन्नी	eight anna piece
कर्षः, मुद्रा, रूप्यकम् =	रुपया	One Rupee
दीनारः =	सोने की मुहर	Gold m har
रक्तिका, गुञ्जा =	रत्ती	Ratti
माषकः =	माशा	Masha
कर्षः, तोलकः =	तोला	Tola
पलं, षट्टङ्कः =	छटाँक	Chhatank

कुडवः, पादः = पाव । Quarter seer.
प्रस्थः = सेर one seer.
मणः = मन one maund.
क्षणः = छिन Every short time or a moment.
यामः, प्रहरः = पहर, ३ घण्टा Aperiod of three hours.
विपलः, विकला = $\frac{2}{5}$ सेकिण्ड $\frac{2}{5}$ Second.
पलः, कलाः = $\frac{2}{5}$ मिनट $\frac{2}{5}$ Minute.
घण्टा = घण्टा Hour.
अहोरात्रः = दिनरात Day-night.
सप्ताहः = सात दिन Week.
पक्षः = पन्द्रह दिन, पाख Half month, Fifteen days.
मासः = महीना Month.
वर्षः, संवत्सरः = साल Year.
आँगुलम् , अङ्गुलमात्रम् = अङ्गुलभर Finger-weight.
वितस्तिः = बालिश्त A span.
हस्तः = हाथ Hand.
पादः = पाँव Foot.

द्रष्टव्य—'गज, मील' इत्यादि के लिये संस्कृत में शब्द नहीं हैं अतः ज्यों के त्यों अनुवाद में प्रयोग हो सकते हैं ।

उदाहरण

१—पञ्चगज परिमितं वस्त्रमानय = Bring five yards of cloth. पाँच गज कपड़ा लाओ ।

२—मम विद्यालयोऽत्रतः द्विमीलपरिमितमस्ति = My school is two miles from here. मेरा स्कूल यहाँ से दो मील दूर है ।

३—इदमौषधं त्रीणि औंसानि लाइकोपोडियमस्ति = This drug is three ounces of lycopodium. यह दवाई तीन औंस लाइकोपोडियम है ।

४—एकरूप्यकस्य प्रस्थपरिमितंतण्डुलमस्ति = One seer of rice costs one rupee. एक रुपये का सेर भर चावल है ।

५—क्षणमात्रं तिष्ठ = Stay for a moment. छिनक ठहरो, थोड़ी देर ठहरो ।

('परिक्रयणे संप्रदानमन्यतरस्याम्' १।४।४४)

भावार्थ—खरीदने अर्थ में विकल्प (Optionally) से चतुर्थी विभक्ति होती है और तृतीया विभक्ति भी होती है।

६—मोहन आणकद्वयेन अष्ट आम्रफलनि अक्रीणात्—Mohan bought eight mangoes for two annas. मोहन ने दुअन्नी के आठ आम खरीदे।

७—किं त्वं चतुराणकेन दुग्धं पिबसि? Doest thou drink milk for four annas? क्या तू चवन्नी का दूध पीता है?

८—सोहनः षट्रूप्यकेण वेत्रामनमक्रीणात्। Sohan bought the chair for six rupees. सोहन ने ६) रुपये की कुर्सी खरीदी।

अभ्यास

संस्कृत में अनुवाद कीजिये—

(१) ६० विकला की एक कला होती है। (२ ६० कला की एक घटी होती है (३) ६० घटी का रात दिन होता है। (४) इस पुस्तक की लम्बाई बालिश्त भर है। (५) सात दिन का एक सप्ताह होता है । (६) मैं रात में १० बजे सोऊँगा। (७) इस वर्तन में ५ सेर दूध आ सकता है (८) यह अँगूठी (अभिज्ञानम्) तोला भर है। (९) शकुन्तला दुअन्नी की चूड़ी खरीदती है। (१०) सोलह छटाँक का एक सेर होता है। (११) चार छटाँक का एक पाव होता है।

चतुर्थः पाठः

संकेत वाचक विशेषण (Demonstrative Adjective)

संकेत अथवा निर्देश बोधक विशेषण उसे कहते हैं जिससे किसी वस्तु की ओर निर्देश किया जाय, इसी का दूसरा नाम निश्चय वाचक सर्वनाम भी है।

"इदम्, एतद्, तद्, अदस्, अमुक" इत्यादि।

जैसे—अयं जनः This man यह आदमी।

इदं पुस्तकम् This book यह किताब।

असौ बालकः That boy वह लड़का।

पञ्चमः पाठः

संख्या वाचक विशेषण (Numeral Adjective)

संख्या वाचक विशेषण के पाँच भेद होते हैं।

(क) गणना बोधक (Cardinal)

(ख) क्रम बोधक (Ordinal) = पूर्णार्थक संख्या

(ग) आवृत्ति बोधक (Multiplication or repetition)
(घ) समुदाय बोधक (Collective)
(ङ) विभाग बोधक (Distributive)

संख्या वाचक विशेषण के दो भेद हैं।

(क) निश्चित संख्या वाचक विशेषण। (Definite numeral adjective)

जैसे—तत्र पञ्च पुरुषाः सन्ति = There are five men वहाँ पाँच मनुष्य हैं।

(ख) अनिश्चित संख्या वाचक विशेषण (Indefinite numeral adjective)

१—अस्मिन् गृहे उपदशाः जनाः सन्ति—Ther are about ten men in this house इस घर में लगभग दस आदमी हैं।

२—मम विद्यालये आसन्नविंशाः बालकाः सन्ति। There will be about twenty boys in my school मेरे विद्यालय में लगभग २० लड़के होंगे।

३—कतिपयाः (कतिचित्) छात्रा उत्तीर्णाः सन्ति Some students have passed कुछ विद्यार्थी पास हैं।

४—सर्वः स्वार्थं समीहते = All men care for their own benefit सब मनुष्य अपनी ही चिन्ता करते हैं।

५—अस्माकं देशेऽनेकशाः रोगा विद्यन्ते = There are so many diseases in our country हमारे देश में अनेकों रोग हैं।

६—कोऽपि पुरुषो गच्छतु = Any body may go कोई भी व्यक्ति चला जाय।

द्रष्टव्य—"किम्" शब्द के रूपों के आगे "चन चित्, अपि और कतिपय" इत्यादि लगा देने से कदाचित् अनिश्चित संख्यावाचक हो सकता है और इसी को अनिश्चित सर्वनाम भी कहते हैं।

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिये—

(१) कस्मिंश्चिद् वने एकः सिंहो न्यवसत्। (२) काचित् नदी आसीत्। (३) बह्व्यो बालिकाः सीवनं शिक्षन्ते (४) जना बहूनुपायान् कल्याणाय कुर्वन्ति (५) सर्वे बाला अस्यां श्रेण्यामुत्तीर्णाः सन्ति।

षष्ठः पाठः

(क) सामान्य संख्या (गणना बोधक) (The Cardinal Numeral)

१ एकः (One)

	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
प्र०	एकः	एका	एकम्
द्वि०	एकम्	एकाम्	एकम्
तृ०	एकेन	एकया	एकेन
च०	एकस्मै	एकस्यै	एकस्मै
पं०	एकस्मात् = द्	एकस्याः	एकस्मात् = द्
ष०	एकस्य	एकस्याः	एकस्य
स०	एकस्मिन्	एकस्याम्	एकस्मिन्

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

वरमेको गुणी पुत्रो, नच मूर्खशतान्यपि ।
एकश्चन्द्रस्तमो हन्ति, न च तारागणोऽपि च ॥
एकेनापि सुवृक्षेण, पुष्पितेन सुगन्धिना ।
वासितं तद्वनं सर्वं सुपुत्रेण कुलं यथा ॥
ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म, व्याहरन्मामनुस्मरन् ।
महर्षीणां भृगुरहं, गिरामस्म्येकमक्षरम् ॥

२ द्वि० (Two दो)

	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
प्र०	द्वौ	द्वे	द्वे
द्वि०	द्वौ	द्वे	द्वे
तृ०	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
च०	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
पं०	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
ष०	द्वयोः	द्वयोः	द्वयोः
स०	द्वयोः	द्वयोः	द्वयोः

२ उभौ (Both दोनों)

प्र०	उभौ	उभे	उभे
द्वि०	उभौ	उभे	उभे

	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
तृ०	उभाभ्याम्	उभाभ्याम्	उभाभ्याम्
च०	उभाभ्याम्	उभाभ्याम्	उभाभ्याम्
पं०	उभाभ्याम्	उभाभ्याम्	उभाभ्याम्
ष०	उभयोः	उभयोः	उभयोः
स०	उभयोः	उभयोः	उभयोः

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

द्वौ भूतसर्गौ लोकेऽस्मिन्दैव आसुर एव च
द्वाविमौ पुरुषौ लोके, क्षरश्चाक्षर एव च।
सेनयोरुभयोर्मध्ये, रथं स्थापय मेऽच्युत।
सेनयोरुभयोर्मध्ये, स्थापयित्वा रथोत्तमम्॥

३—त्रि (Three तीन)

	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	पुंनसकलिङ्ग
प्र०	त्रयः	तिस्रः	त्रीणि
द्वि०	त्रीन्	तिस्रः	त्रीणि
तृ०	त्रिभिः	तिसृभिः	त्रिभिः
च०	त्रिभ्यः	तिसृभ्यः	त्रिभ्यः
प०	त्रिभ्यः	तिसृभ्यः	त्रिभ्यः
ष०	त्रयाणाम्	तिसृणाम्	त्रयाणाम्
स०	त्रिषु	तिसृषु	त्रिषु

४—चतुर् (Four चार)

प्र०	चत्वारः	चतस्रः	चत्वारि
द्वि०	चतुरः	चतस्रः	चत्वारि
तृ०	चतुर्भिः	चतसृभिः	चतुर्भिः
च०	चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः	चतुर्भ्यः
पं०	चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः	चतुर्भ्यः
ष०	चतुर्णाम्	चतसृणाम्	चतुर्णाम
स०	चतुर्षु	चतसृषु	चतुर्षु

द्रष्टव्य—'एक शब्द के रूप तीनों लिङ्गों में केवल एकवचन में ही उच्चारण होते हैं। 'द्वि और उभ' शब्दों के रूप तीनों लिङ्गों में केवल द्विवचन में ही उच्चारण होते हैं। 'त्रि और चतुर' शब्दों के रूप तीनों लिङ्गों में केवल बहुवचन में ही उच्चारण होते हैं।

सप्तमः पाठः

५—पञ्चन् (Five पाँच)

प्र०	द्वि०	तृ०	च०	पं०	ष०	स०
पञ्च	पञ्च	पञ्चभिः	पञ्चभ्यः	पञ्चभ्यः	पञ्चानाम्	पञ्चसु

६—षष् (Six छः)

षट्=षड् षट्=षड् षड्भिः षड्भ्यः षड्भ्यः षण्णाम् षट्त्सु=षट्सु

७—सप्तन् (Seven सात)

सप्त सप्त सप्तभिः सप्तभ्यः सप्तभ्यः सप्तानाम् सप्तसु

८—अष्टन् (Eight आठ)

अष्टौ अष्टौ अष्टाभिः अष्टाभ्यः अष्टाभ्यः अष्टानाम् अष्टासु
अष्ट अष्ट अष्टभिः अष्टभ्यः अष्टभ्यः अष्टानाम् अष्टसु

९—नवन् (Nine नौ)

नव नव नवभिः नवभ्यः नवभ्यः नवानाम् नवसु

१०—दशन् (Ten दस)

दश दश दशभिः दशभ्यः दशभ्यः दशानाम् दशसु

द्रष्टव्य—"पञ्चन्, षष्, सप्तन्, अष्टन्, नवन्, दशन्" शब्दों के रूप तीनों लिङ्गों में एक समान और बहुबचन में ही बनते हैं।

संख्या वाचक एक शब्द से लेकर अट्ठारह शब्द पर्यन्त संख्येय में तीनों लिङ्गों में रूप चलते हैं। जैसे—एका शाटी, एकः पटः, एकम् वस्त्रम्। दश स्त्रियः, दश पुरुषाः, दश कुलानि, इत्यादि।

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

त्रिभिर्गुणमयैर्भावैरेभिः सर्वमिदं जगत्।
मोहितं नाभि जानाति, मामेभ्यः परमव्ययम्॥
कैर्लिंगैस्त्रीन् गुणानेतानतीतो भवति प्रभो!
किमाचारः कथं चैतांस्त्रीन्गुणानतिवर्तते॥
महर्षयः सप्त पूर्वे चत्वारो मनवस्तथा॥

जीवन्तोऽपि मृता पञ्च, व्यासेन परिकीर्तितः।
दरिद्रो व्याधितो मूर्खः प्रवासी नित्यसेवकः॥

अष्टमः पाठः

	संस्कृत	हिन्दी	इंगलिश
११	एकादश	ग्यारह	Eleven
१२	द्वादश	बारह	Twelve
१३	त्रयोदश	तेरह	Thirteen
१४	चतुर्दश	चौदह	Fourteen
१५	पञ्चदश	पन्द्रह	Fifteen
१६	षोडश	सोलह	Sixteen
१७	सप्तदश	सत्रह	Seventeen
१८	अष्टादश	अठारह	Eighteen
१९	नवदश = एकोनविंशतिः	उन्नीस	Nineteen
२०	विंशतिः	बीस	Twenty
२१	एकविंशतिः	इक्कीस	Twenty one
२२	द्विविंशतिः = द्वाविंशतिः	बाईस	Twenty two
२३	त्रयोविंशतिः	तेइस	Twenty three
२४	चतुर्विंशतिः	चौबीस	Twenty four
२५	पञ्चविंशतिः	पच्चीस	Twenty five
२६	षड्विंशतिः	छब्बीस	Twenty six
२७	सप्तविंशतिः	सत्ताईस	Twenty seven
२८	अष्टाविंशतिः	अट्ठाईस	Twenty eight
२९	नवविंशति = एकोनत्रिंशत्	उन्तीस	Twenty nine
३०	त्रिंशत्	तीस	Thirty
३१	एकत्रिंशत्	इकतीस	Thirty one
३२	द्वित्रिंशत् = द्वात्रिंशत्	बत्तीस	Thirty two
३३	त्रयस्त्रिंशत्	तैंतीस	Thirty three
३४	चतुस्त्रिंशत	चौंतीस	Thirty four
३५	पञ्चत्रिंशत्	पैंतीस	Thirty five
३६	षड्त्रिंशत्	छत्तीस	Thirty six
३७	सप्तत्रिंशत्	सैंतीस	Thirty seven
३८	अष्टात्रिंशत्	अड़तीस	Thirty eight
३९	नवत्रिंशत् = एकोनचत्वारिंशत्	उन्तालीस	Thirty nine

	संस्कृत	हिन्दी	इंगलिश
४०	चत्वारिंशत्	चालीस	Forty
४१	एकचत्वारिंशत्	इकतालीस	Forty one
४२	द्विचत्वारिंशत् = द्वाचत्वारिंशत्	बयालीस	Forty two
४३	त्रिचत्वारिंशत् = त्रयश्चत्वारिंशत्	तैंतालीस	Forty three
४४	चतुश्चत्वारिंशत्	चौवालीस	Forty four
४५	पञ्चचत्वारिंशत्	पैंतालीस	Forty five
४६	षट्चत्वारिंशत्	छियालीस	Forty six
४७	सप्तचत्वारिंशत्	सैंतालीस	Forty seven
४८	अष्टाचत्वारिंशत् = अष्टचत्वारिंशत्	अड़तालीस	Forty eight
४९	नवचत्वारिंशत् = एकोनपञ्चाशत्	उञ्चास	Forty nine
५०	पञ्चाशत्	पचास	Fifty
५१	एकपञ्चाशत्	इक्यावन	Fifty one
५२	द्विपञ्चाशत् = द्वापञ्चाशत्	बावन	Fifty two
५३	त्रिपञ्चाशत् = त्रयःपञ्चाशत्	तिरपन	Fifty three
५४	चतुःपञ्चाशत	चौवन	Fifty four
५५	पञ्चपञ्चाशत्	पचपन	Fifty five
५६	षट्पञ्चाशत्	छप्पन	Fifty six
५७	सप्तपञ्चाशत्	सत्तावन	Fifty seven
५८	अष्टापञ्चाशत् = अष्टपञ्चाशत्	अट्ठावन	Fifty eight
५९	नवपञ्चाशत् = एकोनषष्टिः	उन्सठ	Fifty nine
६०	षष्टिः	साठ	Sixty
६१	एकषष्टिः	इकसठ	Sixty one
६२	द्विषष्टिः = द्वाषष्टिः	बासठ	Sixty two
६३	त्रिषष्टिः = त्रयःषष्टिः	तिरसठ	Sixty three
६४	चतुःषष्टिः	चौंसठ	Sixty four
६५	पञ्चषष्टिः	पैंसठ	Sixty five

	संस्कृत	हिन्दी	इंगलिश
६६	षट् षष्टिः	छियासठ	Sixty six
६७	सप्त षष्टिः	सड़सठ	Sixty seven
६८	अष्टाषष्टिः = अष्टषष्टिः	अड़सठ	Sixty eight
६९	नवषष्टिः = एकोनसप्ततिः	उनहत्तर	Sixty nine
७०	सप्ततिः	सत्तर	Seventy
७१	एकसप्ततिः	इकहत्तर	Seventy one
७२	द्विसप्ततिः = द्वासप्ततिः	बहत्तर	Seventy two
७३	त्रिसप्ततिः = त्रयःसप्ततिः	तिहत्तर	Seventy three
७४	चतुःसप्ततिः	चौहत्तर	Seventy four
७५	पञ्चसप्ततिः	पचहत्तर	Seventy five
७६	षट्सप्ततिः	छिहत्तर	Seventy six
७७	सप्त सप्ततिः	सतहत्तर	Seventy seven
७८	अष्टासप्ततिः = अष्टसप्ततिः	अठहत्तर	Seventy eight
७९	नवसप्ततिः = एकोनाशीतिः	उनासी	Seventy nine
८०	अशीतिः	अस्सी	Eighty
८१	एकाशीतिः	इक्यासी	Eighty one
८२	द्व्यशीतिः	बयासी	Eighty two
८३	त्र्यशीतिः	तिरासी	Eighty three
८४	चतुरशीतिः	चौरासी	Eighty four
८५	पञ्चाशीतिः	पचासी	Eighty Five
८६	षडशीतिः	छियासी	Eighty six
८७	सप्ताशीतिः	सतासी	Eighty seven
८८	अष्टाशीतिः	अट्ठासी	Eighty eight
८९	नवाशीतिः = एकोननवतिः	नवासी	Eighty nine
९०	नवतिः	नब्बे	Ninty
९१	एकनवतिः	इक्यानबे	Ninety one
९२	द्विनवतिः = द्वानवतिः	बानबे	Ninety two
९३	त्रिनवतिः = त्रयोनवतिः	तिरानबे	Ninety three
९४	चतुर्नवतिः	चौरानबे	Ninety four
९५	पञ्चनवतिः	पञ्चानबे	Ninety five
९६	षण्णवतिः	छियानबे	Ninety six
९७	सप्तनवतिः	सत्तानबे	Ninety seven

	संस्कृत	हिन्दी	इंगलिश
९८	अष्टानवतिः = अष्टनवतिः	अट्ठानबे	Ninety eight
९९	नवनवतिः = एकोनशतम्	निन्यानबे	Ninety nine
१००	शतम् = एकशतम्	सौ	One hundred
२००	शतद्वयम्	दो सौ	Two hundred
३००	शतत्रयम्	तीन सौ	Three hundred
१०००	सहस्रम्	हजार	One thousand
१००००	अयुतम्	दस हजार	Ten thousad

विंशत्याद्याः सदैकत्वे सर्वाः संख्येयसंख्ययोः।
संख्यार्थे द्विबहुत्वेस्तस्तासु चानवतेः स्त्रियः॥

भावार्थ—एकनोविंशतिः (उन्नीस) शब्द से लेकर पराद्धं संख्या पर्यन्त सब शब्द संख्येय और संख्या में सदा एकवचन ही होते हैं। जैसे—एकोनविंशतिः बालकाः (२) विंशतिर्ब्राह्मणाः अथवा ब्राह्मणानां विंशतिः सन्ति।

संख्यार्थ में एकोनविंशति से लेकर नवनवतिः (निन्यानबे) तक शब्द द्विवचन, बहुवचन और स्त्रीलिङ्ग में होते हैं। जैसे—द्वे विंशती कन्ये स्तः।

"शतम्, सहस्त्रंम्, अयुतम्, लक्षम्" इत्यादि नित्य एकवचन और नपुंसकलिङ्ग में प्रयोग होते हैं। जैसे—शतं पुरुषाः, सहस्रं नार्यः, इत्यादि 'विंशतिः, षष्टिः, सप्ततिः, अशीतिः, नवनवति, इत्यादि मतिः शब्द के समान रूप चलते हैं। त्रिंशत्, चत्वारिंशत्, पञ्चाशत् इत्यादि हलन्त पुंलिङ्ग भूभृत् शब्द के समान रूप चलते हैं।

उदाहरण

१—विंशतिरश्वाः सन्ति = There are twenty horses बीस घोड़े हैं।

२—विंशत्या अश्वैर्युक्ताः = with twenty horses बीस घोड़ों से युक्त।

३—षष्टिः शिशवः = Sixty children. साठ बच्चे।

४—षष्टेः शिशूनां = of sixty children. साठ बच्चों के।

५—सप्ततिः तरवः = Seventy trees. सत्तर पेड़।

६—अशीतिः सरांसि = eighty tanks अस्सी झीलें अथवा अस्सी तालाब।

७—विंशतिम् आम्राणि आनय = Bring twenty mangoes. बीस आम लाओ।

८—आम्राणां द्वे विंशती आनय अथवा चत्वारिंशतम् आम्राणि आनय = Bring two scores of mangoes or Bring forty mangoes. चालीस आम लाओ।

९—आम्राणां तिस्रः विंशतिम् आनय अथवा षष्टिम् आम्राणि आनय = Bring three scores of mangoes or bring sixty mangoes तीन बीसी आम लावो अथवा साठ आम लाओ।

१०—पञ्चाशत् धेनवः विचरन्ति = Fifty cows are roaming पचास गायें घूम रही हैं।

११—षष्टिः सैन्यानि युद्धक्षेत्रे भ्रमन्ति (विचरन्ति)। Sixty soldiers are marching over the field of battle साठ सिपाही युद्धक्षेत्र में घूम रहे हैं।

१२—बालकानां नवतिरत्र विद्यालये पठन्ति। Ninety boys read in this school. इस पाठशाला में नब्बे लड़के पढ़ते हैं।

१३—सप्ततिः बालकाः विद्यालयं गच्छन्ति—Seventy boys are going to school सत्तर लड़के पाठशाला जा रहे हैं।

१४—फलानां द्वे शते = Fruits numbering two hundred दो सौ फल।

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिए:—

दशवर्ष सहस्राणि, दशवर्ष शतानि च।
रामो राज्यमुपासित्वा, ब्रह्मलोकं प्रयास्यति॥

श्यामः पाठशालायां विंशतिरूप्यकाणि पारितोषिकं प्राप्तवान् (प्राप्तानि)।
अस्यां मेलायां लक्षमेकं जनाः संमिलिता आसन्।

संस्कृत में अनुवाद कीजिए:—

(१) हमारे विद्यालय में पांच अध्यापक पढ़ाते हैं।
(२) इस समय मेरे पास ३०) रुपये हैं।
(३) कल (श्वः) मेरे मनीआर्डर द्वारा (धनादेशेन) २५) रुपये आयेंगे
(४) मेरे स्कूल में निन्यानबे लड़के पढ़ते हैं।
(५) हे मित्र ! क्या आपके चार भाई हैं ?
(६) क्या तुम्हारे बाग में ३२ बत्तीस आमके पेड़ हैं ?
(७) मेरे चार लड़कियाँ और छः लड़के हैं।
(८) मेरे बाग में ५० अमरूद (दृढ़बीजानि) के पेड़ हैं (९) लगभग इस मेले में एक लाख मनुष्य शामिल हुए।

नवमः पाठः

(ख) क्रम बोधक संख्या (Ordinal)

	संस्कृत			हिन्दी	
	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
१	प्रथमः, आदिमः आद्यः।	प्रथमा	प्रथमम्	पहिला,	पहिली
२	द्वितीयः	द्वितीया	द्वितीयम्	दूसरा	दूसरी
३	तृतीयः	तृतीया	तृतीयम्	तीसरा	तीसरी
४	चतुर्थः	चतुर्थी	चतुर्थम्	चौथा	चौथी
५	पञ्चमः	पञ्चमी	पञ्चमम्	पाँचवाँ	पाँचवीं
६	षष्ठः	षष्ठी	षष्ठम्	छठां, छठवाँ	छठवीं
७	सप्तमः	सप्तमी	सप्तमम्	सातवाँ	सातवीं
८	अष्टमः	अष्टमी	अष्टमम्	आठवाँ	आठवीं
९	नवमः	नवमी	नवमम्	नौवाँ	नौवीं
१०	दशमः	दशमी	दशमम्	दसवाँ	दसवीं
११	एकादशः	एकादशी	एकादशम्	ग्यारहवा	ग्यारहवीं
१२	द्वादशः	द्वादशी	द्वादशम्	बारहवाँ	बारहवीं
१३	त्रयोदशः	त्रयोदशी	त्रयोदशम्	तेरहवाँ	तेरहवीं

	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिंग
१४	चतुर्दशः	चतुर्दशी	चतुर्दशम्	चौदहवाँ	चौदहवीं
१५	पञ्चदशः	पञ्चदशी	पञ्चदशम्	पन्द्रहवाँ	पन्द्रहवीं
१६	षोडशः	षोडशी	षोडशम्	सोलहवाँ	सोलहवीं
१७	सप्तदशः	सप्तदशी	सप्तदशम्	सत्रहवाँ	सत्रहवीं
१८	अष्टादशः	अष्टादशी	अष्टादशम्	अट्ठारहवाँ	अट्ठारहवीं
१९	एकोनविंशतितमः	एकोनविंशतितमा	एकोनविंशतितमम्	उन्नीसवाँ	उन्नीसवीं
२०	विंशतितमः (विंशः)	विंशतितमा	विंशतितमम्	बीसवाँ	बीसवीं
२१	एकविंशतितमः	एकविंशतितमा	एकविंशतितमम्	इक्कीसवाँ	इक्कीसवीं
२२	द्वाविंशतितमः	द्वाविंशतितमा	द्वाविंशतितमम्	बाइसवाँ	बाइसवीं
२३	त्रयोविंशतितमः	त्रयोविंशतितमा	त्रयोविंशतितमम्	तेइसवाँ	तेइसवीं
२४	चतुर्विंशतितमः	चतुर्विंशतितमा	चतुर्विंशतितमम्	चौबीसवाँ	चौबीसवीं
२५	पञ्चविंशतितमः	पञ्चत्रिंशतितमा	पञ्चविंशतितमम्	पच्चीसवाँ	पच्चीसवीं
२६	षड्विंशतितमः	षड्विंशतितमा	षड्विंशतितमम्	छब्बीसवाँ	छब्बीसवीं
२७	सप्तविंशतितमः	सप्तविंशतितमा	सप्तविंशतितमम्	सत्ताइसवाँ	सत्ताइसवीं
२८	अष्टाविंशतितमः	अष्टाविंशतितमा	अष्टाविंशतितमम्	अट्ठाइसवां	अट्ठाइसवीं
२९	एकोनत्रिंशत्तमः	एकोनत्रिंशत्तमा	एकोनत्रिंशत्तमम्	उन्तीसवाँ	उन्तीसवीं
३०	त्रिंशत्तमः	त्रिंशत्तमा	त्रिंशत्तमम	तीसवाँ	तीसवीं

	पुंलिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग	पुंलिंग	स्त्रीलिंग
३१	एकत्रिंशत्तमः	एकत्रिंशत्तमा	एकत्रिंशत्तमम्	इकतीसवाँ	इकतीसवीं
३२	द्वात्रिंशत्तमः	द्वात्रिंशत्तमा	द्वात्रिंशत्तमम्	बत्तीसवाँ	बत्तीसवीं
३३	त्रयस्त्रिंशत्तमः	त्रयस्त्रिंशत्तमा	त्रयस्त्रिंशत्तमम्	तैंतीसवाँ	तैंतीसवीं
३४	चतुस्त्रिंशत्तमः	चतुस्त्रिंशत्तमा	चतुस्त्रिंशत्तमम्	चौंतीसवाँ	चौंतीसवीं
३५	पञ्चत्रिंशत्तमः	पञ्चत्रिंशत्तमा	पञ्चत्रिंशत्तमम्	पैंतीसवाँ	पैंतीसवीं
३६	षट्त्रिंशत्तमः	षटत्रिंशत्तमा	षट्त्रिंशत्तमम्	छत्तीसवाँ	छत्तीसवीं
३७	सप्तत्रिंशत्तमः	सप्तत्रिंशत्तमा	सप्तत्रिंशत्तमम्	सैंतीसवाँ	सैंतीसवीं
३८	अष्टात्रिंशत्तमः	अष्टात्रिंशत्तमा	अष्टात्रिंशत्तमम्	अड़तीसवाँ	अड़तीसवीं
३९	एकोनचत्वारिंशत्तमः	एकोनचत्वारिंशत्तमा	एकोनचत्वारिंशत्तमम्	उन्तालीसवाँ	उन्तालीसवीं
४०	चत्वारिंशत्तमः	चत्वारिंशत्तमा	चत्वारिंशत्तमम्	चालीसवाँ	चालीसवीं
४१	एकचत्वारिंशत्तमः	एकचत्वारिंशत्तमा	एकचत्वारिंशत्तमम्	इकतालीसवाँ	इकतालीसवीं
४२	द्वाचत्वारिंशत्तमः	द्वाचत्वारिंशत्तमा	द्वाचत्वारिंशत्तमम्	बयालीसवाँ	बयालीसवीं
४३	त्रिचत्वारिंशत्तमः	त्रिचत्वारिंशत्तमा	त्रिचत्वारिंशत्तमम्	तैतालीसवाँ	तैतालीसवीं
४४	चतुश्चत्वारिंशत्तमः	चतुश्चत्वारिंशत्तमा	चतुश्चत्वारिंशत्तमम्	चौवालीसवाँ	चौवालीसवीं
४५	पञ्चचत्वारिंशत्तमः	पञ्चचत्वारिंशत्तमा	पञ्चचत्वारिंशत्तमम्	पैंतालीसवाँ	पैंतालीसवीं
४६	षट्चत्वारिंशत्तमः	षट्चत्वारिंशत्तमा	षट्चत्वारिंशत्तमम्	छियालीसवां	छियालीसवीं
४७	सप्तचत्वारिंशत्तमः	सप्तचत्वारिंशत्तामा	सप्तचत्वारिंशत्तमम्	सैंतालीसवां	सैंतालीसवीं
४८	अ.ाचत्वारिंशत्तमः	अष्टाचत्वारिंशत्तमा	अष्टाचत्वारिंशत्तमम्	अड़तालीसवाँ	अड़तालीसवीं

	पुलिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग	पुंलिंग	स्त्रीलिंग
४९	एकोनपञ्चाशत्तमः	एकोनपञ्चाशत्तमा	एकोनपञ्चाशत्तमम्	उञ्चासवाँ	उञ्चासवीं
५०	पञ्चाशत्तमः	पञ्चाशत्तमा	पञ्चाशत्तमम्	पंचासवाँ	पंचासवीं
५१	एकपञ्चाशत्तमः	एकपञ्चाशत्तमा	एकपञ्चाशत्तमम्	इक्यावनवाँ	इक्यावनवीं
५२	द्विपञ्चाशत्तमः	द्विपञ्चाशत्तमा	द्विपञ्चाशत्तमम्	बावनवाँ	बावनवीं
५३	त्रयःपञ्चाशत्तमः त्रिपञ्चाशत्तमः	त्रयःपंचाशत्तमा	त्रयः पंचाशत्तमम्	तिरपनवाँ	तिरपनवीं
५४	चतुःपञ्चाशत्तमः	चतुःपञ्चाशत्तमा	चतुःपञ्चाशत्तमम्	चौवनवाँ	चौवनवीं
५५	पञ्चपञ्चाशत्तमः	पञ्चपञ्चाशत्तमा	पञ्चपञ्चाशत्तमम्	पचपनवाँ	पचपनवीं
५६	षट्पञ्चाशत्तमः	षट्पञ्चाशत्तमा	षट्पञ्चाशत्तमम्	छप्पनवाँ	छप्पनवीं
५७	सप्तपञ्चाशत्तमः	सप्तपञ्चाशत्तमा	सप्तपञ्चाशत्तमम्	सत्तावनवाँ	सत्तावनवीं
५८	अष्टापञ्चाशत्तमः	अष्टापञ्चाशत्तमा	अष्टापञ्चाशत्तमम्	अट्ठावनवाँ	अट्ठावनवीं
५९	एकोनषष्टितमः	एकोनषष्टितमा	एकोनषष्टितमम्	उन्सठवाँ	उन्सठवीं
६०	षष्टितमः	षष्टितमा	षष्टितमम्	साठवाँ	साठवीं
६१	एकषष्टितमः	एकषष्टितमा	एकषष्टितमम्	इक्सठवाँ	इक्सठवीं
६२	द्विषष्टितमः	द्विषष्टितमा	द्विषष्टितमम्	बासठवाँ	बासठवीं
६३	त्रिषष्टितमः	त्रिषष्टितमा	त्रिषष्टितमम्	तिरसठवाँ	तिरसठवीं
६४	चतुःषष्टितमः	चतुःषष्टितमा	चतुःषष्टितमम्	चौंसठवाँ	चौंसठवीं

	पुंलिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग	पुंलिंग	स्त्रीलिंग
६५	पञ्चषष्टितमः	पञ्चषष्टितमा	पञ्चषष्टितमम्	पैंसठवाँ	पैंसठवीं
६६	षट्षष्टितमः	षट्षष्टितमा	षट्षष्टितमम्	छियासठवाँ	छियासठवीं
६७	सप्तषष्टितमः	सप्तषष्टितमा	सप्तषष्टितमम्	सड़सठवाँ	सड़सठवीं
६८	अष्टषष्टितमः	अष्टषष्टितमा	अष्टषष्टितमम्	अड़सठवाँ	अड़सठवीं
६९	एकोनसप्ततितमः	एकोनसप्ततितमा	एकोनसप्ततितमम्	उनहत्तरवाँ	उनहत्तरवीं
७०	सप्ततितमः	सप्ततितमा	सप्ततितमम्	सत्तरवाँ	सत्तरवीं
७१	एकसप्ततितमः	एकसप्ततितमा	एकसप्ततितमम्	इक्हत्तरवाँ	इकहत्तरवीं
७२	द्विसप्ततितमः	द्विसप्ततितमा	द्विसप्ततितमम्	बहत्तरवाँ	बहत्तरवीं
७३	त्रिसप्ततितमः	त्रिसप्ततितमा	त्रिसप्ततितमम्	तिहत्तरवाँ	तिहत्तरवीं
७४	चतुःसप्ततितमः	चतुःसप्ततितमा	चतुःसप्ततितमम्	चौहत्तरवाँ	चौहत्तरवीं
७५	पञ्चसप्ततितमः	पञ्चसप्ततितमा	पञ्चसप्ततितमम्	पचहत्तरवाँ	पचहत्तरवीं
७६	षट्सप्ततितमः	षट्सप्ततितमा	षट्सप्ततितमम्	छिहत्तरवाँ	छिहत्तरवीं
७७	सप्तसप्ततितमः	मप्तसप्ततितमा	सप्तसप्ततितमम्	सतहत्तरवाँ	सतहत्तरवीं
७८	अष्टसप्ततितमः	अष्टसप्ततितमा	अष्टसप्ततितमम्	अठहत्तरवाँ	अठहत्तरवीं
७९	एकोनाशीतितमः	एकोनाशीतितमा	एकोनाशीतितमम्	उनासीवाँ	उनासीवीं
८०	अशीतितमः	अशीतितमा	अशीतितमम्	अस्सीवाँ	अस्सीवीं
८१	एकाशीतितमः	एकाशीतितमा	एकाशीतितमम्	इक्यासीवाँ	इक्यासीवीं

	पुंलिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग	पुंलिंग	स्त्रीलिंग
८२	द्व्यशीतितमः	द्व्यशीतितमा	द्व्यशीतितमम्	बयासीवाँ	बयासीवीं
८२	त्र्यशीतितमः	त्र्यशीतितमा	त्र्यशीतितमम्	तिरासीवाँ	तिरासीवीं
८४	चतुरशीतितमः	चतुरशीतितमा	चतुरशीतितमम्	चौरासीवाँ	चौरासीवीं
८५	पञ्चाशीतितमः	पञ्चाशीतितमा	पञ्चाशीतितमम्	पचासीवाँ	पचासीवीं
८६	षडशीतितमः	षडशीतितमा	षडशीतितमम्	छियासीवाँ	छियासीवीं
८७	सप्ताशीतितमः	सप्ताशीतितमा	सप्ताशीतितमम्	सतासीवाँ	सतासीवीं
८८	अष्टाशीतितमः	अष्टाशीतितमा	अष्टाशीतितमम्	अट्ठासीवाँ	अट्ठासीवीं
८९	एकोननवतितमः	एकोननवतितमा	एकोननवतितमम्	नवासीवाँ	नवासीवीं
९०	नवतितमः	नवतितमा	नवतितमम्	नब्बेवाँ	नब्बेवीं
९१	एकनवतितमः	एकनवतितमा	एकनवतितमम्	इक्यानबेवाँ	इक्यानबेवीं
९२	द्विनवतितमः	द्विनवतितमा	द्विनवतितमम्	बानबेवाँ	बानबेवीं
९३	त्रिनवतितमः	त्रिनवतितमा	त्रिनवतितमम्	तिरानबेवाँ	तिरानबेवीं
९४	चतुर्नवतितमः	चतुर्नवतितमा	चतुर्नवतितमम्	चौरानबेवाँ	चौरानबेवीं
९५	पञ्चनवतितमः	पञ्चनवतितमा	पञ्चनवतितमम्	पञ्चानबेवाँ	पञ्चानबेवीं
९६	षण्णवतितमः	षण्णवतितमा	षण्णवतितमम्	छियानबेवाँ	छियानबेवीं
९७	सप्तनवतितमः	सप्तनवतितमा	सप्तनवतितमम्	सप्तानबेवाँ	सप्तानबेवीं
९८	अष्टनवतितमः	अष्टनवतितमा	अष्टनवतितमम्	अट्ठानबेवाँ	अट्ठानबेवीं
९९	नवनवतितमः	नवनवतितमा	नवनवतितमन्	निन्यानबेयाँ	निन्यानबेवीं
१०३	शततमः	शततमा	शततमम्	सौवाँ	सौवीं

उदाहरण

१—अस्यां वीथिकायां गोविन्दस्य तृतीयं गृहमस्ति। Govind's house is the third in this lane इसी गली में गोविन्द का तीसरा मकान है।

२—स एकादश्यां कक्षायां पठति = He reads in the eleventh class. वह ग्यारहवीं कक्षा में पढ़ता है।

३—अदः चतुर्थं पुस्तकमानय = Bring that fourth book. उस चौथी किताब को लाओ।

अभ्यास

शुद्ध हिन्दी में अनुवाद कीजिए

(१) अष्टमे वर्षे ब्राह्मणस्य, एकादशे क्षत्रियस्य।
द्वादशे वैश्यस्य च यज्ञोपवीतसंस्कारो भवति॥

(२) अस्यां वीथ्यां रामस्य विंशतितमंगृहमस्ति। (३) जना एकादस्यां तिथौ उपवासं कुर्वन्ति। (४) अस्माकं पाठशालाया अयं तृतीयो वार्षिकोत्सवोऽस्ति। (५) अधुना त्रिंशत्तमः छात्रोऽत्रागच्छतु। (६) अस्यां नामावल्यां सुशीला एकोनविंशतितमा विद्यते।

शुद्ध व सरल संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(१) मैं बारहवीं कक्षा में पढ़ता हूँ (२) तू चौदहवीं कक्षा में है (३) आठवाँ बालक यहाँ आवे। (४ इसी गली में नौवाँ मकान राकेश का है। (५) मैं पन्द्रहवें दिन आऊँगा (६) तू सातवें दिन आया था। (७) श्रीमद्भगवद्गीता का पन्द्रहवाँ अध्याय अवश्य पाठ करना चाहिये (८) देवेन्द्र अपनी कक्षा में दूसरे नम्बर पर है। ९) इस कक्षा में प्रथम छात्र कौन है? (१०) मेरी तीसरी अँगुली में अँगुठी है (११) ब्राह्मण का यज्ञोपवीत आठवें वर्ष होना चाहिये।

दशमः पाठः

(ग) आवृत्ति वाचक विशेषण

संस्कृत	हिन्दी	संस्कृत	हिन्दी
द्विगुणम् = Twofold	दुगुना,	त्रिगुणम् = Threefold	तिगुना
चतुर्गुणम् = Fourfold	चौगुना,	पंचगुणम् = Fivefold	पञ्चगुना
षड् गुणम् = Sixfold	छगुना,	सप्तगुणम् = Sevenfold	सतगुना
अष्टगुणम् = Eightfold	आठगुना,	नवगुणम् = Ninefold	नवगुना
दशगुणम् = Tenfold	दसगुना,	इत्यादि शब्द आवृत्ति बोधक हैं।	

उदाहरण

१—स व्यापारे द्विगुणं धनं प्राप्तवानासीत्। He earned double in the business. उसे व्यापार में दूना धन मिला।

२—अस्मिन्महाविद्यालये चत्वारिंशद्गुणा अधिका छात्राः संजाताः The students have become fortyfold more in this college. इस कालिज में चालीस गुने लड़के अधिक हो गये हैं।

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिए:—

(१) द्विगुणं त्रिगुणं वित्तं, भाण्डक्रयविचक्षणाः।
प्राप्नुवन्त्युद्यमाल्लोका, दूर देशान्तरं गताः॥

(२) रजकः (निर्णेजकः) द्विगुणं चतुर्गुणं वा संपुटितं वस्त्रं तप्तलोहेन समीकृत्य ग्राहकेभ्यो ददाति (३) सा बाला त्रिरावृत्तं (त्रिगुणं) दाम (मालां) धारयति (४) सर्वे कृषकाः सन् १९५० ईस्व्यां दशगुणं राजकरं ददुः।

शुद्ध व सरल संस्कृत में अनुवाद कीजिए:—

(१) धोबी वस्त्रों को तहकर (घरीकर) के और स्त्री फेरकर ग्राहकों को देता है (२) सब किसानों ने सन् १९५० में दसगुना लगान दिया (३) वह लड़की पांच लर की करधनी पहिनी है (४) दो दूनी चार (५) तीन दूनी छः (६) दो चौक आठ (७) छ दूना बारह (८) तेरह दूना छब्बीस (९) पन्द्रहतियाँ पैंतालिस (१०) सात छक्के बयालीस (११) बारह छक्के बहत्तर।

एकादशः पाठः

समुदायबोधक विशेषण

दोनों हाथ—Both the hands तीनों लोक—The three worlds चारों वर्ण—The four castes. बीसों जन आये—Twenty men came. 'तीसों, पचासों, सैकड़ों' इत्यादि शब्द समुदाय बोधक हैं। परन्तु संस्कृत में संख्यावाचक शब्दों के साथ 'अपि' शब्द जोड़ देने से समुदाय वाचक शब्द बन जाता है। जैसे—

१—अस्मिन्प्रकोष्ठे पञ्चत्रिंशदपि बालकाः सावकाशं पठनाय सक्नुवन्ति—Thirty five students can read in this room इस कमरे में पैंतीस लड़के पढ़ सकते हैं।

२—शतमपि सैनिकाः युद्धे हताः—Hundreds of soldiers were killed in the war सैकड़ों सिपाही युद्ध में मारे गये।

३—किं त्वया षोडशापि आणकाः व्ययं कृताः (व्ययीकृताः) ? Have you spent all the sixteen annas ? क्या तूने सोलहों आने खर्च कर दिये ?

४—किं चत्वारोऽपि बालकाः पलायिताः ? Have all the four boys run away ? क्या चारों लड़के भाग गये ?

अभ्यास

संस्कृत में अनुवाद कीजिए :—

(१) दोनों आदमी चले गये (२) इस मेले में सैकड़ों मनुष्य आये थे (३) इस युद्ध में लाखों सिपाही मारे गये। (४) यहाँ तीनों के तीनों आ गये। (५) मनुष्यों में चारों वर्ण हैं (६) मेरे पास बीसों पुस्तकें हैं (७) इस बाग में अमरूद के पचासों पेड़ हैं (८) इस स्कूल में सैकड़ों लड़के पढ़ सकते हैं।

द्वादशः पाठः

विभाग बोधक विशेषण

(Distributive adjective).

"सर्वः प्रत्येक, सकल, प्रति" इत्यादि शब्द विभाग बोधक होते हैं। जैसे:—

१—प्रत्येकं बालकमाह्वय—Call every boy हर एक बालक को बुलाओ।

२—अस्यां कक्षायां सर्वे बालाः पटवः सन्ति=All the students in this class are clever इस कक्षा में सब लड़के चतुर हैं।

३—प्रतिदिनं पठितुं विद्यालयं गच्छ=Go to the school daily for reading हर रोज पढ़ने के लिये स्कूल जाओ।

अभ्यास

शुद्ध व सरल संस्कृत में अनुवाद कीजिए :—

(१) प्रत्येक बालक को गुरुकुल में जाना चाहिये। (२) प्रति ब्राह्मण को पाँच रुपये दो (३) सब बालकों को बुलाओ (४) हर एक का नाम लो (५) हर एक मनुष्यों को आने दो।

त्रयोदशः पाठः

क्रिया विशेषण प्रकरणम् (Adverb)

क्रिया विशेषण उन शब्दों को कहते हैं जिनके द्वारा किसी क्रिया की विशेषता प्रकट होती है।

क्रिया विशेषणानां कर्मत्वमेकत्वं नपुंसक लिङ्गता च"

भावार्थः—क्रिया विशेषण में द्वितीया विभक्ति और सदा एक वचन ही होता है और इसका प्रयोग नपुंसक लिङ्ग में ही होता है। जैसे—

१—सा मधुरं हसति—She smiles pleasantly वह मधुर हंसती है।

२—स मन्दं गच्छति (स मन्दं मन्दं गच्छन्नस्ति) He is going slowly. वह धीरे-धीरे जा रहा है।

३—स अत्यन्तं सुशीलोऽस्ति=He is very gentle वह अत्यन्त सुशील (भला) है।

४—मोहनः शीघ्रं धावति=Mohan runs quickly मोहन जल्दी दौड़ता है।

(क) कुछ अव्यय (Preposition) शब्द भी क्रिया विशेषण (Adverb) होते हैं। जैसे—कथं तिष्ठसि गुरुः सम्मुखे ? How art thou sitting before (in front of) the teacher ? तू गुरु के सामने कैसे बैठा है ?

(ख कहीं-कहीं तृतीयान्त शब्द भी क्रियाविशेषण होता है। जैसे—स मधुरस्वरेण गायति—He sings with sweet voice वह मीठे स्वर से गाता है

(ग) विशेषण में भी जो शब्द विशेषता प्रगट करता है, उसे भी क्रिया-विशेषण (Adverb) कहते हैं। जैसे—अतिशीघ्रमागच्छ—Come Soon बहुत जल्दी आओ।

सुशीला बालिका अतीवसुन्दरा विद्यते। Sushila girl is very beautiful सुशीला लड़की एक बहुत सुन्दर है।

क्रिया विशेषण के चार भेद होते हैं—

(क) कालवाचक (Adverb of time)

(ख) स्थान वाचक (Adverb of place)

(ग) रीति वाचक (Adverb of manner)

(घ) परिमाण वाचक (Adverb of quantity)

काल बाचक के भी तीनभेद हैं—

१—"समयवाचक" अभी, अब, कब, आज, कल, परसों, जब, तब, पहिले पीछे, अधुना, पुनः, प्रातः, प्राक्, पश्चात्, सतत इत्यादि।

२—"अवधि वाचक" दिन भर, रातभर, अबतक, दो दिन, चार दिन, दस बजे, पाँच बजे इत्यादि।

३—"निश्चय वाचक" प्रतिदिन, बारम्बार, बहुधा, दूसरे दिन, तीसरे दिन, शाम को इत्यादि।

उदाहरण

१—मम वाष्पयानविश्रामस्थानमागमनात्प्राक्, वाष्पयानं तत्राऽऽगमिष्यति। The train will come before I reach the station मेरे स्टेशन आने से पूर्व रेलगाड़ी आ जायगी।

२—अन्येद्युः स आगमिष्यति—He will come some other day किसी दूसरे दिन वह आयेगा।

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिये—

को न्वस्मिन्साम्प्रतं लोके गुणवान् कश्च वीर्यवान्।
धर्मज्ञश्च कृतज्ञश्च सत्यवाक्यो दृढ़व्रतः॥

इदानीं मा क्रीडत। क्षणं विरम। अहर्दिवं सायंकाले कार्यकरणात् जनाः श्रान्तोऽभवत्।

सरल संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(१) वह बहुत सुन्दर लिखता है (२) शकुन्तला बहुत धीरे २ चलती है (३) दिन भर काम करने से मनुष्य थक जाता है (४) मैं कब से तुम्हें पुकार रहा हूँ ? (५) आप बारम्बार दिक् क्यों होते हैं ? (६) कभी भी भूठ नहीं बोलना चाहिये (७) आजकल लोगों में बहुत उथल-पुथल मच रहा है (८) मेरे स्टेशन पहुँचने के पश्चाद् गाड़ी आई (९) मेरे जाने से पहिले वह चला जायेगा (१०) जरा भी नहीं घबराया।

(ख) "स्थान वाचक"—(Adverb of place)

(ख) स्थान वाचक के दो भेद हैं

१—"स्थिति वाचक" यहाँ, वहाँ, जहाँ, कहाँ, आगे, पीछे, नीचे, ऊपर, बाहर, भीतर, पास, दूर, सामने।

(२) 'दिशावाचक'—इधर, उधर, जिधर, किधर, दायें बायें सर्वत्र, इत्यादि। जैसे

यूयं तत्र गच्छत = You go there = तुम वहाँ जाओ।
अत्रागच्छ = Come here = यहाँ आओ।

हिन्दी में अनुवाद कीजिये—

(१) इतस्ततः मा परिभ्रम (२) ईश्वरः सर्वत्र व्यापकोऽस्ति (३) त्वमत्र कथमागतोऽसि (४) दूरमपसर (५) नीचैरागच्छ (६) स सम्मुखे तिष्ठति।

संस्कृत में अनुवाद कीजिये—

(१) चारों ओर प्रकाश ही प्रकाश है। (२) कहीं गिर न पड़ना (३) तुम मेरे पास आओ (४) तुम कहाँ से आते हो ? (५) तुम किधर जाओगे। (६) द्वार के समीप आदमी खड़ा है।

(ग) "रीतिवाचक" (Adverb of manner) जिससे क्रिया की 'रीति, स्वीकार' इत्यादि विदित हो उसे रीति वाचक कहते हैं।

(ग) रीति वाचक के सात भेद हैं—

(१) निश्चयवाचक (२) अनिश्चय वाचक (३) प्रकार वाचक (४) स्वीकार वाचक (५) कारणवाचक (६) निषेधवाचक (७) अवधारण वाचक अचानक, प्रायः इत्यादि

द्रष्टव्य—"निश्चय वाचक और अवधारणवाचक" इन दोनों का यथार्थ अर्थ एक ही होता है परन्तु वाक्यों में कुछ अन्तर हो जाता है। जैसे—वह अवश्य आयेगा (२) अब तो यह काम होगा ही।

हिन्दी में अनुवाद कीजिये—

१—निःसन्देहो हरिश्चन्द्रः सत्यवादी राजा बभूव।
२—कदाचिदित्थं (एवं) भवेत्।
३—यथा हरिश्चन्द्रो वभूव तथैव आर्यावर्ते कः महापुरुषोऽभवत् ?
४—ओमिति ब्रुवन् नारदोगतः (यहाँ "ओम्" स्वीकार वाचक है)
५—भवानत्रतो गच्छतु यतः तस्य पन्थोऽस्ति।
६—अहमेवं कदापि न करिष्यामि।
७—स सहसा आगतोऽस्ति (अचानक)।

संस्कृत में अनुवाद कीजिये

१—यथार्थ बात तो यह है, कि महाराज ! यह तो नितान्त सत्य है। (२) शायद वह आज ही आ जाय (३) यथासम्भव सहायता दोनों को करनी चाहियें। (४) इस प्रकार की बातचीत नहीं करनी चाहिये। (५) तुम्हारा कल्याण हो ऐसा कहते हुए नारद जी चले गये। (६) हाँ बिल्कुल ठीक है।

सच कृपानिधान ! (७) इसलिये आपको यहाँ काम करना चाहिये, क्योंकि आप उनके मित्र हैं। (८) ताकि मैं सावधान हो जाऊँ। (९) किसी का भी बुरा न सोचो (१०) यह घटना बिलकुल असम्भव है। (११) केवल इतना ही काम था (१२) बस अब मुझ से अधिक कार्य न हो सकेगा।

सम्बन्ध सूचक—'यदा, तदा'

यदा स गमिष्यति तदा अहमपि गमिष्यामि

प्रश्न सूचक—किं, कदा, कुत्र, कुतः क, कथमित्यादि

प्रयोजन सूचक—"अतः, अतएव" इत्यादि

हेतु सूचक—"सह, द्वारा" मेरे द्वारा यह कार्य हुआ।

संख्या सूचक—एकधा, द्विधा, त्रिधा, चतुर्धा, प्रथमतः, इत्यादि

(घ) परिमाण वाचक— इसके भी पाँच भेद होते हैं।

(१) अधिकता वाचक (२) न्यूनता वाचक (३) पर्याप्ति वाचक (४) तुलना वाचक (५) श्रेणीवाचक, इत्यदि

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिये—

१—सतु अत्यन्तप्रवीणः प्रतीयते। २—स अल्पशः विचरणमभिलषति ३—पर्याप्तमस्ति ४—यावन्मह्यं रुचे तावन्मह्यं देहि ५—पंक्तिबद्ध गच्छ। क्रमशः गणय इत्यादि।

संस्कृत में अनुवाद कीजिये—

(१) यह फूल तो अति सुन्दर है। (२) मेरे तो खूब खेती होती है (३) मेरे ऊपर भारी बोझा है। (४) वह बड़ा सुन्दर लिखता है (५) वह थोड़ा चला करता है। (६) लगभग दो मील वह गया होगा ! (७) अनुमानतः वह कार्य समाप्त हो गया होगा। (८) बस करो। (९) ठीक है। (१०) अस्तु ऐसा ही होगा। (११) जितना तुझे चाहिये उतना ले। (१२) एक एक करके आ ओ। (१३) बारी बारी से काम करो। (१४) थोड़ा थोड़ा काम ठीक होता है।

अव्यय प्रकरणम् (Indeclinable)

जिन शब्दों के रूप तीनों लिङ्गों, सातों विभक्तियों और तीनों वचनों में एक समान ही बनते हैं, उन्हें अव्यय कहते हैं।

निम्न लिखित कुछ 'अव्यय' शब्द हैं।

	संस्कृत	हिन्दी	इंग्लिश
१	अत्र	यहाँ	Here
२	तत्र	वहाँ	There
३	यत्र	जहाँ	Where
४	कुत्र ?	कहाँ ?	Where ?
५	यदा	जब	When
६	तदा	तब	Then
७	कदा ?	कब ?	When ?
८	इह	यहाँ	Here
९	इदानीं	अब, इस समय	Now, yet
१०	तदानीं	तब, उस समय	Then
११	सर्वदा	सदा, हमेशा	Always
१२	यत्	क्योंकि	Because
१३	यतः	जहाँ से, क्योंकि	Because
१४	ततः	वहाँ से, अनन्तर	Thence, After
१५	कुतः	कहाँ से ?	Whence
१६	कदापर्यन्त	कब तक ?	How long ?
१७	यावत्	जितना, जबतक	During
१८	तावत्	तितना, तबतक	Somuch, until
१९	एतावत्	इतना, अब तक	Somuch
२०	यथा	जैसे	As
२१	तथा	तैसे, वैसे	So
२२	अधुना	अब	Now
२३	कथम् ?	कैसे, क्यों ?	How, why ?
२४	इत्थम्	ऐसे, इस प्रकार	Thus Also
२५	एवम्	ऐसे, इस प्रकार	in this way
२६	यथावत्	ठीकतरह	Well
२७	सर्वथा	बिलकुल	Quite

	संस्कृत	हिन्दी	इंगलिश
२८	अद्य	आज	Today
२९	ह्यः	कल (गतदिन)	Yesterday
३०	श्वः	कल (आगामी दिन)	Tomorrow
३१	परश्वः	परसूँ, आनेवाला दिन	Day after tomorrow
३२	गतपरेद्युः	बीता हुआ परसूँ दिन	Day before yesterday
३३	उपरि	ऊपर	up, Above
३४	यदि, चेत्	अगर	If
३५	च	और	And
३६	न, नो	नहीं	No
३७	नहि	नहीं	Not
३८	मा	नहीं	Nor, never
३९	एव	ही	Also
४०	अये, अयि, भोः, हे, अरे !		O, Alas, oh, ah !
४१	अहो !	अहो !	Wonder or surprise
४२	एकदा	एकसमय	Once
४३	किम् ?	क्या ?	What ?
४४	किमपि	कुछ भी	At all
४५	अपि	भी	Too
४६	इतस्ततः	इधर, उधर	Hither and thither
४७	पश्चात्	पीछे	Behind
४८	अग्रतः	आगे से	Ahead
४९	पुनः	फिर	Again
५०	कदाचित्	शायद	perhaps,
५१	नमः	नमस्कार	Salutation
५२	बहिः	बाहर	Out
५३	इति	इसरीति से	likewise
५४	तथापि	तोभी	Yet
५५	यद्यपि	यद्यपि	Although
५६	अनन्तर	पीछे	After
५७	अन्तर्	भीतर, बीच	Within
५८	प्रातः	प्रातः काल	Morning
५९	किञ्चित्	कुछ	Some

	संस्कृत	हिन्दी	इंगलिश
६०	प्रतिदिनं	हररोज	every day; Daily
६१	झटिति	जल्दी	Soon, Quickly
६२	यतस्ततः	जिधर, तिधर	Whither and thither
६३	उच्चैः	ऊँचे, जोर से	High, Aloud
६४	नीचैः	नीचे	Below, beneath
६५	शनैः शनैः	धीरे-धीरे	Slowly
६६	यत्किञ्चित्	जो कुछ	Somewhat

द्रष्टव्य—इंगलिश में There का जब स्थान बताने के लिये प्रयोग होता है तब (वहाँ) अर्थ निकाला जाता है। परन्तु (There) का प्रयोग जब क्रिया के साथ वाक्य में केवल सहारा देने के लिये आता है तब कोई अर्थ नहीं निकलता है। जैसे—

१—तत्र केऽपि शिशवो न सन्ति There are no children there. वहाँ कोई बच्चे नहीं हैं।

यहाँ पर पहिले there का कोई अर्थ नहीं है केवल क्रिया की सहायता के लिये हैं और दूसरे there का 'वहाँ' अर्थ है।

२—तत्रेको महापुरुषो विद्यते = There is one great man there. वहाँ एक बड़ा मनुष्य है।

३—अशीति शिशवः सन्ति There are eighty children. अस्सी बच्चे हैं।

अव्यय के उदाहरण

१—जनानामग्रतः न गच्छेत् = One should not go ahead men. लोगों के आगे नहीं जाना चाहिये।

२—स अकस्मादागतः He came suddenly. वह अचानक आगया।

३—सरोवरस्य जलं सज्जनहृदयवत् निर्मलमस्ति The water of the pond is as clear as the heart of the good men. सरोवर का जल सज्जन-पुरुष के हृदय के समान निर्मल है।

४—अतएव एवं वर्ण्यते = Therefore it is so described. इसलिये इसका ऐसा वर्णन किया है।

(अतः, अतएव, इसलिये Therefore)

५—परेद्युः स आगमिष्यति = He will come some other day. किसी दूसरे दिन वह आयेगा।

(अन्येद्युः परेद्युः Some other day किसी दूसरे दिन)

सम्भावना में "अपि" too, also प्रश्नार्थक होता है

६—अपि जानासि महिषीं विनोदयितुम् ? Do you know how to please the queen. ? क्या तुम रानी को प्रसन्न करना जानते हो ?

७—अपिच श्रूयताम् = Moreover hear- और भी सुनो।
(अपिच Moreover और भी)

८—अरे धूर्त ! Halloo knave.

९—अहह ! महापङ्के पतितोऽसि = Alas ! you are plunged in great mire. ओह ! बड़े कीचड़ में फँस गये हो।
(अहह ! alas खेद, विस्मय सूचक है)

१०—धर्मम् ऋते कुतो मोक्षः ? Where is the salvation without virtue. ? धर्म के बिना कहाँ मोक्ष है ?
(ऋते Except, without बिना, अतिरिक्त)

११—वत्स ! एवं किल जनाः कथयन्ति = May darling ! 'dear boy' people say like that, हे वत्स ! इस प्रकार लोग कहते हैं।

१२—अनन्त पारं किल शब्दशास्त्रम् In fact, the knowlege of Grammer is unlimited or the science of grammer is of boundless extent. निश्चय ही व्याकरण का ज्ञान अनन्त है।
(किल Indeed, surely खलु निश्चय से)

१३—शरीरमाद्यं खलु धर्म साधनम्—Body is surely the main instrument of virtue. धर्म का साधन सर्वप्रथम शरीर है।

१४—मा प्रयच्छेश्वरे धनम् – Do not give money to the rich. धनी को धन मत दो।

१५—कृपणं धिक्—Fie upon the miser. Shun the miser. कंजूस को धिक्कार है।

१६—आसीत्पुरा चन्द्रगुप्त नाम राजा—In ancient times there was a king named Chandra Gupta. प्राचीन काल में एक चन्द्रगुप्त नाम का राजा था।

१७—प्रायशः एवं सङ्घटितम्—Usually it happened so· प्रायः ऐसी घटना हुई।
(प्रायशः, प्रायः Probably, nearly, almost)

१८—युगपदेव सुखमोहौ समुपस्थितौ—Happiness and ignorance came at the same time. एक साथ ही सुख और मोह (अज्ञान) आ पड़े।
(युगपद्, एकसाथ Simultaneously)

१९—सम्यक् विचार्य कर्तव्यम्—It ought to be done after being considered fully. अच्छी तरह विचार करके काम करना चाहिये।

(सम्यक् wholly, fully पूर्ण रूप से)

२०—सहसा विदधीत न क्रियाम्—One should not do a thing rashly, उतावले से कार्य नहीं करना चाहिये।

(सहसा, एकदम rashly, suddenly)

२१—स तु उक्तवान् परञ्च मया न श्रुतम्=He said but I did not hear. उसने कहा परन्तु मैंने नहीं सुना।

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

(१) कुत्र गच्छसि ? (२) अत्रागच्छ (३) आ ! किमेतत् ? (४) यदा स आगच्छेत्तदैव मां सूचय। (५) अहो! श्रीमतां दर्शनेन पुण्यवानस्मि। (६) यथा स करोति तथैव त्वं कुरु (७) भोः कः कोऽयमस्ति ? (८) अहं त्वया विना वसितुमत्र न शक्नोमि। (९) अन्योऽन्यं सहायं कुरुत। (१०) क तु अयं वराकः क च राजपुरुषोऽस्ति ? (११) न सा सभा यत्र न सन्ति वृद्धाः। (१२) यथा आगतोऽसि तथैव गच्छ (१३) यावदहंनागच्छामि, तावत्त्वं विरम (१४) न किमपि प्रयोजनमस्ति। (१५) कदा आगतोऽसि ? (१६) कथमागतोऽसि ? (१७) अहमपि गन्तुं वाञ्छामि। (१८) अपि तु कुशलं भवान। (१९) क्लैव्यं मा स्म गमः पार्थ ! (२०) भोः ! विद्वन् ! भवन्तमभिवादये।

संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(१) जब वह आवे तभी मुझे सूचना देना। (२) ओहो ! आप के दर्शन से मैं कृतार्थ होगया। (३) आ ! यह क्या है। (४) मैं आप के बिना यहाँ नहीं रह सकता हूँ। (५) हे विद्वन् ! मैं आपको अभिवादन करता हूँ। (६ परस्पर एक दूसरे की सहायता करो। (७) कहाँ तो यह बेचारा और कहाँ वह पुलिस ? (८) जबतक मैं आता हूँ तबतक तुम यहाँ ठहरो। (९) जैसे तुम आये हो वैसे ही चले जाओ। (१०) आप का कुछ भी प्रयोजन नहीं है। (११) तू कैसे आया ? (१२) तुम क्यों आये हो ? (१२) मैं भी जाना चाहता हूँ। (१३) मदन इधर उधर घूमता है। (१४) गोविन्द प्रयाग से कब आया ? (१५) कल आया है। (१६) गुरु जी को नमस्कार है (१७) उसने बिना पूछे पुस्तक लेली, तो भी मैंने उसे कुछ नहीं कहा।

अष्टमोऽध्यायः

अथ भ्वादिगण प्रकरणम्

प्रथमः पाठः

क्रिया (Verb)

कर्ता के व्यापार को क्रिया कहते हैं। (धात्वर्थः क्रिया) अर्थात्—धातु के अर्थ को क्रिया कहते हैं।

'क्रिया' को ही विधायक (करने वाला) शब्द भी कहते हैं।।
'क्रिया वाचक' को ही धातु (Root) कहते हैं।
जैसे—'भू, पठ्, गम्' इत्यादि को धातु शब्द से पुकारते हैं।
(इंगलिश में To become, To read, To go, इत्यादि—और To लगे हुए Verb को Infinitive भी कहते हैं)।

क्रियाएँ दो प्रकार की होती हैं।

१—सकर्मक क्रिया (Transitive verb) (२) अकर्मक क्रिया (Intransitive verb).

सकर्मक क्रिया (Transitive verb)

जिस क्रिया में 'व्यापार और फल' दोनों अलग अलग हों अर्थात जिस धातु का व्यापार कर्ता में ही रहे और फल कर्म पर पड़े तो उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं। जैसे—

पश्यामि देवान् तव देव देहे=O, God ! I see the gods in thy body. हे देव ! मैं आपके शरीर में सम्पूर्ण देवों को देखता हूँ। यहाँ पर व्यापार रूप क्रिया का कर्ता तो 'मैं' हूँ और 'देखने' क्रिया का फल 'देवों' पर पड़ता है। अतः 'पश्यामि' सकर्मक क्रिया हुई।

अकर्मक क्रिया (Intransitive verb)

जिस क्रिया का 'व्यापार और फल' दोनों कर्ता के ही आधीन हों, उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं। जैसे—

मोहनः स्वपिति=Mohan sleeps मोहन सोता है। अथवा उदयति यदि भानुः पश्चिमे दिग् विभागे=If the sun rises in the western

horizon. यदि सूर्य पश्चिम दिशा में उदय हो। यहाँ पर 'स्वपिति और उदयति' दोनों क्रिया का फल और व्यापार मोहन और सूर्य के आधीन है। अतः ये दोनों अकर्मक क्रियायें हुईं।

लकार

संस्कृत में धातु के 'रूप और अर्थ' को परिवर्तन करने वाले दश-लकार माने गये हैं। जब इन लकारों द्वारा धातु (Root) का स्वरूप परिवर्तित हो जाता है, तभी उसको क्रिया कहते हैं।

ये दश लकार निम्न लिखित हैं—

१—लट् लकार वर्तमान काल Present tense
(क) २—लिट् ,, परोक्ष भूतकाल Preterite tense
(ख) ३—लङ् ,, अनद्यतन भूतकाल Past perfect tense.
४—लुङ् ,, सामान्य भूतकाल Simple Past tense (Aorist)
(ग) ५—लुट् ,, अनद्यतनभविष्यत्काल Future perfect tense.
६—लृट् ,, सामान्य भविष्यत्काल Simple future tense.
७—लोट्—आज्ञावाचक Imperative mood.
८—विधिलिङ्—Subjunctive mood or Potential mood.
९—आशीर्लिङ्—आशीर्वाद Benedictive mood.
१०—लृङ्—हेतुहेतुमद्भविष्यत् Conditional future.

द्रष्टव्य—(क)—परोक्ष भूत काल का प्रयोग वहाँ करना चाहिये जहाँ पर अपनी आँखों से कोई कार्य न देखा गया हो।

(ख)—अनद्यतन भूतकाल का प्रयोग वहाँ करना चाहिये जहाँ पर 'आज का अर्थ' न हो अर्थात् व्यतीत दिन का बोध हो और निश्चित अवधि का भी बोध हो। जैसे :—

स ह्योऽगच्छत् He went yesterday वह कल चला गया।

(ग)—अनद्यतनभविष्यत्काल का प्रयोग—वहाँ करना चाहिये जहाँ आज का अर्थ' नहीं हो- आगामी दिन का बोध हो। जैसे—सः श्वो गन्ता He will go tomorrow वह कल जायेगा।

गण

गणों के भिन्न भिन्न होने के कारण धातुओं के रूप अनेक प्रकार के होते हैं। संस्कृत में दश गण होते हैं जो इस प्रकार हैं—

१—भ्वादि गण (First class)
२—अदादि „ (Second class)
३—जुहोत्यादि „ (Third class)
४—दिवादि „ (Fourth class)
५—स्वादि „ (-Fifth class)
६—तुदादि „ (Sixth class)
७—रुधादि „ (Seventh class)
८—तनादि „ (Eighth class)
९—क्र्यादि „ (Nineth class)
१०—चुरादि „ (Tenth class)

द्रष्टव्य—दशों गणों में प्रत्येक धातुओं के अन्त में "ति, तः, अन्ति, सि, थः थ, मि, वः मः" ये परस्मैपद के प्रत्यय जोड़े जाते हैं।

हिन्दी और इंगलिश में एकवचन और बहुवचन होते हैं। परन्तु संस्कृत में द्विवचन भी होता है।

द्वितीयः पाठः

परस्मैपदी—क्रियाओं के रूप बनाने के नियम

(Rules of conjugations of verbs)

भ्वादि गण में धातु से परे और प्रत्यय से पूर्व 'अ' विकरण आता है।

विकरण

"प्रकृति प्रत्ययोर्मध्ये यः पतति स विकरणः"

भावार्थ—प्रकृति और प्रत्यय के बीच में जो अ आता है उसे विकरण कहते हैं। जैसे—भवति शब्द में "भव्" प्रकृति है और "ति" प्रत्यय है। इन दोनों के बीच में "अ" विकरण जोड़ा जाता है। यह विकरण 'लट्, लोट् लङ्, विधिलिङ्" इन्हीं चार लकारों में जोड़े जाते हैं अन्यत्र नहीं।

प्रथम पुरुष (Third person) के प्रत्यय

जैसे—भव्+अ+ति=भवति=(वह) होता है।
भव्+अ+तः=भवतः=(वे दोनों) होते हैं।

बहुवचन में अकारादि प्रत्यय से पूर्व "अ' (विकरण) चिन्ह का लोप हो जाता है। जैसे—

भव्+अ+अन्ति=भवन्ति=(वे सब) होते हैं।

मध्यम पुरुष (Second person) के प्रत्यय

भव् + अ + सि = भवसि (तू) होता है।
भव् + अ + थः = भवथः (तुम दोनों) होते हो।
भव् + अ + थ = भवथ (तुम सब) होते हो।

उत्तम पुरुष (Third person) में वकार और मकारादि प्रत्यय से पूर्व "अ" विकरण को दीर्घ "आ" हो जाता है।

जैसे—भव् + आ + मि = भवामि (मैं) होता हूँ।
भव् + आ + वः = भवावः (हम दोनों) दोते हैं।
भव् + आ + मः = भवामः (हम सब) होते हैं।

इसी प्रकार भ्वादि गण धातुओं के परस्मैपद में प्रत्येक धातुओं के रूप बना लेने चाहिये।

कुछ भ्वादिगण की धातुओं के रूप निम्नलिखित हैं—

(१) भू (भव्) To become

परस्मैपद

(१) "लट्" वर्तमानकाल (Present tense)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	भवति	भवतः	भवन्ति
म० पु०	भवसि	भवथः	भवथ
उ० पु०	भवामि	भवावः	भवामः

(२) "लिट्" परोक्षभूतकाल (Preterite tense)

प्र० पु०	बभूव	बभूवतुः	बभूवुः
म० पु०	बभूविथ	बभूवथुः	बभूव
उ० पु०	बभूव	बभूविव	बभूविम

(३) "लङ्" अनद्यतनभूतकाल (Past perfect tense)

प्र० पु०	अभवत्	अभवताम्	अभवन्
म० पु०	अभवः	अभवतम्	अभवत
उ० पु०	अभवम्	अभवाव	अभावम

द्रष्टव्य—"लङ्, लुङ्, लृङ्" इन तीन लकारों में हलादि धातुओं से पूर्व ह्रस्व अकार "अ" जोड़ा जाता है, और अजादि धातुओं से पहिले दीर्घ "आ" का आगम होता है, परन्तु इन लकारों में धातु से पहिले यदि 'मा' और 'स्म' शब्द हों तो प्रारम्भ के 'अ और आ' का आगम नहीं होता।

जैसे—मा स्म भवत्। मा स्म भूत्।

क्लैब्यं मा स्म गमः पार्थ नैतत्त्वय्युपपद्यते। इत्यादि वाक्यों में "अ" नहीं लगाया गया है।

४—"लुङ् सामान्यभूतकाल (Simple Past tense)

प्र० पु०	अभूत्	अभूताम्	अभूवन्
म० पु०	अभूः	अभूतम्	अभूत
उ० पु०	अभूवम्	अभूव	अभूम

५—"लुट्" अनद्यतन भविष्यत्काल (Future perfect tense)

प्र० पु०	भविता	भवितारौ	भवितारः
म० पु०	भवितासि	भवितास्थः	भवितास्थ
उ० पु०	भवितास्मि	भवितास्वः	भवितास्मः

द्रष्टव्य—जिन धातुओं के (लुट् तथा आशीर्लिङ् और लृङ् लकार में) 'इ' विकरण लगाये जाते हैं, वे धातु सेट् कहलाते हैं।

'लृट्' सामान्य भविष्यत्काल (Simple future tense)

प्र० पु०	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
म० पु०	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
उ० पु०	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः

द्रष्टव्य—जहाँ पर 'इकार' विकरण से परे 'स्' अथवा इकार, उकार और कवर्ग से परे 'स्' हो तो वहाँ पर सकार को 'ष्' हो जाता है।

'लोट्' आज्ञावाचक (Imperative mood)

प्र० पु०	भवतु (भवतात्)	भवताम्	भवन्तु
म० पु०	भव (भवतात्)	भवतम्	भवत
उ० पु०	भवानि	भवाव	भवाम

द्रष्टव्य—लोट् लकार (आज्ञा अर्थ) के प्रयोग में मध्यम पुरुष का 'कर्ता' सदा लुप्त रहता है; परन्तु प्रथम पुरुष और उत्तम पुरुष में कर्ता लुप्त नहीं रहता अर्थात् प्रकट रहता है। जैसे :—

प्र० पु० रामो भवतु=राम होवे। स गच्छतु=वह जाय।
तौ गच्छताम्=वे दोनों जावें। ते कुर्वन्तु=वे सब करें इत्यादि।

म० पु० (त्वं) गच्छ=तू जा। (युवां) गच्छतम्=तुम दोनों जाओ।
(यूयं) गच्छत=तुम सब जाओ।

उ० पु० अहं गच्छानि = मैं जाऊँ। आवाम् गच्छाव = हम दोनों जावें। वयम् गच्छाम = हम सब जावें। इत्यादि।

आशीर्वाद अर्थ में भी लोट् लकार में 'प्रथम पुरुष और मध्यम पुरुष' में कर्ता का लोप होता है। जैसे :—आयुष्मान् भव = दीर्घ आयु हो।

विधि लिङ् (Subjunctive mood or Potential mood)

प्र० पु०	भवेत्	भवेताम्	भवेयुः
म० पु०	भवेः	भवेतम्	भवेत
उ० पु०	भवेयम्	भवेव	भवेम

द्रष्टव्य—विधि का प्रयोग यदि आज्ञा में हो तो नम्र भाव समझना चाहिये और यदि विधिलिङ् का प्रयोग हो तो कड़ा रूप समझना चाहिये।

आशीर्लिङ् (Benedictive mood)

प्र० पु०	भूयात्	भूयास्ताम्	भूयासुः
म० पु०	भूयाः	भूयास्तम्	भूयास्त
उ० पु०	भूयासम	भूयास्व	भूयास्म

'लृङ्' हेतुहेतुमद्भाव भविष्यत् (Conditional future)

प्र० पु०	अभविष्यत्	अभविष्यताम्	अभविष्यन्
म० पु०	अभविष्यः	अभविष्यतम्	अभविष्यत
उ० पु०	अभविष्यम्	अभविष्याव	अभविष्याम

द्रष्टव्य—इसका प्रयोग 'भूत' और भविष्यत दोनों में होता है।

जैसे :—सुवृष्टिश्चेदभविष्यत् तदासुभिक्षमभविष्यत्।

भावार्थः—यदि अच्छी वृष्टि होती तो अच्छी फसल होती अथवा यदि अच्छी वृष्टि होगी तो अच्छी फसल होगी।

अभ्यास

भू धातु का प्रयोग निम्नलिखित श्लोकों में से छाँटिए और बताइए कि किस लकार का कौन रूप है—

धर्मात्सुखं भवतिवत्स ! यथा बभूव भक्तध्रुवस्य,
भविता च तवापि तत् श्वः। लाभो भविष्यतिभवान् भवतु-
प्रवृत्तो धर्मे, यथाऽभवदसौ भगवत्प्रपन्नः॥
दैवाद् भवेच्च यदि ते क्वचिदन्तरायो,
भूयात्सदा तव विभुर्भगवान् सहायः।
धर्मादभूदपि च तस्य सुखं त्वयाऽऽप्तो,
धर्मोऽभविष्यदिहचेत्सुखमाऽऽभविष्यत्॥

सरल संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(१) कालिदास अच्छे कवि हुए (२) हे बालको ! तुम्हारा कल्याण हो (३) संभव है कि वे वहाँ पर हों। (४) हाय ! भारतवर्ष के दो खण्ड हो गये (५) तुम्हारी परीक्षा कब होगी ? (६) यदि मैं वहाँ होता तो कार्य हो जाता।

तृतीयः पाठः

२—गम् (गच्छ्) = जाना = चलना To go.

'लट्' वर्तमान काल

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	गच्छति	गच्छतः	गच्छन्ति
म० पु०	गच्छसि	गच्छथः	गच्छथ
उ० पु०	गच्छामि	गच्छावः	गच्छामः

'लिट्' परोक्षभूतकाल

प्र० पु०	जगाम	जग्मतुः	जग्मुः
म० पु०	जगमिथ (जगन्थ)	जग्मथुः	जग्म
उ० पु०	जगाम (जगम)	जग्मिव	जग्मिम

'लङ्' अनद्यतनभूतकाल

प्र० पु०	अगच्छत्	अगच्छताम्	अगच्छन्
म० पु०	अगच्छः	अगच्छतम्	अगच्छत
उ० पु०	अगच्छम्	अगच्छाव	अगच्छाम

"लुङ्" सामान्य भूतकाल

प्र० पु०	अगमत्	अगमताम्	अगमन्
म० पु०	अगमः	अगमतम्	अगमत
उ० पु०	अगमम्	अगमाव	अगमाम

"लुट्", अनद्यतन भविष्यत्काल

प्र० पु०	गन्ता	गन्तारौ	गन्तारः
म० पु०	गन्तासि	गन्तास्थः	गन्तास्थ
उ० मु०	गन्तास्मि	गन्तास्वः	गन्तास्मः

"लृट्" सामान्य भविष्यत्काल

प्र० पु०	गमिष्यति	गमिष्यतः	गमिष्यन्ति
म० पु०	गमिष्यसि	गमिष्यथः	गमिष्यथ
उ० पु०	गमिष्यामि	गमिष्यावः	गमिष्यामः

"लोट" आज्ञावाचक

प्र० पु०	गच्छतु (गच्छतात्)	गच्छताम्	गच्छन्तु
म० पु०	गच्छ (गच्छतात्)	गच्छतम्	गच्छत
उ० पु०	गच्छानि	गच्छाव	गच्छाम

विधि लिङ्

प्र० पु०	गच्छेत्	गच्छेताम्	गच्छेयुः
म० पु०	गच्छेः	गच्छेतम्	गच्छेत
उ० पु०	गच्छेयम्	गच्छेव	गच्छेम

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	गम्यात्	गम्यास्ताम्	गम्यासुः
म० पु०	गम्याः	गम्यास्तम्	गम्यास्त
उ० पु०	गम्यासम्	गम्यास्व	गम्यास्म

"लृङ्" हेतु हेतु मद्भाव भविष्यत्

प्र० पु०	अगमिष्यत्	अगमिष्यताम्	अगमिष्यन्
म० पु०	अगमिष्यः	अगमिष्यतम्	अगमिष्यत
उ० पु०	अगमिष्यम्	अगमिष्याव	अगमिष्याम

३—दृश (पश्य) देखना To See

"लट्" वर्तमानकाल

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पश्यति	पश्यतः	पश्यन्ति
म० पु०	पश्यसि	पश्यथः	पश्यथ
उ० पु०	पश्यामि	पश्यावः	पश्यामः

"लिट्" परोक्षभूतकाल

प्र० पु०	ददर्श	ददृशतुः	ददृशुः
म० पु०	ददर्शिथ (दद्रष्ठ)	ददृशथुः	ददृश
उ० पु०	ददर्श	ददृशिव	ददृशिम

"लङ्" अनद्यतन भूतकाल

प्र० पु०	अपश्यत्	अपश्यताम्	अपश्यन्
म० पु०	अपश्यः	अपश्यतम्	अपश्यत
उ० पु०	अपश्यम्	अपश्याव	अपश्याम

"लुङ्" सामान्य भूतकाल

प्र० पु०	अद्राक्षीत्	अद्राष्टाम्	अद्राक्षुः

म० पु०	अद्राक्षीः	अद्राष्टम्	अद्राष्ट
उ० पु०	अद्राक्षम्	अद्राक्ष्व	अद्राक्ष्म

अथवा

प्र० पु०	अदर्शत्	अदर्शताम्	अदर्शन्
म० पु०	अदर्शः	अदर्शतम्	अदर्शत
उ० पु०	अदर्शम्	अदर्शाव	अदर्शाम

"लुट्" अनद्यतन भविष्यत्काल

प्र० पु०	द्रष्टा	द्रष्टारौ	द्रष्टारः
म० पु०	द्रष्टासि	द्रष्टाथः	द्रष्टाथ
उ० पु०	द्रष्टास्मि	द्रष्टास्वः	द्रष्टास्मः

"लृट" सामान्यभविष्यत्काल

प्र० पु०	द्रक्ष्यति	द्रक्ष्यतः	द्रक्ष्यन्ति
म० पु०	द्रक्ष्यसि	द्रक्ष्यथः	द्रक्ष्यथ
उ० पु०	द्रक्ष्यामि	द्रक्ष्यावः	द्रक्ष्यामः

"लोट्" आज्ञावाचक

प्र० पु०	पश्यतु (पश्यतात्)	पश्यताम्	पश्यन्तु
म० पु०	पश्य (पश्यतात्)	पश्यतम्	पश्यत
उ० पुं०	पश्यानि	पश्याव	पश्याम

विधिलिङ्

प्र० पु०	पश्येत्	पश्येताम्	पश्येयुः
म० पु०	पश्येः	पश्येतम्	पश्येत
उ० पु०	पश्येयम्	पश्येव	पश्येम

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	दृश्यात्	दृश्यास्ताम्	दृश्यासुः
म० पु०	दृश्याः	दृश्यास्तम्	दृश्यास्त
उ० षु०	दृश्यासम्	दृश्यास्व	दृश्यास्म

"लृङ्" हेतु हेतु मद्भाव भविष्यत्

प्र० पु०	अद्रक्ष्यत्	अद्रक्ष्यताम्	अद्रक्ष्यन्
म० पु०	अद्रक्ष्यः	अद्रक्ष्यतम्	अद्रक्ष्यत
उ० पु०	अद्रक्ष्यम्	अद्रक्ष्याव	अद्रक्ष्याम

४–श्रु (शृणु) सुनना To Hear

"लट्" वर्तमानकाल

प्र० पु०	शृणोति	शृणुतः	शृण्वन्ति
म० पु०	शृणोषि	शृणुथः	शृणुथ
उ० पु०	शृणोमि	शृणुवः (शृण्वः)	शृणुमः (शृण्मः)

"लिट्" परोक्षभूतकाल

प्र० पु०	शुश्राव	शुश्रुवतुः	शुश्रुवुः
म० पु०	शुश्रोथ	शुश्रुवथुः	शुश्रुव
उ० पु०	शुश्राव (शुश्रव)	शुश्रुविव	शुश्रुविम

"लङ्" अनद्यतन भूतकाल

प्र० पु०	अशृणोत्	अशृणुताम्	अशृण्वन्
म० पु०	अशृणोः	अशृणुतम्	अशृणुत
उ० पु०	अशृणवम्	अशृणुव (अशृण्व)	अशृणुम (अशृण्म)

"लुङ्" सामान्य भूतकाल

प्र० पु०	अश्रौषीत्	अश्रौष्टाम्	अश्रौषुः
म० पु०	अश्रौषीः	अश्रौष्टम्	अश्रौष्ट
उ० पु०	अश्रौषम्	अश्रौष्व	अश्रौष्म

"लुट्" अनद्यन भविष्यतकाल

प्र० पु०	श्रोता	श्रोतारौ	श्रोतारः
म० पु०	श्रोतासि	श्रोतास्थः	श्रोतास्थ
उ० पु०	श्रोतास्मि	श्रोतास्वः	श्रोयास्मः

"लृट्" सामान्य भविष्यत्काल

प्र० पु०	श्रोष्यति	श्रोष्यतः	श्रोष्यन्ति
म० पु०	श्रोष्यसि	श्रोष्यथः	श्रोष्यथ
उ० पु०	श्रोष्यामि	श्रोष्यावः	श्रोष्यामः

"लोट्" आज्ञावाचक

प्र० पु०	शृणोतु (शृणुतात्)	शृणुताम्	शृण्वन्तु
म० पु०	शृणु (शृणुतात्)	शृणुतम्	शृणुत
उ० पु०	शृणवानि	शृणवाव	शृणवाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	शृणुयात्	शृणुयाताम्	शृणुयुः
म० पु०	शृणुयाः	शृणुयातम्	शृणुयात
उ० पु०	शृणुयाम्	शृणुयाव	शृणुयाम

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	श्रूयात्	श्रूयास्ताम्	श्रूयासुः
म० पु०	श्रूयाः	श्रूयास्तम्	श्रूयास्त
उ० पु०	श्रूयासम्	श्रूयास्व	श्रूयास्म

"लृङ्" हेतु हेतुमद्भावभविष्यत्

प्र० पु०	अश्रोष्यत्	अश्रोष्यताम्	अश्रोष्यन्
म० पु०	अश्रोष्यः	अश्रोष्यतम्	अश्रोष्यत
उ० पु०	अश्रोष्यम्	अश्रोष्याव	अश्रोष्याम

इसी प्रकार भ्वादिगण परस्मैपद के प्रत्येक धातुओं के रूप समझ लेने चाहिये।

अभ्यास

निम्नाङ्कित श्लोकों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए। और बताइए कि इनमें किन लकारों का प्रयोग किया गया है:—

रात्रिर्गमिष्यति भविष्यति सुप्रभातम्।
भास्वानुदेष्यति हसिष्यति पङ्कजश्रीः ॥ (कमल की शोभा)
इत्थं विचिन्तयति कोशगते द्विरेफे। (भौंरा)
हा हन्त ! हन्त !! नलिनीं गज उज्जहार ॥ (कमलनी)

पिबन्ति नद्यः स्वयमेव नाम्भः, खादन्ति न स्वादुफलानि वृक्षाः
अदन्ति सस्यं न पयोधराश्च परोपकाराय सतां विभूतयः।

शुद्ध व सरल संस्कृत में अनुवाद कीजिए :—

(१) लड़के स्कूल जाते हैं (२) हम अपने कानों से सुनते हैं। (३) लड़कों को प्रत्येक दिन स्कूल जाना चाहिये (४) यदि वह सुनता तो आता (५) ईश्वर करे कि वह सुने और देखे।

चतुर्थः पाठः

भ्वादि गण परस्मैद के कुछ धातु पाठ और कुछ धातुओं के केवल प्रथम परुष के एक वचन में दसों लकारों के रूप निम्नलिखित हैं :—

संस्कृत	हिन्दी	इंगलिश	लट्	लिट्	लुङ्
दाण् (यच्छ)	देना	To give	यच्छति	ददौ	अयच्छत्
घ्रा (जिघ्र)	सूँघना	To smell	जिघ्रति	जघ्रौ	अजिघ्रत्
पा (पिब)	पीना	To drink	पिबति	पपौ	अपिबत्
स्था (तिष्ठ)	ठहरना	To stay	तिष्ठति	तस्थौ	अतिष्ठत्
जि (जय)	जीतना	To conquer To win	जयति	जिगाय	अजयत्
नी (नय)	ले जाना	To lead	नयति	निनाय	अनयत्
आ+नी (आनय)	लाना	To bring	आनयति	आनिनाय	आनयत्
गै (गाय)	गाना	To sing	गायति	जगौ	अगायत्
वह्	ले जाना	To carry	वहति	उवाह ऊहतुः	अवहत्
हृ (हर)	चुराना	To steal	हरति	जहार जह्रतुः	अहरत्
वस्	निवास क०	To inhabit To live	वसति	उवास ऊषतुः	अवसत्
चल्	चलना	To walk	चलति	चचाल	अचलत्
पठ्	पढ़ना	To read	पठति	पपाठ पेठतुः	अपठत्
वद्	बोलना	To tell To speak	वदति	उवाद ऊदतुः	अवदत्
पत्	गिरना	To fall	पतति	पपात पेततुः	अपतत्
खाद्	खाना	To eat	खादति	चखाद	अखादत्
क्रीड	खेलना	To play	क्रीडति	चिक्रीड	अक्रीडत्
अर्च्	पूजा करना	To worship	अर्चति	आनर्च	आर्चत्
हस्	हँसना	To laugh	हसति	जहास	अहसत्

लुङ्	लुट्	लृट्	लोट्	विधि लिङ्	आशीर्लिङ्	हेतुहेतुमद्भाव
अदात्	दाता	दास्यति	यच्छतु	यच्छेत्	देयात्	अदास्यत्
अघ्रात् घ्रासीत्	घ्राता	घ्रास्यति	जिघ्रतु	जिघ्रेत्	घ्रेयात्	अघ्रास्यत्
अपात्	पाता	पास्यति	पिबतु	पिबेत्	पेयात्	अपास्यत्
अस्थात्	स्थाता	स्थास्यति	तिष्ठतु	तिष्ठेत्	स्थेयात्	अस्थास्यत्
अजैषीत्	जेता	जेष्यति	जयतु	जयेत्	जीयात्	अजेष्यत्
अनैषीत्	नेता	नेष्यति	नयतु	नयेत्	नीयात्	अनेष्यत्
आनैषीत्	आनेता	आनेष्यति	आनयतु	आनयेत्	आनीयात्	आनेष्यत्
अगासीत्	गाता	गास्यति	गायतु	गायेत्	गेयात्	अगास्यत्
अवाक्षीत्	वोढा	वक्ष्यति	वहतु	वहेत्	उह्यात्	अवक्ष्यत्
अहार्षीत्	हर्ता	हरिष्यति	हरतु	हरेत्	ह्रियात्	अहरिष्यत्
अवात्सीत् अवात्ताम्	वस्ता	वत्स्यति	वसतु	वसेत्	उष्यात्	अवत्स्यत्
अचालीत्	चलिता	चलिष्यति	चलतु	चलेत्	चल्यात्	अचलिष्यत्
अपाठीत अपठीत्	पठिता	पठिष्यति	पठतु	पठेत्	पठ्यात्	अपठिष्यत्
अवादीत् अवदीत्	वदिता	वदिष्यति	वदतु	वदेत्	उद्यात्	अवदिष्यत्
अपप्तत्	पतिता	पतिष्यति	पततु	पतेत्	पत्यात्	अपतिष्यत्
अखादीत्	खादिता	खादिष्यति	खादतु	खादेत्	खाद्यात्	अखादिष्यत्
अक्रीडीत्	क्रीडिता	क्रीडिष्यति	क्रीडतु	क्रीडेत्	क्रीड्यात्	अक्रीडिष्यत्
आर्चीत्	अर्चिता	अर्चिष्यति	अर्चतु	अर्चेत्	अर्च्यात्	अर्चिष्यत्
अहासीत्	हसिता	हसिष्यति	हसतु	हसेत्	हस्यात्	आहसिष्यत

आत्मने पदप्रकरणम्

पञ्चमः पाठः

क्रियाफलं च यदुद्दशेन क्रिया प्रवृत्तिः,
अवगता तत्रैव आत्मनेपदं न तु अन्यत्र।

भावार्थ—जहाँ पर क्रिया का फल कर्ता को प्राप्त हो, वहीं पर आत्मनेपद होता है और जहाँ पर क्रिया का फल कर्ता को नहीं प्राप्त हो, वहाँ पर परस्मैपद होता है। (परन्तु यह नियम स्वरित इत धातुओं में होता है सर्वत्र नहीं)

जैसे—मोहनो भोजनं पचते=मोहन अपने लिये भोजन पकाता है। यहाँ 'पचते' आत्मनेपद है क्योंकि क्रिया का फल मोहन को प्राप्त होता है।

पाचकः भोजनं पचति=रसोइया किसी अन्य के लिये भोजन पकाता है। यहाँ'पचति' यह परस्मैपद है क्योंकि क्रिया का फल कर्ता को नहीं प्राप्त है किसी अन्य के लिये है।

द्रष्टव्य—आत्मनेपद क्रियाओं के रूप बनाने का नियम निम्नलिखित है। यहाँ भी प्रत्येक धातुओं के अन्त (Termination) में "ते, इते, अन्ते, से इथे, ध्वे, इ, वहे, महे" ये आत्मनेपद के प्रत्यय लगाये जाते हैं।

प्रथम पुरुष के प्रत्यय

वन्द्+अ+ते=वन्दते (वह) वन्दना करता है।
वन्द+अ+इते=वन्देते (वे दोनों) वन्दना करते हैं।
वन्द्+अ+अन्ते=वन्दन्ते (वे सब) वन्दना करते हैं।

द्रष्टव्य—द्विवचन से सर्वत्र 'अ+इ' मिलने पर 'ए' गुण हो जाता है और बहुवचन में अकारादि प्रत्यय से पूर्व विकरण के 'अ' को लोप कर दिया जाता है।

मध्यम पुरुष के प्रत्यय

वन्द्+अ+से=वन्दसे (तू) वन्दना करता है।
वन्द्+अ+इथे=वन्देथे (तुम दोनों) वन्दना करते हो।
वन्द्+अ+ध्वे=वन्दध्वे (तुम सब) वन्दना करते हो।

उत्तम पुरुष के प्रत्यय

वन्द्+अ+इ=वन्दे (मैं) वन्दना करता हूँ।
वन्द्+अ+वहे=वन्दावहे (हम दोनों) वन्दना करते हैं।

वद्+अ+महे=वन्दामहे (हम सब) वन्दना करते हैं।

द्रष्टव्य—उत्तम पुरुष के एकवचन में 'अ+इ' मिलकर 'ए' गुण हो जाता है। द्विवचन और बहुवचन में "वकार और मकारादि" प्रत्यय से पूर्व विकरण के 'अ' को दीर्घ 'आ' कर देते हैं।

इसी प्रकार प्रत्येक धातुओं के रूप बना लेने चाहिये।

१—वन्द=नमस्कार करना To invoke.

"लट्" वर्तमानकाल

	एकवचन	द्विवचन	वहुवचन
प्र० पु०	वन्दते	वन्देते	वन्दन्ते
म० पु०	वन्दसे	वन्देथे	वन्दध्वे
उ० पु०	वन्दे	वन्दावहे	वन्दामहे

"लिट्" परोक्षभूतकाल

प्र० पु०	ववन्दे	ववन्दाते	ववन्दिरे
म० पु०	ववन्दिषे	ववन्दाथे	ववन्दिध्वे
उ० पु०	ववन्दे	ववन्दिवहे	ववन्दिमहे

"लङ्" अद्यतनभूतकाल

प्र० पु०	अवन्दत	अवन्देताम्	अवन्दन्त
म० पु०	अवन्दथाः	अवन्देथाम्	अवन्दध्वम्
उ० पु०	अवन्दे	अवन्दावहि	अवन्दामहि

"लुङ्"सामान्य भूतकाल

प्र० पु०	अवन्दिष्ट	अवन्दिषाताम्	अवन्दिषत
म० पु०	अवन्दिष्ठाः	अवन्दिषाथाम्	अवन्दिध्वम्
उ० पु०	अवन्दिषि	अवन्दिष्वहि	अवन्दिष्महि

'लुट्' अनद्यतन भविष्यत्काल

प्र० प०	वन्दिता	वन्दितारौ	वन्दितारः
म० पु०	वन्दितासे	वन्दितासाथे	वन्दिताध्वे
उ० प०	वन्दिताहे	वन्दितास्वहे	वन्दितास्महे

'लृट्' सामान्य भविष्यत्काल

प्र० पु०	वन्दिष्यते	वन्दिष्येते	वन्दिष्यन्ते
म० पु०	वन्दिष्यसे	वन्दिष्येथे	वन्दिष्यध्वे
उ० प०	वन्दिष्ये	वन्दिष्यावहे	वन्दिष्यामहे

'लोट्' आज्ञा वाचक

प्र० पु०	वन्दताम्	वन्देताम्	वन्दन्ताम्
म० पु०	वन्दस्व	वन्देथाम्	वन्दध्वम्
उ० पु०	वन्दै	वन्दावहै	वन्दामहै

विधिलिङ्

प्र० पु०	वन्देत	वन्देयाताम्	वन्देरन्
म० पु०	वन्देथाः	वन्देयाथाम्	वन्देध्वम्
उ० पु०	वन्देय	वन्देवहि	वन्देमहि

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	वन्दिषीष्ट	वन्दिषीयास्ताम्	वन्दिषीरन्
म० पु०	वन्दिषीष्ठाः	वन्दिषीयास्थाम्	वन्दिषीध्वम्
उ० पु०	वन्दिषीय	वन्दिषीवहि	वन्दिषीमहि

'लृङ्' हेतुहेतुमद्भावभविष्यत्

प्र० पु०	अवन्दिष्यत	अवन्दिष्येताम्	अवन्दिष्यन्त
म० पु०	अवन्दिष्यथाः	अवन्दिष्येथाम्	अवन्दिष्यध्वम्
उ० पु०	अवन्दिष्ये	अवन्दिष्यावहि	अवन्दिष्यामहि

२—लभ = प्राप्त करना To get

'लट्' वर्तमानकाल

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	लभते	लभेते	लभन्ते
म० पु०	लभसे	लभेथे	लभध्वे
उ० पु०	लभे	लभावहे	लभामहे

'लिट्' परोक्षभूतकाल

प्र० पु०	लेभे	लेभाते	लेभिरे
म० पु०	लेभिषे	लेभाथे	लेभिध्वे
उ० पु०	लेभे	लेभिवहे	लेभिमहे

'लङ्' अनद्यतन भूतकाल

प्र० पु०	अलभत	अलभेताम्	अलभन्त
म० पु०	अलभथाः	अलभेथाम्	अलभध्वम्
उ० पु०	अलभे	अलभावहि	अलभामहि

'लुङ्' सामान्यभूतकाल

प्र० पु०	अलब्ध	अलप्साताम्	अलप्सत
म० पु०	अलब्धाः	अलप्साथाम्	अलब्ध्वम्
उ० पु०	अलप्सि	अलप्स्वहि	अलप्स्महि

'लुट्' अनद्यतन भविष्यत्काल

प्र० पु०	लब्धा	लब्धारौ	लब्धारः
म० पु०	लब्धासे	लब्धासाथे	लब्धाध्वे
उ० पु०	लब्धाहे	लब्धास्वहे	लब्धास्महे

'लृट्, सामान्यभविष्यत्काल

प्र० पु०	लप्स्यते	लप्स्येते	लप्स्यन्ते
म० पु०	लप्स्यसे	लप्स्येथे	लप्स्यध्वे
उ० पु०	लप्स्ये	लप्स्यावहे	लप्स्यामहे

'लोट्' आज्ञावाचक

प्र० पु०	लभताम्	लभेताम्	लभन्ताम्
म० पु०	लभस्व	लभेथाम्	लभध्वम्
उ० पु०	लभै	लभावहै	लभामहै

विधिलिङ्

प्र० पु०	लभेत	लभेयाताम्	लभेरन्
म० पु०	लभेथाः	लभेयाथाम्	लभेध्वम्
उ० पु०	लभेय	लभेवहि	लभेमहि

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	लप्सीष्ट	लप्सीयास्ताम्	लप्सीरन्
म० पु०	लप्सीष्ठाः	लप्सीयास्थाम्	लप्सीध्वम्
उ० पु०	लप्सीय	लप्सीष्वहि	लप्सीष्महि

'लृङ्' हेतुहेतुमद्भावभविष्यत

प्र० पु०	अलप्स्यत	अलप्स्येताम्	अलप्स्यन्त
म० पु०	अलप्स्यथाः	अलप्स्येथाम्	अलप्स्यध्वम्
उ० पु०	अलप्स्ये	अलप्स्यावहि	अलप्स्यामहि

इसी प्रकार आत्मनेपद में प्रत्येक धातुओं के रूप (Conjugations) जान लेने चाहिये।

षष्ठः पाठः

द्रष्टव्य :—भ्वादिगण आत्मने पद के कुछ धातु पाठ और कुछ धातुओं के केवल प्रथम पुरुष के एक वचन में दसों लकारों के रूप (Conjugations) निम्नलिखित हैं—

संस्कृत	हिन्दी	इंगलिश	लट्	लिट	लङ्	लुङ
कूर्द	कूदना	To jump	कूर्दते	चुकूर्दे	अकूर्दत	अकूर्दिष्ट
सह	सहनकरना	To bear	सहते	सेहे	असहत	असहिष्ट
सेव्	सेवा करना	To serve	सेवते	सिषेवे	असेवत	असेविष्ट
वृत् (वर्त)	बर्तावकरना	To behave	वर्तते	ववृते	अवर्तत	अवर्तिष्ट
वृध् (वर्ध)	बढ़ना	To increase	वर्धते	ववृधे	अवर्धत	अवर्धिष्ट
रुच् (रोच)	पसन्द करना	To like	रोचते	रुरुचे	अरोचत	अरोचिष्ट
शक् (शङ्क)	शंका करना	To doubt	शङ्कते	शशङ्के	अशङ्कत	अशङ्किष्ट
प्र+यत्	प्रयत्नकरना	To strive	प्रयतते	प्रयेते	प्रायतत	प्रायतिष्ट
प्र+आ+रभ्	प्रारंभ करना	To begin	प्रारभते	प्रारेभे	प्रारभत	प्रारब्ध
भाष्	बोलना	To speak	भाषते	बभाषे	अभाषत	अभाषिष्ट
श्लाघ्	बड़ाई करना	To Praise	श्लाघते	शशलाघे	अश्लाघत	अश्लाघिष्ट
क्षम्	क्षमा करना	To Pardon	क्षमते	चक्षमे	अक्षमत	अक्षमिष्ट
दद्	देना	To give	ददते	दददे	अददत	अददिष्ट
मुद्	प्रसन्न होना	To please	मोदते	मुमुदे	अमोदत	अमोदिष्ट
शिक्ष	शिक्षा देना	To teach	शिक्षते	शिशिक्षे	अशिक्षत	अशिक्षिष्ट
नी (नय)	लेजाना	To carry	नयते	निन्ये	अनयत	अनेष्ट
वह	ढोना	To carry	वहते	उवोढ	अवहत	अवोढ

———

लुट्	लृट्	लोट	विधिलिङ्	आशीर्लिङ्	हेतुहेतुमद्भावभविष्यति
कूर्दिता	कूर्दिष्यते	कूर्दताम्	कूर्देत	कूर्दिषीष्ट	अकूर्दिष्यत
सोढा	सहिष्यते	सहताम्	सहेत	सहिषीष्ट	असहिष्यत
सेविता	सेविष्यते	सेवताम्	सेवेत	सेविषीष्ट	असेविष्यत
वर्तिता	वर्तिष्यते	वर्तताम्	वर्तेत	वर्तिषीष्ट	अवर्तिष्यत
वर्धिता	वर्धिष्यते	वर्धताम्	वर्धेत	वर्धिषीष्ट	अवर्धिष्यत
रोचिता	रोचिष्यते	रोचताम्	रोचेत	रोचिषीष्ट	अरोचिष्यत
शङ्किता	शङ्किष्यते	शङ्कताम्	शङ्केत	शङ्किषीष्ट	अशङ्किष्यत
प्रयतिता	प्रयतिष्यते	प्रयतताम्	प्रयतेत	प्रयतिषीष्ट	प्रायतिष्यत
प्रारब्धा	प्रारप्स्यते	प्रारभताम्	प्रारभेत	प्रारप्सीष्ट	प्रारप्स्यत
भाषिता	भाषिष्यते	भाषताम्	भाषेत	भाषिषीष्ट	अभाषिष्यत
श्लाघिता	श्लाघिष्यते	श्लाघताम्	श्लाघेत	श्लाघिषीष्ट	अश्लाघिष्यत
क्षमिता	क्षमिष्यते	क्षमताम्	क्षमेत	क्षमिषीष्ट	अक्षमिष्यत
ददिता	ददिष्यते	ददताम्	ददेत	ददिषीष्ट	अददिष्यत
मोदिता	मोदिष्यते	मोदताम्	मोदेत	मोदिषीष्ट	अमोदिष्यत
शिक्षिता	शिक्षिष्यते	शिक्षताम्	शिक्षेत	शिक्षिषीष्ट	अशिक्षिष्यत
नेता	नेष्यते	नयताम्	नयेत	नेषीष्ट	अनेष्यत
वोढा	वक्ष्यते	वहताम्	वहेत	वक्षीत	अवक्ष्यत

———

सप्तमः पाठः

लट् वर्तमानकाल के उदाहरण

परस्मैपद के अनुसार

पुंलिंग

कुछ आवश्यक सूचना—'अँग्रेजी, और संस्कृत' के नियम को आप अजन्त पुंलिंग में पृष्ठ ३७ पर पहिले देख लीजिए तब यहाँ पर वाक्य बनाना प्रारम्भ कीजिये ।

बालकः गच्छति = A boy goes. लड़का जाता है ।

बालकौ गच्छतः = Two boys go.(दो) लड़के जाते हैं ।

बालकाः गच्छन्ति = All boys go. (सब) लड़के जाते हैं ।

सः क्रीडति = He plays. वह खेलता है ।

तौ क्रीडतः = They both play or Both of them play. वे दोनों खेलते हैं ।

ते क्रीडन्ति = They play. वे खलते हैं ।

स्त्रीलिङ्ग Feminine gender

बालिका गच्छति = A girl goes. लड़की जाती है ।

बालिके गच्छतः = Two girls go. (दो) लड़कियाँ जाती हैं ।

बालिकाःगच्छन्ति = All girls go. (सब) लड़कियाँ जाती हैं ।

सा धावति = She runs. वह (स्त्री) दौड़ती है ।

ते धावतः = They both run or Both of them run. वे दोनों दौड़ती हैं ।

ताः धावन्ति = They run. वे सब दौड़तीं हैं ।

नपुंसक लिंग Neuter gender .

फलं पतति = A fruit falls. फल गिरता है ।

फले पततः = Two fruits fall. दो फल गिरते हैं ।

फलानि पतन्ति = Many fruits fall. बहुत फल गिरते हैं ।

मध्यम पुरुष Second Person.

त्वं गच्छसि = Thou goest. तू जाता है ।

युवां गच्छथः = You both go. or both of you go. तुम दोनों जाते हो ।

यूयं गच्छथ = All of you go. or you all go. तुम सब जाते हो।

उत्तम पुरुष

अहं पठामि = I read. मैं पढ़ता हूँ।

आवां पठावः = We both read. or Both of us read हम दोनों पढ़ते हैं।

वयं पठामः = We all read. All of us read. हम सब पढ़ते हैं।

आत्मने पद के अनुसार

पुंलिंग

बालकः कूर्दते = A boy jumps. बालक कूदता है।

बालकौ कूर्देते = Two boys jump. दो लड़के कूदते हैं।

बालकाः कूर्दन्ते = All boys jump. सब लड़के कूदते हैं।

सः कूर्दते = He jumps. वह कूदता है।

तौ कूर्देते = They both jump. or both of them jump. वे दोनों कूदते हैं।

ते कूर्दन्ते = They all jump. or All of them jump. वे सब कूदते हैं।

स्त्री लिङ्ग

बालिका कूर्दते = A girl jumps. लड़की कूदती है।

बालिके कूर्देते = Two girls jump. दो लड़कियाँ कूदती हैं।

बालिकाः कूर्दन्ते = All girls jump. सब लड़कियाँ कूदती हैं।

सा कूर्दते = She jumps. वह स्त्री कूदती है।

ते कूर्देते = They both jump. or Both of them jump. वे दोनों कूदती हैं।

ताः कूर्दन्ते = They all jump. or Both of them jump. वे सब कूदतीं हैं।

मध्यम पुरुष

त्वं भाषसे = Thou speakest. तू बोलता है।

युवां भाषेथे = You both speak. or Both of you speak. तुग दोनों बोलते हो।

यूयं भाषध्वे = You all speak. or all of you speak. तुम सब बोलते हो।

उत्तम पुरुष

अहं प्रयतते=I strive मैं प्रयत्न करता हूँ।

आवां प्रयतावहे=We both strive or both of us try. हम दोनों प्रयत्न करते हैं।

वयं प्रयतामहे=We all strive. or all of us try. हम सब प्रयत्न करते हैं।

इसी प्रकार प्रत्येक धातुओं के परस्मैपद और आत्मने पद दोनों में कर्ता के अनुसार अनुवाद कर लेने चाहिये।

दृष्टव्य :—(इंगलिश के वाक्य बनाने के लिये संज्ञा (Noun) वाचक शब्द में 's' लगाने से बहुवचन हो जाता है और क्रिया में 's, es' जोड़ने से वर्तमान काल के प्रथम पुरुष 'Third Person' का एक वचन हो जाता है। और मध्यम पुरुष के एक वचन 'Singular N.' में Thou के साथ क्रिया में 'est, st, t, जोड़े जाते हैं। जैसे :—goest, lovest hast' इत्यादि।

अभ्यास

शुद्ध व सरल हिन्दी में अनुवाद कीजिये।

स भवति। तौ वदतः। ते शृण्वन्ति। सा हसति। ते क्रीडतः। ताः वदन्ति। त्वं नमसि। युवां विहरथः। यूयं दहथ। अहं लडामि। आवां हसावः। वयं रक्षामः। वृक्षः वर्धते। सुरेन्द्रौ प्रयतेते। बालकाः भाषन्ते। सा शङ्कते। ते रोचेते। ताः वर्तन्ते। त्वं प्रयतसे। युवां श्लाघेथे। यूयं सेवध्वे। अहं क्षमे। आवां प्रारभावहे। वयं सहामहे। गोपाः गा आनयन्ति।

सर्वभूतस्थितं यो मां भजत्येकत्वमास्थितः।
सर्वथा वर्तमानोऽपि स योगी मयि वर्तते॥

शुद्ध व सरल संस्कृत में अनुवाद कीजिए।

(१) वह चुराता है। (२) वे दोनों गाते हैं। (३) वे सब बोलते हैं। (४) तू खाता है। (५) तुम दोनों दौड़ते हो। (६) तुम सब पढ़ते हो। (७)वह गिरती है। (८) वे दोनों स्त्रियाँ जाती हैं। (६) वे सब स्त्रियाँ हंसती हैं। (१०) लड़कियाँ घूमती हैं। (११) किसान बोता है। (१२) वे दोनों प्रयत्न करते हैं। (१३) वे प्रशंसा करते हैं। (१४) मोहन शङ्का करता है। (१५) राम क्षमा करता है। (१६) मैं बड़ाई करता हूँ। (१७) हम दोनों प्रयत्न करते हैं। (१८) हम सब शिक्षा देते हैं।

अष्टमः पाठः

'लिट्' परोक्षभूत काल के उदाहरण

परोक्ष भूतकाल का प्रयोग वहाँ पर होता है, जहाँ पर कार्य अपनी आखों से न देखा गया हो।

द्रष्टव्य—प्रथम पुरुष और मध्यम पुरुष के लिये तो किसी प्रकार की शङ्का ही नहीं है। परन्तु उत्तम पुरुष First person में लिट् का प्रयोग नहीं हो सकता है क्योंकि स्वयं की हुई क्रिया परोक्ष में नहीं हो सकती है। अतः पागलपन की अवस्था में "परोक्षभूत" का प्रयोग उत्तम पुरुष में हो सकता है।

जैसे—बहु जगाद पुरस्तात् तस्य मत्ता किल अहम्—Being infatuous I spoke before him much मैं उन्मत होकर उसके सामने बहुत बक गई।

अहम् उन्मत्तः सन् वनं विचचार। I roamed about in the forest in a state of madness. मैंने पागल पन की अवस्था में वन में भ्रमण किया।

प्रथम पुरुष

स जगाम = He went वह गया।

तौ जग्मतुः = They both went. Both of them went. वे दोनों गये।

ते जग्मुः = They went. वे सब गये।

मध्यम पुरुष

त्वं जगमिथ = Thou wentest. तू गया।

युवां जग्मथुः = You both went. Both of you went. तुम दोनों गये थे।

यूयं जग्म = You went. तुम सब गये थे।

उत्तम पुरुष

जगाम = I went. मैं गया।

आवां जग्मिव = We both went. both of us went. हम दोनों गये।

वयं जग्मिव = We went. हम सब गये।

आत्मने पद के अनुसार

प्रथम पुरुष

स बभाषे = He spoke. वह बोला।

तौ बभाषाते = They both spoke. Both of them spoke वे दोनों बोले।

ते बभाषिरे—They spoke वे सब बोले

मध्यम पुरुष

त्वं बभाषिषे—Thou spokest तूने बोला

युवां बभाषाथे—you both spoke or both of you told तुम दोनों ने कहा था

यूयं बभाषिध्वे—you all spoke or all of you told. तुम सबने कहा था।

उत्तम पुरुष

अहं बभाषे—I spoke मैंने कहा

आवां बभाषिवहे—We both spoke हम दोनों बोले

वयं बभाषिमहे—We spoke हम बोले

नवमः पाठः

'लङ्' अनद्यतन भूतकाल के उदाहरण

परस्मैपद के अनुसार

सोऽपठत्—He had read उसने पढ़ा।

तौ अपठताम्—They both had read उन दोनों ने पढ़ा।

ते अपठन्—They had read उन्होंने पढ़ा।

सा अगच्छत्—She had gone. वह गई थी।

ते अगच्छताम्—They both had gone वे दोनों गईं।

ताः अगच्छन्—They had gone. वे सब गईं।

त्वम् अश्रृणोः—Thou had heardst. तूने सुना।

युवाम् अश्रृणुतम्—You both had heard तुम दोनों ने सुना।

यूयम् अश्रृणुत—You all had heard तुम सबों ने सुना।

अहम् अजयम्—I conquered मैंने जीत लिया।

आवाम् अजयाव—We both had won हम दोनों ने जीत लिया।

वयम् अजयाम—We had won हम सबों ने जीत लिया।

आत्मने पद के अनुसार

स अकूर्दत—He had jumped वह कूदा

तौ अकूर्दताम्—They both had jumped वे दोनों कूदे।

ते अकूर्दन्त—They had jumped वे कूदे

सा प्रारभत—She had begun उस स्त्री ने प्रारम्भ किया।

ते प्रारभेताम्—They both had begun उन दोनों स्त्रियों ने प्रारम्भ किया।

ताः प्रारभन्त—They had begun उन स्त्रियों ने प्रारम्भ किया।

त्वम् अददत—Thou gavest तूने दिया

युवाम् अददेताम्—You both gave तुम दोनों ने दिया।

यूयम् अददन्त—You gave तुम सबों ने दिया।

अहम् अलभे—I got मैंने प्राप्त किया।

आवाम् अलभावहि—We both got हम दोनों ने प्राप्त किया।

वयम् अलभामहि—We got हम सबों ने प्राप्त किया।

यदि आपको भूतकाल की क्रिया नहीं मालूम है तो वर्तमान काल की क्रिया (verb) के अन्त में "स्म" जोड़ देने से भूतकाल के अर्थ का बोध हो जाता है। जैसे :—

स अगच्छत्—वह गया अथवा वह गया था। इसके स्थान में 'स गच्छति स्म' लिख देने से भी वही अर्थ निकल आता है।

किं स तत्र गच्छति स्म ? Did he go there? क्या वह वहाँ गया था ?

किं त्वं पुस्तकं पठसि स्म ? Didst thou read a book ? क्या तूने पुस्तक पढ़ी थी ?

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिए :—

(१) स गाम् आनिनाय (२) मोहनो देवम् आनर्च (३) शंखध्माः शंखान् प्रदध्मुः (४) तौ पेततुः (५) रामः शिशिक्षे (६) सेवकः सिषेवे (७) हरिः तस्थौ (८) स पठति स्म (९) तौ पठतःस्म (१०) ते पठन्ति स्म (११) सा मोदते स्म (१२) ते मोदेते स्म (१३) ताः मोदन्ते स्म (१४) त्वं पिबसि स्म (१५) युवां भ्रमथः स्म (१६) यूयं क्रीडथ स्म (१७) अहं स्मरामि स्म (१८) आवां रक्षावः स्म (१९) वयं पठामः स्म

संस्कृत में अनुवाद कीजिए

(१) वह दौड़ा (२) वे दोनों खेले (३) उन्होंने शंख बजाये (४) राम ने पुस्तक पढ़ी (५) उसने चुरा लिया (६) देवेन्द्र गिर पड़ा (७)

गोविन्द ने मुझे देखा (८) मेरी बहिन ने मुझको प्यार किया (९) सुरेन्द्र भूल गया (१०) वे सब घूमने गये। (११) भगवान् ने अर्जुन को उपदेश दिया।

दशमः पाठः

'लुङ्' सामान्य भूतकाल के उदाहरण

अहं पत्रमलेखिषम्। मैंने पत्र लिखा था। यहाँ पर यह ज्ञात नहीं है कि पत्र लिखे कितनी देर हुई अर्थात् एक घण्टा, दो घण्टा, दो मास, दो वर्ष अथवा कई वर्ष बीत जाने पर भी 'लिखा था' ही कहेंगे।

परस्मैपद के अनुसार

सोऽगमत् = He went वह गया था।
तौ अपाताम् = They both drank दोनों पिये थे।
ते अपुः = They drank. वे सब पिये थे।
सा आगमत् = She came. वह आई थी।
ते आगमताम् = They both came वे दोनों आई थीं।
ताः आगमन् = They came वे सब आई थीं।
त्वम् अश्रौषीः = Thou heardst तू सुना था।
युवाम् अजैष्टम् = You both won तुम दोनों जीते थे
यूयम् अजैष्ट = You won. तुम सब जीते थे।
अहम् अश्रौषम् = I heard मैंने सुना था।
आवाम् अरक्षिष्व = We both protected हम दोनों ने रक्षा की थी।
वयम् अरक्षिष्म = We protected. हम सब ने रक्षा की थी।

आत्मने पद के अनुसार

सोऽसेविष्ट = He served उसने सेवा की थी।
तौ असेविषाताम् = They both served उन दोनों ने सेवा की थी।
ते असेविषत = They served उन सब ने सेवा की थी।
शकुन्तला असेष्टि = Shakuntala served शकुन्तला ने सेवा की थी।
स्त्रियौ असेविषाताम् = Both women served दोनों स्त्रियाँ सेवा की थी।
स्त्रियोऽसेविषत = All women served सब स्त्रियों ने सेवा की थी।
त्वम् अश्लाघिष्ठाः = Thou priaisedst. तूने बड़ाई की थी।

युवाम् अश्लाघिषाथाम् = You both praised तुम दोनों ने प्रशंसा की।

यूयम् अश्लाघिध्वम् = You all praised तुम सब ने प्रशंसा की।

अहम् अक्षमिषि = I pardoned मैंने क्षमा किया।

आवाम् अक्षमिष्वहि = We both pardoned हम दोनों ने क्षमा किया।

वयम् अक्षमिष्महि = We pardoned हम सब ने क्षमा की।

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद करो :—

(१) मोहनोऽजैषीत् (२) तौ अनैष्टाम् (३) ते अस्थुः (४) सा अक्रीडीत् (५) ते अखादिष्टाम् (६) ताः अपप्तन् (७) त्वम् अपप्तः (८) युवाम् अहासिष्टम् (९)यूयमभ्रमिष्ट (१०) अहमपप्तम् (११) अवामनैष्व (१२) वयमार्चिष्म (१३) सोऽकूर्दिष्ट (१४) छात्रौ अरोचिषाताम् (१५) गावः पलायिषत (१६) किंत्वमरोचिष्ठाः। (१७) युवामकूर्दिषाथाम् (१८) यूयमभाषिध्वम् (१९) अहं प्रारप्सि (२०) आवां प्रारप्स्वहि (२१) वयं प्रारप्स्महि।

संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(१) देवेन्द्र बाजार गया था (२) क्या तूने मुझे देखा था ? (३) राम ने पुस्तक पढ़ी थी (४) गोविन्द गेंद से खेला था (५) वे दोनों दौड़े थे (६) तुम दोनों हंसे थे (७) मैंने प्रारम्भ किया था (८) हम दोनों ने प्रारम्भ किया था (९) हम सब ने प्रारम्भ किया था। (१०) उन सब ने पढ़ा था (११) तुम सब कूदे थे।

द्रष्टव्य—इंगलिश में Present tense की क्रिया में verb के अन्त में 'ed और t' लगा देने से सामान्यभूतकाल का बोध होता है और यदि क्रिया के अंत में 'e' हो तो केवल 'd' लगाया जाता है।

एकादशः पाठः

"लुट्" अनद्यतन भविष्यत्काल के उदाहरण

सः श्वो गन्ता = वह कल जायेगा He will go tomorrow.

त्वं श्वः किं पठितासि ? तू कल क्या पढ़ेगा ? What will thou read tomorrow.

अहं श्वो जेतास्मिः = मैं कल जीतूँगा। I shall conquer tomorrow.

आवां श्वो जेतास्वः = हम दोनों कल जीतेंगे। We both shall conquer tomorrow.

वयं श्वो जेतास्म = हम सब कल जीतेंगे। We shall conquer tomorrow.

सूचना—इंगलिश में Thou के साथ will के स्थान पर wilt, shalt लगा देते हैं।

अभ्यास

(१) सः श्वः पठिता (२) तौ श्वो वस्तारौ (३) ते श्वो वस्तारः (४) त्वं श्वो जेतासि (५) किं युवां स्वः पठितास्थः (६) किं यूयं श्वः क्रीडितास्थ (७) अहं श्वः पातास्मि (८) आवां श्वो गन्ताष्वः (९) वयं श्व आनेतास्मः।

संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(१) मैं कल जाऊँगा (२) हम दोनों कल पढ़ेंगे। (३) हम सब कल खेलेंगे (४) क्या तू कल ले जायेगा ? (५) तुम दोनों कल जीतोगे (६) तुम सब कल क्या पढ़ोगे ? (७) वह कल प्रयाग जायेगा (८) वे दोनों कल प्रारम्भ करेंगे (९) वे सब कल दौड़ेंगे। १० क्या तुम कल गाओगे ?

द्वादशः पाठः

"लृट्" सामान्य भविष्यकाल के उदाहरण

१—स गमिष्यति = He will go वह जायेगा या वह चला जायेगा।

२—तौ गमिष्यतः = They both will go or both of them will go = वे दोनों जायेंगे।

३—ते गमिष्यन्ति = They all will go. वे सब जायेंगे।

४—सा क्रीडिष्यति = She will play. वह खेलेगी।

५—ते आगमिष्यतः = They both will come or both of them will come. वे दोनों आयेंगी।

६—ताः श्रोष्यन्ति = They will hear वे सब सुनेंगी।

७—कः भारं नेष्यति ? who carry the burden. कौन बोझ ले जायेगा ?

८—त्वं किं प्रारप्स्यसे ? What wilt thou begin ? क्या तू प्रारम्भ करेगा ?

किं युवां प्रारप्स्येथे ? Will you both begin or will both of you begin ? तुम दोनों क्या प्रारम्भ करोगे ?

किं यूयं प्रारप्स्यध्वे ? Will you begin ? क्या तुम सब प्रारम्भ करोगे ?

अहं लप्स्ये = I Shall get मैं प्राप्त करूँगा।

आवां लप्स्यावहे = We both shall get or Both of us shall get. हम दोनों प्राप्त करेंगे।

वयं लप्स्यामहे = We shall get. हम सब प्राप्त करेंगे।

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिए।

(१) स धाविष्यति (२) तौ द्रक्ष्यथः (३) ते भ्रमिष्यन्ति (४) सा गमिष्यति (५) ते श्रोष्यतः (६) ताः निवत्स्यन्ति (७) त्वं किं शिक्षिष्यसे ? (८) युवां किं नेष्येथे ? (९) यूयं किं निवत्स्यथ ? (१०) अहं प्रयतिष्ये (११) आवां प्रयतिष्यावहे (१२) वयं प्रयतिष्यामहे

संस्कृत में अनुवाद कीजिये :—

(१) गोविन्द स्कूल जायेगा (२) राम पढ़ेगा (३) राधे मोहन के साथ रहेगा (४) हरिश्चन्द्र राम को जीत लेगा (५) वे सब कहाँ पढ़ेंगे ? (६) वे इलाहाबाद में पढ़ेंगे (७) हम सब दौड़ेंगे (८) क्या तू खेलेगा ? (९) तुम लखनऊ कब जाओगे ? (१०) तुम हरिद्वार जाओगे ? (११) सुरेन्द्र मेरे लिये पुस्तक लायेगा।

त्रयोदशः पाठः

"लोट्" आज्ञावाचक के उदाहरण

आज्ञार्थ (Command) में मध्यम पुरुष का कर्ता सदा लुप्त रहता है। 'उपदेश और प्रार्थना' अर्थों में भी लोट् लकार का प्रयोग होता है।

उदाहरण

स गच्छतु = He may go. वह जावे।

तौ पठताम् = They both may read or both of them may read. वे दोनों पढ़ें।

ते खादन्तु = They may eat. वे सब खावें।

(त्वं) गच्छ = Thou mayst go. तू जा।

(त्वं) पठ = Thou mayst read. तू पढ़।

(त्वं) खाद = Thou mayst eat. तू खा।

(युवां) गच्छतम् = You both may go or both of you go. तुम दोनों जाओ।

(युवां) कूर्देथाम् = You both may jump. or Both of you may jump. तुम दोनों कूदो।

(यूयं) सेवध्वम् = You may serve. तुम सेवा करो।

(यूयं) गच्छत = You may go. तुम जाओ।

उपदेश में—उपदिश माम् = Give me advice. मुझे उपदेश दो।

प्रार्थना में—हे भगवन्! देहि मे भक्तिम् = O'God! Give me reverence हे भगवान्? मुझे भक्ति दो।

किमहं गच्छानि? May I go क्या मैं जाऊँ?

कि मावाँ गच्छाव? May we both go or may both of us go? क्या हम दोनों जावें?

किंवयं गच्छाम? May we go क्या हम सब जावें?

द्रष्टव्य—संबोधन में मध्यपुरुष का कर्ता लुप्त नहीं होता है।

जैसे:—शृणुत रे पौराः! Oh! hear inhabitant.

यहाँ पर केवल क्रिया मात्र से ही मध्यम पुरुष का ज्ञान हो जाता है परन्तु प्रथम पुरुष और उत्तम पुरुष का कर्ता लुप्त नहीं रहता है। जैसे—

आगच्छ, क्रीडितुं गच्छाव = Let us go for to play or we should go to play. आओ खेलने चलें।

देहि मे तत्र गमनम् = Let me go there मुझे वहाँ जाने दो।

लोट् लकार के स्थान पर "तव्य, अनीय, और योग्य" अर्थों में भी प्रयोग होता है। जैसे—

त्वया गन्तव्यम् (गमनीयम्) = You must go तुम्हें जाना चाहिये।

एतत् त्वया न करणीयम् = You should not do this यह तुम्हें नहीं करना चाहिये। यदि यह बात अधिक जोर देकर कही गई है तो ऐसा प्रयोग होगा You must not do this।

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिए:—

(१) भवान् पठतु (२) तौ गच्छताम् (३) ते पठन्तु (४) बालिकाः धावन्तु (५) सत्यं वद (६) धर्मं चर (७) स्वाध्यायान् मा प्रमद (८) अहं पठानि (९) वयं लिखाम (१०) आवां प्रयतावहै (११) त्वं शिक्षस्व (युवां) आनयेथाम् (१२) (यूयं) ददध्वम् (१३) अहं प्रारभै

(१४) हे सखे ! छिन्धि मम बन्धनम् (१५) अनृतं मा वद (१६) कानपि गालिकां मा वद ।

संस्कृत में अनुवाद कीजिए :

(१) तू पुस्तक पढ़ (२) तू सच बोल (३) तू खाना खा (४) तू पानी पी (५) तू गाना गा (६) तू बाग में खेल। (७) वह गाना गावे (८) पढ़ने से प्रमाद मत करो (९) किसी को गाली मत दो (१०) मेरी बात सुनो (११) तू यहाँ आ। (१२) झूठ मत बोलो (१३) हे बालको ! यहाँ आओ। (१४) अपना मुह धोओ (१५) माता पिता की आज्ञा मानो (१३) अपना पाठ याद करो।

चतुर्दशः पाठः

विधि लिङ् के उदाहरण

द्रष्टव्य—यदि आज्ञा अर्थमें बिधलिङ् का प्रयोग होता हो तो नम्र भाव समझना चाहिये और यदि केवल विधि का प्रयोग हो तो कड़ा रूप समझना चाहिये। विधि दो प्रकार का होता है (१) प्रवर्तना (२) निवर्तना।

उदाहरण

१—सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् (यह प्रवर्तना है) You should speak truth and lovingly (elegant) सत्य और प्रिय बोलना चाहिये।

२—न ब्रूयात्सत्यमप्रियम् (यह निवर्तना है) You should not speak truth unlovingly. अप्रिय (कठोर) सत्य नहीं बोलना चाहिये।

सूचना—हिन्दी के 'चाहिये' अर्थ में 'विधिलिङ्' का प्रयोग होता है और इंगलिश में भी May, might, ought, must, should, could, would इत्यादि विधिलिङ् के साथ प्रयोग होता है।

स सुखी भवेत्=वह सुखी होवे May he be happy.

एवं स्यात्=ऐसा हो या ऐसा होना चाहिये। It might be so or It ought to be so.

१—स नूनमेव लिखेत्=वह अवश्य लिखे या उसे लिखना चाहिये He must write certainly.

२—वयमवश्यमाज्ञां पालयेम=हमें अवश्य आज्ञा पालन करना चाहिये We ought to obey surely-

द्रष्टव्य—चाहिये अर्थ में "तव्य, अनीय, यत्" इन प्रत्ययों का प्रयोग होता है और कर्ता में प्रथमा विभक्ति न होकर तृतीया विभक्ति होती है, और विधिलिङ भी होता है।

३—स तत्र गच्छेत् अथवा तेन तत्र गन्तव्यम्=वह वहाँ जावे अथवा उसे वहाँ जाना चाहिये He should go there.

४—त्वं भारं वहेः अथवा त्वया भारो वोढव्यः=तू बोझ ले जा या तुझे बोझ ले जाना चाहिये You should carry the load.

शक्ति (Energy) और सामर्थ (ability) में भी विधिलिङ् होता है। जैसेः—

५—स तत्र गन्तुं न शक्नुयात्= वह वहाँ नहीं जा सका He could not go there.

संभावना (Possibilty) में भी विधिलिङ् होता है। जैसेः—

६—संभावयामि ममपिता आगच्छेत्=शायद मेरे पिता जी आ जायँ।

७—संभावयामि यत् त्वमत्र भुञ्जीथाः=मैं संभावना करता हूँ कि आप यहीं खायेंगे I suppose that you may eat here.

८—कदाचिन् ममभ्राता श्वः प्रयागं गच्छेत्=शायद मेरे भाई कल इलाहाबाद जायँ। Probably my brother may go to Allahabad tomorrow.

भविष्यदर्थ में भी विधिलिङ् होता है। जैसेः—

९—स तत्र गतो भवेत्=वह वहाँ गया होगा। He will have gone there.

१०—त्वं तत्र गच्छे=तू वहाँ जाना Thou shalt go there.

इच्छा (wsih) में भी विधिलिङ् होता है। जैसेः—

इच्छामि भवान् यदत्र भुञ्जीत अथवा भुङ्क्ताम्=मैं चाहता हूँ कि आप यहाँ भोजन करें। I wish that you may eat here.

निमंत्रण मेंः—भवानद्य इह भुञ्जीत अथवा भुङ्क्ताम्। Today you may dine here. आप आज यहीं भोजन कीजिए।

आमंत्रण (call) (सत्कार पूर्वक बुलाना) अर्थ में भी विधिलिङ् होता है जैसेः—

भवान् इह आसीत अथवा आस्ताम्=आप यहाँ बैठिये। Please, sit here.

अधीष्ट (सत्कार पूर्वक व्यापार) अर्थ में भी विधिलिङ् होता है जैसेः—

मम पुत्रमध्यापयेद् भवान् अथवा अध्यापयतु = Please, may you teach my son. मेरे बेटे को आप पढ़ा दिया करें।

संप्रश्न अर्थ में भी विधिलिङ् होता है जैसे:—

किमहं वेदमधीयीय अथवा उत्तर्कम् ? क्या मैं वेद पढ़ूँ या तर्कशास्त्र ? Should I read the vedas or the Logic ?

प्रार्थना (Entreaty) अर्थ में भी विधिलिङ् होता है। जैसे:—

किञ्चिन्मां भोजनं लभेय अथवा लभै = मुझे कुछ (थोड़ा) भोजन मिले या मिलेगा। May I get some food.

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिये और विधिलिङ् का रूप बताइये :—

कामः क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत्।
दुःखमित्येव यत्कर्म काय क्लेश भयात्त्यजेत्।
स कृत्वा राजसं त्यागं नैव त्याग फलं लभेत्॥

(१) सन्ध्यां मनसा ध्यायेत् (२) विद्यार्थिनः स्वपाठं पठेयुः। (३) छात्राः विद्यालयं गच्छेयुः (४) यूयमपराधान् गुरवेनिवेदयेत (५) सज्जनाः दुःखिताञ्जनान् सान्त्वयेयुः। (६) आचार्यः किं कुर्यात् ? (७) नृपतिर्दुष्टेभ्यः कुप्येत् (८) अतिथिभ्यः स्वागतं व्यवहरेत्। (९) दरिद्राय धनं यच्छेम (१०) इच्छामि भवान् निरोगो भवेत् (११) आगतं स्वागतं कुर्यात् (१२) गच्छन्तं न निवारयेत्।

संस्कृत में अनुवाद कीजिए:—

(१) मन से ईश्वर का ध्यान करना चाहिये (२) विद्यार्थियों को समय से उठना चाहिये (३) और समय पर पढ़ना चाहिये (४) और समय पर खेलना भी चाहिये (५) छात्रों को अपना समय वृथा नहीं खोना चाहिये। (६) हम को माँ बाप की आज्ञा का पालन करना चाहिये। (७) संभव है, कि वह अभी आ जाय (८) संभव है, कि वह परीक्षा में पास हो (९) शायद मैं देहली चला जाऊँगा (१०) शायद मेरे भाई बनारस से आ जायँ। (११) हमें दीनों पर दया करना चाहिये। (१२) ज्ञानीजन दुःखी जनों को सान्त्वना देना चाहिये। (१३) हमें अपनी त्रुटियों की पूर्ति करनी चाहिये।

(हेतुहेतुमतोर्लिङ् ३ । ३ । १५६)

भावार्थ—भविष्यदर्थ में यदि हेतु (कारण) हेतुमत (कार्य) हो अर्थात् कार्य कारण भाव हो तो विकल्प (optionlly) से विधिलिङ् होता है। जैसे—

कृष्णं नमेत् चेत्सुखं यायात् (विधिलिङ्) कृष्णं नंस्यति चेत्सुखं यास्यति (भविष्येत्यर्थ) यदि कृष्ण को प्रणाम करेगा तो सुख होगा अर्थात् सुख मिलेगा। यहाँ पर कृष्ण को प्रणाम करना 'कारण' और 'सुख' मिलना कार्य है।

पञ्चदशः पाठः

आशीर्लिङ् के उदाहरण

आशीवार्द अर्थ में "लिङ् और लोट्" दोनों लकार होते हैं।

जीवेम शरदः शतम् = ईश्वर करे कि हम सौ वर्ष तक जीवें। May we live long for hundred years.

त्वं चिरायुर्भूयाः अथवा आयुष्मान् भव (भवतात) May you live long. तुम्हारी बड़ी आयु हो।

ईश्वरः त्वां धनिनं कुर्यात्—ईश्वर तुम्हें धनवान् करे। May god make you rich.

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिये—

(१) ईश्वरः ते मार्गे कल्याणं दद्यात्। (२) ईश्वरः त्वामवतु (३) ममदोषं क्षमस्व। (४) गुणवन्तं पुत्रं लभस्व (५) परमात्मा त्वां परीक्षायां सफली कुर्यात्।

संस्कृत में अनुवाद कीजिये—

(१) ईश्वर तुम्हें मार्ग में कल्याण करे। (२) ईश्वर तुम्हें धनवान् करे (३) ईश्वर करे कि तुम शीघ्र अच्छे हो जाओ (८) मेरे अपराधों को क्षमा करो (५) परमात्मा तुम्हें परीक्षा में उत्तीर्ण कर दे। (६) परमात्मा तुम्हारी सहायता करे। (७) ईश्वर करे तुम्हारी बड़ी आयु हो (८) परमात्मा करे कि तुम फलो फूलो (९) राम तुम्हारा भला करे (१०) ईश्वर करे कि तुम्हारे पुत्र होवें।

षोडशः पाठः

लृङ् लकार के उदाहरण

(लिङ्निमित्तेलृङ् क्रियातिपत्तौ ३ । ३ । १३९)

भावार्थः—जब एक क्रिया का होना दूसरी क्रिया पर निर्भर हो तब इस लकार का प्रयोग होता है, इसकाप्रयोग "भूत और भविष्यत्" दोनों में होता है।

सुवृष्टिश्चेदभविष्यत् तदा सुभिक्षमभविष्यत्—यदि अच्छी वर्षा होगी तो अच्छी फसल होगी अथवा यदि अच्छी वर्षा हुई होती, तो अच्छी फसल होती। If it rains well "the crops would be better" or had it rained well the crops would have been better.

यदि त्वं कोलाहलमकरिष्यः तर्हि अहं त्वामताडयिष्याम्=यदि तुमने शोर मचाया तो मैंने तुमको मारा अर्थात् यदि तुम शोर मचाओगे तो मैं तुम्हें मारूगा। I shall beat you if you make noise.

यद्यहं तत्राऽगमिष्यम् तर्हि तव कार्यमवश्यमकरिष्यम्—यदि मैं वहाँ गया तो आप का कार्य अवश्य कर दूँगा। I shall do your work surely if I go there.

यद्यहं कठिनं परिश्रममकरिष्यम् तर्हि-अहमुत्तीर्णोऽभविष्यम्। यदि मैं कठिन परिश्रम करता तो पास हो जाता। Had I worked hard, I would have passed.

यदि स माममिलिष्यत् तदा स मां पर्यचेष्यत्—यदि वह मुझे मिला होता तो वह मुझे पहिचान लेता। Had he met me he would have recognised me.

यदि स मामद्रक्ष्यत् तर्हि स मां शीघ्रं पर्यचेष्यत्—यदि वह मुझे देखता तो वह मुझे शीघ्र ही पहिचान लेता। If he had seen me, he would have known me at once.

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिये—

अकरिष्यदसौ पापमतिनिष्करुणैव सा।
नाऽभविष्यमहं तत्र यदि तत्परिपन्थिनी॥

किं वाऽभविष्यदरुणः तमसां विभेत्ता।
तं चेत्सहस्रकिरणो धुरिनाऽकरिष्यत्
यदि छात्रा यथासमयं नाऽऽगमिष्यन्
तदा प्रधानाध्यापकोऽदण्डयिष्यत्।
यदा सूर्यः स्वतापेन अस्यतडागस्य तोयमशोष्यत्
यदा सर्वे मत्स्यादयःजन्तवोऽमरिष्यन्॥

संस्कृत में अनुवाद कीजिए :—

(१) यदि पानी बरसता तो फसल अच्छी होती। (२) अगर वह परीक्षा देने गया होता तो पास हो गया होता (३) यदि तुम लोग धन के लालच से धर्म का लोप न करते तो ऐसे कठोर दुःख में न पड़ते (४) अगर राजा अपराधियों को दण्ड न। देते तो बलवान् लोग निर्बलों को मार डालते। (५) यदि वे लड़के मेरी बात मान गये होते तो वे आज बड़े आदमी बन गये होते। (६) यदि उसने अपना काम समाप्त कर लिया होता तो वह घर चला जाता (७) यदि गोविन्द मेरे पास आता तो मैं उसकी सहायता करता।

———

नवमोऽध्यायः

प्रथमः पाठः

अदादिगण प्रकरणम्

अदादि गण की धातुओं के रूपों में भ्वादिगण की धातुओं से कुछ अन्तर होता है और धातु तथा प्रत्यय के बीच में जो 'अ' विकरण जोड़ा जाता था वह इस गण में लोप हो जाता है।

अद् खाना To eat

'लट्' वर्तमानकाल प्रथम पुरुष

एकवचन	अद्+ति=अत्ति। वह खाता है।
द्विवचन	अद्+तः=अत्तः। वे दोनों खाते हैं।
बहुवचन	अद्+अन्ति=अदन्ति वे सब खाते हैं।

मध्यम पुरुष

एकवचन	अद्+सि=अत्सि। तू खाता है।
द्विवचन	अद्+थः=अत्थः। तुम दोनों खाते हो।
बहुवचन	अद्+थ=अत्थ। तुम सब खाते हो।

उत्तम पुरुष

एकवचन	अद्+मि=अद्मि। मैं खाता हूँ।
द्विचन	अद्+वः=अद्वः। हम दोनों खाते हैं।
बहुवचन	अद्+मः=अद्मः। हम सब खाते हैं।

इसी प्रकार सर्वत्र जान लेना चाहिये।

'लिट्' परोक्षभूत

प्र० पु०	जघास	जक्षतुः	जक्षुः
म० पु०	जघसिथ	जक्षथुः	जक्ष
उ० पु०	जघास (जघस)	जक्षिव	जक्षिम

अथवा

प्र० पु०	आद	आदतुः	आदुः
म० पु०	आदिथ	आदथुः	आद
उ० पु०	आद	आदिव	आदिम

'लङ्' अनद्यतनभूत

प्र० पु०	आदत्	आत्ताम्	आदन्
म० पु०	आदः	आत्तम्	आत्त
उ० पु०	आदम्	आद्व	आद्म

'लुङ' सामान्य भूत

प्र० पु०	अघसत्	अघसताम्	अघसन्
म० पु०	अघसः	अघसतम्	अघसत
उ० पु०	अघसम्	अघसाव	अघसाम

लुट् अनद्यतन भविष्यत्

प्र० पु०	अत्ता	अत्तारौ	अत्तारः
म० पु०	अत्तासि	अत्तास्थः	अत्तास्थ
उ० पु०	अत्तास्मि	अत्तास्वः	अत्तास्मः

लृट् सामान्य भविष्यत्

प्र० पु०	अत्स्यति	अत्स्यतः	अत्स्यन्ति
म० पु०	अत्स्यसि	अत्स्यथः	अत्स्यथ
उ० पु०	अत्स्यामि	अत्स्यावः	अत्स्यामः

'लोट्' आज्ञा

प्र० पु०	अत्तु (अत्तात्)	अत्ताम्	अदन्तु
म० पु०	अद्धि (अत्तात्)	अत्तम्	अत्त
उ० पु०	अदानि	अदाव	अदाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	अद्यात्	अद्याताम्	अद्युः
म० पु०	अद्याः	अद्यातम्	अद्यात
उ० पु०	अद्याम्	अद्याव	अद्याम

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	अद्यात्	अद्यास्ताम्	अद्यासुः
म० पु०	अद्याः	अद्यास्तम्	अद्यास्त
उ० पु०	अद्यासम्	अद्यास्व	अद्यास्म

लृङ् हेतु हेतु मद्भाव भविष्यत्

प्र० पु०	आत्स्यत्	आत्स्यताम्	आत्स्यन्
म० पु०	आत्स्यः	आत्स्यतम्	आत्स्यत
उ० पु०	आत्स्यम्	आत्स्याव	आत्स्याम

हन् = मारना To kill

लट् वर्तमानकाल

प्र० पु०	हन्ति	हतः	घ्नन्ति
म० पु०	हन्सि	हथः	हथ
उ० पु०	हन्मि	हन्वः	हन्मः

लिट् परोक्ष भूत

प्र० पु०	जघान	जघ्नतुः	जघ्नुः
म० पु०	जघनिथ (जघन्थ)	जघ्नथुः	जघ्न
उ० पु०	जघान जघन)	जघ्निव	जघ्निम

लङ् अनद्यन भूत

प्र० पु०	अहन्	अहताम्	अघ्नन्
म० पु०	अहः (अहन्)	अहतम्	अहत
उ० पु०	अहनम्	अहन्व	अहन्म

'लुङ्' सामान्य भूत

प्र० पु०	अवधीत्	अवधिष्टाम्	अवधिषुः
प्र० पु०	अवधीः	अवधिष्टम्	अवधिष्ट
उ० पु०	अवधिषम्	अवधिष्व	अवधिष्म

'लुट्' अद्यतन भविष्यत्

प्र० पु०	हन्ता	हन्तारौ	हन्तारः
म० पु०	हन्तासि	हन्तास्थः	हन्तास्थ
उ० पु०	हन्तास्मि	हन्तास्वः	हन्तास्मः

लृट् सामान्य भविष्यत्

प्र० पु०	हनिष्यति	हनिष्यतः	हनिष्यन्ति
म० पु०	हनिष्यसि	हनिष्यथः	हनिष्यथ
उ० पु०	हनिष्यामि	हनिष्यावः	हनिष्यामः

लोट् आज्ञा

प्र० पु०	हन्तु (हतात्)	हताम्	घ्नन्तु
म० पु०	जहि (हतात्)	हतम्	हत
उ० पु०	हनानि	हनाव	हनाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	हन्यात्	हन्याताम्	हन्युः
म० पु०	हन्याः	हन्यातम	हन्यात
उ० पु०	हन्याम्	हन्याव	हन्याम

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	वध्यात्	वध्यास्ताम्	वध्यासुः
म० पु०	वध्याः	वध्यास्तम्	वध्यास्त
उ० पु०	वध्यासम्	वध्यास्व	वध्यास्म

लृङ् हेतु हेतु मद्भाव भविष्यत्

प्र० पु०	अहनिष्यत्	अहनिष्यताम्	अहनिष्यन
म० पु०	अहनिष्यः	अहनिष्यतम्	अहनिष्यत
उ० पु०	अहनिष्यम्	अहनिष्याव	अहनिष्याम

अस् = होना। To be

द्रष्टव्य—"अस" धातु का प्रयोग केवल (लट्, लोट् विधिलिङ्, लङ्) इन चार लकारों में ही होता है।

"लट्" वर्तमान काल

प्र० पु०	अस्ति (is) है	स्तः	सन्ति (are) हैं
म० पु०	असि (Art) है	स्थः	स्थ
उ० पु०	अस्मि (Am) हूँ	स्वः	स्मः

"लङ्" अनद्यतन भूतकाल

प्र० पु०	आसीत् (Was) था	आस्ताम्	आसन् (Were) हैं
म० पु०	आसीः (Wast) था	आस्तम्	आस्त
उ० पु०	आसम् (Was) था	आस्व	आस्म

आज्ञा लोट्

प्र० पु०	अस्तु (स्तात्)	स्ताम्	सन्तु
म० पु०	एधि (स्तात्)	स्तम्	स्त
उ० पु०	असानि	असाव	असाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	स्यात्	स्याताम्	स्युः
म० पु०	स्याः	स्यातम्	स्यात
उ० पु०	स्याम्	स्याव	स्याम

इनसे अतिरिक्त भ्वादिगण में 'भू' धातु के समान ही रूप बनते हैं।

द्रष्टव्य—जिस प्रकार इंगलिश के Continuous tense में सहायक 'Helping" क्रिया "be" और जोड़ी जाती है, उसी प्रकार "शतृ और शानच" (present participle) प्रत्ययों के साथ "अस्" धातु का प्रयोग होता है।

वर्तमानकाल के उदाहरण

१—स पठन्नस्ति = He is reading. वह पढ़ रहा है या वह पढ़ता हुआ है।

२—तौ पठन्तौ स्तः = They both are reading वे दोनों पढ़ रहे हैं या वे दोनों पढ़ते हुए हैं।

३—ते पठन्तः सन्ति = They are reading वे सब पढ़ रहे हैं या वे सब पढ़ते हुए हैं।

४—त्वं सेवमानोऽसि = Thou art serving तू सेवा कर रहा है।

५—युवां सेवमानौ स्थः = You both are serving तुम दोनों सेवा कर रहे हो।

६—यूयं सेवमानाः स्थः = You all are serving तुम सब सेवा कर रहे हो।

७—अहं गच्छन्नस्मि = I am going मैं जा रहा हूँ।

८—आवां गच्छन्तौ स्वः = We both are going हम दोनों जा रहे हैं।

९—वयं गच्छन्तः स्मः = We are going हम सब जा रहे हैं।

भूतकाल के उदाहरण

१—स गच्छन्नासीत् = He was going वह जा रहा था।

२—त्वं गच्छन्नासीः = Thou wast going तू जा रहा था।

३—यूयं सेवमाना आस्त = You were serving तुम सेवा कर रहे थे।

भविष्यत्काल के उदाहरण

५—स गच्छन् भविष्यति = He will be going वह जा रहा होगा।

६—युवां गच्छन्तौ भविष्यथ: = You both will be going तुम दोनों जा रहे होगे—

७—अहं सेवमानो भविष्यामि = I shall be serving मैं सेवा कर रहा हूँगा।

८—मोहन: सिंहं हन्ति = Mohan kills the lion मोहन सिंह को मारता है।

९—हरि: सिंहमहन् = Hari killed the lion हरि ने सिंह को मारा।

१०—ते सिंहमवधिषु: = They killed the lion उन्होंने सिंह को मारा था।

११—वयं सिंहं हनिष्याम: = We shall kill the lion हम सब सिंह को मारेंगे।

द्वितीय: पाठ:

द्रष्टव्य—अब यहाँ से आगे लट्, लृट्, लोट्, विधिलिङ्, लङ्, लुङ्, लृङ् इन ७ लकारों के रूप निम्नलिखित हैं।

स्वप् = सोना To Sleep

'लट्' वर्तमान काल

प्र० पु०	स्वपिति	स्वपित:	स्वपन्ति
म० पु०	स्वपिषि	स्वपिथ:	स्वपिथ
उ० पु०	स्वपिमि	स्वपिव:	स्वपिम:

'लङ्' अनद्यतन भूतकाल

प्र० पु०	अस्वपीत् = अस्वपत्,	अस्वपिताम्	अस्वपन्
म० पु०	अस्वपी: = अस्वप:,	अस्वपितम्	अस्वपित
उ० पु०	अस्वपम्	अस्वपिव	अस्वपिम

'लुङ्' सामान्य भूत

प्र० पु०	अस्वाप्सीत्	अस्वाप्ताम्	अस्वाप्सु:
म० पु०	अस्वाप्सी:	अस्वाप्तम्	अस्वाप्त
उ० पु०	अस्वाप्सम्	अस्वाप्स्व	अस्वाप्स्म

'लोट्' आज्ञावाचक

प्र० पु०	स्वपितु = स्वपितात्	स्वपिताम्	स्वपन्तु
म० पु०	स्वपिहि = स्वपितात्	स्वपितम्	स्वपित
उ० पु०	स्वपानि	स्वपाव	स्वपाम

विधि लिङ्

प्र० पु०	स्वप्यात्	स्वप्याताम्	स्वप्युः
म० पु०	स्वप्याः	स्वप्यातम्	स्वप्यात
उ० पु०	स्वप्याम्	स्वप्याव	स्वप्याम

'लृट्' भविष्यत्काल

प्र० पु०	स्वप्स्यति	स्वप्स्यतः	स्वप्स्यन्ति
म० पु०	स्वप्स्यसि	स्वप्स्यथः	स्वप्स्यथ
उ० पु०	स्वप्स्यामि	स्वप्स्यावः	स्वप्स्यामः

'लृङ्' हेतुहेतुमद्भविष्यत्

प्र० पु०	अस्वप्स्यत्	अस्वप्स्यताम्	अस्वप्स्यन्
म० पु०	अस्वप्स्यः	अस्वप्स्यतम्	अस्वप्स्यत
उ० प०	अस्वप्स्यम	अस्वप्स्याव	अस्वप्स्याम

रुद् = रोना To Weep

'लट्' वर्तमानकाल

प्र० पु०	रोदिति	रुदितः	रुदन्ति
म० पुं०	रोदिषि	रुदिथः	रुदिथ
उ० पु०	रोदिमि	रुदिवः	रुदिमः

'लुङ्' अनद्यतन भूत

प० पु०	अरोदीत् = अरोदत्	अरुदिताम्	अरुदन्
म० पु०	अरोदीः = अरोदः	अरुदितम्	अरुदित
उ० पु०	अरोदम्	अरुदिव	अरुदिम

'लुङ्' सामान्यभूत

प्र० प० अरुदत् = अरोदीत, अरुदताम् = अरोदिष्टाम्, अरुदन् = अरोदिषु
म० पु० अरुदः = अरोदीः, अरुदतम् = अरोदिष्टम्, अरुदत = अरोदिष्ट
उ० पु० अरुदम् = अरोदिषम्, अरुदाव = अरोदिष्व, अरुदाम = अरोदिष्म

'लृट्' भविष्यत्काल

प्र० पु०	रोदिष्यति	रोदिष्यतः	रोदिष्यन्ति
म० पु०	रोदिष्यसि	रोदिष्यथः	रोदिष्यथ
उ० पु०	रोदिष्यामि	रोदिष्यावः	रोदिष्यामः

'लोट्' आज्ञावाचक

प्र० पु०	रोदितु=रुदितात्	रुदिताम्	रुदन्तु
म० पु०	रुदिहि=रुदितात्	रुदितत्	रुदित
उ० पु०	रोदानि	रोदाव	रोदाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	रुद्यात्	रुद्याताम्	रुद्युः
म० पु०	रुद्याः	रुद्यातम्	रुद्यात
उ० पु०	रुद्याम्	रुद्याव	रुद्याम

'लृङ्' हेतु हेतु मद्भावभविष्यत्

प्र० पु०	अरोदिष्यत्	अरोदिष्यताम्	अरोदिष्यन्
म० पु०	अरोदिष्यः	अरोदिष्यतम्	अरोदिष्यत
उ० पु०	अरोदिष्यम्	अरोदिष्याव	अरोदिष्याम

श्वस्=श्वास लेना To breathe

'लट्' वर्तमानकाल

प्र० प०	श्वसिति	श्वसितः	श्वसन्ति
म० पु०	श्वसिषि	श्वसिथः	श्वसिथ
उ० पु०	श्वसिम	श्वसिवः	श्वसिमः

'लङ्' अनद्यतन भूत

प्र० पु०	अश्वसीत्=अश्वसत्,	अश्वसिताम्	अश्वसन
म० पु०	अश्वसीः=अश्वसः,	अश्वसितम्	अश्वसित
उ० पु०	अश्वसम्	अश्वसिव	अश्वसिम

'लुङ्' सामान्यभूत

प्र० पु०	अश्वसीत्	अश्वसिष्टाम्	अश्वसिषुः
म० पु०	अश्वसीः	अश्वसिष्टम्	अश्वसिष्ट
उ० पु०	अश्वसिषम्	अश्वसिष्व	अश्वसिष्म

'लृट्' भविष्यत्काल

प्र० पु०	श्वसिष्यति	श्वसिष्यतः	श्वसिष्यन्ति
म० पु०	श्वसिष्यसि	श्वसिष्यथः	श्वसिष्यथ
उ० पु०	श्वसिष्यामि	श्वसिष्यावः	श्वसिष्यामः

'लोट्' आज्ञावाचक

प्र० पु०	श्वसितु, श्वसितात्	श्वसिताम्	श्वसन्तु
म० पु०	श्वसिहि श्वसितात्	श्वसितम्	श्वसित
उ० पु०	श्वसानि	श्वसाव	श्वसाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	श्वस्यात्	श्वस्याताम्	श्वस्युः
म० पु०	श्वस्याः	श्वस्यातम्	श्वस्यात
उ० पु०	श्वस्याम्	श्वस्याव	श्वस्याम

लृङ् हेतुहेतुमद्भावभविष्यत्

प्र० पु०	अश्वसिष्यत्	अश्वसिष्यताम्	अश्वसिष्यन्
म० पु०	अश्वसिष्यः	अश्वसिष्यतम्	अश्वसिष्यत
उ० पु०	अश्वसिष्यम्	अश्वसिष्याव	अश्वसिष्याम

शास् = शासन करना To rule

'लट्' वर्तमान काल

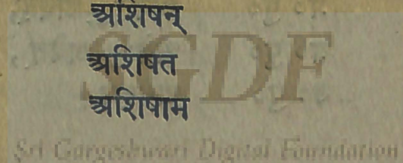
प्र० पु०	शास्ति	शिष्टः	शासति
म० पु०	शास्सि	शिष्ठः	शिष्ठ
उ० पु०	शास्मि	शिष्वः	शिष्मः

'लङ्' अनद्यतनभूत

प्र० पु०	अशात्	अशिष्टाम्	अशासुः
म० पु०	अशाः = अशात्,	अशिष्टम्	अशिष्ट
उ० पु०	अशासम्	अशिष्व	अशिष्म

लुङ् सामान्यभूत

प्र० पु०	अशिषत्	अशिषताम्	अशिषन्
म० पु०	अशिषः	अशिषतम्	अशिषत
उ० पु०	अशिषम्	अशिषाव	अशिषाम



'लृट्' भविष्यत्काल

प्र० पु०	शासिष्यति	शासिष्यतः	शासिष्यन्ति
म० पु०	शासिष्यसि	शासिष्यथः	शासिष्यथ
उ० पु०	शासिष्यामि	शासिष्यावः	शासिष्यामः

'लोट्' आज्ञावाचक

प्र० पु०	शास्तु=शिष्टात्,	शिष्टाम्	शासतु
म० पु०	शाधि=शिष्टात्,	शिष्टम्	शिष्ट
उ० पु०	शासानि	शासाव	शासाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	शिष्यात्	शिष्याताम्	शिष्युः
म० पु०	शिष्याः	शिष्यातम्	शिष्यात
उ० पु०	शिष्याम्	शिष्याव	शिष्याम

'लृङ्' हेतुहेतुमद्भावविष्यत्

प्र० पु०	अशासिष्यत्	अशासिष्यताम्	अशासिष्यन्
म० पु०	अशासिष्यः	अशासिष्यतम्	अशासिष्यत
उ० पु०	अशासिष्यम्	अशासिष्याव	अशासिष्याम

विद् = जानना To Know

'लट्' वर्तमान काल

प्र० पु०	वेत्ति	वित्तः	विदन्ति
म० पु०	वेत्सि	वित्थः	वित्थ
उ० पु०	वेद्मि	विद्वः	विद्मः

अथवा

प्र० पु०	वेद	विदतुः	विदुः
म० पु०	वेत्थ	विदथुः	विद
उ० पुपु	वेद	विद्व	विद्म

'लङ्' अनद्यतनभूत

प्र० पु०	अवेत्=अवेद्,	अवित्ताम्	अविदुः
म० पु०	अवेः=अवेत्,	अवित्तम्	अवित्त
उ० पु०	अवेदम्	अविद्व	अविद्म

'लुङ्' सामान्यभूत

प्र० पु०	अवेदीत्	अवेदिष्टाम्	अवेदिषुः
म० पु०	अवेदीः	अवेदिष्टम्	अवेदिष्ट
उ० पु०	अवेदिषम्	अवेदिष्व	अवेदिष्म

'लृट्' भविष्यत्काल

प्र० पु०	वेदिष्यति	वेदिष्यतः	वेदिष्यन्ति
म० पु०	वेदिष्यसि	वेदिष्यथः	वेदिष्यथ
उ० पु०	वेदिष्यामि	वेदिष्यावः	वेदिष्यामः

'लोट्' आज्ञावाचक

प्र० पु०	वेत्तु = वित्तात्	वित्ताम्	विदन्तु
म० पु०	विद्धि = वित्तात्,	वित्तम्	वित्त
उ० पु०	वेदानि	वेदाव	वेदाम

अथवा

प्र० पु०	विदाङ्करोतु = विदाङ्कुरुतात,	विदाङ्कुरुताम्	विदाङ्कुर्वन्तु
म० पु०	विदाङ्कुरु = विदाङ्कुरुतात्,	विदाङ्कुरुतम्	विदाङ्कुरुत
उ० पु०	विदाङ्करवाणि	विदाङ्करवाव	विदाङ्करवाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	विद्यात्	विद्याताम्	विद्युः
म० पु०	विद्याः	विद्यातम्	विद्यात
उ० पु०	विद्याम्	विद्याव	विद्याम

लृङ् हेतुहेतुमद्भावभविष्यत्

प्र० पु०	अवेदिष्यत	अवेदिष्यताम्	अवेदिष्यन
म० पु०	अवेदिष्यः	अवेदिष्यतम्	अवेदिष्यत
उ० पु०	अवेदिष्यम	अवेदिष्याव	अवेदिष्याम

निम्नलिखित श्लोकों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए और बताइए कि इनमें विद् धातु के प्रयोग किन लकारों (मय पुरुष व वचन) में हुए हैं।

बहूनि मे व्यतीतानि, जन्मानि तव चाऽर्जुन ।
तान्यहं वेद सर्वाणि, न त्वं वेत्थ परंतप ॥
जन्मकर्म च मे दिव्य, मेवं यो वेत्ति तत्त्वतः ।

त्यक्त्वा देहं पुनर्जन्म नैति मामेति सोऽर्जुन ॥
रामं दशरथं विद्धि मां विद्धि जनकात्मजाम्
अयोध्यामटवीं विद्धि गच्छतात यथा सुखम् ॥

जागृ = जागना To Wake up

'लट्' वर्तमानकाल

प्र० पु०	जागर्ति	जागृतः	जाग्रति
म० पु०	जागर्षि	जागृथः	जागृथ
उ० पु०	जागर्मि	जागृवः	जागृमः

'लङ्' अनद्यतनभूत

प्र० पु०	अजागः	अजागृताम्	अजागरुः
म० पु०	अजागः	अजागृतम्	अजागृत
उ० पु०	अजागरम्	अजागृव	अजागृम

'लुङ्' सामान्यभूत

प्र० पु०	अजागरीत्	अजागरिष्टाम्	अजागरिषुः
म० पु०	अजागरीः	अजागरिष्टम्	अजागरिष्ट
उ० पु०	अजागरिषम्	अजागरिष्व	अजागरिष्म

'लृट्' भविष्यत्काल

प्र० पु०	जागरिष्यति	जागरिष्यतः	जागरिष्यन्ति
म० पु०	जागरिष्यसि	जागरिष्यथः	जागरिष्यथ
उ० पु०	जागरिष्यामि	जागरिष्यावः	जागरिष्यामः

'लोट्' आज्ञावाचक

प्र० पु०	जागतु = जागृतात्,	जागृताम्	जाग्रतु
म० पु०	जागृहि = जागृतात्,	जागृतम्	जागृत
उ० पु०	जागराणि	जागराव	जागराम

विधिलिङ्

प्र० पु०	जागृयात्	जागृयाताम्	जागृयुः
म० पु०	जागृयाः	जागृयातम्	जागृयात
उ० पु०	जागृयाम्	जागृयाव	जागृयाम

'लृङ्' हेतुहेतुमद्भावभविष्यत

प्र० पु०	अजागरिष्यत्	अजागरिष्यताम्	अजागरिष्यन्
म० पु०	अजागरिष्यः	अजागरिष्यतम्	अजागरिष्यत
उ० पु०	अजागरिष्यम्	अजागरिष्याव	अजागरिष्याम

निम्नलिखित श्लोकों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए और बताइए कि इनमें 'जागृ, शास्' धातुओं के रूप किन लकार पुरुष और वचन में हैं।

या निशा सर्वभूतानां, तस्यां जागर्ति संयमी।
यस्यां जाग्रति भूतानि, सा निशा पश्यतो मुनेः॥
दण्डः शास्ति प्रजाः सर्वा, दण्ड एवाभि रक्षति।
दण्डः सुप्तेषु जागर्ति, दण्डं धर्मं विदुः बुधाः॥

तृतीयः पाठः

आत्मनेपद प्रकरणम्

शी(ङ्)=सोना To Sleep

'लट्' वर्तमान काल

प्र० पु०	शेते	शयाते	शेरते
म० पु०	शेषे	शयाथे	शेध्वे
उ० पु०	शये	शेवहे	शेमहे

'लिट्' परोक्षभूतकाल

प्र० पु०	शिश्ये	शिश्याते	शिश्यिरे
म० पु०	शिश्यिषे	शिश्याथे	शिश्यिढ्वे
उ० पु०	शिश्ये	शिश्यिवहे	शिश्यिमहे

'लङ्' अनद्यतन भूतकाल

प्र० पु०	अशेत	अशयाताम्	अशेरत
म० पु०	अशेथाः	अशयाथाम्	अशेध्वम्
उ० पु०	अशयि	अशेवहि	अशेमहि

'लुङ्' सामान्यभूतकाल

प्र० पु०	अशयिष्ट	अशयिषाताम्	अशयिषत
म० पु०	अशयिष्ठाः	अशयिषाथाम्	अशयिढ्वम्
उ० पु०	अशयिषि	अशयिष्वहि	अशयिष्महि

'लुट्' अनद्यतन भविष्यत

प्र० पु०	शयिता	शयितारौ	शयितारः

म० पु०	शयितासे	शयितासाथे	शयिताध्वे
उ० पु०	शयिताहे	शयितास्वहे	शयितास्महे

'लृट्' सामान्य भविष्यत्काल

प्र० पु०	शयिष्यते	शयिष्येते	शयिष्यन्ते
म० पु०	शयिष्यसे	शयिष्येथे	शयिष्यध्वे
उ० पु०	शयिष्ये	शयिष्यावहे	शयिष्यामहे

'लोट्' आज्ञावाचक

प्र० पु०	शेताम्	शयाताम्	शेरताम्
म० पु०	शेष्व	शयाथाम्	शेध्वम्
उ० पु०	शयै	शयावहै	शयामहै

विधिलिङ्

प्र० पु०	शयीत	शयीयाताम्	शयीरन्
म० पु०	शयीथाः	शयीयाथाम्	शयीध्वम्
उ० पु०	शयीय	शयीवहि	शयीमहि

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	शयिषीष्ट	शयिषीयास्ताम्	शयिषीरन्
म० पु०	शयिषीष्ठाः	शयिषीयास्थाम्	शयिषीढ्वम्
उ० पु०	शयिषीय	शयिषीवहि	शयिषीमहि

'लृङ्' हेतुहेतुमद्भावभविष्यत्

प्र० पु०	अशयिष्यत	अशयिष्येताम्	अशयिष्यन्त
म० पु०	अशयिष्यथाः	अशयिष्येथाम्	अशयिष्यध्वम्
उ० पु०	अशेयिष्ये	अशयिष्यावहि	अशयिष्यामहि

अधि+इ=पढ़ना To study

'लट्' वर्तमान काल

प्र० पु०	अधीते	अधीयाते	अधीयते
म० पु०	अधीषे	अधीयाथे	अधीध्वे
उ० पु०	अधीये	अधीवहे	अधीमहे

'लङ्' अनद्यतन भूतकाल

प्र० पु०	अध्यैत	अध्यैयाताम्	अध्यैयत
म० पु०	अध्यैथाः	अध्यैयाथाम्	अध्यैध्वम्
उ० पु०	अध्यैयि	अध्यैवहि	अध्यैमहि

'लुङ्' सामान्य भूत

प्र० पु०	अध्यैष्ट	अध्यैषाताम्	अध्यैषत
म० पु०	अध्यैष्ठाः	अध्यैषाथाम्	अध्यैढ्वम्
उ० पु०	अध्यैषि	अध्यैष्वहि	अध्यैष्महि

अथवा

प्र० पु०	अध्यगीष्ट	अध्यगीषाताम्	अध्यगीषत
म० पु०	अध्यगीष्ठाः	अध्यगीषाथाम्	अध्यगीढ्वम्
उ० पु०	अध्यगीषि	अध्यगीष्वहि	अध्यगीष्महि

'लृट्' भविष्यत्काल

प्र० पु०	अध्येष्यते	अध्येष्येते	अध्येष्यन्ते
म० पु०	अध्येष्यसे	अध्येष्येथे	अध्येष्यध्वे
उ० धु०	अध्येष्ये	अध्येष्यावहे	अध्येष्यामहे

'लोट्' आज्ञावाचक

प्र० पु०	अधीताम्	अधीयाताम्	अधीयताम्
म० पु०	अधीष्व	अधीयाथाम्	अधीध्वम्
उ० पु०	अध्ययै	अध्ययावहै	अध्ययामहै

विधिलिङ्

प्र० पु०	अधीयीत	अधीयीयाताम्	अधीयीरन्
म० पु०	अधीयीथाः	अधीयीयाथाम्	अधीयीध्वम्
उ० पु०	अधीयीय	अधीयीवहि	अधीयीमहि

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	अध्येषीष्ट	अध्येषीयास्ताम्	अध्येषीरन्
म० पु०	अध्येषीष्ठाः	अध्येषीयास्थाम्	अध्येषीढ्वम्
उ० पु०	अध्येषीय	अध्येषीवहि	अध्येषीमहि

'लृङ्' हेतुहतुमद्भाव भविष्यत्

प्र० पु०	अध्यैष्यत	अध्येष्येताम्	अध्यैष्यन्त
म० पु०	अध्यैष्यथाः	अध्यैष्येथाम्	अध्यैष्यध्वम्
उ० पु०	अध्यैष्ये	अध्यैष्यावहि	अध्यैष्यामहि

अथवा

प्र० पु०	अध्यगीष्यत	अध्यगीष्येताम्	अध्यगीष्यन्त
म० पु०	अध्यगीष्यथाः	अध्यगीष्येथाम्	अध्यगीष्यध्वम्
उ० पु०	अध्यगीष्ये	अध्यगीष्यावहि	अध्यगीष्यामहि

ब्रू=बोलना To speak (उभयपदी)

परस्मैपद — 'लट्' वर्तमानकाल — आत्मनेपद

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ब्रवीति	ब्रूतः	ब्रुवन्ति	ब्रूते	ब्रुवाते	ब्रुवते
म० पु०	ब्रवीसि	ब्रूथः	ब्रूथ	ब्रूषे	ब्रुवाथे	ब्रूध्वे
उ० पु०	ब्रवीमि	ब्रूवः	ब्रूमः	ब्रुवे	ब्रूवहे	ब्रूमहे

'लिट्' परोक्षभूतकाल

प्र० पु०	उवाच	ऊचतुः	ऊचुः	ऊचे	ऊचाते	ऊचिरे
म० पु०	उवचिथ	ऊचथुः	ऊच	ऊचिषे	ऊचाथे	ऊचिध्वे
उ० पु०	उवाच	ऊचिव	ऊचिम	ऊचे	ऊचिवहे	ऊचिमहे

'लङ्' अनद्यतनभूत

प्र० पु०	अब्रवीति	अब्रूताम्	अब्रुवन्	अब्रूत	अब्रुवाताम्	अब्रुवत
म० पु०	अब्रवीः	अब्रूतम	अब्रूत	अब्रूथाः	अब्रुवाथाम्	अब्रूध्वम्
उ० पु०	अब्रवम्	अब्रूव	अब्रूम	अब्रूवि	अब्रूवहि	अब्रूमहि

'लुङ्' सामान्यभूतकाल

प्र० पु०	अवोचत्	अवोचताम्	अवोचन्	अवोचत	अवोचेताम्	अवोचन्त
म० यु०	अवोचः	अवोचतम्	अवोचत	अवोचथाः	अवोचेथाम्	अवोचध्यम्
उ० पु०	अवोचम्	अवोचाव	अवोचाम	अवोचे	अवोचावहि	अवोचामहि

'लुट्' अनद्यतनभविष्यत्

प्र० पु०	वक्ता	वक्तारौ	वक्तारः	वक्ता	वक्तारौ	वक्तारः
म० पु०	वक्तासि	वक्तास्थः	वक्तास्थ	वक्तासे	वक्तासाथे	वक्ताध्वे
उ० पु०	वक्तास्मि	वक्तास्वः	वक्तास्मः	वक्ताहे	वक्तास्वहे	वक्तास्महे

'लृट्' सामान्य भविष्यत्काल

प्र० पु०	वक्ष्यति	वक्ष्यतः	वक्ष्यन्ति	वक्ष्यते	वक्ष्येते	वक्ष्यन्ते
म० षु०	वक्ष्यसि	वक्ष्यथः	वक्ष्यथ	वक्ष्यसे	वक्ष्येथे	वक्ष्यध्वे
उ० पु०	वक्ष्यामि	वक्ष्यावः	वक्ष्यमः	वक्ष्ये	वक्ष्यावहे	वक्ष्यामहे

'लोट्' आज्ञावाचक

प्र० पु०	ब्रवीतु	ब्रूताम्	ब्रुवन्तु	ब्रूताम्	ब्रुवाताम्	ब्रुवताम
म० पु०	ब्रूहि	ब्रूतम्	ब्रूत	ब्रूष्व	ब्रुवाथाम्	ब्रूध्वम्
उ० पु०	ब्रवाणि	ब्रवाव	ब्रवाम	ब्रवै	ब्रवावहै	ब्रवामहै

विधिलिङ्

प्र० पु०	ब्रूयात्	ब्रूयाताम्	ब्रूयुः	ब्रुवीत	ब्रुवीयाताम्	ब्रुवीरन्
म० पु०	ब्रूयाः	ब्रूयातम्	ब्रूयात	ब्रुवीथा	ब्रुवीयाथाम्	ब्रुवीध्वम्
उ० पु०	ब्रूयाम्	ब्रूयाव	ब्रूयाम	ब्रुवीय	ब्रुवीवहि	ब्रुवीमहि

अशीर्लिङ्

प्र० पु०	उच्यात्	उच्यास्ताम्	उच्यासुः	वक्षीष्ट	वक्षीयास्ताम्	वक्षीरन्
म० पु०	उच्याः	उच्यास्तम्	उच्यस्त	वक्षीष्ठाः	वक्षीयास्थाम्	वक्षीध्वम्
उ० पु०	उच्यासम्	उच्यास्व	उच्यास्म	वक्षीय	वक्षीवहि	वक्षीमहि

'लृङ्' हेतुहेतुमद्भावभविष्यत्

प्र० पु०	अवक्ष्यत्	अवक्ष्यताम्	अवक्ष्यन्	अवक्ष्यत	अवक्ष्येताम्	अवक्ष्यन्त
म० पु०	अवक्ष्यः	अवक्ष्यतम्	अवक्ष्यत	अवक्ष्यथाः	अवक्ष्येथाम्	अवक्ष्यध्वम्
उ० पु०	अवक्ष्यम्	अवक्ष्याव	अवक्ष्याम	अवक्ष्ये	अवक्ष्यावहि	अवक्ष्यामहि

चतुर्थः पाठः

अदादिगण के उदाहरण

१—मोहनो भोजनमत्ति—Mohan eats the meal. मोहन भोजन खाता है।

२—बालका इमानि फलानि अदन्तु—Boys may eat these fruits. लड़के इन फलों को खावें।

३—स सर्पमहन्—He kiiled the snake. उसने साँप को मारा।

४—सर्वे बालका अयुः (अयान्)—All boys went. सब लड़के चले गये।

५—बालिका अधीयताम्=The girls may study. लड़कियाँ अध्ययन करें।

६—त्वं मां किमवोचः ? What didest thou speak to me ? तूने मुझे क्या कहा था ?

७—किं स मधुमलेड् ? Did he lick up the honey ? क्या उसने शहद (मधु) चाट लिया ?

८—स दुग्धमधोक्—He milked. उसने दूध दुह लिया।

९—स गङ्गायामस्नात्—He bathed in the Ganga. उसने गंगा में स्नान किया।

१०—शिशुः स्वमातुरङ्के रोदिति—The baby weeps in her mother's lap. बच्चा अपनी माँ की गोदी में रोता है।

११—अहमीश्वरं स्तौमि—I pray to God. मैं ईश्वर की स्तुति करता हूँ।

१२—राजा प्रजाः शास्ति—The king rules over the subjects. राजा प्रजाओं पर शासन करता है।

१३—स रात्रौ जागृयात्—He should wake in the night. उसे रात में जागना चाहिये।

१४—वयं दिवि न स्वप्याम—We should not sleep in the day. हमें दिन में नहीं सोना चाहिये।

१५—यदि त्वं नाऽशयिष्यथाः तर्हि अहमपि नाऽशयिष्ये। If thou wilt not sleep I also shall not sleep. यदि तू नहीं सोयेगा तो मैं भी नहीं सोऊँगा।

हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

अभ्यास

[१] जहि शत्रुं महावाहो ! काम रूपं दुरासदम्। [२] स गृहं याति [३] सूर्यो गगने भाति [४] के जाग्रति ? [५] यस्य गर्वो नास्ति सैव सर्वाणि शास्त्राणि वेत्ति [६] गोपाः गंधोद्यति [७] अहं श्वः प्रयागं यातास्मि [८] ते गंगायां स्नायुः [९] मूढ़जना विद्वत्सभायां न यान्ति [१०] अहं शत्रुंहनिष्यामि [११] त्वं दुग्धं दुग्धि क्रोधञ्च जहि [१२] न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्रतारकम् [१३] मुनयो वेदान् विदन्ति [१४] त्वं किमधीषे ? [१५] यूयं किं वक्ष्यथ ? [१६] धेनवो वत्सान् लिहन्ति [१७] किं त्वं अवलेहं लेक्षि [१८] शकुन्तला अवलेहं लेढि [१९] किं त्वं नद्यां स्नास्यसि ? [२०] वयं दीनान् पायाम [२१] त्वम् आसने आसस्व [२२] यूयं मयासह आसध्वम् [२३] यदि त्वमजागरिष्याथाः तर्हि अहमपि अजागरिष्यम् [२४] यदि सोऽवक्ष्यत् तर्हि अहमपि अवक्ष्यम् [२५] आसीदयं वृक्षः विशेषा फल-पुष्प वृद्धिः [२६] वायु शनैः शनै र्वाति।

संस्कृत में अनुवाद कीजिये—

(१) हवा चल पड़ी (२) तुम काम और क्रोध को मारो (३) वह क्या जानता है ? (४) उसे भोजन करना चाहिये। (५) मैं दस बजे सोऊँगा (६) राम ने रावण को मारा। (७) मैं दिन में नहीं सोता (८) राम सूर्य की स्तुति करता है। (९) ग्वाला गाय को दुहेगा (१०) मैंने शाम को स्नान किया (११) तू क्रोध को मार और दूध दुह (१२) हमें किसी को भी अपराध के बिना नहीं मारना चाहिए। (१३) धनी आदमी गरीबों की रक्षा करें (१४) बच्चा धीरे साँस लेता है (१५) गायें अपने बछड़े को चाटतीं हैं (१६) तुम मेरे साथ बैठो (१७) तू खाट पर बैठ (१८) वे सब कुर्सी पर बैठें। (१९) यदि तू स्नान करेगा तो मैं भी स्नान करूँगा। (२०) यदि तुम अध्ययन करोगे तो वह भी अध्ययन करेगा। (२१) सब लड़के अध्ययन करें (२२) मनोरमा दूध दुहती है (२३) शकुन्तला चटनी चाटती है। (२४) शायद वह दिन में सोया हो (२५) जो रात में जागता है वह दिन में अवश्य सोता है (२६) दिल्लगी बाज़ जाता है (वैहासिकः—मज़ाकिया, ।)

———

दशमोऽध्यायः

अथ जुहोत्यादि गण प्रकरणम्

प्रथमः पाठः

विशेषताः— इस गण में धातु को द्वित्व (Double) हो जाता है; और पहिले व्यञ्जन में परिवर्तन निम्नप्रकार से हो जाता है। " ह " को " ज " और " कवर्ग के स्थान में चवर्ग तथा वर्ग के चौथे वर्ण को तीसरा वर्ण और दूसरे वर्ण को पहिला वर्ण हो जाता है।

इन व्यञ्जन वर्णों का परिवर्तन (change) केवल चार लकारों (लट् लोट् लङ्, विधिलिङ्) में ही होता है। जैसे:—'हु+हु पहले हकार को 'ज' में परिवर्तन कर दिया गया है इस प्रकार 'जु+हो+ति'—जुहोति। रूप बना। इसी प्रकार सर्वत्र समझ लेने चाहिये।

हु=हवन करना To offer oblation

'लट्' वर्तमानकाल

प्र० पु०	जुहोति	जुहुतः	जुह्वति
म० पु०	जुहोषि	जुहुथः	जुहुथ
उ० पु०	जुहोमि	जुहुवः	जुहुमः

'लिट्' परोक्षभूतकाल

प्र० पु०	जुहाव	जुहुवतुः	जुहुवुः
म० पु०	जुहोथ—जुहुविथ	जुहुवथुः	जुहुव
उ० पु०	जुहाव—जुहव	जुहुविव	जुहुविम

'लङ्' अनद्यतन भूतकाल

प्र० पु०	अजुहोत्	अजुहुताम्	अजुहवुः
म० पु०	अजुहोः	अजुहुतम्	अजुहुत
उ० पु०	अजुहवम्	अजुहुव	अजुहुम

'लुङ्' सामान्य भूतकाल

प्र० पु०	अहौषीत्	अहौष्टाम्	अहौषुः
म० पु०	अहौषीः	अहौष्टम्	अहौष्ट
उ० पु०	अहौषम्	अहौष्व	अहौष्म

'लुट्' अनद्यतन भविष्यत

प्र० पु०	होता	होतारौ	होतारः
म० पु०	होतासि	होतास्थः	होतास्थ
उ० पु०	होतास्मि	होतास्वः	होतास्मः

'लृट्' सामान्य भविष्यत्काल

प्र० पु०	होष्यति	होष्यतः	होष्यन्ति
म० पु०	होष्यसि	होष्यथः	होष्यथ
उ० पु०	होष्यामि	होष्यावः	होष्यामः

"लोट्" आज्ञावाचक

प्र० पु०	जुहोतु—जुहुतात्	जुहुताम्	जुह्वतु
म० पु०	जुहुधि—जुहुतात्	जुहुतम्	जुहुत
उ० पु०	जुहवानि	जुहवाव	जुहवाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	जुहुयात्	जुहुयाताम्	जुहुयुः
म० पु०	जुहुयाः	जुहुयातम्	जुहुयात
उ० पु०	जुहुयाम्	जुहुयाव	जुहुयाम

आशीर्लिङ

प्र० पु०	हूयात्	हूयास्ताम्	हूयासुः
म० पु०	हूयाः	हूयास्तम्	हूयास्त
उ० पु०	हूयासम्	हूयास्व	हूयास्म

'लृङ्' हेतु हेतु मद्भाव भविष्यत्

प्र० पु०	अहोष्यत्	अहोष्यताम्	अहोष्यन्
म० पु०	अहोष्यः	अहोष्यतम्	अहोष्यत
उ० पु०	अहोष्यम्	अहोष्याव	अहोष्याम

भी = डरना To fear

द्रष्टव्य :—यहाँ पर 'भी' को द्वित्व करके (भी+भी) 'ई' को ह्रस्व इकार कर पुनः पूर्व 'भ' को 'ब' कर देने से (बि+भी+ति) फिर 'ई' को गुण कर देने से बिभेति रूप बना।

'लट्' वर्तमानकाल'

प्र० पु०	बिभेति	बिभितः = बिभीतः	बिभ्यति
म० पु०	बिभेषि	बिभिथः = बिभीथः	बिभिथ = बिभीथ
उ० पु०	बिभेमि	बिभिवः = बिभीवः	बिभिमः = बिभीमः

'लङ्' अनद्यतनभूतकाल

प्र० पु०	अबिभेत्	अबिभिताम् = अबिभीताम्	अबिभयुः
म० पु०	अबिभेः	अबिभितम् = अबिभीतम्,	अबिभित = अबिभीत
उ० पु०	अबिभयम्	अबिभिव = अबिभीव,	अबिभिम = अबिभीम

'लुङ्' सामान्य भूतकाल

प्र० पु०	अभैषीत्	अभैष्टाम्	अभैषुः
म० पु०	अभैषीः	अभैष्टम्	अभैष्ट
उ० पु०	अभैषम्	अभैष्व	अभैष्म

'लृट्' सामान्य भविष्यत्काल

प्र० पु०	भेष्यति	भेष्यतः	भेष्यन्ति
म० पु०	भेष्यसि	भेष्यथः	भेष्यथ
उ० पु०	भेष्यामि	भेष्यावः	भेष्यामः

'लोट्' आज्ञावाचक

प्र० पु० बिभेतु (बिभितात् = बिभीतात्) बिभिताम् = बिभीताम्, बिभ्यतु
म० पु० बिभिहि = बिभीहि, बिभितम् = बिभीतम्, बिभित = बिभीत
उ० पु० बिभयानि बिभयाव बिभयाम

विधि लिङ्

प्र०पु० बिभियात् = बिभीयात्, बिभियाताम् = बिभीयाताम्, बिभियुः = बीभीयुः
म० पु० बिभियाः = बिभीयाः, बिभियातम् = बिभीयातम्, बिभियात = बिभीयात
उ० पु० बिभियाम् = बिभीयाम्, बिभियाव = बिभीयाव, बिभियाम = बिभीयाम

'लृङ्' हेतु हेतुमद्भाव भविष्यत्

प्र० पु०	अभेष्यत्	अभेष्यताम्	अभेष्यन्
म० पु०	अभेष्यः	अभेष्यतम्	अभेष्यत
उ० पु०	अभेष्यम्	अभेष्याव	अभेष्याम

हा = छोड़ना = To Leave

द्रष्टव्य :—जुहोत्यादि गण में आकारान्त धातु को द्वित्व करने के पश्चात् पूर्व आकार को ह्रस्व 'अ' हो जाता है और एकवचन को छोड़कर व्यञ्जन परे हो तो

'आ' को 'ई' हो जाता है और बहुवचन में जहाँ पर स्वर परे हो तो 'आ' का लोप हो जाता है। जैसे :—जही+तः=जहीतः। जहा+अति=जहति इत्यादि।

'लट्' वर्तमान काल

प्र० पु०	जहाति	जहितः=जहीतः	जहति
म० पु०	जहासि	जहिथः=जहीथः	जहिथ=जहीथ
उ० पु०	जहामि	जहिवः=जहीवः	जहिमः=जहीमः

'लङ्' अनद्यतन भूतकाल

प्र० पु०	अजहात्	अजहिताम्=अजहीताम्	अजहुः
म० पु०	अजहाः	अजहितम्=अजहीतम्	अजहित=अजहीत
उ० पु०	अजहाम्	अजहिव=अजहीव	अजहिम=अजहीम

'लुङ्' सामान्य भूतकाल

प्र० पु०	अहासीत्	अहासिष्टाम्	अहासिषुः
म० पु०	अहासीः	अहासिष्टम्	अहासिष्ट
उ० पु०	अहासिषम्	अहासिष्व	अहासिष्म

'लृट्' सामान्य भविष्यत् काल

प्र० पु०	हास्यति	हास्यतः	हास्यन्ति
म० पु०	हास्यसि	हास्यथः	हास्यथ
उ० पु०	हास्यामि	हास्यावः	हास्यामः

"लोट्" आज्ञावाचक

प्र० पु०	जहातु(जहितात्=जहीतात्)	जहिताम्=जहीताम्,	जहतु
म० पु०	जहाहि (जहिहि=जहीहि)	जहितम्—जहीतम्,	जहित—जहीत
उ० पु०	जहानि	जहाव	जहाम

विधि लिङ्

प्र० पु०	जह्यात्	जह्याताम्	जह्युः
म० पु०	जह्याः	जह्यातम्	जह्यात
उ० पु०	जह्याम्	जह्याव	जह्याम

'लृङ्' हेतुहेतुमद्भाव भविष्यत्

प्र० पु०	अहास्यत्	अहास्यताम्	अहास्यन्
म० पु०	अहास्यः	अहास्यतम्	अहास्यत
उ० पु०	अहास्यम्	अहास्याव	अहास्याम

द्वितीयः पाठः

भृ = धारण और पोषण करना To retain or nourish

'लट्' वर्तमान काल

	परस्मैपद			आत्मनेपद		
प्र० पु०	बिभर्ति	बिभृतः	बिभ्रति	बिभृते	बिभ्राते	बिभ्रते
म० पु०	बिभर्षि	बिभृथः	बिभृथ	बिभृषे	बिभ्राथे	बिभृध्वे
उ० पु०	बिभर्मि	बिभृवः	बिभृमः	बिभ्रे	बिभृवहे	बिभ्रमहे

'लङ्' अनद्यतन भूतकाल

प्र० पु०	अबिभः	अबिभृताम्	अविभरुः	अविभृत	अबिभ्राताम्	अबिभ्रत
म० पु०	अविभः	अबिभृतम्	अविभृत	अबिभृथाः	अबिभ्राथाम्	अविभृध्वम्
उ० पु०	अबिभरम्	अबिभृव	अबिभृम	अबिभ्रि	अबिभृवहि	अबिभृमहि

'लुङ्' सामान्य भूतकाल

प्र० पु०	अभार्षीत्	अभार्ष्टाम्	अभार्षुः	अभृत	अभृषाताम्	अभृषत
म० पु०	अभार्षीः	अभार्ष्टम्	अभार्ष्ट	अभृथाः	अभृषाथाम्	अभृढ्वम्
उ० पु०	अभार्षम्	अभार्ष्व	अभार्ष्म	अभृषि	अभृष्वहि	अभृष्महि

'लृट्' सामान्य भविष्यत्काल

प्र० पु०	भरिष्यति	भरिष्यतः	भरिष्यन्ति	भरिष्यते	भरिष्येते	भरिष्यन्ते
म० पु०	भरिष्यसि	भरिष्यथः	भरिष्यथ	भरिष्यसे	भरिष्येथे	भरिष्यध्वे
उ० पु०	भरिष्यामि	भरिष्यावः	भरिष्यामः	भरिष्ये	भरिष्यावहे	भरिष्यामहे

"लोट्" आज्ञावाचक

प्र० पु०	बिभर्तु = बिभृतात्,	बिभृताम्	बिभ्रतु	बिभृताम्	बिभ्राताम्	बिभ्रताम्
म० पु०	बिभृहि = बिभृतात्,	बिभृतम्	बिभृत	बिभृष्व	बिभ्राथाम्	बिभृध्वम्
उ० पु०	बिभराणि	बिभराव	बिभराम	बिभरै	बिभरावहै	बिभरामहै

विधिलिङ्

प्र० पु०	बिभृयात्	बिभृयाताम्	बिभृयुः	बिभ्रीत	बिभ्रीयाताम्	बिभ्रीरन्
म० पु०	बिभृयाः	बिभृयातम्	बिभृयात	बिभ्रीथाः	बिभ्रीयाथाम्	बिभ्रीध्वम्
उ० पु०	बिभृयाम्	बिभृयाव	बिभृयाम	बिभ्रीय	बिभ्रीवहि	बिभ्रीमहि

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	भ्रियात्	भ्रियास्ताम्	भ्रियासुः	भृषीष्ट	भृषीयास्ताम्	भृषीरन्
म० पु०	भ्रियाः	भ्रियास्तम्	भ्रियास्त	भृषीष्ठाः	भृषीयास्ताम्	भृषीध्वम्
उ० पु०	भ्रियासम्	भ्रियास्व	भ्रियास्म	भृषीय	भृषीवहि	भृषीमहि

'लृङ्' हेतुहेतुमद्भावभविष्यत्

प्र० पु०	अभरिष्यत्	अभरिष्यताम्	अभरिष्यन्	अभरिष्यत	अभरिष्येताम्	अभरिष्यन्त
म० पु०	अभरिष्यः	अभरिष्यतम्	अभरिष्यत	अभरिष्यथाः	अभरिष्येथाम्	अभरिष्यध्वम्
उ० पु०	अभरिष्यम्	अभरिष्याव	अभरिष्याम	अभरिष्ये	अभरिष्यावहि	अभरिष्यामहि

धा = धारण और पोषण करना To hold, To keep, To nourish

'लट्' वर्तमान काल

	परस्मैपद			आत्मनेपद		
प्र० पु०	दधाति	धत्तः	दधति	धत्ते	दधाते	दधते
म० पु०	दधासि	धत्थः	धत्थ	धत्से	दधाथे	धद्ध्वे
उ० पु०	दधामि	दध्वः	दध्मः	दधे	दध्वहे	दध्महे

'लिट्' परोक्षतकाल

प्र० पु०	दधौ	दधतुः	दधुः	दधे	दधाते	दधिरे
म० पु०	दधिथ	दधथुः	दध	दधिषे	दधाथे	दधिध्वे
उ० पु०	दधौ	दधिव	दधिम	दधे	दधिवहे	दधिमहे

'लङ्' अनद्यतन भूतकाल

प्र० पु०	अदधात्	अधत्ताम्	अदधुः	अधत्त	अदधाताम्	अदधत
म० पु०	अदधाः	अधत्तम्	अधत्त	अधत्थाः	अदधाथाम्	अधध्वम्
उ० पु०	अदधाम्	अदध्व	अदध्म	अदधि	अदध्वहि	अदध्महि

'लुङ्' सामान्य भूतकाल

प्र० पु०	अधात्	अधाताम्	अधुः	अधित	अधिषाताम्	अधिषत
म० पु०	अधाः	अधातम्	अधात	अधिथाः	अधिषाथाम्	अधिढ्वम्
उ० पु०	अधाम्	अधाव	अधाम	अधिषि	अधिष्वहि	अधिष्महि

'लृट्' भविष्यत्काल

प्र० पु०	धास्यति	धास्यतः	धास्यन्ति	धास्यते	धास्येते	धास्यन्ते
म० पु०	धास्यसि	धास्यथः	धास्यथ	धास्यसे	धास्येथे	धास्यध्वे
उ० पु०	धास्यामि	धास्यावः	धास्यामः	धास्ये	धास्यावहे	धास्यामहे

"लोट्" आज्ञावाचक

प्र० पु०	दधातु=धत्तात्	धत्ताम्	दधतु	धत्ताम्	दधाताम्	दधताम्
म० पु०	धेहि=धत्तात्	धत्तम्	धत्त	धत्स्व	दधाथाम्	दध्वम्
उ० पु०	दधानि	दधाव	दधाम	दधै	दधावहै	दधामहै

विधिलिङ्

प्र० पु०	दध्यात्	दध्याताम्	दध्युः	दधीत	दधीयाताम्	दधीरन्
म०पु०	दध्याः	दध्यातम्	दध्यात	दधीथाः	दधीयाथाम्	दधीध्वम्
उ० पु०	दध्याम्	दध्याव	दध्याम	दधीय	दधीवहि	दधीमहि

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	धेयात्	धेयास्ताम्	धेयासुः	धासीष्ट	धासीयास्ताम्	धासीरन्
म० पु०	धेयाः	धेयास्तम्	धेयास्त	धासीष्ठाः	धासीयास्थाम्	धासीढ्वम्
उ० पु०	धेयासम्	धेयास्व	धेयास्म	धासीय	धासीवहि	धासीमहि

'लृङ्' हेतुहेतुमद्भावभविष्यत्

प्र० पु०	अधास्यत्	अधास्यताम्	अधास्यन्	अधास्यत	अधास्येताम्	अधास्यन्त
म० पु०	अधास्यः	अधास्यतम्	अधास्यत	अधास्यथाः	अधास्येथाम्	अधास्यध्वम्
उ० पु०	अधास्यम्	अधास्याव	अधास्याम	अधास्ये	अधास्यावहि	अधास्यामहि

दा = देना To give

'लट्' वर्तमान काल

	परस्मैपद			आत्मनेपद		
प्र० पु०	ददाति	दत्तः	ददति	दत्ते	ददाते	ददते
म० पु०	ददासि	दत्थः	दत्थ	दत्से	ददाथे	दद्ध्वे
उ० पु०	ददामि	दद्वः	दद्मः	ददे	दद्वहे	दद्महे

'लिट्' परोक्षभूतकाल

प्र० पु०	ददौ	ददतुः	ददुः	ददे	ददाते	ददिरे
म० पु०	ददिथ	ददथुः	दद	ददिषे	ददाथे	ददिध्वे
उ० पु०	ददौ	ददिव	ददिम	ददे	ददिवहे	ददिमहे

'लङ्' अनद्यतनभूतकाल

प्र० पु०	अददात्	अदत्ताम्	अददुः	अदत्त	अददाताम्	अददत
म० पु०	अददाः	अदत्तम्	अदत्त	अदत्थाः	अददाथाम्	अदद्ध्वम्
उ० पु०	अददाम्	अदद्व	अदद्म	अददि	अदद्वहि	अदद्महि

'लुङ्' सामान्यभूतकाल

प्र० पु०	अदात्	अदाताम्	अदुः	अदित	अदिषाताम्	अदिषत
म० पु०	अदाः	अदातम्	अदात	अदिथाः	अदिषाथाम्	अदिढ्वम्
उ० पु०	अदाम्	अदाव	अदाम	अदिषि	अदिष्वहि	अदिष्महि

'लृट्' सामान्य भविष्यत्काल

प्र० पु०	दास्यति	दास्यतः	दास्यन्ति	दास्यते	दास्येते	दास्यन्ते
म० पु०	दास्यसि	दास्यथः	दास्यथ	दास्यसे	दास्येथे	दास्यध्वे
उ० पु०	दास्यामि	दास्यावः	दास्यामः	दास्ये	दास्यावहे	दास्यामहे

"लोट्" आज्ञावाचक

प्र० मु०	ददातु=दत्तात्,	दत्ताम्	ददतु	दत्ताम्	ददाताम्	ददताम्
म० पु०	देहि=दत्तात्	दत्तम्	दत्त	दत्स्व	ददाथाम्	दद्ध्वम्
उ० पु०	ददानि	ददाव	ददाम	ददै	ददावहै	ददामहै

विधिलिङ्

प्र० पु०	दद्यात्	दद्याताम्	दद्युः	ददीत	ददीयाताम्	ददीरन्
म० पु०	दद्याः	दद्यातम्	दद्यात	ददीथाः	ददीयाथाम्	ददीध्वम्
उ० पु०	दद्याम्	दद्याव	दद्याम	ददीय	ददीवहि	ददीमहि

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	देयात्	देयास्ताम्	देयासुः	दासीष्ट	दासीयास्ताम्	दासीरन्
म० पु०	देयाः	देयास्तम्	देयास्त	दासीष्ठाः	दासीयास्थाम्	दासीध्वम्
उ० पु०	देयासम्	देयास्व	देयास्म	दासीय	दासीवहि	दासीमहि

'लृङ्' हेतुहेतुमद्भावभविष्यत्

प्र० पु०	अदास्यत्	अदास्यताम्	अदास्यन्	अदास्यत	अदास्येताम्	अदास्यन्त
म० पु०	अदास्यः	अदास्यतम्	अदास्यत	अदास्यथाः	अदास्येथाम्	अदास्यध्वम्
उ० पु०	अदास्यम्	अदास्याव	अदास्याम	अदास्ये	अदास्यावहि	अदास्यामहि

तृतीयः पाठः

जुहोत्यादिगण के उदाहरण

१—अहम् अग्नौ घृतं जुहोमि—I offer oblation of ghee in the fire. मैं अग्नि में घी का हवन करता हूँ।

२—अहं पापाद् बिभेमि—I fear from the sin or I am afraid of sin. मैं पाप से डरता हूँ।

३—त्वं सिंहाद् बिभेषि—Thou fearest from the lion तू सिंह से डरता है।

४—बधूः श्वशुरात् जिह्रेति=The Son's wife shames from father-in-law बहू ससुर से लजाती है।

५—दासो कलशं पिपर्ति=A maid fills the jug up दासी घड़ा भरती है।

६—भृत्यः सर्वाणि वस्त्राणि नैव नेनेक्ति=The servant does not wash all the clothes नौकर सब वस्त्रों को नहीं धोता है।

७ सा मामभार्षीत्=She nourished me उसने मुझे पाला पोषा था।

८—रजकः (नेनेजकः) वस्त्राणि अनेनेक्=The washerman washed the clothes धोबी ने कपड़ों को धो दिया।

९—त्वं तस्मै एकं पुस्तकमदाः (अददाः)=Thou gavest him a book तूने उसको एक पुस्तक दी।

१०—नृपोऽन्नवस्त्रैः प्रजाः पिपूर्यात्=The king should provide his subject with corn (food) and clothes. राजा को चाहिये कि प्रजाओं को अन्न वस्त्रों से पूरा करे।

११—यदि त्वं पुस्तकमदास्यः तर्हि अहमपि अदास्यम्=If thou wilt give the book I shall also give यदि तू पुस्तक देगा तो मैं भी दूँगा।

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिए।

मोहनो गजेन वस्त्रं मिमीते (२) त्वं निन्दां जहीहि (३) छागः (अजः) मिमीते, (४) सेवकः कलशं पिपर्ति (५) रजको वस्त्राणि नेनेक्ति (६) स रिक्तस्थानमपिपः (७) ते पात्राणि पिपुरति (८) बधूरजिह्रेत् (९) अजा अमिमीत (१०) स पिपूर्यात्।

❀ श्रोत्रादीनीन्द्रियाण्यन्ये, संयमाग्निषु जुह्वति –
शब्दादीन् विषयानन्य, इन्द्रियाग्निषु जुह्वति ॥
दैवाद् बिभीहि काकुत्स्थ ! जिह्नीहि त्वं तथा नरात् ।
मिथ्या मामभिसंक्रुध्यन् न वशां शत्रुणा हृताम् ॥
जहीहि शोकं वैदेहि ! प्रीतये धेहि मानसम् ।
रावणे जहिहिं द्वेषं, जहाहि प्रमदा वनम् ॥
प्रजहाति यदा कामान् सर्वान्पार्थ मनोगतान् ।
आत्मन्येवात्मनातुष्टः स्थित प्रज्ञस्तदोच्यते ॥
श्रोत्रादीनि = ज्ञान इन्द्रियों को
❀ त्वं = सीता + काकुत्स्थ = हे रामचन्द्र

संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(१) रवीन्द्र हवन करता है (२) होताओं ने हवन किये (३) लड़की बानर से डरती है। (४) वह तुझसे डर गया (५) मैं डर जाऊँगा। (६) तूने मुझे क्यों छोड़ दिया ? (७) उस बालक को नहीं छोड़ना चाहिये (८) उसने उसका भरण पोषण किया। (९) उसको पोषण करना चाहिये (१०) स्त्री लजा गई। (११) वह लज्जा करती है। (१२) गोविन्द काम पूरा करता है (१३) उसने तुम्हारा काम पूरा किया (१४) लड़कों को चाहिये कि अपना काम पूरा करें (१५) वह लोटा भरता है (१६) उसने घड़ा भरा (१७) उसने नया वस्त्र धारण किया (१८) उसको दे दो (१९) राम ने उसको पुस्तक दी (२०) बकरी बोलती है (२१) बकरा बोला (२२) बजाज ने गज़ से कपड़े को नापा (२३) वह हाथ से कपड़े को नापता है (२४) धोबी कपड़े धोते हैं (२५) राम सबकी कामना पूरा करता है।

एकादशोऽध्यायः

अथ दिवादिगण प्रकरणम्

प्रथमः पाठः

परस्मैपदी

इस गण की धातुओं में प्रत्यय से पूर्व "य" चिन्ह जोड़ा जाता है। जैसे—दिव्+य+ति "दीव्यति" रूप बना। इसी प्रकार सर्वत्र समझना चाहिये।

दिव् = जुआ खेलना = To gamble

'लट्' वर्तमान काल

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	दीव्यति	दीव्यतः	दीव्यन्ति
म० पु०	दीव्यसि	दीव्यथः	दीव्यथ
उ० पु०	दीव्यामि	दीव्यावः	दीव्यामः

'लिट्' परोक्षभूत

प्र० पु०	दिदेव	दिदिवतुः	दिदिवुः
म० पु०	दिदेविथ	दिदिवथुः	दिदिव
उ० पु०	दिदेव	दिदिविव	दिदिविम

'लङ्' अनद्यतन भूतकाल

प्र० पु०	अदीव्यत्	अदीव्यताम्	अदीव्यन्
म० पु०	अदीव्यः	अदीव्यतम्	अदीव्यत
उ० पु०	अदीव्यम्	अदीव्याव	अदीव्याम

'लुङ्' सामान्य भूत

प्र० पु०	अदेवीत्	अदेविष्टाम्	अदेविषुः
म० पु०	अदेवीः	अदेविष्टम्	अदेविष्ट
उ० पु०	अदेविषम्	अदेविष्व	अदेविष्म

'लुट्' अनद्यतन भविष्यत्

प्र० पु०	देविता	देवितारौ	देवितारः
म० पु०	देवितासि	देवितास्थः	देवितास्थ
उ० पु०	देवितास्मि	देवितास्वः	देवितास्मः

'लृट्' सामान्य भविष्यत्काल

प्र० पु०	देविष्यति	देविष्यतः	देविष्यन्ति
म० पु०	देविष्यसि	देविष्यथः	देविष्यथ
उ० पु०	देविष्यामि	देविष्यावः	देविष्यामः

'लोट्' आज्ञावाचक

प्र० पु०	दीव्यतु=दीव्यतात्	दीव्यताम्	दीव्यन्तु
म० पु०	दीव्य=दीव्यतात्	दीव्यतम्	दीव्यत
उ० पु०	दीव्यानि	दीव्याव	दीव्याम

विधिलिङ्

प्र० पु०	दीव्येत्	दीव्येताम्	दीव्येयुः
म० पु०	दीव्येः	दीव्येतम्	दीव्येत
उ० पु०	दीव्येयम्	दीव्येव	दीव्येम

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	दीव्यात्	दीव्यास्ताम्	दीव्यासुः
म० पु०	दीव्याः	दीव्यास्तम्	दीव्यास्त
उ० पु०	दीव्यासम्	दीव्यास्व	दीव्यास्म

'लृङ्' हेतुहेतुमद्भाव भविष्यत्

प्र० पु०	अदेविष्यत्	अदेविष्यताम्	अदेविष्यन्
म० पु०	अदेविष्यः	अदेविष्यतम्	अदेविष्यत
उ० पु०	अदेविष्यम्	अदेविष्याव	अदेविष्याम

निम्नलिखित धातुओं के प्रथम पुरुष में एकवचन के रूप ।—

संस्कृत	हिन्दी	इंगलिश	लट्	लिट्	लुट्
सिव्	= सीना	To Sew	सीव्यति	सिषेव	सेविता
नृत्	= नाचना	To dance	नृत्यति	ननर्त	नर्तिता
णश् (नश्)	नाश होना	To perish	नश्यति	ननाश	नशिता
शम् (शाम्)	शान्त होना	To subside	शाम्यति	शशाम	शमिता
भ्रम् (भ्राम्)	घूमना	To roam	भ्राम्यति	बभ्राम	भ्रमिता
व्यध् (विध्य)	विंधना,मारना	To pierce	विध्यति	विव्याध	व्यद्धा
पुष्	पोषण करना	To cherish	पुष्यति	पुपोष	पोष्टा
क्रुध्	क्रोध करना	To anger	क्रुध्यति	चुक्रोध	क्रोद्धा
स्निह्	प्यार करना	To love	स्निह्यति	सिष्णेह	स्नेहिता
द्रुह्	द्रोह करना	To spite	द्रुह्यति	दुद्रोह	द्रोहिता
मुह्	मोहना	To charm	मुह्यति	मुमोह	मोहिता
सिध्	सिद्ध होना	To prove	सिध्यति	सिषेध	सेद्धा

द्वितीयः पाठः

आत्मनेपद

जन् (जा)=पैदा होना To bear or originate.

'लट्' वर्तमानकाल

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	जायते	जायेते	जायन्ते
म० पु०	जायसे	जायेथे	जायध्वे
उ० पु०	जाये	जायावहे	जायामहे

'लिट्' परोक्षभूतकाल

प्र० पु०	जज्ञे	जज्ञाते	जज्ञिरे
म० पु०	जज्ञिषे	जज्ञाथे	जज्ञिध्वे
उ० पु०	जज्ञे	जज्ञिवहे	जज्ञिमहे

'लुट्' अनद्यतन भविष्यत् काल

प्र० पु०	जनिता	जनितारौ	जनितारः
म० पु०	जनितासे	जनितासा	जनिताध्वे

लृट्	लोट्	लङ्	विधिलिङ्	अशीर्लिङ्	लुङ्	लृङ्
सेविष्यति	सीव्यतु	असीव्यत्	सीव्येत्	सीव्यात्	असेवीत्	असेविष्यत्
नर्तिष्यति	नृत्यतु	अनृत्यत्	नृत्येत्	नृत्यात्	अनर्तीत्	अनर्तिष्यत्
नशिष्यति	नश्यतु	अनश्यत्	नश्येत्	नश्यात्	अनशत्	अनशिष्यत्
शमिष्यति	शाम्यतु	अशाम्यत्	शाम्येत्	शाम्यात्	अशमत्	अशमिष्यत्
भ्रमिष्यति	भ्राम्यतु	अभ्राम्यत्	भ्राम्येत्	भ्राम्यात्	अभ्रमत्	अभ्रमिष्यत्
व्यत्स्यति	विध्यतु	अविध्यत्	विध्येत्	विध्यात्	अव्यात्सीत्	अव्यत्स्यत्
पोद्यति	पुष्यतु	अपुष्यत्	पुष्येत्	पुष्यात्	अपुषत्	अपोद्यत्
क्रोत्स्यति	क्रुध्यतु	अक्रुध्यत्	क्रुध्येत्	क्रुध्यात्	अक्रुधत्	अक्रोत्स्यत्
स्नेहिष्यति	स्निह्यतु	अस्निह्यत्	स्निह्येत्	स्निह्यात्	अस्निहत्	अस्नेहिष्यत्
द्रोहिष्यति	द्रुह्यतु	अद्रुह्यत्	द्रुह्येत्	द्रुह्यात्	अद्रुहत्	अद्रोहिष्यत्
मोहिष्यति	मुह्यतु	अमुह्यत्	मुह्येत्	मुह्यात्	अमुहत्	अमोहिष्यत्
सेत्स्यति	सिध्यतु	असिध्यत्	सिध्येत्	सिध्यात्	असिधत्	असेत्स्यत्

उ० पु०	जनिताहे	जनितास्वहे	जनितास्महे

'लृट्' सामान्य भविष्यत्काल

प्र० पु०	जनिष्यते	जनिष्येते	जनिष्यन्ते
म० पु०	जनिष्यसे	जनिष्येथे	जनिष्यध्वे
उ० पु०	जनिष्ये	जनिष्यावहे	जनिष्यामहे

'लङ्' अनद्यतन भूतकाल

प्र० पु०	अजायत	अजायेताम्	अजायन्त
म० पु०	अजायथाः	अजायेथाम्	अजायध्वम्
उ० पु०	अजाये	अजायावहि	अजायामहि

'लुङ्' सामान्य भूतकाल

प्र० पु०	अजनि = अजनिष्ट	अजनिषाताम्	अजनिषत
म० पु०	अजनिष्ठाः	अजनिषाथाम्	अजनिध्वम्
उ० पु०	अजनिषि	अजनिष्वहि	अजनिष्महि

'लोट्' आज्ञावाचक

प्र० पु०	जायताम्	जायेताम्	जायन्ताम्
म० पु०	जायस्व	जायेथाम्	जायध्वम्
उ० पु०	जायै	जायावहै	जायामहै

विधिलिङ्

प्र० पु०	जायेत	जायेयाताम्	जायेरन्
म० पु०	जायेथाः	जायेयाथाम्	जायेध्वम्
उ० पु०	जायेय	जायेवहि	जायेमहि

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	जनिषीष्ट	जनिषीयास्ताम्	जनिषीरन्
म० पु०	जनिषीष्ठाः	जनिषीयास्थाम्	जनिषीध्वम
उ० पु०	जनिषीय	जनिषीवहि	जनिषीमहि

'लृङ्' हेतुहेतुमद्भावभविष्यत्

प्र० पु०	अजनिष्यत	अजनिष्येताम्	अजनिष्यन्त
म० पु०	अजनिष्यथाः	अजनिष्येथाम्	अजनिष्यध्वम्
उ० पु०	अजनिष्ये	अजनिष्यावहि	अजनिष्यामहि

बुध्=जानना To understand

'लट्' वर्तमान काल

प्र० पु०	बुध्यते	बुध्येते	बुध्यन्ते
म० पु०	बुध्यसे	बुध्येथे	बुध्यध्वे
उ० पु०	बुध्ये	बुध्यावहे	बुध्यामहे

'लङ् अनद्यतन भूतकाल

प्र० पु०	अबुध्यत	अबुध्येताम्	अबुध्यन्त
म० पु०	अबुध्यथाः	अबुध्येथाम्	अबुध्यध्वम्
उ० पु०	अबुध्ये	अबुध्यावहि	अबुध्यामहि

'लुङ्' सामान्य भूतकाल

प्र० पु०	अबोधि=अबुद्ध	अभुत्साताम्	अभुत्सत
म० पु०	अबुद्धाः	अभुत्साथाम्	अबुद्ध्वम्
उ० पु०	अभुत्सि	अभुत्स्वहि	अभुत्स्महि

'लृट्' सामान्य भविष्यत्काल

प्र० पु०	भोत्स्यते	भोत्स्येते	भोत्स्यन्ते
म० पु०	भोत्स्यसे	भोत्स्येथे	भोत्स्यध्वे
उ० पु०	भोत्स्ये	भोत्स्यावहे	भोत्स्यामहे

'लोट्' आज्ञावाचक

प्र० पु०	बुध्यताम्	बुध्येताम्	बुध्यन्ताम्
म० पु०	बुध्यस्व	बुध्येथाम्	बुध्यध्वम्
उ० पु०	बुध्यै	बुध्यावहै	बुध्यामहै

विधिलिङ्

प्र० पु०	बुध्येत	बुध्येयाताम्	बुध्येरन्
म० पु०	बुध्येथाः	बुध्येयाथाम्	बुध्येध्वम्
उ० पु०	बुध्येय	बुध्येवहि	बुध्येमहि

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	भुत्सीष्ट	भुत्सीयास्ताम्	भुत्सीरन्
म० पु०	भुत्सीष्ठाः	भुत्सीयास्थाम्	भुत्सीध्वम्
उ० पु०	भुत्सीय	भुत्सीवहि	भुत्सीमहि

'लृङ्' हेतुहेतुमद्भाव भविष्यत्

प्र० पु०	अभोत्स्यत	अभोत्स्येताम्	अभोत्स्यन्त
म० पु०	अभोत्स्यथाः	अभोत्स्येथाम्	अभोत्स्यध्वम्
उ० पु०	अभोत्स्ये	अभोत्स्यावहि	अभोत्स्यामहि

युध्=लड़ना To Fight

'लट्' वर्तमान काल

प्र० पु०	युध्यते	युध्येते	युध्यन्ते
म० पु०	युध्यसे	युध्येथे	युध्यध्वे
उ० पु०	युध्ये	युध्यावहे	युध्यामहे

'लङ्' अनद्यतन भूतकाल

प्र० पु०	अयुध्यत	अयुध्येताम्	अयुध्यन्त
म०पु०	अयुध्यथाः	अयुध्येथाम्	अयुध्यध्वम्
उ० पु०	अयुध्ये	अयुध्यावहि	अयुध्यामहि

'लुङ्' सामान्य भूतकाल

प्र० पु०	अयुद्ध	अयुत्साताम्	अयुत्सत
म० पु०	अयुद्धाः	अयुत्साथाम्	अयुद्ध्वम्
उ० पु०	अयुत्सि	अयुत्स्वहि	अयुत्स्महि

'लृट्' भविष्यत्काल

प्र० पु०	योत्स्यते	योत्स्येते	योत्स्यन्ते
म० पु०	योत्स्यसे	योत्स्येथे	योत्स्यध्वे
उ० पु०	योत्स्ये	योत्स्यावहे	योत्स्यामहे

'लोट्' आज्ञावाचक

प्र० पु०	युध्यताम्	युध्येताम्	युध्यन्ताम्
म० पु०	युध्यस्व	युध्येथाम्	युध्यध्वम्
उ० पु०	युध्यै	युध्यावहै	युध्यामहै

विधि लिङ्

प्र० पु०	युध्येत	युध्येयाताम्	युध्येरन्
म० पु०	युध्येथाः	युध्येयाथाम्	युध्यध्वम्
उ० पु०	युध्येय	युध्येवहि	युध्येमहि

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	युत्सीष्ट	युत्सीयास्ताम्	युत्सीरन्
म० पु०	युत्सीष्ठाः	युत्सीयास्थाम्	युत्सीध्वम्
उ० पु०	युत्सीय	युत्सीवहि	युत्सीमहि

हेतुहेतुमद्भावभविष्यत्

प्र० पु०	अयोत्स्यत	अयोत्स्येताम्	अयोत्स्यन्त
म० पु०	अयोत्स्यथाः	अयोत्स्येथाम्	अयोत्स्यध्वम्
उ० पु०	अयोत्स्ये	अयोत्स्यावहि	अयोत्स्यामहि

क्लिश्=क्लेश पाना To trouble

'लट्' वर्तमान काल

प्र० पु०	क्लिश्यते	क्लिश्येते	क्लिश्यन्ते
म० पु०	क्लिश्यसे	क्लिश्येथे	क्लिश्यध्वे
उ० पु०	क्लिश्ये	क्लिश्यावहे	क्लिश्यामहे

'लङ्' अनद्यतनभूत

प्र० पु०	अक्लिश्यत	अक्लिश्येन्ताम्	अक्लिश्यन्त
म० पु०	अक्लिश्यथाः	अक्लिश्येथाम्	अक्लिश्यध्वम्
उ० पु०	अक्लिश्ये	अक्लिश्यावहि	अक्लिश्यामहि

'लुङ्' सामान्य भूतकाल

प्र० पु०	अक्लेशिष्ट	अक्लेशिषाताम्	अक्लेशिषत
म० पु०	अक्लेशिष्ठाः	अक्लेशिषाथाम्	अक्लेशिध्वम्
उ० पु०	अक्लेशिषि	अक्लेशिष्वहि	अक्लेशिष्महि

'लृट्' सामान्य भविष्यत्काल

प्र० पु०	क्लेशिष्यते	क्लेशिष्येते	क्लेशिष्यन्ते
म० पु०	क्लेशिष्यसे	क्लेशिष्येथे	क्लेशिष्यध्वे
उ० पु०	क्लेशिष्ये	क्लेशिष्यावहे	क्लेशिष्यामहे

'लोट्' आज्ञावाचक

प्र० पु०	क्लिश्यताम्	क्लिश्येताम्	क्लिश्यन्ताम्
म० पु०	क्लिश्यस्व	क्लिश्येथाम्	क्लिश्यध्वम्
उ० पु०	क्लिश्यै	क्लिश्यावहै	क्लिश्यामहै

विधिलिङ्

प्र० पु०	क्लिश्येत	क्लिश्येयाताम्	क्लिश्येरन्
म० पु०	क्लिश्येथाः	क्लिश्येयाथाम्	क्लिश्येध्वम्
उ० पु०	क्लिश्येय	क्लिश्येवहि	क्लिश्येमहि

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	क्लेशिषीष्ट	क्लेशिषीयास्ताम्	क्लेशिषीरन्
म० पु०	क्लेशिषीष्ठाः	क्लेशिषीयास्थाम्	क्लेशिषीध्वम्
उ० पु०	क्लेशिषीय	क्लेशिषीवहि	क्लेशिषीमहि

'लृङ्' हेतुहेतुमद्भावभविष्यत्

प्र० पु०	अक्लेशिष्यत	अक्लेशिष्येताम	अक्लेशिष्यन्त
म० पु०	अक्लेशिष्यथाः	अक्लेशिष्येथाम्	अक्लेशिष्यध्वम्
उ० पु०	अक्लेशिष्ये	अक्लेशिष्यावहि	अक्लेशिष्यामहि

उभयपदी

मृष् = सहन करना To Sustain, to bear

'लट्' वर्तमानकाल

	परस्मैपद			आत्मनेपद		
प्र० पु०	मृष्यति	मृष्यतः	मृष्यन्ति	मृष्यते	मृष्येते	मृष्यन्ते
म० पु०	मृष्यसि	मृष्यथः	मृष्यथ	मृष्यसे	मृष्येथे	मृष्यध्वे
उ० पु०	मृष्यामि	मृष्यावः	मृष्यामः	मृष्ये	मृष्यावहे	मृष्यामहे

लिट् परोक्षभूतकाल

प्र० पु०	ममर्ष	ममृषतुः	ममृषुः	ममृषे	ममृषाते	ममृषिरे
म० पु०	ममर्षिथ	ममृषथुः	ममृष	ममृषिषे	ममृषाथे	ममृषिध्वे
उ० पु०	ममर्ष	ममृषिव	ममृषिम	ममृषे	ममृषिवहे	ममृषिमहे

'लङ्' अनद्यतनभूतकाल

प्र० पु०	अमृष्यत्	अमृष्यताम्	अमृष्यन्	अमृष्यत	अमृष्येताम्	अमृष्यन्त
म० पु०	अमृष्यः	अमृष्यतम्	अमृष्यत	अमृष्यथाः	अमृष्येथाम्	अमृष्यध्वम्
उ० पु०	अमृष्यम्	अमृष्याव	अमृष्याम	अमृष्ये	अमृष्यावहि	अमृष्यामहि

लुङ् सामान्य भूतकाल

प्र० पु०	अमर्षीत्	अमर्षिष्टाम्	अमर्षिषुः	अमर्षिष्ट	अमर्षिषाताम्	अमर्षिषत
म० पु०	अमर्षीः	अमर्षिष्टम्	अमर्षिष्ट	अमर्षिष्ठाः	अमर्षिषाथाम्	अमर्षिढ्वम्
उ० पु०	अमर्षिषम्	अमर्षिष्व	अमर्षिष्म	अमर्षिषि	अमर्षिष्वहि	अमर्षिष्महि

लृट् सामान्य भविष्यत्काल

प्र० पु०	मर्षिष्यति	मर्षिष्यतः	मर्षिष्यन्ति	मर्षिष्यते	मर्षिष्येते	मर्षिष्यन्ते
म० ०	मर्षिष्यसि	मर्षिष्यथः	मर्षिष्यथ	मर्षिष्यसे	मर्षिष्येथे	मर्षिष्यध्वे
उ० पु०	मर्षिष्यामि	मर्षिष्यावः	मर्षिष्यामः	मर्षिष्ये	मर्षिष्यावहे	मर्षिष्यामहे

'लोट्' आज्ञावाचक

प्र० पु०	मृष्यतु = मृष्यतात्	मृष्यताम्	मृष्यन्तु	मृष्यताम्	मृष्येताम्	मृष्यन्ताम्
म० पु०	मृष्य = मृष्यतात्	मृष्यतम्	मृष्यत	मृष्यस्व	मृष्येथाम्	मृष्यध्वम्
उ० पु०	मृष्याणि	मृष्याव	मृष्याम	मृष्यै	मृष्यावहै	मृष्यामहै

विधिलिङ्

प्र० पु०	मृष्येत्	मृष्येताम्	मृष्येयुः	मृष्येत	मृष्येयाताम्	मृष्येरन्
म० पु०	मृष्येः	मृष्येतम्	मृष्येत	मृष्येथाः	मृष्येयाथाम्	मृष्येध्वम्
उ० पु०	मृष्येयम्	मृष्येव	मृष्येम	मृष्येय	मृष्येवहि	मृष्येमहि

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	मृष्यात्	मृष्यास्ताम्	मृष्यासुः	मर्षिषीष्ट	मर्षिषीयास्ताम्	मर्षिषीरन्
म० पु०	मृष्याः	मृष्यास्तम्	मृष्यास्त	मर्षिषीष्ठाः	मर्षिषीयास्थाम्	मर्षिषीढ्वम्
उ० पु०	मृष्यासम्	मृष्यास्व	मृष्यास्म	मर्षषीय	मर्षिषीवहि	मर्षिषीमहि

'लृङ्' हेतुहेतुमद्भावभविष्यत्

प्र० पु०	अमर्षिष्यत्	अमर्षिष्यताम्	अमर्षिष्यन्	अमर्षिष्यत	अमर्षिष्येताम्	अमर्षिष्यन्त
म० पु०	अमर्षिष्यः	अमर्षिष्यतम्	अमर्षिष्यत	अमर्षिष्यथाः	अमर्षिष्येथाम्	अमर्षिष्यध्वम्
उ० प०	अमर्षिष्यम्	अमर्षिष्याव	अमर्षिष्याम	अमर्षिष्ये	अमर्षिष्यावहि	अमर्षिष्यामहि

तृतीयः पाठः

दिवादिगण के उदाहरण

१—राजा शकुनिः पाशैः (अक्षैः) दिदेव = King Shakuni gambled with dices राजा शकुनि ने पासों से जुआ खेला।

२—किं सौचिकोऽङ्गरक्षिकां सीव्यति ? = Does the toilor sew the shirt क्या दर्जी कमीज़ सीता है ?

३—व्याधो बाणेन मृगमविध्यत् = The hunter hunted the deer with the arrow व्याध ने बाण से मृग को विध दिया।

४—पुरुषार्थं विना कोऽपि कार्यं नहि सिध्यति = Any work does not complete (accomplish) without labour पुरुषार्थ के बिना कोई काम नहीं सिद्ध होता है।

५—शनैः शनैः सर्वं धनमनश्यत् = All money perished slowly (gradually) सब धन धीरे धीरे नाश हो गया।

६—रवीन्द्रः त्वया सह अस्निह्यत् = Ravindra loved thee रवीन्द्र ने तेरे साथ प्रेम किया था।

७—स मह्यं द्रुह्यति = He envies me वह मुझसे द्रोह करता है।

८—वयं केभ्योऽपि न द्रुह्येम = We should not spite any body हमें किसी से भी द्रोह नहीं करना चाहिये।

९—स मयि मुह्यति—He is attracted towards to me वह मेरे ऊपर मोहित (मुग्ध) होता है।

१०—विहगाः वियति उदडीयन्त—Birds flew in the sky पक्षी आकाश में उड़ गये।

११—देवेन्द्रस्य गृहे शिशुः जज्ञे (अजनिष्ट)—A baby was born in Davendra's house देवेन्द्र के घर में लड़का पैदा हुआ।

१२—सुवर्णोऽग्नौ-अतिदीप्यते—Gold shines more in the fire सोना अग्नि में अधिक चमकता है।

१३—सैनिकाः युद्धभूमौ युयुधिरे (अयुध्यन्त)—The Soldiers fought in the battle-field. सिपाही युद्ध में लड़े।

१४—अग्निः वारिभिः शाम्यति—The fire subsides with the water. अग्नि पानी से शान्त होती है।

१५—शान्तिरत्यमृष्यत—Shanti sustained much शान्ति ने बहुत सहन किया।

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिये—

उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः ॥१॥
न जायते म्रियते वा कदाचित् ॥२॥
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥३॥
सत्यादुत्पद्यतेधर्मो, दयादानाद् विवर्धते ।
क्षमया तिष्ठति धर्मः, क्रोधाद्धर्मो विनश्यति ॥४॥

(५) वयमक्षं कदापि न दीव्येम । (६) रामो रावणाय चुक्रोध (अक्रुध्यत्)। (७) मोहनः क्रोधमशाम्यत् (८) त्वं शाम्येः। (९) बालका बाहुभ्यां परस्परं युध्यन्ते (१०) गोविन्दः क्लिश्यते (११) व्याधो मृगंविव्याध (अविध्यत्)। (१२) मृगाः व्याधात् त्रश्यन्ति (१३) सौचिकोऽङ्गरक्षिकाम् असीव्यत् (१४) स हस्तेन वस्त्रं मायते। (१५) मम माता माम पुषत् (१६) पक्षिणो गगने- उड्डीयन्ते (१७) स त्वयि अमुह्यत्। (१८) अहं त्वां स्निह्यामि (१९) मे मनो दूयते। (२०) ह्रस्वपादापाः जलेन पुष्यन्ति जलरहितेन च शुष्यन्ति (२१) तत्र दीपिकाः दीप्यन्ते (२२) क्षत्रियाः रणे शस्त्रैः युध्यन्ते (२३) पथिकाः पदाती पद्यन्ते ॥

संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(१) लोग श्री रामलक्ष्मण को प्यार करते थे (२) सिपाही मैदान में लड़ते हैं (३) जुआ कभी भी नहीं खेलना चाहिये (४) सब पक्षी बाज से त्रसित होते हैं (५) उसने मेरे ऊपर क्रोध किया (६) वह मुझसे ईर्ष्या करता है (७) क्या दर्जी ने वस्त्र सी दिया ? (८) सब मनुष्य राम पर मोहित हो गये (९) उसके वचन से मेरा मन दुःखी हो गया (१०) विद्यार्थी अपने पाठ को समझें। (११) पूर्व किये हुए सब पाप धर्म से नष्ट हो जाते हैं। (१२) अन्याय से उपार्जित किया हुआ धन नाश हो जाता है। (१३) वहाँ दीपक जलते हैं (१४) पथिक पैदल जाता है (१५) मोहन शान्त हो गया (१६) लड़का कुपुत्र हो जाय परन्तु माता पुत्र के प्रति कुमाता कभी भी नहीं होती है (१७) वह तालाब सूख गया (१८) वह आपकी बातों पर मुग्ध हो गया (१६) मेरी माँ ने मुझे पाला था (२०) सेनाएँ पैदल जाती हैं (२१) शकुन्तला हाथ से साड़ी नापती है।

"क्रुध, द्रुह, ईर्ष्या, असूया" इन धातुओं के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है।

———

द्वादशोऽध्यायः

प्रथमः पाठः

अथ स्वादिगण प्रकरणम्

इस गण के धातुओं में प्रत्यय से पूर्व में "नु" चिन्ह जोड़ा जाता है और एकबचन में 'नु' के उकार को ओकार कर देते हैं।

जैसे :—"सु+नु+ति"=सुनोति बन गया।

सु=रसनिकालना या यज्ञान्त स्नान करना

To extract the juice

लट् वर्तमान काल

	परस्मै पद प्रकरणम्			आत्मने पद प्रकरणम्		
	ए०	द्वि०	ब०	ए०	द्वि०	ब०
प्र० पु०	सुनोति	सुनुतः	सुन्वन्ति	सुनुते	सुन्वाते	सुन्वते
म० पु०	सुनोसि	सुनुथः	सुनुथ	सुनुषे	सुन्वाथे	सुनुध्वे
उ० पु०	सुनोमि	सुनुवः	सुनुमः	सुन्वे	सुनुवहे	सुनुमहे

लिट् परोक्ष भूतकाल

प्र० पु०	सुषाव	सुषुवतुः	सुषुवुः	सुषुवे	सुषुवाते	सुषुविरे
म० पु०	सुषविथ सुषोथ	सुषुवथुः	सुषुव	सुषुविषे	सुषुवाथे	सुषुविध्वे
उ० पु०	सुषाव	सुषुविव	सुषुविम	सुषुवे	सुषुविवहे	सुषुविमहे

लुट् अनद्यतन भविष्यत्काल

प्र० पु०	सोता	सोतारौ	सोतारः	सोता	सोतारौ	सोतारः
म० पु०	सोतासि	सोतास्थः	सोतास्थ	सोतासे	सोतासाथे	सोताध्वे
उ० पु०	सोतास्मि	सोतास्वः	सोतास्मः	सोताहे	सोतास्वहे	सोतास्महे

लृट् सामान्य भविष्यत्काल

प्र० पु०	सोष्यति	सोष्यतः	सोष्यन्ति	सोष्यते	सोष्येते	सोष्यन्ते
म० पु०	सोष्यसि	सोष्यथः	सोष्यथ	सोष्यसे	सोष्येथे	सोष्यध्वे
उ० पु०	सोष्यामि	सोष्यावः	सोष्यामः	सोष्ये	सोष्यावहे	सोष्यामहे

"लोट्" आज्ञावाचक

प्र० पु०	सुनोतु = सुनुतात्,	सुनुताम्	सुन्वन्तु	सुनुताम्	सुन्वाताम्	सुन्वताम्
म० पु०	सुनु = सुनुतात्,	सुनुतम्	सुनुत	सुनुष्व	सुन्वाथाम्	सुनुध्वम्
उ० पु०	सुनवानि	सुनवाव	सुनवाम	सुनवै	सुनवावहै	सुनवामहै

'लङ्' अनद्यतन भूतकाल

प्र० पु०	असुनोत्	असुनुताम्	असुन्वन्	असुनुत	असुन्वाताम्	असुन्वत
म० पु०	असुनोः	असुनुतम्	असुनुत	असुनुथाः	असुन्वाथाम्	असुनुध्वम्
उ० पु०	असुनवम्	असुनुव	असुनुम	असुन्वि	असुनुवहि	असुनुमहि

विधिलिङ्

प्र० पु०	सुनुयात्	सुनुयाताम्	सुनुयुः	सुन्वीत	सुन्वीयाताम्	सुन्वीरन्
म० पु०	सुनुयाः	सुनुयातम्	सुनुयात	सुन्वीथाः	सुन्वीयाथाम्	सुन्वीध्वम्
उ० पु०	सुनुयाम्	सुनुयाव	सुनुयाम	सुन्वीय	सुन्वीवहि	सुन्वीमहि

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	सूयात्	सूयास्ताम्	सूयासुः	सोषीष्ट	सोषीयास्ताम्	सोषीरन्
म० पु०	सूयाः	सूयास्तम्	सूयास्त	सोषीष्ठाः	सोषीयास्थाम्	सोषीध्वम्
उ० पु०	सूयासम्	सूयास्व	सूयास्म	सोषीय	सोषीवहि	सोषीमहि

'लुङ्' सामान्य भूतकाल

प्र० पु०	असावीत्	असाविष्टाम्	असाविषुः	असोष्ट	असोषाताम्	असोषत
म० पु०	आसावीः	असाविष्टम्	असाविष्ट	असोष्ठाः	असोषाथाम्	असोढ्वम्
उ० पु०	असाविषम्	असाविष्व	असाविष्म	असोषि	असोष्वहि	असोष्महि

'लृङ्' हेतुहेतुमद् भाव भविष्यत्

प्र० पु०	असोष्यत्	असोष्यताम्	असोष्यन्	असोष्यत	असोष्येताम्	असोष्यन्त
म० पु०	असोष्यः	असोष्यतम्	असोष्यत	असोष्यथाः	असोष्येथाम्	असोष्यध्वम्
उ० पु०	असोष्यम्	असोष्याव	असोष्याम	असोष्ये	असोष्यावहि	असोष्यामहि

चि = चुनना (To collect)

'लट्' वर्तमान काल

प्र० पु०	चिनोति	चिनुतः	चिन्वन्ति	चिनुते	चिन्वाते	चिन्वते
म० पु०	चिनोषि	चिनुथः	चिनुथ	चिनुषे	चिन्वाथे	चिनुध्वे
उ० पु०	चिनोमि	चिनुवः	चिनुमः	चिन्वे	चिनुवहे	चिनुमहे

सामान्य भविष्यत्काल

प्र० पु०	चेष्यति	चेष्यतः	चेष्यन्ति	चेष्यते	चेष्येते	चेष्यन्ते
म० पु०	चेष्यसि	चेष्यथः	चेष्यथ	चेष्यसे	चेष्येथे	चेष्यध्वे
उ० पु०	चेष्यामि	चेष्यावः	चेष्यामः	चेष्ये	चेष्यावहे	चेष्यामहे

"लोट्" आज्ञावाचक

प्र० पु०	चिनोतु = चिनुतात्	चिनुताम्	चिन्वन्तु	चिनुताम्	चिन्वाताम्	चिन्वताम्
म० पु०	चिनु = चिनुतात्	चिनुतम्	चिनुत	चिनुष्व	चिन्वाथाम्	चिनुध्वम्
उ० पु०	चिनवानि	चिनवाव	चिनवाम	चिनवै	चिन्वावहै	चिन्वामहै

'लङ्' अनद्यतनभूतकाल

प्र० पु०	अचिनोत्	अचिनुताम्	अचिन्वन्	अचिनुत	अचिन्वाताम्	अचिन्वत
म० पु०	अचिनोः	अचिनुतम्	अचिनुत	अचिनुथाः	अचिन्वाथाम्	अचिनुध्वम्
उ० पु०	अचिन्वम्	अचिनुव	अचिनुम्	अचिन्वि	अचिनुवहि	अचिनुमहि

विधिलिङ्

प्र० पु०	चिनुयात्	चिनुयाताम्	चिनुयुः	चिन्वीत्	चिन्वीयाताम्	चिन्वीरन्
म० पु०	चिनुयाः	चिनुयातम्	चिनुयात	चिन्वीथाः	चिन्वीयाथाम्	चिन्वीध्वम्
उ० पु०	चिनुयाम्	चिनुयाव	चिनुयाम	चिन्वीय	चिन्वीवहि	चिन्वीमहि

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	चीयात्	चीयास्ताम्	चीयासुः	चेषीष्ट	चेषीयास्ताम्	चेषीरन्
म० पु०	चीयाः	चीयास्तम्	चीयास्त	चेषीष्ठाः	चेषीयास्थाम्	चेषीध्वम्
उ० पु०	चीयासम्	चीयास्व	चीयास्म	चेषीय	चेषीवहि	चेषीमहि

'लुङ्' सामान्यभूतकाल

प्र० पु०	अचैषीत्	अचैष्टाम्	अचैषुः	अचेष्ट	अचेषाताम्	अचेषत
म० पु०	अचैषीः	अचैष्टम्	अचैष्ट	अचेष्ठाः	अचेषाथाम्	अचेध्वम्
उ० पु०	अचैषम्	अचैष्व	अचैष्म	अचेषि	अचेष्वहि	अचेष्महि

'लृङ्' हेतुहेतुमद्भावभविष्यत्

प्र० पु०	अचेष्यत्	अचेष्यताम्	अचेष्यन्	अचेष्यत	अचेष्येताम्	अचेष्यन्त
म० पु०	अचेष्यः	अचेष्यतम्	अचेष्यत	अचेष्यथाः	अचेष्येथाम्	अचेष्यध्वम्
उ० पु०	अचेष्यम्	अचेष्याव	अचेष्याम	अचेष्ये	अचेष्यावहि	अचेष्यामहि

निम्नलिखित धातुओं के प्रथम पुरुष में एक वचन के रूप है

	लट्	लृट्	लोट्	विधि	आशीः	लङ्	लुङ	हेतु
सक् = समर्थ होना To be able	शक्नोति	शक्ष्यति	शक्नोतु	शक्नुयात्	शक्यात्	अशक्नोत	अशकत्	अशक्ष्यत्
आप् = प्राप्त करना To obtain	आप्नोति	आप्स्यति	आप्नोतु	आप्नुयात्	आप्यात्	आप्नोत्	आपत्	आप्स्यत्

द्वितीयः पाठः

स्वादिगण के उदाहरण

(१) स इक्षुरसमसुनोत् = उसने ईख का रस निकाला।
He extracted the juice of the suger-canes.

(२) यूयं जम्बीररसं सुनुयात = तुम्हें नींबू का रस निकालना चाहिये।
You should extract the juice of the lemon.

(३) यूयं गोधूमान् चिनुयात = तुम्हें गेहूँ एकट्टा करना चाहिये।
You must collect the wheat.

(४) स गोधूमानचिनोत् = उसने गेहूँ एकट्टा किया।
He collected the wheat.

(५) किं त्वमिदं कार्यं कर्तुं शक्नोसि ? क्या तू इस कार्य को कर सकता है ?

Con you do this work ?

(६) युष्माकं मनः कथं न दुष्यति ? तुम्हारा मन क्यों नहीं दुःखी होगा ?

Why will you not feel sorry?

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिए:—

धर्मः सर्व सुखाकरो हितकरो धर्मं बुधाश्चिन्वते,
सुवर्णं पुष्पितां पृथिवीं विचिन्वन्ति नरास्त्रयः
शूरश्च कृतविद्यश्च यश्च जानाति सेवितुम।
सोमं सुनोति यज्ञेषु, सोमवंश विभूषणः।
पुरः सुवति संग्रामे, स्यन्दनं स्वयमेव सः।
तं प्राप्नुवन्ति मामेव, सर्वभूत हिते रताः॥
न च शक्नोमि अवस्थातुम्। हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गम्।
अधर्माभि भवात्कृष्ण, प्रदुष्यन्ति कुलस्त्रियः।
स्त्रीषु दुष्टासु वार्ष्णेय जायते वर्णसंकरः।
न दुनोति दयालुत्वाद, वचसा कञ्चिदप्यसौ।
दुरुक्तैरपि दीनानां, मनस्तस्य न दूयते।

धुनोति चम्पक वनानि, धुनोत्यशोकम् ॥
चूतं धुनाति धुवति, स्फुटिताऽतिमुक्ताम् ॥

संस्कृत में अनुवाद कीजिए :—

(१) याज्ञिक लोग यज्ञों में सोम रस निकालते हैं। (२) सुरेश नारंगी का रस निकालता है। (३) क्या मैं जा सकती हूँ ? (४) गोविन्द ने अपना स्थान पुनः प्राप्त किया। (५) बन्दर वृक्ष की शाखा को हिलाता है। (६) उसने मुझे हिला दिया। (७) क्या तुम इस काम को कर सकते हो। (८) हाँ, मैं इस कामको कर सकता हूँ। (९) वह उस वस्तु को प्राप्तकर लेगा। (१०) हम लोग चावलों में से कंकड़ चुनते हैं। (११) वायु वृक्षों को हिला देती हैं। (१२) उसका मन क्यों नहीं दुःखी होता है ?

त्रयोदशोऽध्यायः

प्रथमः पाठः

अथतुदादिगण प्रकरणम्

द्रष्टव्यः—तुदादिगण में प्रत्यय से पूर्व और धातु के अन्त में "अ" चिन्ह लगाया जाता है।

परन्तु भ्वादिगण और तुदादिगण में इतना भेद है, कि भ्वादिगण में प्रत्यय लगाने पर धातु के—इ, उ, ऋ, स्वर को गुण कर देते हैं, परञ्च—तुदादिगण में गुण नहीं होता है। जैसे :—

भ्वादिगण प्रकरणम्	तुदादिगण प्रकरणम्
बुध्=बोधति Knows	तुद=तुदति Worries
जि=जयति Conquers	विश=विशति Enters
नी=नयति Carries	क्षिप्=क्षिपति Throws
सृ=सरति Goes	सृज=सृजति Creates
कृष्=कर्षति pulles	कृ=कृषति ploughes

तुद्=पीड़ा देना To Tease

'लट्' वर्तमानकाल

	परस्मैपदप्रकरणम्			आत्मनेपदप्रकरणम्		
	ए०	द्वि०	ब०	ए०	द्वि०	ब०
प्र० पु०	तुदति	तुदतः	तुदन्ति	तुदते	तुदेते	तुदन्ते
म० पु०	तुदसि	तुदथः	तुदथ	तुदसे	तुदेथे	तुदध्वे
उ० पु०	तुदामि	तुदावः	तुदामः	तुदे	तुदावहे	तुदामहे

"लिट्" परोक्षभूतकाल

प्र० पु०	तुतोद	तुतुदतुः	तुतुदुः	तुतुदे	तुतुदाते	तुतुदिरे
म० पु०	तुतोदिथ	तुतुदथुः	तुतुद	तुतुदिषे	तुतुदाथे	तुतुदिध्वे
उ० पु०	तुतोद	तुतुदिव	तुतुदिम	तुतुदे	तुतुदिवहे	तुतुदिमहे

"लुट्" अनद्यतनभविष्यत्काल

प्र० पु०	तोत्ता	तोत्तारौ	तोत्तारः	तोत्ता	तोत्तारौ	तोत्तारः
म० पु०	तोत्तासि	तोत्तास्थः	तोत्तास्थ	तोत्तासे	तोत्तासाथे	तोत्ताध्वे
उ० पु०	तोत्तास्मि	तोत्तास्वः	तोत्तास्मः	तोत्ताहे	तोत्तास्वहे	तोत्तास्महे

'लृट्' सामान्य भविष्यत्काल

प्र० पु०	तोत्स्यति	तोत्स्यतः	तोत्स्यन्ति	तोत्स्यते	तोत्स्येते	तोत्स्यन्ते
म० पु०	तोत्स्यसि	तोत्स्यथः	तोत्स्यथ	तोत्स्यसे	तोत्स्येथे	तोत्स्यध्वे
उ० पु०	तोत्स्यामि	तोत्स्यावः	तोत्स्यामः	तोत्स्ये	तोत्स्यावहे	तोत्स्यामहे

"लोट्" आज्ञावाचक

प्र० पु०	तुदतु = तुदतात्,	तुदताम्	तुदन्तु	तुदताम्	तुदेताम्	तुदन्ताम्
म० पु०	तुद = तुदतात्,	तुदतम्	तुदत	तुदस्व	तुदेथाम्	तुदध्वम्
उ० पु०	तुदानि	तुदाव	तुदाम	तुदै	तुदावहै	तुदामहै

"लङ्" अनद्यतनभूतकाल

प्र० पु०	अतुदत	अतुदताम्	अतुदन्	अतुदत	अतुदेताम्	अतुदन्त
म० पु०	अतुदः	अतुदतम्	अतुदत	अतुदथाः	अतुदेथाम्	अतुदध्वम्
उ० पु०	अतुदम्	अतुदाव	अतुदाम	अतुदे	अतुदावहि	अतुदामहि

विधिलिङ्

प्र० पु०	तुदेत्	तुदेताम्	तुदेयुः	तुदेत	तुदेयाताम्	तुदेरन्
म० पु०	तुदेः	तुदेतम्	तुदेत	तुदेथाः	तुदेयाथाम्	तुदेध्वम्
उ० पु०	तुदेयम्	तुदेव	तुदेम	तुदेय	तुदेवहि	तुदेमहि

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	तुद्यात्	तुद्यास्ताम्	तुद्यासुः	तुत्सीष्ट	तुत्सीयास्ताम्	तुत्सीरन्
म० पु०	तुद्याः	तुद्यास्तम्	तुद्यास्त	तुत्सीष्ठाः	तुत्सीयास्थाम्	तुत्सीध्वम्
उ० पु०	तुद्यासम्	तुद्यास्व	तुद्यास्म	तुत्सीय	तुत्सीवहि	तुत्सीमहि

"लुङ्" सामान्यभूतकाल

प्र० पु०	अतौत्सीत्	अतौत्ताम्	अतौत्सुः	अतुत्त	अतुत्साताम्	अतुत्सत
म० पु०	अतौत्सीः	अतौत्ताम्	अतौत्त	अतुत्थाः	अतुत्साथाम्	अतुद्ध्वम्
उ० पु०	अतौत्सम्	अतौत्स्व	अतौत्स्म	अतुत्सि	अतुत्स्वहि	अतुत्स्महि

हेतुहेतुमद्भावभविष्यत्

प्र० पु०	अतोत्स्यत्	अतोत्स्याताम्	अतोत्स्यन्	अतोत्स्यत	अतोत्स्येताम्	अतोत्स्यन्त
म० पु०	अतोत्स्यः	अतोत्स्यतम्	अतोत्स्यत	अतोत्स्यथाः	अतोत्स्येथाम्	अतोत्स्यध्वम्
उ० पु०	अतोत्स्यम्	अतोत्स्याम	अतोत्स्याम	अतोत्स्ये	अतोत्स्यावहि	अतोत्स्यामहि

मृङ् = मरना To die

द्रष्टव्य—"मृङ्" धातु से "लट् लोट् लङ् विधिलिङ्, आशीर्लिङ् और लुङ्" लकारो में आत्मने पद के रूप बनते हैं और "लिट्, लुट , लृट्, लृङ्" इन लकारों में परस्मैपद के रूप बनते है।

'लट्' वर्तमानकाल

प्र० पु०	म्रियते	म्रियेते	म्रियन्ते
म० पु०	म्रियसे	म्रियेथे	म्रियध्वे
उ० पु०	म्रिये	म्रियावहे	म्रियामहे

'लृट्' सामान्य भविष्यत्काल

प्र० पु०	मरिष्यति	मरिष्यतः	मरिष्यन्ति
म० पु०	मरिष्यसि	मरिष्यथः	मरिष्यथ
उ० पु०	मरिष्यामि	मरिष्यावः	मरिष्यामः

"लोट्" आज्ञावाचक

प्र० पु०	म्रियताम्	म्रियेताम्	म्रियन्ताम्
म० पु०	म्रियस्व	म्रियेथाम्	म्रियध्वम्
उ० पु०	म्रियै	म्रियावहै	म्रियामहै

"लङ्" अनद्यतनभूत

प्र० पु०	अम्रियत	अम्रियेताम्	अम्रियन्त
मृ० पु०	अम्रियथाः	अम्रियेथाम्	अम्रियध्वम्
उ० पु०	अम्रिये	अम्रियावहि	अम्रियामहि

विधिलिङ्

प्र० पु०	म्रियेत	म्रियेयाताम्	म्रियेरन्
म० पु०	म्रियेथाः	म्रियेयाथाम्	म्रियेध्वम्
उ० पु०	म्रियेय	म्रियेवहि	म्रियेमहि

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	मृषीष्ट	मृषीयास्ताम्	मृषीरन्
म० पु०	मृषीष्ठाः	मृषीयास्थाम्	मृषीध्वम्
उ० पु०	मृषीय	मृषीवहि	मृषीमहि

"लुङ्" सामान्य भूतकाल

प्र० पु०	अमृत	अमृषाताम्	अमृषत
म० पु०	अमृथाः	अमृषाथाम्	अमृढ्वम्
उ० पु०	अमृषि	अमृष्वहि	अमृष्महि

हेतुहेतुमद्भावभविष्यत्

प्र० पु०	अमरिष्यत्	अमरिष्यताम्	अमरिष्यन्
म० पु०	अमरिष्यः	अमरिष्यतम्	अमरिष्यत
उ० पु०	अमरिष्यम्	अमरिष्याव	अमरिष्याम

द्रष्टव्य—सात लकारों के कोष्ट में कुछ धातुओं के प्रथम पुरुष के एक वचन में रूप निम्नलिखित हैं।

द्वितीयः पाठः

संस्कृत	हिन्दी	इंगलिश	लट्	लुट्
लिख्	=लिखना	To write	लिखति	लेखिष्यति
स्पृश्	=छूना	To touch	स्पृशति	स्प्रक्ष्यति=स्पर्क्ष्यति
प्रच्छ्	=पूछना	To ask	पृच्छति	प्रक्ष्यति
इष्	=इच्छा करना	To desire	इच्छति	एषिष्यति
विश्	=प्रवेश करना	To enter	विशति	वेक्ष्यति
कुट्	=कुटिलता करना	To evade	कुटति	कुटिष्यति
कृत्(कृन्त)	=काटना	To bite	कृन्तति	कर्तिष्यति=कर्त्स्यति
व्रश्च्(वृश्च)	=डंक मारना	To sting	वृश्चति	व्रश्चिष्यति=व्रक्ष्यति
व्यच्(विच्)	=छलना,ठगना	To swindle	विचति	व्यचिष्यति
सृज्	=उत्पन्न करना	To create	सृजति	स्रक्ष्यति
मुच्(मुञ्च)	=छोड़ना	To leave	मुञ्चति	मोक्ष्यति
मुच्(मुञ्च)	=छोड़ना	To relinquish	मुञ्चते	मोक्ष्यते
विद्(विन्द)	=प्राप्त करना	To get	विन्दति	वेत्स्यति
विद्(विन्द)	=प्राप्त करना	To get	विन्दते	वेत्स्यते
क्षिप्	=फेंकना	To throw	क्षिपति	क्षेप्स्यति
क्षिप्	=फेंकना	To throw	क्षिपते	क्षेप्स्यते

तृतीयः पाठः

तुदादि गण के उदाहरण

१—किं तव चरणे कण्टकोऽतुदत्=क्या तेरे पैर में काँटा चुभ गया? Did thorn pierce thy foot?

२—मम कटिप्रदेशे तुदति=मेरे कमर में दर्द होता है। There is pain in my waist.

लोट्	विधिलिङ्	लङ्	लुङ्	हेतुहेतुमद्भाव
लिखतु	लिखेत्	अलिखत्	अलेखीत्	अलेखिष्यत्
स्पृशतु	स्पृशेत्	अस्पृशत्	अस्प्राक्षीत्=अस्पार्क्षीत्	अस्प्रक्ष्यत्=अस्पर्क्ष्यत्
पृच्छतु	पृच्छेत्	अपृच्छत्	अप्राक्षीत्	अप्रक्ष्यत्
इच्छतु	इच्छेत्	ऐच्छत	ऐषीत्	ऐषिष्यत्
विशतु	विशेत्	अविशत्	अविक्षत्	अवेक्ष्यत्
कुटतु	कुटेत्	अकुटत्	अकुटीत्	अकुटिष्यत्
कृन्ततु	कृन्तेत्	अकृन्तत्	अकर्तीत्	अकर्तिष्यत्=अकर्त्स्यत्
वृश्चतु	वृश्चेत्	अवृश्चत्	अव्रश्चीत्=अव्राक्षीत्	अव्रश्चिष्यत्=अव्रक्ष्यत्
विचतु	विचेत्	अविचत्	अव्याचीत्=अव्यचीत्	अव्यचिष्यत्
सृजतु	सृजेत्	असृजत्	अस्राक्षीत्	अस्रक्ष्यत्
मुञ्चतु	मुञ्चेत्	अमुञ्चत्	अमुचत्	अमोक्ष्यत्
मुञ्चताम्	मुञ्चेत	अमुञ्चत्	अमुक्त	अमोक्ष्यत
विन्दतु	विन्देत्	अविन्दत्	अविदत्	अवेत्स्यत्
विन्दताम्	विन्देत	अविन्दत	अवेदिष्ट=अवित्त	अवेत्स्यत
क्षिपतु	क्षिपेत्	अक्षिपत्	अक्षैप्सीत्	अक्षेप्स्यत्
क्षिपताम्	क्षिपेत	अक्षिपत	अक्षिप्त	अक्षेप्स्यत

३—सूचिका मां तोत्स्यति=सुई मुझे चुभ जायेगी। The neadle will pinch me.

४—श्री कृष्णोऽर्जुनमुपादिशत्=भगवान् ने अर्जुन को उपदेश दिया। Sri Krisna advised Arjun.

५—गुरुः मामिदं वचनमुपादिशत्=गुरु ने मुझे इस वचन का उपदेश दिया। The preceptor advised me this voice.

६—त्वं न कुटेः=तुझे कुटिलता नहीं करनी चाहिये। Thou must not evade.

सु माम् अविचत्=उसने मुझे ठग लिया। He swindled me.

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिये—

(१) उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं, ज्ञानिनः तत्त्व दर्शिनः (२) नहि सुप्तस्य सिंहस्य, प्रविशन्ति मुखे मृगाः। (३) भ्रज्जकः भ्राष्टे चणकान् भृज्जति। (४) वृश्चिको मामवृश्चत् (५) मम अक्षि स्फुरति (६) छात्राः क्रीडाक्षेत्रे कन्दूकमुत्क्षिपन्ति (७) सज्जनाः परस्परं विमृशन्ति (८) मालाकारो ग्रीष्मऋतौ ह्रस्वपादपान् जलेन सिञ्चति (९) मूषकाः वस्त्राणि अकृन्तन् (१०) शिशुः शीतेन सीदति (११) सा गोधूमान् पिंशति (१२) स मामभिलत् (१३ सा त्वयिप्रसीदति।

संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(१) आज तुमने अनुवाद क्यों नहीं लिखा ? (२) पिता जी ने मुझे उपदेश दिया, परन्तु मैंने एक न माना (३) मेरी दाहिनी आँख फड़कती है (४) दुष्ट मेरे घर में कभी न घुसने पावे। (५) वह मेरे ऊपर प्रसन्न होता है (६) तुमको अपनी माँ से पूछना चाहिये (७) दर्जी कैंची से कपड़ों को काटता है (८) वह फड़फड़ाया (९) लड़के चाकू से कलम काटते हैं (१०) किसी के ऊपर कङ्कड़ी मत फेंको (११) कूड़ा करकट धूरे पर फेंक दो (१२) मेरा हाथ छुओ (१३) बच्चा शरदी से दुःखी होता है (१४) भड़भुजे भट्ठी में चनों को भूनते हैं (१५) आपस में परामर्श कर लेना चाहिये (१६) फर्श पर पानी छिड़क दो (१७) वह आटा पीसती है (१८) विच्छू डंक मार देगा (१९) साँप ने डश लिया।

चतुर्दशोऽध्यायः

प्रथमः पाठः

अथ रुधादि गण प्रकरणम्

नियम—इस गण में प्रत्यय से पूर्व धातु के स्वर के अन्त में "न" चिह्न लगाया जाता है, और "र, ष" से परे "न" को "ण" हो जाता है। जैसे—"रु, न, ध्, ति" यहाँ पर रकार से परे नकार है, अतः "न" को "ण" कर देने से "रुणद्धि" प्रयोग बना। इसी प्रकार सर्वत्र जान लेना चाहिये।

रुध्=रोकना To impede

'लट्' वर्तमान काल

	ए०	द्वि०	ब०	ए०	द्वि०	ब०
प्र० पु०	रुणद्धि	रुन्धः	रुन्धन्ति	रुन्धे	रुन्धाते	रुन्धते
म० पु०	रुणत्सि	रुन्धः	रुन्ध	रुन्त्से	रुन्धाथे	रुन्ध्वे
उ० पु०	रुणध्मि	रुन्ध्वः	रुन्ध्मः	रुन्धे	रुन्ध्वहे	रुन्ध्महे

'लृट्' सामान्य भविष्यत्काल

प्र० पु०	रोत्स्यति	रोत्स्यतः	रोत्स्यन्ति	रोत्स्यते	रोत्स्येते	रोत्स्यन्ते
म० पु०	रोत्स्यसि	रोत्स्यथः	रोत्स्यथ	रोत्स्यसे	रोत्स्येथे	रोत्स्यध्वे
उ० पु०	रोत्स्यामि	रोत्स्यावः	रोत्स्यामः	रोत्स्ये	रोत्स्यावहे	रोत्स्यामहे

'लोट्' आज्ञावाचक

प्र० पु०	रुणद्धु = रुन्धात्	रुन्धाम्	रुन्धन्तु	रुन्धाम्	रुन्धाताम्	रुन्धताम्
म० पु०	रुन्धि = रुन्धात्	रुन्धम्	रुन्ध	रुन्त्स्व	रुन्धाथाम्	रुन्ध्वम्
उ० पु०	रुणधानि	रुणधाव	रुणधाम	रुणधै	रुणधावहै	रुणधामहै

'लङ्' अनद्यतनभूतकाल

प्र० पु०	अरुणत्	अरुन्धाम्	अरुन्धन्	अरुन्ध	अरुन्धाताम्	अरुन्धत
म० पु०	अरुणः = अरुणत्	अरुन्धम्	अरुन्ध	अरुन्धाः	अरुन्धाथाम्	अरुन्द्ध्वम्
उ० पु०	अरुणधम्	अरुन्ध्व	अरुन्ध्म	अरुन्धि	अरुन्ध्वहि	अरुन्धमहि

विधिलिङ्

प्र० पु०	रुन्ध्यात्	रुन्ध्याताम	रुन्ध्युः	रुन्धीत	रुन्धीयाताम्	रुन्धीरन्
म० पु०	रुन्ध्याः	रुन्ध्यातम्	रुन्ध्यात	रुन्धीथाः	रुन्धीयाथाम्	रुन्धीध्वम्
उ० पु०	रुन्ध्याम्	रुन्ध्याव	रुन्ध्याम	रुन्धीय	रुन्धीवहि	रुन्धीमहि

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	रुध्यात्	रुध्यास्ताम्	रुध्यासुः	रुत्सीष्ट	रुत्सीयास्ताम्	रुत्सीरन्
म० पु०	रुध्याः	रुध्यास्तम्	रुध्यास्त	रुत्सीष्ठाः	रुत्सीयास्थाम्	रुत्सीध्वम्
उ० पु०	रुध्यासम्	रुध्यास्व	रुध्यास्म	रुत्सीय	रुत्सीवहि	रुत्सोमहि

लुङ् सामान्य भूतकाल

प्र० पु०	अरौत्सीत्	अरौद्धाम्	अरौत्सुः	अरुद्ध	अरुत्साताम्	अरुत्सत
म० पु०	अरौत्सीः	अरौद्धम्	अरौद्ध	अरुद्धाः	अरुत्साथाम्	अरुद्ध्वम्
उ० पु०	अरौत्सम्	अरौत्स्व	अरौत्स्म	अरुत्सि	अरुत्स्वहि	अरुत्स्महि

परस्मैपद में एक प्रकार का रूप और भी बनता है।

प्र० पु०	अरुधत्	अरुधताम्	अरुधन्
म० पु०	अरुधः	अरुधतम्	अरुधत
उ० पु०	अरुधम्	अरुधाव	अरुधाम

'लृङ्' हेतुहेतुमद्भावभविष्यत्

प्र० पु०	अरोत्स्यत्	अरोत्स्यताम्	अरोत्स्यन्	अरोत्स्यत	अरोत्स्येताम्	अरोत्स्यन्त
म० पु०	अरोत्स्यः	अरोत्स्यतम्	अरोत्स्यत	अरोत्स्यथाः	अरोत्स्येथाम्	अरोत्स्यध्वम्
उ० पु०	अरोत्स्यम्	अरोत्स्याव	अरोत्स्याम	अरोत्स्ये	अरोत्स्यावहि	अरोत्स्यामहि

भिद् = फाड़ना To rend, to separate

'लट्' वर्तमान काल

प्र० पु०	भिनत्ति	भिन्तः	भिन्दन्ति	भिन्ते	भिन्दाते	भिन्दते
म० पु०	भिनत्सि	भिन्थः	भिन्थ	भिन्त्से	भिन्दाथे	भिन्ध्वे
उ० पु०	भिनद्मि	भिन्द्वः	भिन्द्मः	भिन्दे	भिन्द्वहे	भिन्द्महे

'लृट्' सामान्य भविष्यत्काल

प्र० पु०	भेत्स्यति	भेत्स्यतः	भेत्स्यन्ति	भेत्स्यते	भेत्स्येते	भेत्स्यन्ते
म० पु०	भेत्स्यसि	भेत्स्यथः	भेत्स्यथ	भेत्स्यसे	भेत्स्येथे	भेत्स्यध्वे
उ० पु०	भेत्स्यामि	भेत्स्यावः	भेत्स्यामः	भेत्स्ये	भेत्स्यावहे	भेत्स्यामहे

"लोट्" आज्ञा वाचक

प्र० पु०	भिनत्तु = भिन्तात्	भिन्ताम्	भिन्दन्तु	भिन्ताम्	भिन्दाताम्	भिन्दताम्
म० पु०	भिन्धि = भिन्तात्,	भिन्तम्	भिन्त	भिन्त्स्व	भिन्दाथाम्	भिन्ध्वम्
उ० पु०	भिनदानि	भिनदाव	भिनदाम	भिनदै	भिनदावहै	भिनदामहै

"लङ्" अनद्यतन भूतकाल

प्र० पु०	अभिनत् = अभिनद्	अभिन्ताम्	अभिन्दन्	अभिन्त	अभिन्दाताम्	अभिन्दत
म० पु०	अभिनः = अभिनत्	अभिन्तम्	अभिन्त	अभिन्थाः	अभिन्दाथाम्	अभिन्ध्वम्
उ० पु०	अभिन्दम्	अभिन्द्व	अभिन्द्म	अभिन्दि	अभिन्द्वहि	अभिन्द्महि

विधिलिङ्

प्र० पु०	भिन्द्यात्	भिन्द्याताम्	भिन्द्युः	भिन्दीत	भिन्दीयाताम्	भिन्दीरन्
म० पु०	भिन्द्याः	भिन्द्यातम्	भिन्द्यात	भिन्दीथाः	भिन्दीयाथाम्	भिन्दीध्वम्
उ० पु०	भिन्द्याम्	भिन्द्याव	भिन्द्याम	भिन्दीय	भिन्दीवहि	भिन्दीमहि

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	भिद्यात्	भिद्यास्ताम्	भिद्यासुः	भित्सीष्ट	भित्सीयास्ताम्	भित्सीरन्
म० पु०	भिद्याः	भिद्यास्तम्	भिद्यास्त	भित्सीष्ठाः	भित्सीयास्थाम्	भित्सीध्वम्
उ० पु०	भिद्यासम्	भिद्यास्व	भिद्यास्म	भित्सीय	भित्सीवहि	भित्सीमहि

लुङ् सामान्यभूतकाल (परस्मैपदी दूसरा रूप)

प्र० पु०	अभिदत्	अभिदताम्	अभिदन्
म० पु०	अभिदः	अभिदतम्	अभिदत
उ० पु०	अभिदम्	अभिदाव	अभिदाम

"लुङ्" सामान्यभूतकाल

प्र० पु०	अभैत्सीत्	अभैत्ताम्	अभैत्सुः	अभित्त	अभित्साताम्	अभित्सत
म० पु०	अभैत्सीः	अभैत्तम्	अभैत्त	अभित्थाः	अभित्साथाम्	अभिद्ध्वम्
उ० पु०	अभैत्सम्	अभैत्स्व	अभैत्स्म	अभित्सि	अभित्स्वहि	अभित्स्महि

"लृङ्" हेतुहेतुमद्भविष्यत्

प्र० पु०	अभेत्स्यत्	अभेत्स्यताम्	अभेत्स्यन्	अभेत्स्यत	अभेत्स्येताम्	अभेत्स्यन्त
म० पु०	अभेत्स्यः	अभेत्स्यतम्	अभेत्स्यत	अभेत्स्यथाः	अभेत्स्येथाम्	अभेत्स्यध्वम्
उ० पु०	अभेत्स्यम्	अभेत्स्याव	अभेत्स्याम	अभेत्स्ये	अभेत्स्यावहि	अभेत्स्यामहि

छिद् = काटना To cut

"लट्" वर्तमानकाल

प्र० पु०	छिनत्ति	छिन्तः	छिन्दन्ति	छिन्ते	छिन्दाते	छिन्दते
म० पु०	छिनत्सि	छिन्थः	छिन्थ	छिन्त्से	छिन्दाथे	छिन्द्ध्वे
उ० पु०	छिन्द्मि	छिन्द्वः	छिन्द्मः	छिन्दे	छिन्द्वहे	छिन्द्महे

"लृट्" सामान्यभविष्यत्काल

प्र० पु०	छेत्स्यति	छेत्स्यतः	छेत्स्यन्ति	छेत्स्यते	छेत्स्येते	छेत्स्यन्ते
म० पु०	छेत्स्यसि	छेत्स्यथः	छेत्स्यथ	छेत्स्यसे	छेत्स्येथे	छेत्स्यध्वे
उ० पु०	छेत्स्यामि	छेत्स्यावः	छेत्स्यामः	छेत्स्ये	छेत्स्यावहे	छेत्स्यामहे

"लोट्" आज्ञा वाचक

प्र० पु०	छिनत्तु = छिन्तात्,	छिन्ताम्	छिन्दन्तु	छिन्ताम्	छिन्दाताम्	छिन्दताम्
म० पु०	छिन्धि = छिन्तात्,	छिन्तम्	छिन्त	छिन्त्स्व	छिन्दाथाम	छिन्ध्वम्
उ० पु०	छिनदानि	छिनदाव	छिनदाम	छिनदै	छिनदावहै	छिनदामहै

"लङ्" अनद्यतन भूतकाल

प्र० पु०	अछिनत् = अछिनद्	अछिन्ताम्	अछिन्दन्	अछिन्त	अछिन्दाताम्	अछिन्दत
म० पु०	अछिनः = अछिनत्	अछिन्तम्	अछिन्त	अछिन्थाः	अछिन्दाथाम्	अछिन्ध्वम्
उ० पु०	अछिनदम्	अछिन्द्व	अछिन्द्म	अछिन्दि	अछिन्द्वहि	अछिन्द्महि

विधि लिङ्

प्र० पु०	छिन्द्यात्	छिन्द्याताम्	छिन्द्युः	छिन्दीत	छिन्दीयाताम्	छिन्दीरन्
म० पु०	छिन्द्याः	छिन्द्यातम्	छिन्द्यात	छिन्दीथाः	छिन्दीयाथाम्	छिन्दीध्वम्
उ० पु०	छिन्द्याम्	छिन्द्याव	छिन्द्याम	छिन्दीय	छिन्दीवहि	छिन्दीमहि

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	छिद्यात्	छिद्यास्ताम्	छिद्यासुः	छित्सीष्ट	छित्सीयास्ताम्	छित्सीरन्
म० पु०	छिद्याः	छिद्यास्तम्	छिद्यास्त	छित्सीष्ठाः	छित्सीयास्थाम्	छित्सीध्वम्
उ० पु०	छिद्यासम्	छिद्यास्व	छिद्यास्म	छित्सीय	छित्सीवहि	छित्सीमहि

"लुङ्" सामान्य भूतकाल

प्र० पु०	अछैत्सीत्	अछैत्ताम्	अछैत्सुः	अछित्त	अछित्साताम्	अछित्सत
म० पु०	अछैत्सीः	अछैत्तम्	अछैत्त	अछित्थाः	अछित्साथाम्	अछिद्ध्वम्
उ० पु०	अछैत्सम्	अछैत्स्व	अछैत्स्म	अछित्सि	अछित्स्वहि	अछित्स्महि

सामान्य भूतकाल (परस्मैदी दूसरा रूप)

प्र० पु०	अछिदत्	अछिदताम्	अछिदन्
म० पु०	अछिदः	अछिदतम्	अछिदत
उ० पु०	अछिदम्	अछिदाव	अछिदाम

"लृङ्" हेतु हेतु मद्भाव भविष्यत्

प्र० पु०	अछेत्स्यत्	अछेत्स्यताम्	अछेत्स्यन्	अछेत्स्यत	अछेत्स्येताम्	अछेत्स्यन्त
म० पु०	अछेत्स्यः	अछेत्स्यतम्	अछेत्स्यत	अछेत्स्यथाः	अछेत्स्येथाम्	अछेत्स्यध्वम्
उ० पु०	अछेत्स्यम्	अछेत्स्याव	अछेत्स्याम	अछेत्स्ये	अछेत्स्यावहि	अछेत्स्यामहि

द्वितीयः पाठ

युज् = मिलाना, जोड़ना To join to add

"लट्" वर्तमान काल

प्र० पु०	युनक्ति	युङ्क्तः	युञ्जन्ति	युङ्क्ते	युञ्जाते	युञ्जते
म० पु०	युनक्ति	युङ्क्थः	युङ्क्थ	युङ्क्षे	युञ्जाथे	युङ्ध्वे
उ० पु०	युनज्मि	युञ्ज्वः	युञ्ज्मः	युञ्जे	युञ्ज्वहे	युञ्ज्महे

'लृट्' सामान्य भविष्यत्काल

प्र० पु०	योच्यति	योच्यतः	योच्यन्ति	योच्यते	योच्येते	योच्यन्ते
म० पु०	योदयसि	योच्यथः	योच्यथ	योच्यसे	योच्येथे	योच्यध्वे
उ० पु०	योच्यामि	योच्यावः	योच्यामः	योच्ये	योच्यावहे	योच्यामहे

"लोट्" आज्ञावाचक

प्र० पु०	युनक्तु = युङ्क्तात्	युङ्क्ताम्	युञ्जन्तु	युङ्क्ताम्	युञ्जाताम्	युञ्जताम्
म० पु०	युङ्ग्धि = युङ्क्तात,	युङ्क्तम्	युङ्क्त	युङ्‌द्व = युञ्ज्स्व	युञ्जाथाम्	युङ्ध्वम्
उ० पु०	युनजानि	युनजाव	युनजाम	युनजै	युनजावहै	युनजामहै

'लङ्' अनद्यतन भूतकाल

प्र० पु०	अयुनक् = अयुनग्	अयुङ्क्ताम्	अयुञ्जन्	अयुङ्क्त	अयुञ्जाताम्	अयुञ्जत
म० पु०	अयुनः = अयुनक्,	अयुङ्क्तम्	अयुङ्क्त	अयुङ्क्थाः	अयुञ्जाथाम्	अयुङ्ग्ध्वम्
उ० पु०	अयुञ्जम्	अयुञ्ज्व	अयुञ्ज्म	अयुञ्जि	अयुञ्ज्वहि	अयुञ्ज्महि

विधिलिङ्

प्र० पु०	युञ्ज्यात्	युञ्ज्याताम्	युञ्ज्युः	युञ्जीत	युञ्जीयाताम्	युञ्जीरन्
म० पु०	युञ्ज्याः	युञ्ज्यातम्	युञ्ज्यात	युञ्जीथाः	युञ्जीयाथाम्	युञ्जीध्वम्
उ० पु०	युञ्ज्याम्	युञ्ज्याव	युञ्ज्याम	युञ्जीय	युञ्जीवहि	युञ्जीमहि

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	युज्यात्	युज्यास्ताम्	युज्यासुः	युक्षीत	युक्षीयास्ताम्	युक्षीरन्
म० पु०	युज्याः	युज्यास्तम्	युज्यास्त	युक्षीथाः	युक्षीयास्थाम्	युक्षीध्वम्
उ० पु०	युज्यास	युज्यास्व	युज्यास्म	युक्षीय	युक्षीवहि	युक्षीमहि

"लुङ्" सामान्य भूतकाल

प्र० पु०	अयौक्षीत्	अयौक्ताम्	अयौक्षुः	अयुक्त	अयुक्षाताम्	अयुक्षत
म० पु०	अयौक्षीः	अयौक्तम्	अयौक्त	अयुक्थाः	अयुक्षाथाम्	अयुग्ध्वम्
उ० पु०	अयौक्षम्	अयौक्ष्व	अयौक्ष्म	अयुक्षि	अयुक्ष्वहि	अयुक्ष्महि

सामान्य भूतकाल (परस्मैपदी दूसरा रूप)

प्र० पु०	अयुजत्	अयुजताम्	अयुजन
म० पु०	अयुजः	अयुजतम्	अयुजत
उ० पु०	अयुजम्	अयुजाव	अयुजाम

हेतुहेतु मद्भाव भविष्यत

प्र० पु०	अयोद्‌यत्	अयोद्‌यताम्	अयोद्‌यन्	अयोदयत	अयोद्‌येताम्	अयोद्‌यन्त
म० पु०	अयोद्‌यः	अयोद्‌यतम्	अयोदयत	अयोद्‌यथाः	अयोद्‌येथाम्	अयोद्‌यध्वम्
उ० पु०	अयोद्‌यम्	अयोद्‌याव	अयोद्‌याम	अयोद्‌ये	अयोद्‌यावहि	अयोद्‌यामहि

हिंस् = मारना To Kill केवल परस्मैपदी है

लट् वर्तमानकाल

प्र० पु०	हिनस्ति	हिंस्तः	हिंसन्ति
म० पु०	हिनस्सि	हिंस्थः	हिंस्थ
उ० पु०	हिनस्मि	हिंस्वः	हिंस्मः

'लृट्' भविष्यत्काल

प्र० पु०	हिंसिष्यति	हिंसिष्यतः	हिंसिष्यन्ति
म० पु०	हिंसिष्यसि	हिंसिष्यथः	हिंसिष्यथ
उ० पु०	हिंसिष्यामि	हिंसिष्यावः	हिंसिष्यामः

'लोट्' आज्ञावाचक

प्र० पु०	हिनस्तु = हिंस्तात्	हिंस्ताम्	हिंसन्तु
म० पु०	हिन्धि = हिंस्तात्	हिंस्तम्	हिंस्त
उ० पु०	हिनसानि	हिनसाव	हिनसाम

"लङ्" अनद्यतन भूतकाल

प्र० पु०	अहिनत् = अहिनद्,	अहिंस्ताम्	अहिंसन्
म० पु०	अहिनः = अहिनत्	अहिंस्तम्	अहिंस्त
उ० पु०	अहिनसम्	अहिंस्व	अहिंस्म

विधिलिङ्

प्र० पु०	हिंस्यात्	हिंस्याताम्	हिंस्युः
म० पु०	हिंस्याः	हिंस्यातम्	हिंस्यात
उ० पु०	हिंस्याम्	हिंस्याव	हिंस्याम

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	हिंस्यात्	हिंस्यास्ताम्	हिंस्यासुः
म० पु०	हिंस्याः	हिंस्यास्तम्	हिंस्यास्त
उ० पु०	हिंस्यासम्	हिंस्यास्व	हिंस्यास्म

"लुङ्" सामान्य भूतकाल

प्र० पु०	अहिंसीत्	अहिंसिष्टाम्	अहिंसिषुः
म० पु०	अहिंसीः	अहिंसिष्टम्	अहिंसिष्ट
उ० पु०	अहिंसिषम्	अहिंसिष्व	अहिंसिष्म

'लृङ्' हेतुहेतु मद्भावभविष्यत्

प्र० पु०	अहिंसिष्यत्	अहिंसिष्यताम्	अहिंसिष्यन्
म० पु०	अहिंसिष्यः	अहिंसिष्यतम्	अहिंसिष्यत
उ० पु०	अहिंसिष्यम्	अहिंसिष्याव	अहिंसिष्याम

भञ्ज् = तोड़ना To break

'लट्' वर्तमानकाल

प्र० पु०	भनक्ति	भङ्क्तः	भञ्जन्ति
म० पु०	भनक्षि	भङ्क्थ;	भङ्क्थ
उ० पु०	भनज्मि	भञ्ज्वः	भञ्ज्मः

'लृट्' भविष्यकाल

प्र० पु०	भङ्क्ष्यति	भङ्क्ष्यतः	भङ्क्ष्यन्ति
म० पु०	भङ्क्ष्यसि	भङ्क्ष्यथः	भङ्क्ष्यथ
उ० पु०	भङ्क्ष्यामि	भङ्क्ष्यावः	भङ्क्ष्यामः

'लोट्' आज्ञावाचक

प्र० पु०	भनक्तु = भङ्क्तात्	भङ्क्ताम्	भञ्जन्तु
म० पु०	भङ्ग्धि = भङ्क्तात्	भङ्क्तम्	भङ्क्त
उ० पु०	भनजानि	भनजाव	भनजाम

"लङ्" अनद्यतन भूतकाल

प्र० पु०	अभनग् = अभनक्	अभङ्क्ताम्	अभञ्जन्
म० पु०	अभनः = अभनक्	अभङ्क्तम्	अभङ्क्त
उ० पु०	अभञ्जम्	अभञ्ज्व	अभञ्ज्म

विधिलिङ्

प्र० पु०	भञ्ज्यात्	भञ्ज्याताम्	भञ्ज्युः
म० पु०	भञ्ज्याः	भञ्ज्यातम्	भञ्ज्यात
उ० पु०	भञ्ज्याम्	भञ्ज्याव	भञ्ज्याम

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	भञ्ज्यात्	भज्यास्ताम्	भज्यासुः
म० पु०	भज्याः	भज्यास्तम्	भज्यास्त
उ० पु०	भज्यासम्	भज्यास्व	भज्यास्म

"लुङ्" सामान्य भूतकाल

प्र० पु०	अभाङ्क्षीत्	अभाङ्क्ताम्	अभाङ्क्षुः
म० पु०	अभाङ्क्षीः	अभाङ्क्तम्	अभाङ्क्त
उ० पु०	अभाङ्क्षम्	अभाङ्क्ष्व	अभाङ्क्ष्म

'लृङ्' हेतुहेतुमद्भाव भविष्यत्

प्र० पु०	अभङ्क्ष्यत्	अभङ्क्ष्यताम्	अभङ्क्ष्यन्
म० पु०	अभङ्क्ष्यः	अभङ्क्ष्यतम्	अभङ्क्ष्यत
उ० पु०	अभङ्क्ष्यम्	अभङ्क्ष्याव	अभङ्क्ष्याम

'भुज्' पालन करना, भोजन करना (To protect, to eat)

द्रष्टव्य—"भुज्" धातु का प्रयोग पालन अर्थ में परस्मैपद में होता है और भोजन करने के अर्थ में आत्मने पद में होता है।

रूप अगले पृष्ठ पर देखिए

"लट्" वर्तमान काल

प्र० पु०	भुनक्ति	भुङ्क्तः	भुञ्जन्ति	भुङ्क्ते	भुञ्जाते	भुञ्जते
म० पु०	भुनक्षि	भुङ्क्थः	भुङ्क्थ	भुङ्क्षे	भुञ्जाथे	भुङ्ध्वे
उ० पु०	भुनज्मि	भुञ्ज्वः	भुञ्ज्मः	भुञ्जे	भुञ्ज्वहे	भुञ्ज्महे

'लृट्' भविष्यत्काल

प्र० पु०	भोक्ष्यति	भोक्ष्यतः	भोक्ष्यन्ति	भोक्ष्यते	भोक्ष्येते	भोक्ष्यन्ते
म० पु०	भोक्ष्यसि	भोक्ष्यथः	भोक्ष्यथ	भोक्ष्यसे	भोक्ष्येथे	भोक्ष्यध्वे
उ० पु०	भोक्ष्यामि	भोक्ष्यावः	भोक्ष्यामः	भोक्ष्ये	भोक्ष्यावहे	भोक्ष्यामहे

"लोट्" आज्ञावाचक

प्र० पु०	भुनक्तु=भुङ्क्तात्,	भुङ्क्ताम्	भुञ्जन्तु	भुङ्क्ताम्	भुञ्जाताम्	भुञ्जताम्
म० षु०	भुङ्ग्धि=भुङ्क्तात्	भुङ्क्तम्	भुङ्क्त	भुङ्क्ष्व	भुञ्जाथाम्	भुङ्ध्वम्
उ० पु०	भुनजानि	भुनजाव	भुनजाम	भुनजै	भुनजावहै	भुनजामहै

विधिलिङ्

प्र० पु०	भुञ्ज्यात्	भुञ्ज्याताम्	भुञ्ज्युः	भुञ्जीत	भुञ्जीयाताम्	भुञ्जीरन्
म० पु०	भुञ्ज्याः	भुञ्ज्यातम्	भुञ्ज्यात	भुञ्जीथाः	भुञ्जीयाथाम्	भुञ्जीध्वम्
उ० पु०	भुञ्ज्याम्	भुञ्ज्याव	भुञ्ज्याम	भुञ्जीय	भुञ्जीवहि	भुञ्जीमहि

"लङ्" अनद्यतन भूत

प्र० पु०	अभुनक्=अभुनग्	अभुङ्क्ताम्	अभुञ्जन्	अभुङ्क्त	अभुञ्जाताम्	अभुञ्जत
म० पु०	अभुनः=अभुनक्	अभुङ्क्तम्	अभुङ्क्त	अभुङ्क्थाः	अभुञ्जाथाम्	अभुङ्ग्ध्वम्
उ० पु०	अभुञ्जम्	अभुञ्ज्व	अभुञ्ज्म	अभुञ्जि	अभुञ्ज्वहि	अभुञ्ज्महि

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	भुज्यात	भुज्यास्ताम्	भुज्यासुः	भुक्षीष्ट	भुक्षीयास्ताम्	भुक्षीरन्
म० पु०	भुज्या	भुज्यास्तम्	भुज्यास्त	भुक्षीष्ठाः	भुक्षीयास्थाम्	भुक्षीध्वम्
उ० पु०	भुज्यासम्	भुज्यास्व	भुज्यास्म	भुक्षीय	भुक्षीवहि	भुक्षीमहि

"लुङ्" सामान्य भूतकाल

प्र० पु०	अभौक्षीत्	अभौक्ताम्	अभौक्षुः	अभुक्त	अभुक्षाताम्	अभुक्षत
म० पु०	अभौक्षीः	अभौक्तम्	अभौक्त	अभुक्थाः	अभुक्षाथाम्	अभुग्ध्वम्
उ० पु०	अभौक्षम्	अभौक्ष्व	अभौक्ष्म	अभुक्षि	अभुक्ष्वहि	अभुक्ष्महि

"लृङ्" हेतु हेतु मद्भाव भविष्यत्

प्र० पु०	अभोक्ष्यत्	अभोक्ष्यताम्	अभोक्ष्यन्	अभोक्ष्यत्	अभोक्ष्येताम्	अभोक्ष्यन्त
म० पु०	अभोक्ष्यः	अभोक्ष्यतम्	अभोक्ष्यत	अभोक्ष्यथाः	अभोक्ष्येयाम्	अभोक्ष्यध्वम्
उ० पु०	अभोक्ष्यम्	अभोक्ष्याव	अभोक्ष्याम	अभोक्ष्ये	अभोक्ष्यावहि	अभोक्ष्यामहि

रुधादिगण के उदाहरण

१—गोपाः गौशालायां गाः अरुणत्=ग्वाले ने गौशाला में गायों को रोका The milkman impeded the cows in the cowpen.

२—शास्त्रं हृदयस्य ग्रन्थिं छिनत्ति=शास्त्र हृदय का अन्धकार काटता है The science removes the ignorance of heart.

३—गणितज्ञोऽङ्कान् युनक्ति=गणितज्ञ अङ्कों को जोड़ता है। The mathematician adds the figures.

४—मोहनो माम् औनत्=मोहन ने मुझे भिगो दिया। Mohan weted me.

५—दासी गोधूमान् पिनष्टि=नौकरानी गेहूँ पीसती है। Maid servant grinds the wheat.

६—सोहनो मम कलशमभनक्=सोहन ने मेरा घड़ा तोड़ दिया Sohan broke my pitcher

७—इन्धनानि चुल्हिकायाम् इन्धते=लकड़ियाँ चूल्हा में प्रदीप्त होती हैं। woodsticks flare in the hearth.

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिये।

मातेव रक्षति पितेव हिते नियुङ्क्ते,
कान्तेव चाभिरमयत्यपनीय खेदम्।
कीर्तिञ्च दिक्षु विमलां वितनोति लक्ष्मीं,
किं किं न साधयति कल्पलतेव विद्या।

१—असिना शत्रूंश्छिनत्ति २—पिण्ढि गोधूमान् ३—पिण्ढि ओषधीः ४—मा हिन्धि कान्। ५—सा तं मलं रिणक्ति ६—किं दासः काष्टम् अभिनत्? ७—किं दासी पिष्टिं पिनष्टि? ८—वयं न केनापि हिंस्याम ९—सुरेन्द्रो लेखनीम भाङ्क्षीत्। १०—भङ्ग्धि मम बन्धनं येनाहं बहिरागच्छेयम् ११—किं संख्यामयुनक्? १२—किमिन्धनानि ऐन्धत? १३—किं त्वं पिष्टिं पेक्ष्यसि १४—मम वस्त्रमौनत् १५ स मलमरिणक्।

संस्कृत में अनुवाद कीजिये।

(१) ग्वाला गायों को गौशाले में रोकता है (२) नौकर लकड़ी फाड़ता है (३) नौकरानी आटा पीसती है। (४) क्या लकड़ियाँ प्रदीप्त हो गईं? (५) गोविन्द ने मेरी कलम तोड़ दी (६) तुझे किसी को नहीं मारना चाहिये (७) तुम मेरे बन्धन तोड़ो (८) देवेन्द्र ने घड़े को तोड़ दिया (९) क्या बढ़ई पाया में छेद करता है (१०) लड़के हिसाब जोड़ते हैं (११) वह वस्त्रों को पानी से भिजाता है। (१२) मैं भोजन करता हूँ (१३) राजा पृथिवी को भोगता है (१४)

पञ्चदशोऽध्यायः

प्रथम पाठः

अथ तनादिगण प्रकरणम्

नियम—इस गण में प्रत्यय से पूर्व और धातु के अन्त में "उ" विकरण जोड़कर पुनः उकार को ओ गुणकर देते हैं। तन्+उ+ति=तनोति रूप बना। इसी प्रकार सर्वत्र जान लेना चाहिये।

तन्=फैलाना To spread

"लट्" वर्तमान काल

	परस्मैपदी			आत्मनेपदी		
प्र० पु०	तनोति	तनुतः	तन्वन्ति	तनुते	तन्वाते	तन्वते
म० पु०	तनोषि	तनुथः	तनुथ	तनुषे	तन्वाथे	तनुध्वे
उ० पु०	तनोमि	तनुवः तन्वः	तनुमः तन्मः	तन्वे	तनुवहे	तनुमहे

"लिट्" परोक्षभूतकाल

प्र० पु०	ततान	तेनतुः	तेनुः	तेने	तेनाते	तेनिरे
म० पु०	तेनिथ	तेनथुः	तेन	तेनिषे	तेनाथे	तेनिध्वे
उ० पु०	ततान	तेनिव	तेनिम	तेने	तेनिवहे	तेनिमहे

"लुट्" अनद्यतन भविष्यत्काल

प्र० पु०	तनिता	तनितारौ	तनितारः	तनिता	तनितारौ	तनितारः
म० पु०	तनितासि	तनितास्थः	तनितास्थ	तनितासे	तनितासाथे	तनिताध्वे
उ० पु०	तनितास्मि	तनितास्वः	तनितास्मः	तनिताहे	तनितास्वहे	तनितास्महे

"लृट्" सामान्य भविष्यत्काल

प्र० पु०	तनिष्यति	तनिष्यतः	तनिष्यन्ति	तनिष्यते	तनिष्येते	तनिष्यन्ते
म० पु०	तनिष्यसि	तनिष्यथः	तनिष्यथ	तनिष्यसे	तनिष्येथे	तनिष्यध्वे
उ० पु०	तनिष्यामि	तनिष्यावः	तनिष्यामः	तनिष्ये	तनिष्यावहे	तनिष्यामहे

"लोट्" आज्ञावाचक

प्र० पु०	तनोतु = तनुतात्,	तनुताम्	तन्वन्तु	तनुताम्	तन्वाताम्	तन्वताम्
म० पु०	तनु = तनुतात्	तनुतम्	तनुत	तनुष्व	तन्वाथाम्	तनुध्वम्
उ० पु०	तनवानि	तनवाव	तनवाम	तनवै	तनवावहै	तनवामहै

"लङ्" अनद्यतन भूतकाल

प्र० पु०	अतनोत्	अतनुताम्	अतन्वन्	अतनुत	अतन्वाताम्	अतन्वत
म० पु०	अतनोः	अतनुतम्	अतनुत	अतनुथाः	अतन्वाथाम्	अतनुध्वम्
उ० पु०	अतनवम्	अतनुव	अतनुम	अतन्वि	अतनुवहि	अतनुमहि

विधिलिङ्

प्र० पु०	तनुयात्	तनुयाताम्	तनुयुः	तन्वीत	तन्वीयाताम्	तन्वीरन्
म० पु०	तनुयाः	तनुयातम्	तनुयात	तन्वीथाः	तन्वीयाथाम्	तन्वीध्वम्
उ० पु०	तनुयाम्	तनुयाव	तनुयाम	तन्वीय	तन्वीवहि	तन्वीमहि

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	तन्यात्	तन्यास्ताम्	तन्यासुः	तनिषीष्ट	तनिषीयास्तम्	तनिषीरन्
म० पु०	तन्याः	तन्यास्तम्	तन्यास्त	तनिषीष्ठाः	तनिषीयास्थाम्	तनिषीध्वम्
उ० पु०	तन्यासम्	तन्यास्व	तन्यास्म	तनिषीय	तनिषीवहि	तनिषीमहि

"लुङ्" सामान्य भूतकाल

प्र० पु०	अतानीत्	अतानिष्टाम्	अतानिषुः	अतत=अतनिष्ट,	अतनिषाताम्	अतनिषत
म० पु०	अतानीः	अतानिष्टम्	अतानिष्ट	अतथाः=अतनिष्ठाः	अतनिषाथाम्	अतनिध्वम्
उ० पु०	अतानिषम्	अतानिष्व	अतानिष्म	अतनिषि	अतनिष्वहि	अतनिष्महि

सामान्यभूत (परस्मै पद का दूसरा रूप)

प्र० पु०	अतनीत्	अतनिष्टाम्	अतनिषुः
म० पु०	अतनीः	अतनिष्टम्	अतनिष्ट
उ० पु०	अतनिषम्	अतनिष्व	अतनिष्म

"लृङ्" हेतुहेतुमद् भाव भविष्यत्

प्र० पु०	अतनिष्यत्	अतनिष्यताम्	अतनिष्यन्	अतनिष्यत	अतनिष्येताम्	अतनिष्यन्त
म० पु०	अतनिष्यः	अतनिष्यतम्	अतनिष्यत	अतनिष्यथाः	अतनिष्येथाम्	अतनिष्यध्वम्
उ० पु०	अतनिष्यम	अतनिष्याव	अतनिष्याम	अतनिष्ये	अतनिष्यावहि	अतनिष्यामहि

कृ=करना To do

वर्तमान काल

प्र० पु०	करोति	कुरुतः	कुर्वन्ति	कुरुते	कुर्वाते	कुर्वते
म० पु०	करोषि	कुरुथः	कुरुथ	कुरुषे	कुर्वाथे	कुरुध्वे
उ० पु०	करोमि	कुर्वः	कुर्मः	कुर्वे	कुर्वहे	कुर्महे

"लिट्" परोक्षभूतकाल

प्र० पु०	चकार	चक्रतुः	चक्रुः	चक्रे	चक्राते	चक्रिरे
म० पु०	चकर्थ	चक्रथुः	चक्र	चकृषे	चक्राथे	चकृध्वे
उ० पु०	चकार	चकृव	चकृम	चक्रे	चकृवहे	चकृमहे

"लुट्" अनद्यतन भविष्यत्काल

प्र० पु०	कर्ता	कर्तारौ	कर्तारः	कर्ता	कर्तारौ	कर्तारः
म० पु०	कर्तासि	कर्तास्थः	कर्तास्थ	कर्तासे	कर्तासाथे	कर्ताध्वे
उ० पु०	कर्तास्मि	कर्तास्वः	कर्तास्मः	कर्ताहे	कर्तास्वहे	कर्तास्महे

"लृट्" सामान्य भविष्यत्काल

प्र० पु०	करिष्यति	करिष्यतः	करिष्यन्ति	करिष्यते	करिष्येते	करिष्यन्ते
म० पु०	करिष्यसि	करिष्यथः	करिष्यथ	करिष्यसे	करिष्येथे	करिष्यध्वे
उ० पु०	करिष्यामि	करिष्यावः	करिष्यामः	करिष्ये	करिष्यावहे	करिष्यामहे

"लोट्" आज्ञावाचक

प्र० पु०	करोतु=कुरुतात्	कुरुताम्	कुर्वन्तु	कुरुताम्	कुर्वाताम्	कुर्वताम्
म० पु०	कुरु=कुरुतात्,	कुरुतम्	कुरुत	कुरुष्व	कुर्वाथाम्	कुरुध्वम्
उ० पु०	करवाणि	करवाव	करवाम	करवै	करवावहै	करवामहै

"लङ्" अनद्यतन भूतकाल

प्र० पु०	अकरोत्	अकुरुताम्	अकुर्वन्	अकुरुत	अकुर्वाताम्	अकुर्वत
म० पु०	अकरोः	अकुरुतम्	अकुरुत	अकुरुथाः	अकुर्वाथाम्	अकुरुध्वम्
उ० पु०	अकरवम्	अकुर्व	अकुर्म	अकुर्वि	अकुर्वहि	अकुर्महि

विधिलिङ्

प्र० पु०	कुर्यात्	कुर्याताम्	कुर्युः	कुर्वीत	कुर्वीयाताम्	कुर्वीरन्
म० पु०	कुर्याः	कुर्यातम्	कुर्यात	कुर्वीथाः	कुर्वीयाथाम्	कुर्वीध्वम्
उ० पु०	कुर्याम्	कुर्याव	कुर्याम	कुर्वीय	कुर्वीवहि	कुर्वीमहि

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	क्रियात्	क्रियास्ताम्	क्रियासुः	कृषीष्ट	कृषीयास्ताम्	कृषीरन्
म० पु०	क्रियाः	क्रियास्तम्	क्रियास्त	कृषीष्ठाः	कृषीयास्थाम्	कृषीध्वम्
उ० पु०	क्रियासम्	क्रियास्व	क्रियास्म	कृषीय	कृषीवहि	कृषीमहि

"लुङ" सामान्य भूतकाल

प्र० पु०	अकार्षीत्	अकार्ष्टाम्	अकार्षुः	अकृत	अकृषाताम्	अकृषत
म० पु०	अकार्षीः	अकार्ष्टम्	अकार्ष्ट	अकृथाः	अकृषाथाम्	अकृढ्वम्
उ० पु०	अकार्षम्	अकार्ष्व	अकार्ष्म	अकृषि	अकृष्वहि	अकृष्महि

लृङ् हेतुहेतुमद्भाव भविष्यत्

प्र० पु०	अकरिष्यत्	अकरिष्यताम्	अकरिष्यन्	अकरिष्यत	अकरिष्येताम्	अकरिष्यन्त
म० पु०	अकरिष्यः	अकरिष्यतम्	अकरिष्यत	अकरिष्यथाः	अकरिष्येथाम्	अकरिष्यध्वम्
उ० पु०	अकरिष्यम्	अकरिष्याव	अकरिष्याम	अकरिष्ये	अकरिष्यावहि	अकरिष्यामहि

द्वितीयः पाठः

तनादिगण के उदाहरण

१—तन्तुवायवः सूत्राणि तनोति = जुलाहा डोरों को फैलाता है। The weaver spreads the yarns or threads..

२—गान्धी महापुरुषस्य कीर्तिः चतसृषु दिक्षु अतनोत् (अतानीत्) गान्धी जी की कीर्ति चारों दिशाओं में फैल गई। Gandhi's fame spread in all directios.

३—यदित्वं रामस्याऽपकीर्तिं नोऽतनष्यत् तर्हि स त्वां न अहनिष्यत् = यदि तू राम की अपकीर्ति (बुराई) नहीं फैलाता तो वह तुझे नहीं मारता। If thou hadst not defamed Rama, he would not have beaten thee.

४—वयं कस्यापि निन्दां (अपवादं) न तनुयाम। हमें किसी की निन्दा (अपवाद) नहीं फैलाना चाहिये। We should not defame anybody.

५—आगच्छ, आवां परस्परं मिलित्वा वीर्येण सह कार्यं करवावहै (कुर्याव)। आओ, हम दोनों परस्पर मिलकर वीरता के साथ काम करें। Come, end work together bravely.

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिये :—

(१) स कार्यं करोति (२) अयं पुरुषः सन्ध्यां कदापि न करोति (३) स मामप करोति। (४) तत्र स्थानात् स त्वां निराकरोत्। (५) का इदं भौतिकज्ञानमाविष्करोत्? (६) कदा श्री राम इदं वनं सनाथो करिष्यति?

संस्कृत में अनुवाद कीजिये।

(१) तूने मेरा तिरस्कार किया। (२) उसने मुझे वहाँ से दूर (हटा) कर दिया। (३) वह मेरी नकल करता है। (४) उसकी निन्दा फैल गई है। (५) वह मेरी बुराई (शिकायत) करता है। (६) मैं दिन में काम करूँगा। (७) यदि तूने मेरी बुराई तो मैं पीटूँगा।

—:o:—

षोडशोऽध्यायः

प्रथमः पाठः

अथ क्र्यादिगण प्रकरणम्

नियम—इस गण में प्रत्यय से पूर्व और धातु के अन्त में "ना" चिह्न जोड़ा जाता है, और "र्, ष्" से परे "न्" को "ण्" हो जाता है।

एक वचन को छोड़ करके परस्मैपद में व्यञ्जन परे होने पर "आ" को "ई" हो जाता है तथा आत्मने पद में एक वचन में "ई" होता है। और बहुवचन में दूसरे स्वर परे होने पर "आ" का लोप हो जाता है और जगह 'ई" होता है।

क्री = खरीदना To Buy

'लट्' वर्तमानकाल

	परस्मैपदी			आत्मने पदी		
प्र० पु०	क्रीणाति	क्रीणीतः	क्रीणन्ति	क्रीणीते	क्रीणाते	क्रीणते
म० पु०	क्रीणासि	क्रीणीथः	क्रीणीथ	क्रीणीषे	क्रीणाथे	क्रीणीध्वे
उ० पु०	क्रीणामि	क्रीणीवः	क्रीणीमः	क्रीणे	क्रीणीवहे	क्रीणीमहे

'लिट्' परोक्ष भूतकाल

प्र० पु०	चिक्राय	चिक्रियतुः	चिक्रियुः	चिक्रिये	चिक्रियाते	चिक्रियिरे
म० पु०	चिक्रयिथ = चिक्रेथ	चिक्रियथुः	चिक्रिय	चिक्रियिषे	चिक्रियाथे	चिक्रियिध्वे
उ० पु०	चिक्राय = चिक्रय	चिक्रियिव	चिक्रियिम	चिक्रिये	चिक्रियिवहे	चिक्रियिमहे

"लुट्" अनद्यतन भविष्यत्काल

प्र० पु०	क्रेता	क्रेतारौ	क्रेतारः	क्रेता	क्रेतारौ	क्रेतारः
म० पु०	क्रेतासि	क्रेतास्थः	क्रेतास्थ	क्रेतासे	क्रेतासाथे	क्रेताध्वे
उ० पु०	क्रेतास्मि	क्रेतास्वः	क्रेतास्मः	क्रेताहे	क्रेतास्वहे	क्रेतास्महे

"लृट्" सामान्य भविष्यत्काल

प्र० पु०	क्रेष्यति	क्रेष्यतः	क्रेष्यन्ति	क्रेष्यते	क्रेष्येते	क्रेष्यन्ते
म० पु०	क्रेष्यसि	क्रेष्यथः	क्रेष्यथ	क्रेष्यसे	क्रेष्येथे	क्रेष्यध्वे
उ० पु०	क्रेष्यामि	क्रेष्यावः	क्रेष्यामः	क्रेष्ये	क्रेष्यावहे	क्रेष्यामहे

"लोट" आज्ञावाचक

प्र० पु०	क्रीणातु=क्रीणीतात्	क्रीणीताम्	क्रीणन्तु	क्रीणीताम्	क्रीणाताम्	क्रीणताम्
म० पु०	क्रीणीहि=क्रीणीतात्	क्रीणीतम्	क्रीणीत	क्रीणीष्व	क्रीणाथाम्	क्रीणीध्वम्
उ० पु०	क्रीणानि	क्रीणाव	क्रीणाम	क्रीणै	क्रीणावहै	क्रीणामहै

"लङ्" अनद्यतन भूतकाल

प्र० पु०	अक्रीणात्	अक्रीणीताम्	अक्रीणन्	अक्रीणीत	अक्रीणाताम्	अक्रीणत
म० पु०	अक्रीणाः	अक्रीणीतम्	अक्रीणीत	अक्रीणीथाः	अक्रीणाथाम्	अक्रीणीध्वम्
उ० पु०	अक्रीणा	अक्रीणीव	अक्रीणीम	अक्रीणि	अक्रीणीवहि	अक्रीणीमहि

विधिलिङ्

प्र० पु०	क्रीणीयात्	क्रीणीयाताम्	क्रीणीयुः	क्रीणीत	क्रीणीयाताम्	क्रीणीरन्
म० पु०	क्रीणीयाः	क्रीणीयातम्	क्रीणीयात	क्रीणीथाः	क्रीणीयाथाम्	क्रीणीध्वम्
उ० पु०	क्रीणीयाम्	क्रीणीयाव	क्रीणीयाम	क्रीणीय	क्रीणीवहि	क्रीणीमहि

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	क्रीयात्	क्रीयास्ताम्	क्रीयासुः	क्रीषीष्ट	क्रीषीयास्ताम्	क्रीषीरन्
म० पु०	क्रीयाः	क्रीयास्तम्	क्रीयास्त	क्रीषीष्ठाः	क्रीषीयास्थाम्	क्रीषीध्वम्
उ० पु०	क्रीयासम्	क्रीयास्व	क्रीयास्म	क्रीषीय	क्रीषीवहि	क्रीषीमहि

लुङ् सामान्यभूतकाल

प्र० पु०	अक्रैषीत्	अक्रैष्टाम्	अक्रैषुः	अक्रेष्ट	अक्रेषाताम्	अक्रेषत
म० पु०	अक्रैषीः	अक्रैष्टम्	अक्रैष्ट	अक्रेष्ठाः	अक्रेषाथाम्	अक्रेध्वम्
उ० पु०	अक्रैषम्	अक्रैष्व	अक्रैष्म	अक्रेषि	अक्रेष्वहि	अक्रेष्महि

लृङ् हेतुहेतुमद् भावभविष्यत्

प्र० पु०	अक्रेष्यत्	अक्रेष्यताम्	अक्रेष्यन्	अक्रेष्यत	अक्रेष्येताम्	अक्रेष्यन्त
म० पु०	अक्रेष्यः	अक्रेष्यतम्	अक्रेष्यत	अक्रेष्यथाः	अक्रेष्येथाम्	अक्रेष्यध्वम्
उ० पु०	अक्रेष्यम्	अक्रेष्याव	अक्रेष्याम	अक्रेष्ये	अक्रेष्यावहि	अक्रेष्यामहि

द्वितीयः पाठः

द्रष्टव्य—क्र्यादिगण एक वचन में प्रथम पुरुष के कुछ धातुओं के रूप Conjugations निम्नलिखित हैं।

अश्=खाना To dine, to eat

'लट्' वर्तमान काल

प्र० पु०	अश्नाति	अश्नीतः	अश्नन्ति
म० पु०	अश्नासि	अश्नीथः	अश्नीथ
उ० पु०	अश्नामि	अश्नीवः	अश्नीमः

'लृट्' सामान्य भविष्यत्काल

प्र० पु०	अशिष्यति	अशिष्यतः	अशिष्यन्ति
म० पु०	अशिष्यसि	अशिष्यथः	अशिष्यथ
उ० पु०	अशिष्यामि	अशिष्यावः	अशिष्यामः

'लङ्' अनद्यतन भूतकाल

प्र० पु०	आश्नात्	आश्नीताम्	आश्नन्
म० पु०	आश्नाः	आश्नीतम्	आश्नीत
उ० पु०	आश्नाम्	आश्नीव	आश्नीम

लुङ् सामान्य भूतकाल

प्र० पु०	आशीत्	आशिष्टाम्	आशिषुः
म० पु०	आशीः	आशिष्टम्	आशिष्ट
उ० पु०	आशिषम	आशिष्व	आशिष्म

'लोट्' आज्ञावाचक

प्र० पु०	अश्नातु	अश्नीताम्	अश्नन्तु
म० पु०	अशान	अश्नीतम्	अश्नीत
उ० पु०	अश्नानि	अश्नाव	अश्नाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	अश्नीयात्	अश्नीयाताम्	अश्नीयुः
म० पु०	अश्नीयाः	अश्नीयातम	अश्नीयात
उ० पु०	अश्नीयाम्	अश्नीयाव	अश्नीयाम

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	अश्यात्	अश्यास्ताम्	अश्यासुः
म० पु०	अश्याः	अश्यास्तम्	अश्यास्त
उ० पु०	अश्यासम्	अश्यास्व	अश्यास्म

हेतुहेतु मद्भाव भविष्यत्

प्र० पु०	आशिष्यत्	आशिष्यताम्	आशिष्यन्
म० पु०	आशिष्यः	आशिष्यतम्	आशिष्यत
उ० पु०	आशिष्यम्	आशिष्याव	आशिष्याम

संस्कृत	हिन्दी		लट्	लृट्	लङ्
प्री=प्रसन्न करना	To please		प्रीणाति	प्रेष्यति	अप्रीणात
प्री=प्रसन्न करना	To please		प्रीणीते	प्रेष्यते	अप्रीणीत
ग्रह्=लेना, पकड़ना	To take		गृह्णाति	ग्रहीष्यति	अगृह्णात्
ग्रह्=लेना, पकड़ना	To take		गृह्णीते	गृहीष्यते	अगृह्णीत
पु=पवित्र करना	To purify		पुनाति	पविष्यति	अपुनात
पु=पवित्र करना	To consecrate		पुनीते	पविष्यते	अपुनीत
वृ=स्वीकार करना	To accept		वृणाति	वरिष्यति	अवृणात्
वृ=स्वीकार करना	To accept		वृणीते	वरिष्यते	अवृणीत
मुष्=चुराना	To steal		मुष्णाति	मोषिष्यति	अमुष्णात्
बन्ध्= बाँधना	To bind To tie		बध्नाति	भन्त्स्यति	अबध्नात्
मन्थ्=मथना	To churn		मथ्नाति	मन्थिष्यति	अमथ्नात्
ज्ञा=जानना	To know		जानाति	ज्ञास्यति	अजानात

तृतीयः पाठः

क्र्यादिगण के उदाहरण

१—प्रेमराजः चतुराणकेन दुग्धं क्रीणाति—प्रेमराज चार आने का दूध खरीदता है। Prem Raj buys milk for four annas.

२—बाबूः गोधूमान् व्यक्रीणात=बाबू ने गेहूँ को बेचा। Babu sold the wheat.

३—किं धीवराः कासारे मीनान् मीनन्ति ? क्या धीवर तालाब में मछलियों को मारते हैं ? Do the fisher-men fish (chase) in the pond.

४—मोहनो रज्ज्वा गां बध्नाति=मोहन रस्सी से गाय बाँधता है Mohan ties the cow with the rope.

५—उर्मिला शिशुं गृह्णाति=उर्मिला बच्चे को लेती है। Urmila takes the baby up.

६—स मे वचो न वरिष्यति=वह मेरी बात स्वीकार नहीं करेगा। He will not accept my proposal.

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिये :—

१—देवकीनन्दनः स्वपितरं सुश्रूषया प्रीणाति।

लुङ्	लोट्	विधिलिङ्	आशीर्लिङ्	हेतुहेतुमद्भाव
अप्रैषीत्	प्रीणातु	प्रीणीयात्	प्रीयात्	अप्रेष्यत्
अप्रेष्ट	प्रीणीताम्	प्रीणीत	प्रेषीष्ट	अप्रेष्यत
अग्रहीत्	गृह्णातु	गृह्णीयात्	गृह्यात्	अग्रहीष्यत्
अग्रहीष्ट	गृह्णीताम्	गृह्णीत	ग्रहीषीष्ट	अग्रहीष्यत
अपावीत्	पुनातु	पुनीयात्	पूयात्	अपविष्यत्
अपविष्ट	पुनीताम्	पुनीत	पविषीष्ट	अपविष्यत
अवारीत्	वृणातु	वृणीयात्	वूर्यात्	अवरिष्यत्
अवरीष्ट	वृणीताम्	वृणीत	वरिषीष्ट	अवरिष्यत
अमोषीत्	मुष्णातु	मुष्णीयात्	मुष्यात्	अमोषिष्यत्
अभान्त्सीत्	बध्नातु	बध्नीयात्	बध्यात्	अभन्त्स्यत्
अमन्थीत्	मथ्नातु	मथ्नीयात्	मथ्यात्	अमन्थिष्यत्
अज्ञासीत्	जानातु	जानीयात्	ज्ञेयात् ज्ञायात्	अज्ञास्यत्

२—पुरीमवस्कन्द लुनिहि नन्दनं मुषाण रत्नानिहराऽमराङ्गनाः ।
विगृह्य चक्रे नमुचिद्विषा बली य इत्थमस्वास्थ्यमहर्दिवं दिवः ॥

३—मतिं बधान सुग्रीवे, राक्षसेन्द्रं गृहाण वा ।
अशान भरताद् भोगान्, लक्ष्मणं प्रवृणीष्व वा ॥

४—स पुस्तकानि विक्रीणाति (५) दस्युः गतरात्रौ मम धनममुष्णात् (६) किं मोहनस्तान् जानाति ? (७) पुत्रो मया सह अश्नाति (८) स मामपुनात् (९) सोहनः स्वभार्यायै शाटिकां क्रीणाति ।

संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(१) क्या सुरेन्द्र ने पढ़ने के लिए पुस्तक खरीदी ? (२) उसने मेरी कलम ले ली (३) सिपाही चोर को जञ्जीर से बाँधते हैं (४) उसी ने मेरी किताब चुराली (५) मैंने अपनी पुरानी पुस्तकें बेच दीं (६) राम अपने भाई के लिए वस्त्र खरीदता है (७) क्या वह अपनी किताबें ले गया ? (८) क्या मोहन उसे जानता है ? (९) बली रावण ने इन्द्रपुरी को घेर लिया, नन्दनवन को काट दिया, रत्नों को लूटलिया और देवताओं की स्त्रियों को चुरा लिया, इस प्रकार दिन प्रति दिन वह स्वर्ग में उपद्रव करने लगा ।

सप्तदशोऽध्यायः

प्रथमः पाठः

अथ चुरादिगण प्रकरणम्

Conjugation of tenth class

नियम—चुरादिगण में प्रत्यय से पूर्व धातु के अन्त में "अय" चिन्ह जोड़ा जाता है। धातु के 'इ, उ, ऋ' को गुण हो जाता है जैसे—चोर् + अय + ति = चोरयति। इसी प्रकार सर्वत्र जान लेना चाहिये।

चुर् (चोर्)=चुराना To steal

"लट्" वर्तमानकाल

	परस्मैपदी			आत्मने पदी		
	एक वचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	चोरयति	चोरयतः	चोरयन्ति	चोरयते	चोरयेते	चोरयन्ते
म० पु०	चोरयसि	चोरयथः	चोरयथ	चोरयसे	चोरयेथे	चोरयध्वे
उ० पु०	चोरयामि	चोरयावः	चोरयामः	चोरये	चोरयावहे	चोरयामहे

"लिट्" परोक्षभूतकाल

प्र० पु०	चोरयाञ्चकार	चोरयाञ्चक्रतुः	चोरयाञ्चक्रुः	चोरयाञ्चक्रे	चोरयाञ्चक्राते	चोरयाञ्चक्रिरे
म० पु०	चोरयाञ्चकर्थ	चोरयाञ्चक्रथुः	चोरयाञ्चक्र	चोरयाञ्चकृषे	चोरयाञ्चक्राथे	चोरयाञ्चकृढ्वे
उ० पु०	चोरयाञ्चकार	चोरयाञ्चकृव	चोरयाञ्चकृम	चोरयाञ्चक्रे	चोरयाञ्चकृवहे	चोरयाञ्चकृमहे

'लुट्' अनद्यतन भविष्यकाल

प्र० पु०	चोरयिता	चोरयितारौ	चोरयितारः	चोरयिता	चारयितारौ	चोरयितारः
म० पु०	चोरयितासि	चोरयितास्थः	चोरयितास्थ	चोरयितासे	चोरयितासाथे	चोरयिताध्वेहे
उ० पु०	चोरयितास्मि	चोरयितास्वः	चोरयितास्मः	चोरयिताहे	चोरयितास्वहे	चोरयितास्महे

"लृट्" सामान्य भविष्यत्काल

प्र० पु०	चोरयिष्यति	चोरयिष्यतः	चोरयिष्यन्ति	चोरयिष्यते	चोरयिष्येते	चोरयिष्यन्ते
म० पु०	चोरयिष्यसि	चोरयिष्यथः	चारयिष्यथ	चोरयिष्यसे	चारयिष्येथे	चारयिष्यध्वे
उ० पु०	चोरयिष्यामि	चोरयिष्यावः	चोरयिष्यामः	चोरयिष्ये	चोरयिष्यावहे	चोरयिष्यामहे

"लोट्" आज्ञावाचक

प्र० पु०	चोरयतु चोरयातात्	चोरतयाम्	चोरयन्तु	चोरयताम्	चोरयेताम्	चोरयन्ताम्
म० पु०	चोरय चोरयतात्	चोरयतम्	चोरयत	चोरयस्व	चोरयेथाम्	चोरयध्वम्
उ० पु०	चोरयाणि	चोरयाव	चोरयाम	चोरयै	चोरयावहै	चोरयामहै

"लङ्" अनद्यतन भूतकाल

प्र० पु०	अचोरयत्	अचोरयताम्	अचोरयन्	अचोरयत	अचोरयेताम्	अचोरयन्त
म० पु०	अचोरयः	अचारयतम्	अचोरयत	अचोरयथाः	अचोरयेथाम्	अचोरयध्वम्
उ० पु०	अचोरयम्	अचोरयाव	अचोरयाम	अचोरये	अचोरयावहि	अचोरयामहि

विधिलिङ्

प्र० पु०	चोरयेत्	चोरयेताम्	चोरयेयुः	चोरयेत	चोरयेयाताम्	चोरयेरन्
म० पु०	चोरयेः	चोरयेतम्	चोरयेत	चोरयेथाः	चोरयेयाथाम्	चोरयेध्वम्
उ० पु०	चोरयेम्	चोरयेव	चोरयेम	चोरयेय	चोरयेवहि	चोरयेमहि

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	चोर्यात्	चोर्यास्ताम्	चोर्यासुः	चोरयिषीष्ट	चोरयिषीयास्ताम्	चोरयिषीरन्
म० पु०	चोर्याः	चोर्यास्तम्	चोर्यास्त	चोरयिषीष्ठाः	चोरयिषीयास्थाम्	चोरयिषीध्वम्
उ० पु०	चोर्यासम्	चोर्यास्व	चोर्यास्म	चोरयिषीय	चोरयिषीवहि	चोरयिषीमहि

"लुङ्" सामान्य भूतकाल

प्र० पु०	अचूचुरत्	अचूचुरताम्	अचूचुरन्	अचूचुरत	अचूचुरेताम्	अचूचुरन्त
म० पु०	अचूचरः	अचूचुरतम्	अचूचुरत	अचूचुरथाः	अचूचुरेथाम्	अचूचुरध्वम्
उ० पु०	अचूचुरम्	अचूचुराव	अचूचुराम	अचूचुरे	अचूचुरावहि	अचूचुरामहि

'लुङ्' हेतुहेतु मद्भाव भविष्यत्

प्र० पु०	अचोरयिष्यत्	अचोरयिष्यताम्	अचोरयिष्यन्
म० पु०	अचोरयिष्यः	अचोरयिष्यतम्	अचोरयिष्यत
उ० पु०	अचोरयिष्यम्	अचोरयिष्याव	अचोरयिष्याम
		आत्मने पद	
प्र० पु०	अचोरयिष्यत	अचोरयिष्येताम्	अचोरयिष्यन्त
म० पु०	अचोरयिष्यथाः	अचोरयिष्येथाम्	अचोरयिष्यध्वम्
उ० पु०	अचोरयिष्ये	अचोरयिष्यावहि	अचोरयिष्यामहि

द्रष्टव्य—आगे कोष्ट में परस्मैपद और आत्मने पद के केवल प्रथम पुरुष एक वचन में ही रूप हैं।

संस्कृत	हिन्दी	इङ्गलिश	लट्	लृट्
कथ्=	कहना	To speak	कथयति	कथयिष्यति
” ”			कथयते	कथपिष्यते
गण्=	गिनना	To Count	गणयति	गणयिष्यति
” ”			गणयते	गणयिष्यते
चिन्त=	चिन्ता करना	To think	चिन्तयति	चिन्तयिष्यति
” ”			चिन्तयते	चिन्तयिष्यते
ताड्(ताड्)=	पीटना	To beat	ताडयति	ताडयिष्यति
” ”			ताडयते	ताडयिष्यते
प्र+क्षाल्=	धोना	To wash	प्रक्षालयति	प्रक्षालयिष्यति
” ”			प्रक्षालयते	प्रक्षालयिष्यते
पाल्=	पालन करना	To protect	पालयति	पालयिष्यति
” ”			पालयते	पालयिष्यते
भक्ष्=	खाना	To eat	भक्षयति	भक्षयिष्यति
” ”			भक्षयते	भक्षयिष्यते

चुरादिगण के उदाहरण

१—स मम पुस्तकमचोरयत्=उसने मेरी पुस्तक चुराई। He stole my book.

२—महेन्द्रो गाथां कथयति=महेन्द्र एक कहानी कहता है। Mahendra tells a story.

३—सुरेन्द्रः संख्यां गणयति=सुरेन्द्र सख्या को गिनता है। Surendra counts the numbers.

४—मनस्वी कार्यार्थी न गणयति दुःखं न च सुखम्=कार्यार्थी धीर पुरुष दुःख और सुख को नहीं गिनता है। An efficacious patient man does not care for pleasure and displeasure or happiness and unhappiness.

५—साधुरक्षिणी निमीलयति=साधु आँखों को बन्द करता है। The sage closes the eyes.

६—सा अक्षिणी उन्मीलयति=वह आंखे खोलती है। She discloses or opens the eyes.

७—पिता पुत्र पापान्निवारयति, हिताय योजयतिच=बाप पुत्र को बुरे मार्ग से हटाता है और कल्याण मार्ग पर लगाता है। The father avoids the son from the path of evil and leads him to the path of virtue.

लङ्	लुङ्	लोट्	विधिलिङ्	आशीर्लिङ्	हेतु हेतु मद्भाव
अकथयत्	अचकथत्	कथयतु	कथयेत्	कथ्यात्	अकथयिष्यत्
अकथयत	अचकथत	कथयताम्	कथयेत	कथयिषीष्ट	अकथयिष्यत
अगणयत्	अजीगणत्	गणयतु	गणयेत्	गण्यात्	अगणयिष्यत्
अगणयत	अजीगणत	गणयताम्	गणयेत	गणयिषीष्ट	अगणयिष्यत
अचिन्तयत्	अचिचिन्तत्	चिन्तयतु	चिन्तयेत्	चिन्त्यात्	अचिन्तयिष्यत्
अचिन्तयत	अचिचिन्तत	चिन्तयताम्	चिन्तयेत	चिन्तयिषीष्ट	अचिन्तयिष्यत
अताडयत्	अतताडत्	ताडयतु	ताडयेत्	ताड्यात्	अताडयिष्यत्
अताडयत	अतताडत	ताडयताम्	ताडयेत	ताडयिषीष्ट	अताडयिष्यत
प्राक्षालयत्	प्राचक्षालत्	प्रक्षालयतु	प्रक्षालयेत्	प्रक्षाल्यात्	प्राक्षालयिष्यत्
प्राक्षालयत	प्राचक्षालत	प्रक्षालयताम्	प्रक्षालयेत	प्रक्षालयिषीष्ट	प्राक्षालयिष्यत
अपालयत्	अपपालत्	पालयतु	पालयेत्	पाल्यात्	अपालयिष्यत्
अपालयत	अपपालत	पालयताम्	पालयेत	पालयिषीष्ट	अपालयिष्यत
अभक्षयत्	अबभक्षत्	भक्षयतु	भक्षयेत्	भक्ष्यात्	अभक्षयिष्यत्
अभक्षयत	अबभक्षत	भक्षयताम्	भक्षयेत	भक्षयिषीष्ट	अक्षयिष्यत

८—सत्सङ्गतिः कथय, किं न करोति पुंसाम् ? कहिये; सत्संगति मनुष्य को क्या नहीं करती है ? Tell, what dose not the society of pious people do ?

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिये—

(१) सज्जनाः सर्वदा ईश्वरं चिन्तयन्ति (२) किं त्वं जलेन पादौ प्राक्षालयः ? (३) वणिजोऽन्नानि तोलयन्ति (४) देवेन्द्रो मां प्रार्थयति (५) स तुभ्यं रूप्यकाणि गणयति (६) कश्चिद् बालकः पितुराज्ञां पालयति (७) शूकरः किं भक्षयति ? (८) अहं तं दण्डेन ताडयिष्यामि (९) नृपः तस्करान् अदण्डयत् । (१०) ब्रह्मा सृष्टिमरचयत् ।

संस्कृत में अनुवाद कीजिये ।

(१) मोहन कलम चुराता है । (२) लड़के गिनती गिनते हैं (३) मैं अपने वस्त्रों को साबुन से धोऊँगा । (४) अध्यापक ने एक कहानी कही (५) बाजार में बनिया गेहूँ तोलता है । (६) मैं उसे पीटूँगा । (७) मुनि लोग सर्वदा भगवान् का चिन्तन करते हैं । (८) धीर पुरुष शरीर की चिन्ता नहीं करते हैं । (९) उसने आँखें खोल दीं, पुनः बन्द कर लीं । (१०) हरि को मन से ध्यान करना चाहिये ।

अष्टादशोऽध्यायः

प्रथमः पाठः

अथ णयन्त प्रकरणम् (Causative verbs)

अब तक गणों में साधारण क्रियाओं का वर्णन हुआ है। अब उन क्रियाओं का वर्णन करते हैं, जिनको कि कर्ता स्वयं किसी काम को न करके, किसी दूसरे से उस काम को करवाने की प्रेरणा (उत्तेजित) करता है, उसे प्रेरणार्थक क्रियाएँ (Causative verbs) कहते हैं।

यहाँ पर प्रेरणा करने वाले को "प्रयोजक" कर्ता कहते हैं, और प्रेरणार्थक क्रिया में जिससे कि काम करवाया जाता है, उसे "प्रयोज्य" कर्ता कहते हैं।

प्रेरणार्थक क्रिया का कुछ नियम निम्नलिखित प्रकार के हैं।

(१) "प्रेरक (२) प्रेरितकर्ता (३) विशुद्धकर्म" ये तीन होते हैं। जैसे—गोविन्दा रथकारेण काष्ठपीठं व्यररचत=गोविन्द ने बढ़ई से मेज बनवाई। Govind got the table made by the carpenter यहाँ पर "गोविन्द" प्रेरक कर्ता है और बढ़ई प्रेरित कर्ता है और मेज विशुद्ध कर्म है।

(२) कुछ ऐसे वाक्य होते हैं कि जिनमें प्रेरक और प्रेरित कर्ता होते हैं, परन्तु विशुद्ध कर्म नहीं होता है। इसी को "प्रयोजक" कर्ता और "प्रयोज्य" कर्ता भी कहते हैं। जैसे—उसने मुझे छत पर सुला दिया। यहाँ पर उसने प्रेरक कर्ता (प्रयोजक) है, और मुझे प्रेरित कर्ता है। अकर्मक धातु से विशुद्ध कर्म नहीं होता है।

(३) कुछ ऐसे वाक्य हैं कि जिनमें केवल प्रेरितकर्ता ही होता है, परन्तु "प्रेरक और विशुद्ध कर्म" नहीं होते हैं। जैसे—मुझे छत पर सुला दिया। यहाँ मुझे केवल 'प्रेरित कर्ता' है परन्तु प्रेरक और विशुद्धकर्म नहीं है। अकर्मक धातु से प्रेरणार्थक क्रिया में कहीं कहीं पर वाक्यों में प्रेरितकर्ता की शब्द से प्रतीति नहीं होती। ठीक यही नियम सकर्मक क्रिया के लिये भी है।

(४) कुछ ऐसे वाक्य हैं कि जिनमें "प्रेरक और विशुद्धकर्म" ही होते हैं; परन्तु प्रेरित कर्ता नहीं रहता है। जैसे—राम ने एक कुर्सी बनवाई। यहाँ राम प्रेरक अर्थात् प्रयोजक है और विशुद्ध कर्म कुर्सी है परन्तु बनाने वाला प्रेरितकर्ता का शाब्दिक बोध नहीं है।

(५) कुछ ऐसे वाक्य हैं कि जिनमें "प्रेरितकर्ता और विशुद्धकर्म" ही होता है परन्तु प्रेरक की शब्द से प्रतीति नहीं हाती। जैसे—बढ़ई से मेज बनवाई गई। यहाँ "बढ़ई" प्रेरितकर्ता है, और मेज विशुद्धकर्म है परन्तु प्रेरक का नाम नहीं है।

(६) कुछ वाक्यों में केवल विशुद्धकर्म ही होता है, प्रेरक और प्रेरित कर्ता का शब्दबोध नहीं होता। जैसे—मेज बनवाई गई। यहाँ पर मेज केवल विशुद्धकर्म ही है परन्तु प्रेरक औ प्रेरितकर्ता नहीं है।

प्रेरणा करने वाले को प्रेरक कर्ता (प्रयोजक) और जिसको प्रेरणा की जाती है उसे प्रेरितकर्ता (प्रयोज्य) अथवा अप्रधान कर्ता भी कहते हैं। संस्कृत भाषा में "प्रयोजक कर्ता" (प्रेरक) में प्रथमा विभक्ति होती है और प्रयोज्य कर्ता (प्रेरित कर्ता) में तृतीया विभक्ति और कभी-कभी द्वितीया विभक्ति में प्रयुक्त होता है।

जैसे—सीता रामेण मारीचं घातयति = सीता राम से मारीच को मरवाती है। Sita gets Marich killed by Ram यहाँ पर सीता प्रयोजक कर्ता है अतः इसमें प्रथमा विभक्ति हुई और राम प्रेरितकर्ता (प्रयोज्यकर्ता) है अतः इसमें तृतीया विभक्ति हुई।

द्रष्टव्य—प्रेरणार्थक क्रिया (Causative verb) में अकर्मक क्रिया भी सकर्मक क्रिया हो जाती है।

द्वितीयः पाठः

प्रेरणार्थक क्रिया बनाने का यह नियम है कि प्रधान धातु में 'णिच्' प्रत्यय जोड़ा जाता है। णिच् के स्थान पर 'इ' शेष रह जाता है। यहाँ पर 'इ' को ए गुण करके 'ए' के स्थानों में अय आदेश हो जाता है। जैसे—'पाठ्+अय+ति=पाठयति' प्रयोग बना इसी प्रकार सर्वत्र समझना चाहिये। इसके परस्मैपद और आत्मने पद दोनों में रूप चलते हैं।

———

क्रियापद के रूप Coniugation of verb

'लट्' वर्तमान काल

	परस्मैपदी			आत्मनेपदी		
प्र० पु०	पाठयति	पाठयतः	पाठयन्ति	पाठयते	पाठयंते	पाठयन्ते
म० पु०	पाठयसि	पाठयथः	पाठयथ	पाठयसे	पाठयेथे	पाठयध्वे
उ० पु०	पाठयामि	पाठयावः	पाठयामः	पाठये	पाठयावहे	पाठयामहे

'लिट्' परोक्षभूतकाल

प्र० पु०	पाठयाञ्चकार	पाठयाञ्चक्रतुः	पाठयाञ्चक्रुः	पाठयाञ्चक्रे	पाठयाञ्चक्राते	पाठयाञ्चक्रिरे
म० पु०	पाठयाञ्चकर्थ	पाठयाञ्चक्रथुः	पाठयाञ्चक्र	पाठयाञ्चकृषे	पाठयाचक्राथे	पाठयाञ्चकृढ्वे
उ० पु०	पाठयाञ्चकार	पाठयाञ्चकृव	पाठयाञ्चकृम	पाठयाञ्चक्रे	पाठयाञ्चकृवहे	पाठयाञ्चकृमहे

'लुट्' अनद्यतन भविष्यत्काल

प्र० पु०	पाठयिता	पाठयितारौ	पाठयितारः	पाठयिता	पाठयितारौ	पाठयितारः
म० पु०	पाठयितासि	पाठयितास्थः	पाठयितास्थ	पाठयितासे	पाठयितासाथे	पाठयिताध्वे
उ० पु०	पाठयितास्मि	पाठयितास्वः	पाठयितास्मः	पाठयिताहे	पाठयितास्वहे	पाठयितास्महे

'लृट्' सामान्य भविष्यत्काल

प्र० पु०	पाठयिष्यति	पाठयिष्यतः	पाठयिष्यन्ति	पाठयिष्यते	पाठयिष्येते	पाठयिष्यन्ते
म० पु०	पाठयिष्यसि	पाठयिष्यथः	पाठयिष्यथ	पाठयिष्यसे	पाठयिष्येथे	पाठयिष्यध्वे
उ० पु०	पाठयिष्यामि	पाठयिष्यावः	पाठयिष्यामः	पाठयिष्ये	पाठयिष्यावहे	पाठयिष्यामहे

'लोट्' आज्ञावाचक

प्र० पु०	पाठयतु = पाठयतात्	पाठयताम्	पाठयन्तु	पाठयताम्	पाठयेताम्	पाठयन्ताम्
म० पु०	पाठय = पाठयतात्	पाठयताम्	पाठयत	पाठयस्व	पाठयेथाम्	पाठयध्वम्
उ० पु०	पाठयानि	पाठयाव	पाठयाम	पाठयै	पाठयावहै	पाठयामहै

'लङ्' अनद्यतन भूतकाल

प्र० पु०	अपाठयत्	अपाठयताम्	अपाठयन्	अपाठयत	अपाठयेताम्	अपाठयन्त
म० पु०	अपाठयः	अपाठयतम्	अपाठयत	अपाठयथाः	अपाठयेथाम्	अपाठयध्वम्
उ० पु०	अपाठयम्	अपाठयाव	अपाठयाम	अपाठये	अपाठयावहि	अपाठयामहि

'लुङ्' सामान्य भूतकाल

प्र० पु०	अपीपठत्	अपीपठताम्	अपीपठन्	अपीपठत	अपीपठेताम्	अपीपठन्त
म० पु०	अपीपठः	अपीपठतम्	अपीपठत	अपीपठथाः	अपीपठेथाम्	अपीपठध्वम्
उ० पु०	अपीपठम्	अपीपठाव	अपीपठाम	अपीपठे	अपीपठावहि	अपीपठामहि

विधिलिङ्

प्र० पु०	पाठयेत्	पाठयेताम्	पाठयेयुः	पाठयेत	पाठयेयाताम्	पाठयेरन्
म० पु०	पाठयेः	पाठयेतम्	पाठयेत	पाठयेथाः	पाठयेयाथाम्	पाठयेध्वम्
उ० पु०	पाठयेम्	पाठयेव	पाठयेम	पाठयेय	पाठयेवहि	पाठयेमहि

आशीर्लिङ् और लृङ् लकार का रूप २५८ पृष्ठ पर देखिये :—

द्रष्टव्य—अगले पृष्ठों पर दशों गणों की कुछ धातुओं के लुङ् लकार के एक वचन में प्रेरणार्थक व साधारण तुलनात्मक रूप देखिए, एवं लट् लकार के एक वचन के प्रेरणार्थक रूप भी देखिए।

प्राथमिक धातु

संस्कृत	हिन्दी इङ्गलिश	लुङ्	हिन्दी
भू (भव)=	होना To become	अभूत	हुआ
गम् (गच्छ)=	जाना To go	अगमत्	गया था
श्रु (शृणु)=	सुनना To hear	अश्रौषीत्	सुना था
दृश् (पश्य) =	देखना To see	अद्राक्षीत् अदर्शत्	देखा था
पा (पिब) =	पीना To drink	अपात्	पिया था
स्था (तिष्ठ)=	ठहरना To stay,	अस्थात्	ठहरा
खाद्=	खाना To eat	अखादीत्	खाया
शीङ्=	सोना To sleep	अशयिष्ट	सोया था
हन्=	मारना To Kill	अवधीत्	मारा था
रुद्=	रोना To weep	अरुदत् अरोदीत्	रोया था
कृ=	करना To do	अकार्षीत्	किया था
क्रीड्=	खेलना To play	अक्रीडीत्	खेला था
क्री=	खरीदना To buy	अक्रैषीत्	खरीदा
लिख्=	लिखना To write	अलेखीत्	लिखा
खन्=	खोदना To dig	अखानीत्	खोदा
अर्ज्=	अर्जन करना To earn	आर्जीत्	अर्जित किया
भी=	डरना To fear	अभैषीत्	डर गया था

प्रेरणार्थक क्रियाएँ		प्रेरणार्थक क्रियाएँ	
लट्	हिन्दी	लुङ्	हिन्दी
भावयति	होवाता है	अबीभवत्	होवायाथा
गमयति	भेजवाता है	अजीगमत्	भिजवाया था
श्रावयति	सुनाता है	अशिश्रवत् अशुश्रवत्	सुनवाया था सुनाया था
दर्शयति	दिखलाता है	अददर्शत् अदीदृशत्	दिखलाया था
पाययति	पिलवाता है	अपीप्यत्	पिलाया था पिलवाया था
स्थापयति	ठहराता है	अतिष्ठिपत्	ठहराया था ठहरवाया था
खादयति	खिलवाता है	अचीखादत्	खिलाया था खिलवाया था
शाययति	सुलाता है	अशीशयत्	सुलाया था सुलवाया था
घातयति	मरवाता है	अजीघतत्	मरवाया था
रोदयति	रोवाता है रुलवाता है	अरूरुदत्	रोवाया था रुलवाया था
कारयति	करवाता है	अचीकरत्	करवाया था
क्रीडयति	खेलाता है खेलवाता है	अचिक्रीडत्	खेलाया था खेलवाया था
क्रापयति	खरीदवाता है	अचिक्रपत्	खरीदवाया था
लेखयति	लिखाता है लिखवाता है	अलीलिखत्	लिखाया था लिखवाया था
खनयति	खुदवाता है	अचीखनत्	खोदवाया था
अर्जयति	उपार्जन कराता है	आर्जिजत्	उपार्जन करवाया
भाययति	डराताहै	अबीभयत	डरवाया था
भीषयते	डरवाता है	अबीभिषत्	डराया था

प्राथमिक धातु

संस्कृत	हिन्दी	इङ्गलिश	लुङ्	हिन्दी
क्रुध् =	क्रोधकरना	To anger	अक्रुधत्	क्रोध किया
गै =	गाना	To sing	अगासीत्	गाया था
ग्रह् =	लेना, पकड़ना	To take	अग्रहीत्	लिया था
दा =	देना	To give	अदात् = अदित,	धारण कियाथा
धा =	धारण करना रखना	To hold, put To Keep	अधात् = अधित,	धारण कियाथा
प्रच्छ =	पूँछना	To ask	अप्राचीत्	पूछा था
आस् =	बैठना	To sit	आसिष्ट	बैठा था
प्री =	प्रसन्न करना	To please	अप्रैषीत्	प्रसन्न किया था।
त्यज् =	छोड़ना	To abandon	अत्याचीत्	छोड़ा था
बन्ध =	बाँधना	To bind	अभान्त्सीत्	बाँधा था
भिद् =	फाड़ना	To rend	अभैत्सीत् अभिदत्	फाड़ा था
चि =	एकट्ठा करना	To Collect	अचैषीत्	एकट्ठा किया था
मिल् =	मिलना	To meet	अमेलीत्	मिला था
मुच =	छोड़ना	To leave	अमुचत् अमुक	छोड़ा था
मृ =	मरना	To die	अमृत	मर गया
यत् =	प्रयत्न करना	To attempt	अयतिष्ट	प्रयत्न किया
याच्	माँगना	To beg	अयाचिष्ट	माँगा
वस् =	निवास करना	To dwell	अवात्सीत	निवास किया
विश् =	प्रवेश करना	To enter	अविक्षत्	प्रवेशकिया
स्मृ =	स्मरणकरना	To remember	अस्मार्षीत्	स्मरण किया

प्रेरणार्थक क्रियाएँ		प्रेरणार्थक क्रियाएँ	
लट्	हिन्दी	लुङ्	हिन्दी
क्रोधयति	क्रोध कराता है क्रोध करवाता है	अचुक्रुधत्	क्रोध कराया था क्रोध करवाया था
गापयति	गवाता है	अजीगपत्	गवाया था
ग्राहयति	ग्रहण करवाता है पकड़वाता है	अजिग्रहत्	ग्रहण करवाया था
दापयति	दिवाता है	अदीदपत्	दिलवाया था
धापयति	धारण करवाता है	अदीधपत्	धारण करवाया था पकड़वाया था
प्रच्छयति	पुछवाता है	अपप्रच्छत्	पुछवाया था
आसयति	बैठाता है बिठलाता है	आसिषत्	बिठलवाया था
प्रीणयति	प्रसन्न करवाता है	अपिप्रीणत्	प्रसन्न करवाया था
त्याजयति	छोड़वाता है	अतित्यजत्	छोड़वाया था
बन्धयति	बँधवाता है	अबबन्धत्	बंधवाया था
भेदयति	फड़वाता है विदीर्ण कराता है	अबीभिदत्	विदीर्ण करवाया था
चाययति	एकत्र कराता है एकत्र करवाता है	अचीचयत्	एकत्र करवाया था
मेलयति	मिलाता है मिलवाता है	अमीमिलत्	मिलवाया था
मोचयति	छोड़ाता है छोड़वाता है	अमूमुचत्	छोड़वाया था
मारयति	मरवाता है	अमीमरत	मरवाया था
यातयति	प्रयत्न करवाता है	अयीयतत्	प्रयत्न करवाया
याचयति	मंगवाता है	अययाचत्	मंगवाया था
वासयति	निवास करवाताहै	अवीवसत्	निवासकराया था
वेशयति	प्रवेश कराता है	अवीविशत्	प्रवेश कराया था
स्मारयति	स्मरण कराता है	असस्मरत्	स्मरण करायाथा

आशीर्लिङ्

प्र० पु०	पाठ्यात्	पाठ्यास्ताम्	पाठ्यासुः	पाठयिषीष्ट	पाठयिषीयास्ताम्	पाठयिषीरन्
म० पु०	पाठ्याः	पाठ्यास्तम्	पाठ्यास्त	पाठयिषीष्ठाः	पाठयिषीयास्थाम्	पाठयिषीध्वम्
उ० पु०	पाठ्यासम्	पाठ्यास्व	पाठ्यास्म	पाठयिषीय	पाठयिषीवहि	पाठयिषीमहि

'लृङ्' हेतुहेतुमद्भाव भविष्यत्

प्र० पु०	अपाठयिष्यत्	अपाठयिष्यताम्	अपाठयिष्यन्	अपाठयिष्यत	अपाठयिष्येताम्	अपाठयिष्यन्त
म० पु०	अपाठयिष्यः	अपाठयिष्यतम्	अपाठयिष्यत	अपाठयिष्यथाः	अपाठयिष्येथाम्	अपाठयिष्यध्वम्
उ० पु०	अपाठयिष्यम्	अपाठयिष्याव	अपाठयिष्याम	अपाठयिष्ये	अपाठयिष्यावहि	अपाठयिष्यामहि

प्राथमिक धातु					प्रेरणार्थक क्रियाएँ		प्रेणार्थक क्रियाएँ	
संस्कृत	हिन्दी	इङ्गलिश	लुङ्	हिन्दी	लट्	हिन्दी	लुङ्	हिन्दी
अधि+इ=	पढ़ना	To study	अध्यागिष्ट अध्यैत	अध्ययन किया	अध्यापयति	पढ़वाता है	अध्यापीपत्	पढ़वाया था
प्र+इष्=	भेजना	To send	प्रैषीत्	भेजा था	प्रेषयति	भेजवाता है	प्रैषिषत्	भेजवाया था

इनसे अतिरिक्त लकारों के रूप (conjugations) पठधातु के समान ही होते हैं।

तृतीयः पाठः

प्रेरणार्थक क्रिया के उदाहरण

इंगलिश में प्रेरणाथक क्रिया (Causal verb) बनाने के नियम निम्नलिखित हैं।

प्रधान क्रिया (Principal verb) के पूर्व 'Make Cause, Have, Get' इत्यादि लगा कर प्रेरणार्थक क्रिया बनती है। परन्तु, have, get' के पश्चात् क्रिया में (Past Participle) का प्रयाग होता है और 'make, cause' के पश्चात् क्रिया में (Infinitive mood) का प्रयोग होता है। किन्तु make के साथ infinitive का चिन्ह To छिपा दिया जाता है और Cause के साथ To चिह्न जोड़ दिया जाता है। परन्तु दूसरी बात यह है कि उस verb का object उठाकर make और Cause के पीछे समीप ही रख दिया जाता है और infinitive से पूर्व object को रक्खा जाता है। जैसे—Mohan makes me write the letter यहाँ me को makes के पीछे और infinitive से पूर्व में object को अर्थात् me को रक्खा गया है।

मोहनो मया पत्रं लेखयति = मोहन मुझसे पत्र लिखवाता है।

१—Mohan causes me to write the letter.

२—Mohan makes me write the letter.

३—Mohan has the letter written by me.

४—Mohan gets the letter written by me.

मोहनो मया पत्रमलेखयत् = मोहन ने मुझसे पत्र लिखवाया।

१—Mohan caused me to write the letter.

२—Mohan made me write the letter.

३—Mohan had the letter written by me.

४—Mohan got the letter written by me.

अहं त्वया पत्रं लेखयिष्यामि।
मैं तुमसे पत्र लिखवाऊँगा।

१—I shall have the letter written by you.

२—I shall get the letter written by you.

३—I shall cause you to write the letter.

४—I shall make you write the letter.

"लट्" वर्तमान काल के उदाहरण

१—पिता अध्यापकेन पुत्रं पाठयति=बाप बेटे को अध्यापक से पढ़वाता है। The father gets his son taught by the teacher.

२—पिता पुत्रेण पत्रं लेखयति=बाप बेटे से पत्र लिखाता है। The father makes the son write a letter or The father has the letter written by the his son.

३—मोहनो गोविन्देन तं जलं पाययति=मोहन गोविन्द से उसको पानी पिलवाता है। Mohan causes Govind to give him water

"लोट् लकार" के उदाहरण

१—इदं कार्यं (केनचिदन्येन) कारय=यह काम (किसी दूसरे से) करवाओ। Have this work done.

२—इदं कार्यं कारय=यह काम (किसी तीसरे से) करवाओ। Cause to have this work done.

३—अध्यापको बालकान् पुस्तकानि पाठयतु=मास्टर लड़कों से पुस्तकें पढ़वावें। The teacher may have the books read by the boys.

४—त्वं तं पाठय=तू उसे पढ़ा (तू उसे पढ़वा) Thou mayst get him read.

५—त्वमिदं कार्यं कारय=तू इस काम को करवा। Thou mayst get this work done.

६—तौ तं पाठयताम्=वे दोनों उसे पढ़वावें। They both may have him taught.

७—किमहं त्वया पत्रं पाठयानि? क्या मैं तुमसे पत्र पढ़वालूँ (पढ़वाऊँ) May I get the letter read by you.

८—किमहं त्वया पत्रं लेखयानि? क्या मैं तुमसे पत्र लिखवालूँ? Should I get the letter written by you?

९—किमहं नापितेन मुण्डयानि? क्या मैं नाई से बाल बनवा लूँ? Should I get my hair cut by the barber?

विधिलिङ् के उदाहरण

१—त्वं सुधया स्वगृहं लेपयेः=तुझे अपने घर को कलई से पुतवाना चाहिये। Thou shouldst have thine home white-washed.

२—वयं रजकेन वस्त्राणि प्रक्षालयेम=हमें धोबी से कपड़े धुलवाना चाहिये। We should get the clothes washed by the washer-man.

३—स त्वां पाठयेत्=वह तुझे पढ़वावे अथवा उसको तुझे पढ़वाना चाहिये। He must get thee taught.

४—उभौ तौ मोहनं पाठयेताम्=वे दोनों मोहन को पढ़वावें अथवा उन दोनों को मोहन को पढ़ाना चाहिये। They both must get Mohan taught.

५—ते पाठयेयुः=उन सबको पढ़वाना चाहिये अथवा वे सब पढ़वावें। They all must get you taught.

आशीर्लिङ् के उदाहरण

१—स तं पाठ्यात्=ईश्वर करे कि वह उसे पढ़वावें। May he get him taught.

२—ईश्वरः त्वां परीक्षायां सफली कार्य्यात्=परमात्मा तुझे परीक्षा में सफल करवावे। May God get thee (you) succeeded in the examination.

३—परमात्मा तं सत्कार्येषु योज्यात्=परमात्मा उसे अच्छे कामों में लगवावे। May God make him used to do good deeds.

भूतकाल के उदाहरण

१—स युष्मानपाठयत्=उसने तुमको पढ़वाया। He caused you to read.

२—तवभ्राता इदं पत्रं मया अपीपठत्=तेरे भाई ने इस पत्र को मुझसे पढ़वाया था। your brother made me read this letter.

३—आवां युष्माकं कार्यमकारयावहि=हम दोनों ने तुम्हारे काम को करवाया था। We both got your work done.

४—उभौ तौ त्वां मिष्टान्नमखादयताम्=उन दोनों ने तुझे मिठाई खिलाई थी। They both got the sweets eaten by thee.

५—शिशवः स्वमात्रा क्रीडनकानि अक्रापयन्=बच्चों ने माँ से खिलौने खरीदवाये। The children made their mother buy toys. or the children caused their mother to buy playthings.

६—अहं तमपाठयम्=मैंने उसको पढ़वाया। I made him to be taught.

७—त्वमिदं चित्रं केन अकार्षयः? तूने (तुमने) यह चित्र किससे खिचवाया। By whom did you get this photographed.

हेतुहेतुमद्भाव भविष्यत् के उदाहरण

१—यदि यूयं मां दुग्धमपाययिष्यत तर्हि अहं युष्मान् आम्रफलानि अखादयिष्यम्=यदि तुम मुझे दूध पिलवा दोगे तो मैं तुम्हें आम खिलवा दूँगा। If you will get me drunk the milk, I shall have you eaten the mangoes

२—यदि त्वं स्वकार्यमकारयिष्यः तर्हि अहमकारयिष्यम्=यदि तू अपना काम करवायेगा तो मैं कर दूँगा। If thou wilt cause thy work do, I shall have done your work.

३—यदि यूयं पुस्तकानि मह्यमक्रापयिष्यत, तर्हि अहमक्रेष्यम्। यदि तुम मुझे पुस्तकें खरीदवा दोगे तो मैं खरीद लूँगा। If you will have get me purchased the books I shall have bought them.

४—यदि त्वं तमपाठयिष्यः तर्हि स अपठिष्यत्=यदि तू उसको पढ़वायेगा तो वह पढ़ेगा। If thou wilt cause him taught he will read.

भविष्यत्काल के उदाहरण

१—स मोहनं गोविन्देन पाठयिष्यति=वह मोहन को गोविन्द से पढ़वायेगा। He will get Mohan taught by Govind.

२—अहं त्वया कार्यं कारयिष्यामि=मैं तुमसे काम करवाऊँगा। I shall make you do the work.

३—किं त्वं मह्यं पुस्तकानि दापयिष्यसि? क्या तू मुझे पुस्तकें दिलवायेगा? Wilt thou cause to give me books?

४—सः तेन इदं कार्यं कारयिष्यति=वह उससे इस काम को करवायेगा। He will get this work done by him.

५—माता पुत्रं शाययिष्यते=माता पुत्र को सुलवायेगी The mother will cause the child to be slept.

६—मोहनः शिशून् रोदयिष्यति=मोहन बच्चों को रुलायेगा। Mohan will make the children weep.

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिये :—

साधारण वाक्य	प्रेरणार्थक वाक्य
शत्रवः स्वर्गमगच्छन्	श्री हरिः शत्रून् स्वर्गमगमयत्
देवा अमृतमाश्नन्	रामो देवानमृतमाश त
विधिर्वेदमध्यैत	हरि र्विधिं वेदमध्यापयत्
सलिले पृथिवी आस्त	हरिः सलिले पृथिवीमासयत
स्वकीयाः वेदार्थमविदुः	हरिः स्वान् वेदार्थमवेदयत्
शिष्यो धर्मं बोधति	गुरुः शिष्यं धर्मं बोधयति
रामो मारीचं हन्ति	सीता रामेण मारीचं घातयति
छात्राः पुस्तकानि क्रीणन्ति	शिक्षकः छात्रैः पुस्तकानि क्रापयति
मंत्री धनं ददाति	राजा मंत्रिणा धनं दापयति
रामो वनं प्रविशति	गुहको रामं वनं प्रवेशयति
रामो धनु र्गृह्णाति	जनको रामेण धनु र्ग्राहयति
गोविन्दः शास्त्रमधीते	गुरु र्गोविन्दं शास्त्रमध्यापयति
हरि र्दुग्धं पिबति	माता हरिं दुग्धं पाययति
रामो विश्वामित्रं पश्यति	दशरथो रामं विश्वामित्रं दर्शयति
भृत्यो ह्रस्वपादपान् सिञ्चति	श्रेष्ठी भृत्येन ह्रस्वपादपान् सेचयति
शिशुः सर्पाद् बिभेति	सर्पः शिशुं भीषयते

संस्कृत में अनुवाद कीजिये :—

१—माँ बच्चे को चाँद दिखाती है २—बहिन अपने छोटे भाई को दूध पिलाती है ३—वह मास्टर को संगीत सुनाता है ४—महेन्द्र मोहन को गाँव भिजवाता है ५—श्रीराम अपने शिष्यों को धर्म जनाता है ६—माँ पुत्र को भोजन खिलाती है ७—सुरेश नौकरों से बोझ ढुलवाता है ८—श्रीराम ने राक्षसों को स्वर्ग भेजा ९—श्रीराम ने देवताओं को अमृत पिलाया १०—भगवान् ने पृथिवी को पानी पर ठहराया ११—उसने मेरे बच्चे को डरवा दिया १२—यदु ने नौकर से उसको पिटवा दिया १३—मैंने तुझे पुस्तक खरीदवाई थी १४—उसने मुझसे रुपया दिलवाया था १५—गोविन्द ने बच्चे को रुला दिया १६—मैं राम के हाथ से पुस्तक भेजवा दूँगा १७—हम तुम्हारा काम नौकर से करवा देंगे १८—वह गाड़ी से सामान उतरवा देगा १९—सोहन अपने भाई

को गाड़ी पर बिठलवायेगा २०—हरि मोहन से मुझे मरवायेगा २१—वह मुझसे वस्त्र खरीदवायेगा २२—माँ दासी से बच्चे को सुलवायेगी २३—वागीश रमेश से गाना गवायेगा २४—मेरे पिता मुझे अध्यापक से पढ़वायेंगे २५—क्या तुम अपना काम नौकर से करवा लोगे ? २६—क्या तुम अपना मकान कलई से पुतवाओगे ? २७—यदि सुरेन्द्र ने मुझे पुस्तक दिलवायी होती तो मैं पढ़ता २८—यदि उसने वस्त्र मँगवाया तो मैं उसे भेजवा दूँगा २९—यदि वह मुझसे पत्र पढ़वायेगा तो मैं पढ़ दूँगा ३०—यदि तुम मुझे अध्यापक से पढ़वाओगे तो मैं पढ़ूँगा।

———

पञ्चमः पाठः

अथ सनन्त प्रकरणम् (Desiderative)

इच्छार्थ में धातु से परे सन् (स) प्रत्यय जोड़ने पर धातु के द्वित्वादि कार्य होते हैं। जैसे—'भू+भू+स+ति' यहाँ द्वित्वादि कार्य करने पर 'बुभूषति' प्रयोग बना। इसका विग्रह इस प्रकार है 'भवितुम् इच्छति। पठितुम् इच्छति =पिपठिषति' इत्यादि।

परन्तु जहाँ दूसरे की इच्छा हो वहाँ 'सन्' नहीं होता है। जैसे—रामः श्यामस्य गमनमिच्छति। शिष्याः पठन्तु गुरुरिच्छति। इत्यादि वाक्यों में 'सन्' नहीं हुआ है। इसी प्रकार और जगह भी जान लेना चाहिये। सन् प्रत्यान्त धातुओं के रूप उभय पदी चलते हैं।

यहाँ केवल वर्तमान काल प्रथम पुरुष के एक वचन में ही रूप निम्नलिखित हैं—

संस्कृत = हिन्दी	संस्कृत = हिन्दी
बुभूषति = होना चाहता है	जिगमिषति = जाना चाहता है
शुश्रूषते = सुनना चाहता है	दिदृक्षति = देखना चाहता है
पिपासति = पीना चाहता है	तिष्ठासति = ठहरना चाहता है
पिपठिषति = पढ़ना चाहता है	शिशयिषते = सोना चाहता है
चिखादिषति = खाना चाहता है	जिघत्सति = खाना चाहता है
रुरुदिषति = रोना चाहता है	चिखनिषति = खोदना चाहता है
चिकीर्षति = करना चाहता है	चुक्रुधिषति = क्रोध करना चाहता है
चिक्रीडिषति = खेलना चाहता है	दित्सति = देना चाहता है
चिक्रीषति = खरीदना चाहता है	धित्सति = धारण करना चाहता है
जिघांसति = मारना चाहता है	दुधुक्षति = दुहना चाहता है

संस्कृत = हिन्दी	संस्कृत
पिप्रच्छति = पूछना चाहता है	बिभित्सति = विदीर्ण करना चाहता है
पिप्रीषति = प्रसन्न करना चाहता है	सुषुप्सति = सोना चाहता है
निनीषति = ले जाना चाहता है	विवक्षति = बोलना चाहता है
बुबोधिषति = जानना चाहता है	मुमुक्षति = छोड़ना चाहता है
आसिसिषति = बैठना चाहता है	सुस्मूर्षति = स्मरण करना चाहता है
बिभन्त्सति = बाँधना चाहता है	जिहिंसिषति = मारना चाहता है
जिगासति = गाना चाहता है	यियाचिषति = मांगना चाहता है
मुमूर्षति = मरना चाहता है	विवक्षति = ढोना चाहता है
पिस्पृक्षति = छूना चाहता है	विविदिषति = प्राप्त करना चाहता है
जिहसिषति = हँसना चाहता है	रुरुत्सति = रोकना चाहता है
जिहीर्षति = चुराना चाहता है	दिदेविषति, दुद्यूषति { जुआ खेलना चाहता है
विवत्सति = निवास करना चाहता है	मिमिलिसति, मिमेलिषति { मिलना चाहता है
विविदिषति = जानना चाहता है	
विवित्सति = विचार करना चाहता है	
बिभीषति - डरना चाहता है	
बिभ्रमिषति = टहलना चाहता है	
जिज्ञासति = जानना चाहता है	
ईप्सति = चाहना करता है	

सूचना—इसी प्रकार सब गणों के धातुओं से और णिजन्त से भी "सन्" प्रत्यय होता है।

सनन्त के उदाहरण

१—बालकः पिपठिषति = लड़का पढ़ना चाहता है। The boy is desirous of reading.

२—शिष्यो जिगमिषति = छात्र जाना चाहता है। The pupil is desirous of going.

३—यदुरिदं चिकीर्षति = यदु यह करना चाहता है। Yadu wishes to do it.

४—हरि नदीं तितीर्षति = हरि नदी को तैरना चाहता है Hari wishes to swim the river

५—राजा शत्रुं विजिगीषते = राजा शत्रु को जीतना चाहता है। The king wishes to conquer the enemy.

६—पुरोहितो यियक्षति = पुरोहित यज्ञ करना चाहता है। The priest wishes to perfom a sacrifice

६—बालकाः निनर्तिषति=लड़के नाचना चाहते हैं। Boys wish to dance.

७—माधवः पुष्पाणि चिकीषति=माधव फूलों को चुनना चाहता है। Madhava wishes to collect the flowers.

८—गोविन्दो भूमिं विचिक्रीषते=गोविन्द पृथ्वी बेचना चाहता है। Govind wishes to sell the land.

९—रामः तां चिक्रीषति=राम उसको खरीदना चाहता है। Ram wishes to buy it.

१०—स वेदान् शुश्रूषते=वह वेदों को सुनना चाहता है। He wishes to hear the vedas.

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिये—

१—मोहनः शास्त्रं जिज्ञासते (ज्ञा) २—स धनं लिप्सते (लभ) ३—मुनि र्हरिं दिदृक्षते (दृश) ४—श्यामो गृहं प्रतिष्ठासते (प्र+स्था) ५—दिलीपो धनं दित्सति (दा) ६—स वस्त्रं जिघृक्षति (ग्रह्) ७—श्रीकृष्ण मधुदैत्यं जिघांसति (हन्) ८—स आसने आसिसिषते (आस्)

संस्कृत में अनुवाद कीजिये—

(१) राम घर को जाना चाहता है (२) यदुनन्दन पढ़ना चाहता है। (३) वह उसे मारना चाहता है (४) यतीश ठहरना चाहता है। (५) बच्चा सोना चाहता है (६) लड़के खेलना चाहते हैं। (७) वह हँसना चाहती है (८) वे लड़के उसको छूने चाहते हैं। (९) वह यहाँ निवास करना चाहता है (१०) ग्वाला दूध दुहना चाहता है। (११) वह राम से मिलना चाहता है (१२) वह तुझे छोड़ना चाहता है। (१३) घनश्याम टहलना चाहता है (१४) वे जुआ खेलना चाहते हैं।

द्रष्टव्यः—सनन्त से "शतृ और शानच्" प्रत्यय के भी रूप बनते हैं परन्तु ये विशेषण होते हैं। जैसे—जिगमिषन् पिपठिषन्, जिज्ञासमानः विजिगीषमाणः, इत्यादि जान लेने चाहिये।

१—वाराणसीं जिगमिषन् वृद्धो ममार=बनारस जाने की इच्छा करता हुआ वृद्ध मर गया—The oldman wishing to go to Banares died।

२—जिज्ञासमानः शिष्यो गुरुं प्राप्तवान्=जानने की इच्छा वाला शिष्य ने गुरु को प्राप्त किया। The pupil desirous of asking something went to his preceptor.

द्रष्टव्यः—सनन्त धातु के आगे "आ, उ" लगाने से संज्ञा (Noun) बन जाते हैं। जैसे—जलस्य पिपासा, जलं पिपासुः। जिज्ञासा, शश्रूषा कार्यं चिकीर्षुः=काम करने की इच्छा वाला। नदीं तितीर्षुः—नदी तैरने की इच्छा वाला। धनं लिप्सुः=धन का लोभी इत्यादि समझ लेना चाहिये।

षष्ठः पाठः

अथ यङन्त प्रकरणम् (Frequentative)

अतिशय अर्थ में और बारम्बार अर्थ में अथवा पुनः पुनः अर्थ में व्यञ्जनादि धातु से परे "यङ्" प्रत्यय होता है और धातु को द्वित्व आदि कार्य होता है। जैसे—रुद्, रुद्+य+ते='रोरुद्यते' इत्यादि।

१—सीता रोरुद्यते=सीता पुनः पुनः रोती है।
Sita weeps again and again.

२—रामो दीनेभ्यो देदीयते=राम गरीबों को बारम्बार देता है।
Ram gives to poor repeatedly,

३—सर्पःसरीसृप्यते=साँप बारबार रेंगता है।
A snake goes in a zigzag course. or the snake creeps again and again.

४—मयूराःनरीनृत्यन्ते=मोर बार बार नाचते हैं।
the peacocks dance repeatedly.

५—हरिःपुष्पवाटिकां सेसिच्यते=हरि फुलवारी को पुनः पुनः सींचता है।
Hari pours the garden again and again.

६—कृषकाः क्षेत्राणि चरीकृष्यन्ते=किसान खेतों को बारंबर जोतते हैं।
the cultivators plough the field again and again.

७—विलासी पुष्पं पुनः पुनः जघ्रीयते=विलासी पुनः पुनः फूल सूँघता है।
The luxuriant smells the flower again and again.

८—निद्रालुः शाशय्यते=निद्रालु बारबार सोता है।
the sleepy person is repeatedly lying.

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

१ घातको तं जङ्घन्यते (हन्) २—वृश्चिको दन्दश्यते (दश्) ३—सूर्यः तातप्यते (तप्) ४—शोकानलो मां दन्दह्यते (दह्) ५—बालकाः शाशय्यन्ते (शीङ्) ६—रावणो वने अटाट्यते (अट्) ७—शूर्पणखा चङ्क्रम्यते (क्रम्) ८—सर्प कुटिलं वाव्रज्यते (व्रज्)

संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

१—गोविन्द बारम्बार पानी पीता है (पेपीयते) २—बच्चा पुनः पुनः चलता है (चञ्चल्यते) ३—मोहन अत्यन्त सोचता है (शोशुच्यते) ४—वह मुझे बार बार देखती है (दरीदृश्यते) ५—सुरेश पुनः पुनः गिरता है। ६—सोहन बारबार देता है। ७—वह मुझे बारबार मारता है। ८—रवीन्द्र अत्यन्त घूमता है। ९—यह गाय बार बार भागती है। १०—यह कुत्ता बार बार आता है।

द्रष्टव्य—यङन्त से भी केवल "शानच्" प्रत्यय के जो शब्द बनते हैं, वे सर्वदा विशेषण होते हैं। जैसे—

यः पुनः पुनः रोदिति, स रोरुद्यमानः।

या पुनः पुनः शोचति, सा शोशुच्यमाना।

यत्पुनः पुनः दीप्यते, तत् देदीप्यमानम्।

आकाशे देदीप्यमानानि नक्षत्राणि दृष्ट्वा, नरीनृत्यमाना बालिका मातरमाह।

सप्तमः पाठः

अथ नाम धातु प्रकरणम्

Denominative or nominal Verbs

किसी नाम के पश्चात् "क्यच्, काम्यच् क्यङ्" प्रत्यय लगाने पर जो क्रिया बनती है उसे नाम धातु कहते हैं।

'क्यच् काम्यच्' इनका अर्थ कर्म सम्बन्धि सदृश इच्छा करना है और 'क्यङ्' का अर्थ कर्तृ सदृश आचरण करना होता है। उपर्युक्त तीनों प्रत्ययों के स्थान में "य" शेष रह जाता है।

(मान्त शब्द तथा अव्यय शब्दों से उपर्युक्त प्रत्यय नहीं होते। जैसे—किमिच्छति, उच्चैरिच्छति इत्यादि)

इच्छा अर्थ में नाम के अन्त में ह्रस्व 'अ' हो अथवा 'इ' हों तो दीर्घ 'ई' हो जाती हैं। जैसे—पुत्र शब्द ह्रस्व अकारान्त है और कवि शब्द ह्रस्व इकारान्त है।

आत्मनः पुत्रमिच्छति=पुत्रीयति (पुत्र को चाहता है)

आत्मनः कविमिच्छति=कवीयति (कवि बनना चाहता है)

यदि नाम के अन्त में ऋकार हो तो 'री' हो जाता है। जैसे—आत्मनः कर्तामिच्छति=कर्त्रीयति (कर्ता को चाहता है) यह अकर्मक धातु है

नाम के अन्त में अनुनासिक "न" का लोप हो जाता है।

जैसे—राजन् शब्द से "आत्मनः राजानामिच्छति=राजीयति" जो अपने आप स्वयं राजा बनना चाहता है। यहाँ भी अकर्मक धातु है

व्यवहार अर्थ में भी "क्यच्" प्रत्यय होता है। जैसे—

गुरुः छात्रं पुत्रीयति=गुरु विद्यार्थी को पुत्रवत् वर्ताव करता है।

मोहनो गुरुं पित्रीयति=मोहन गुरु को पिता के समान व्यवहार करता है। यहाँ सकर्मक धातु है

भिक्षुकः कुट्यां प्रासादीयति=भिक्षुक कुटी को महल समझता है।

"काम्यच्" प्रत्यय केवल इच्छा अर्थ में भी होता है। जैसे—

"आत्मनः पुत्रमिच्छति=पुत्रकाम्यति" पुत्र की कामना करता है।

"क्यङ्" प्रत्यय लगाने पर नाम के अन्त में ह्रस्व अकार को दीर्घ "आ" हो जाता है और क्यङन्त धातु अकर्मक होता है।

जैसे—सः कष्टायते=वह पाप करने का उत्साह करता है।

पुत्रायते=पुत्र की तरह व्यवहार करता है।

"कुरङ्गायते=मृग के सदृश छलांगे मारता है।

श्यामायते=काले की तरह होता है।

मन्दायते=मन्द के सदृश होता है।

मूर्खः पण्डितायते=मूर्ख पंडित के समान व्यवहार करता है।

"ङीप्" प्रत्यान्त इकार का लोप हो जाता है। जैसे—

कुमारी शब्द से—"कुमारायते"। सपत्नी शब्द से—"सपत्नायते अथवा सपत्नीयते" दोनों रूप बनते हैं।

निकालने अर्थ में भी "क्यङ्" प्रत्यय होता है। जैसे—

मोहनो वाष्पायते=मोहन आँसू निकालता है।

अग्नि धूमायते=अग्नि धुआँ निकालती है।

जलमुष्मायते=पानी भाप बनाकर निकालता है।

अर्थ और वेद शब्दों से "णि" प्रत्यय हो तो इनसे "आपुक्" का आगम होता है। जैसे—अर्थापयति और वेदापयति सः सत्यापयति=वह सच्चाई करता है।

"पृथु" आदि विशेषणों से भी इष्ठवत् की तरह कार्य होता है।

जैसे—पृथु शब्द से—प्रथयति=फैलाता है।

लघु शब्द से—लघयति=हलका करता है।

दृढ शब्द से—द्रढयति=मजबूत करता है।

मृदु शब्द से—म्रदयति=मृदुल करता है।

तपः शब्द से—तपस्यति=तप करता है।

असू शब्द से—असूयति=डाह करता है।

चित्र शब्द से—चित्रीयति=आश्चर्य करता है।

आचरण अर्थ में "क्विप्" प्रत्यय होता है।

जैसे—कृष्ण इव आचरति=कृष्णति।

क्विप् प्रत्यय परे होने पर अनुनासिकान्त नाम के पूर्व "अ" को दीर्घ "आ" हो जाता है। जैसे—

राजा इव आचरति=राजानति।

इदमिव आचरति=इदामति।

पन्था इव आचरति "पथीनति,

मुनि इव आचरति=मुनयति। पुत्र इव आचरति=पुत्रीयति।

पिता इव आचरति पित्रीयति। इत्यादि समझ लेने चाहिये।

नाम धातु के उदाहरण

१—बालको मां सखीयति=बालक मुझे मित्र के सदृश मानता है। The boy treats me like his friend.

२—गोविन्दो यशः काम्यति (यशस्यति)=गोविन्द यश की कामना करता है। Govind wishes for his own fame.

३—स तं पुत्रीयति=वह उसको पुत्र की तरह व्यवहार करता है। He treats him like his son.

४—मोहनो गुरुं पित्रीयति=मोहन गुरु को पिता के समान मानता है। Mohan treats his preceptor like a father.

५—सर्वेजनाः तं राजीयन्ति=सब मनुष्य उसको राजा की तरह व्यवहार करते हैं। All men treat him like a king.

६—मोहनः शिष्यायते = मोहन शिष्य की तरह आचरण करता है।
Mohan behaves like a pupil.

७—ह्रस्वपादपाः हि द्रुमयन्ते = छोटे छोटे पौधे बड़े पेड़ के समान मालूम पड़ते हैं। Little plants look like the big trees.

८—दुर्वृत्ताः सर्वदा वैरायन्ते = दुष्ट लोग सदा वैर करते रहते हैं।
The wicked persons feel enemity always.

९—सः कृष्णाति = वह कृष्ण की तरह आचरण करता है।
He behaves like Krishna.

१०—गोविन्दः इदामति = गोविन्द इसकी तरह आचरण करता है।
Govind behaves like it

अभ्यास १५

हिन्दी में अनुवाद कीजिये—

(१) निर्धनः धनं काम्यति (२) शिशुः चपलायते (३) बालकाः सर्वदा कलहायन्ते (४) माधवः सर्वदा सुखायन्ते (५) दरिद्राः दुःखायन्ते (६) मूर्खः पण्डितायते (७) सुरेशो राजीयति (८) जलमुष्मायते (९) स कर्त्रीयति (१०) हरः चरित्रं प्रथयति (११) सोहनो भारं लघयति। (१२) महेन्द्रः कवीयति (१३) ते शब्दायन्ते।

(१४) यत्र विद्वज्जनो नास्ति, श्लाध्यः तत्राऽल्पधीरपि।
निरस्त पादपे देशे, एरण्डोऽपि द्रुमायते॥

१३—इह लोके हि धनीनां परोऽपि सुजनायते।
स्वजनोऽपि दरिद्राणां, सर्वदा दुर्जनायते॥

१४—तक्रं न रोचतेऽस्माकं, दुग्धं च मधुरायते।

१५—यद् दिव्यनाम स्मरतां, संसारो गोष्पदायते।
स्वानन्यभक्तिभर्वति, तद्राम पदमाश्रये॥

संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(१) सुरेश पुत्र चाहता है (२) वह पाप करने का उत्साह करता है (काष्टायते) (३) देवेन्द्र स्वयं कवि बनना चाहता है (४) वह मृग के समान छलांगे मारता है (५) दुष्ट लोग झगड़ा करते रहते हैं (६) इस लड़के को देखकर आँखों में आँसू निकल आया। (७) बेईमान मनुष्य अपनी सचाई के लिए सदा सत्य की दोहाई देता रहता है (८) जिसके पास धन है यह बृद्ध होते हुए भी जवान है और जिसके पास धन नहीं है वह जवान होते हुए भी बृद्ध है (९) मनुष्य की तृष्णा जवान होती जाती है (१०) वह सपने में बक बक

करता रहता है (११) वह मुझसे बैर करता रहता है (१२) लड़के सदा शोर मचाते रहते हैं (१३) धनी सुखी होना चाहता है।

द्रष्टव्य—"क्यच्, काम्यच्, क्यङ्" इन प्रत्ययों से "शतृ और शानच्" के जो प्रयोग बनते हैं वे विशेषण होते हैं।

१—जैसे—दशरथः पुत्रीयन् –(पुत्रकाम्यन्) ऋष्यश्रृङ्गमानिनाय = दशरथ ने पुत्र कामना के लिए श्रृङ्गी ऋषि को ले आये।
Wishing for a son Dashrath brought Rishi Shringa.

२—रामो गुहकं सखीयन् चित्रकूटमगच्छत् = राम गुह से मित्रता का व्यवहार करते हुए चित्रकूट गए। Rama treating Guhaka (Sailor) like a friend went to Chitrakuta.

३—गुरुः पुत्रायमाणे शिष्ये सन्तुष्यति = पुत्र की तरह आचरण करने वाले शिष्य पर गुरु प्रसन्न होता है। The preceptor pleases if the disciple behaves like the son.

४—वशिष्ठस्य होमधेनु नन्दिनी रोमन्थमाना तपोवनमुपस्थिता = वशिष्ठजी की होमधेनु नन्दिनी जुगाली करती हुई तपोवन में पहुंची (उपस्थित हुई)
Nandini the sacred cow of Vashistha, came to the hermitage chewining the cud.

हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

१—शूर्पणखा पतीयन्ती (पतिकाम्यन्ती) लक्ष्मणं जगाम २—साधवः परस्त्रियं मातरमिव मात्रीयन्ति (व्यवहरन्ति) ३—यः पुत्र इव आचरति स पुत्रायमाणः ४—या दुहिता इव आचरति सा दुहित्रीयमाणा।

———

कर्मवाच्य क्रियाएँ

(passive voice of verbs)

द्रष्टव्य—कुछ धातुओं (Roots) के आठ लकारों में प्रथम पुरुष के एक वचन में रूप (Conjugations) और "लृट्", लकार का मध्यम पुरुष के एक वचन में रूप तथा "लुङ्" लकार के प्रथम पुरुष में सब वचनों के रूप (Conjugations) निम्नलिखित हैं।

संस्कृत	हिन्दी	लट्	लिट्	लुट्	"लृट्" सामान्यभविष्यत्	लोट्	विधिलिङ्	आशीर्लिङ्	लङ्	हेतुहेतुमद्भावभविष्यत्	लुङ् सामान्य भूतकाल		
दा=	देना	दीयते	ददे	दातासे=दायितासे	दास्यते=दायिष्यते	दीयताम्	दीयेत	दासीष्ट=दायिषीष्ट	अदीयत	अदास्यत=अदायिष्यत	अदायि	अदिषाताम् अदायिषाताम्	अदिषत अदायिषत
धा=	धारण करना	ध्रियते	दधे	धातासे=धायितासे	धास्यते=धायिष्यते	धीयताम्	धीयेत	धासीष्ट=धायिषीष्ट	अधीयत	अधास्यत=अधायिष्यत	अधायि	अधिषाताम् अधायिषाताम्	अधिषत अधायिषत
नी=	ले जाना	नीयते	निन्ये	नेतासे=नायितासे	नेष्यते=नायिष्यते	नीयताम्	नीयेत	नेषीष्ट=नायिषीष्ट	अनीयत	अनेष्यत=अनायिष्यत	अनायि	अनायिषाताम्	अनायिषत
लभ्=	प्राप्त करना	लभ्यते	लेभे	लब्धासे	लप्स्यते	लभ्यताम्	लभ्येत	लप्सीष्ट	अलभ्यत	अलप्स्यत	अलाभि अलम्भि	अलप्साताम्	अलप्सत
भज्=	तोड़ना	भज्यते	बभञ्जे	भङ्क्तासे	भङ्क्ष्यते	भज्यताम्	भज्येत	भङ्क्षीष्ट	अभज्यत	अभङ्क्ष्यत	अभाजि अभञ्जि	अभङ्क्षाताम्	अभङ्क्षत
पठ्=	पढ़ना	पठ्यते	पेठे	पठितासे	पठिष्यते	पठ्यताम्	पठ्येत	पठिषीष्ट	अपठ्यत	अपठिष्यत	अपाठि	अपठिषाताम्	अपठिषत
प्रच्छ्=	पूछना	पृच्छ्यते	पप्रच्छे	प्रष्टासे	प्रक्ष्यते	पृच्छ्यताम्	पृच्छ्येत	प्रक्षीष्ट	अपृच्छ्यत	अप्रक्ष्यत	अप्रच्छि	अप्रक्षाताम्	अप्रक्षत
ग्रह्=	लेना	गृह्यते	जगृहे	ग्रहीतासे=ग्राहितासे	ग्रहीष्यते=ग्राहिष्यते	गृह्यताम्	गृह्येत	ग्रहीषीष्ट=ग्राहिषीष्ट	अगृह्यत	अग्रहीष्यत=अग्राहिष्यत	अग्राहि	अग्रहीषाताम् अग्राहिषाताम्	अग्रहीषत अग्राहिषत
श्रु=	सुनना	श्रूयते	शुश्रुवे	श्रोतासे=श्रावितासे	श्रोष्यते=श्राविष्यते	श्रूयताम्	श्रूयेत	श्रोषीष्ट=श्राविषीष्ट	अश्रूयत	अश्रोष्यत=अश्राविष्यत	अश्रावि	अश्राविषाताम् अश्रोषाताम्	अश्राविषत अश्रोषत
पा=	पीना	पीयते	पपे	पातासे=पायितासे	पास्यते=पायिष्यते	पीयताम्	पीयेत	पासीष्ट=पायिषीष्ट	अपीयत	अपास्यत=अपायिष्यत	अपायि	अपायिषाताम् अपासाताम्	अपायिषत अपासत
गै=	गाना	गीयते	जगे	गातासे=गायितासे	गास्यते=गायिष्यते	गीयताम्	गीयेत	गासीष्ट=गायिषीष्ट	अगीयत	अगास्यत=अगायिष्यत	अगायि	अगायिषाताम् अगासाताम्	अगायिषत अगासत
कृ=	करना	क्रियते	चक्रे	कर्तासे=कारितासे	करिष्यते=कारिष्यते	क्रियताम्	क्रियेत	कृषीष्ट=कारिषीष्ट	अक्रियत	अकरिष्यत=अकारिष्यत	अकारि	अकारिषाताम् अकृषाताम्	अकारिषत अकृषत
हन्=	मारना	हन्यते	जघ्ने	हन्तासे=घानितासे	हनिष्यते=घानिष्यते	हन्यताम्	हन्येत	वधिषीष्ट=घानिषीष्ट	अहन्यत	अहनिष्यत=अघानिष्यत	अवधि अघानि	अवधिषाताम् अघानिषाताम् अहसाताम्	अवधिषत अघानिषत अहसत
दृश्=	देखना	दृश्यते	ददृशे	द्रष्टासे=दर्शितासे	द्रक्ष्यते=दर्शिष्यते	दृश्यताम्	दृश्येत	दृक्षीष्ट=दर्शिषीष्ट	अदृश्यत	अद्रक्ष्यत=अदर्शिष्यत	अदर्शि	अदृक्षाताम् अदर्शिषाताम्	अदृक्षत अदर्शिषत
गम्=	जाना	गम्यते	जग्मे	गन्तासे	गंस्यते	गम्यताम्	गम्येत	गंसीष्ट	अगम्यत	अगंस्यत	अगामि	अगंसाताम्	अगंसत
जि=	जीतना	जीयते	जिग्ये	जेतासे=जायितासे	जेष्यते=जायिष्यते	जीयताम्	जीयेत	जेषीष्ट=जायिषीष्ट	अजीयत	अजेष्यत	अजायि	अजायिषाताम् अजेषाताम्	अजायिषत अजेषत
लड्=	प्यार करना	लाड्यते	लाडयाञ्चक्रे	लाडितासे=लाडयितासे	लाडिष्यते=लाडयिष्यते	लाड्यताम्	लाड्येत	लाडिषीष्ट=लाडयिषीष्ट	अलाड्यत	अलाडिष्यत=अलाडयिष्यत	अलाडि	अलाडिषाताम् अलाडयिषाताम्	अलाडिषत अलाडयिषत

प्रथमः पाठः

एकोनविंशतितमोऽध्यायः

अथ कर्मवाच्य (Passive Voice)

द्रष्टव्य—जब क्रिया (verb) का रूप यह बतलाता है कि कर्ता (subject ही काम को करने वाला है, तो उस क्रिया को कर्तृवाच्य (Active voice) कहते हैं। परन्तु जब क्रिया (verb) का यह रूप प्रकट होता हो, कि कर्ता (subject) करने वाला नहीं है तो उस क्रिया को कर्मवाच्य (passive voice) कहते हैं।

कर्मवाच्य में कर्ता (subject) में तृतीया विभक्ति (Inflexion) होती है अर्थात् करणकारक होता है और कर्म (object) में प्रथमाविभक्ति (Inflexion) होती है और कर्म के आधीन ही क्रिया भी होती है तथा कर्मवाच्य में सर्वदा आत्मने पद होता है परस्मै पद नहीं।

धातु से परे और प्रत्यय से पूर्व यक् "य" चिन्ह लगाया जाता है। परन्तु यह नियम "लट, लोट्, लङ् और विधिलिङ्" में ही होता हैं।

(क दीर्घ आकारान्त धातुओं के आकार को "ई" कर देते हैं।
जैसे—दा (give) धातु से "दीयते" पा (drink) धातु से "पीयते", स्था (stay) धातु से "स्थीयते"।
परन्तु किन्हीं किन्हीं धातुओं के आकार को 'ई' नहीं होता है।
जैसे- ज्ञायते, ध्यायते, स्नायते इत्यादि।

(ख) कोई कोई धातुओं के अनुस्वार का लोप हो जाता है। जैसे—शंस से, शस्यते, बन्ध से, बध्यते, इन्ध से, इध्यते, इत्यादि।

(ग) "वह्, ग्रह्, ब्रू, प्रच्छ्, यज्" इन धातुओं के स्थान पर क्रम से उह्, गृह्, उच्, पृच्छ्, इज' हो जाते हैं। जैसे उह्यते, गृह्यते, उच्यते, पृच्छ्यते इज्यते, इत्यादि।

(घ) धातु के ह्रस्व इकार और उकार को दीर्घ ईकार और ऊकार हो जाते हैं जैसे—जि (Win) धातु से, 'जीयते' श्रु (Hear) धातु से, 'श्रूयते' इत्यादि।

कर्मवाच्य

(ङ) ऋकारान्त धातु के 'ऋ' को 'रि' हो जाता है। जैसे—कृ (do) धातु से 'क्रियते'। हृ (steal) धातु से ह्रियतेधृ (Hold) धातु से, ध्रियते'। मृ (Die) धातु से, म्रियते, इत्यादि।

(च) णिजन्त से 'यक्' परे हो तो 'इकार' का लोप हो जाता है। जैसे—भावि+य+ते' यहाँ 'इ' का लोप कर दिया और 'व' को यकार से मिला देने से, 'भाव्यते' प्रयोग सिद्ध हुआ। इसी प्रकार पाठि+य+ते=पाठ्यते। स्थापि+य+ते=स्थाप्यते। श्रावि+य+ते=श्राव्यते। ग्राहि+य+ते=ग्राह्यते इत्यादि।

(छ) सनन्त से अथवा यङन्त से 'यक्' परे हो तो 'अकार' का लोप हो जाता है। जैसे—बुभुष्+य+ते=बुभुष्यते। पिपठिष्+य+ते=पिपठिष्यते। चिकीर्ष्+य+ते=चिकीर्ष्यते। दिदृक्ष्+य+ते=दिदृक्ष्यते। इत्यादि।

(ज) यङन्त से, बोभुय्+य+ते=बोभुय्यते। वाव्रज्य्+य+ते=वाव्रज्यते नरीनृत्य्+य+ते=नरीनृत्यते इत्यादि।

द्रष्टव्य—दश गणों में जो प्रकृत अकर्मक अथवा सकर्मक धातुएँ हैं। वैसे ही सनन्त में और यङन्त में भी रहते हैं। परन्तु जैसे णिजन्त के सब धातु सकर्मक हो जाते हैं वैसे 'यक्' परे होने पर नहीं होते अर्थात् अकर्मक धातु होगी तो अकर्मक ही रहेगी और सकर्मक होगी तो सकर्मक ही रहेगी।

क्रिया पद के रूप (Conjugations of verb)

'लट्' वर्तमान काल (Present tense)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	अनुभूयते	अनुभूयेते	अनुभूयन्ते
म० पु०	अनुभूयसे	अनुभूयेथे	अनुभूयध्वे
उ० पु०	अनुभूये	अनुभूयावहे	अनुभूयामहे

'लिट्' परोक्ष भूतकाल (Preterite tense)

प्र० पु०	अनुबभूवे	अनुबभूवाते	अनुबभूविरे
म० पु०	अनुबभूविषे	अनुबभूवाथे	अनुबभूविध्वे
उ० पु०	अनुबभूवे	अनुबभूविवहे	अनुबभूविमहे

'लुट्' अनद्यतन भविष्यत्काल (Future perfect tense)

प्र० पु०	अनुभाविता	अनुभावितारौ	अनुभावितारः

म० पु०	अनुभाविताासे	अनुभाविताासाथे	अनुभाविताध्वे
उ० पु०	अनुभाविताहे	अनुभाविताास्वहे	अनुभाविताास्महे

'लृट्' सामान्य भविष्यत्काल (Simple future tense)

प्र० पु०	अनुभाविष्यते	अनुभाविष्येते	अनुभाविष्यन्ते
म० पु०	अनुभाविष्यसे	अनुभाविष्येथे	अनुभाविष्यध्वे
उ० पु०	अनुभाविष्ये	अनुभाविष्यावहे	अनुभाविष्यामहे

'लोट्' आज्ञावाचक (Imperative mood)

प्र० पु०	अनुभूयताम्	अनुभूयेताम्	अनुभूयन्ताम्
म० पु०	अनुभूयस्व	अनुभूयेथाम्	अनुभूयध्वम्
उ० पु०	अनुभूयै	अनुभूयावहै	अनुभूयामहै

'लङ्' अनद्यतन भूत्काल (past perfect tense)

प्र० पु०	अन्वभूयत	अन्वभूयेताम्	अन्वभूयन्त
म० पु०	अन्वभूयथाः	अन्वभूयेथाम्	अन्वभूयध्वम्
उ० पु०	अन्वभूये	अन्वभूयावहि	अन्वभूयामहि

विधिलिङ् (Subjunctive mood or potential Mood)

प्र० पु०	अनुभूयेत	अनुभूयेयाताम्	अनुयूयेरन्
म० पु०	अनुभूयेथाः	अनुभूयेयाथाम्	अनुभूयेध्वम्
उ० पु०	अनुभूयेय	अनुभूयेवहि	अनुभूयेमहि

आशीर्लिङ् (Benedictive ·mood)

प्र० पु०	अनुभाविषीष्ट	अनुभाविषीयास्ताम्	अनुभाविषीरन्
म० पु०	अनुभाविषीष्ठाः	अनुभाविषीयास्थाम्	अनुभाविषीध्वम्
उ० पु०	अनुभाविषीय	अनुभाविषीवहि	अनुभाविषीमहि

'लुङ्' सामान्य भूतकाल (past tense)

प्र० पु०	अन्वभावि	{ अन्वभाविषाताम् अन्वभविषाताम् }	{ अन्वभाविषत अन्वभविषत
म० पु०	अन्वभाविष्ठाः	{ अन्वभाविषाथाम् अन्वभविषाथाम् }	{ अन्वभाविध्वम् अन्वभविध्वम्
उ० पु०	अन्वभाविषि	अन्वभाविष्वहि	अन्वभाविष्महि

हेतु हेतु मद् भाव भविष्यत् (Conditional future)

प्र० पु०	अन्वभाविष्यत	{ अन्वभाविष्येताम् अन्वभविष्येताम् }	अन्वभाविष्यन्त
म० पु०	अन्वभाविष्यथाः	{ अन्वभाविष्येथाम् अन्वभविष्येथाम् }	अन्वभाविष्यध्वम्
उ० पु०	अन्वभाविष्ये	अन्वभाविष्यावहि	अन्वभाविष्यामहि

यहाँ पर 'क्रिया' कर्म के आधीन होती है। अर्थात् जो पुरुष, वचन, और कर्म में होता है, वही क्रिया में भी होता है। जैसे—योगिना ब्रह्मानन्दोऽनुभूयते। यहाँ पर कर्म 'ब्रह्मानन्द' है अतः क्रिया भी ब्रह्मानन्द के आधीन है।

द्वितीय: पाठः

वर्तमान काल के उदाहरण

कर्तृवाच्य (Active voice)

प्रथम पुरुष Third person। योगी ब्रम्हानन्दमनुभवति = Ascetic feels heavenly pleasure योगी ब्रम्हानन्द का अनुभव करता है।

कर्मवाच्य Passsive voice

योगिना ब्रम्हानन्दोऽनूभूयते = Heavenly pleasure is felt by the Ascetic (Saint) योगी द्वारा ब्रम्ह का अनुभव किया जाता है।

कर्तृ०—मोहनौ सुख दुःखेऽनुभवतः = Both Mohans feel happiness and unhappiness. दोनों मोहन सुख दुखों को अनुभव करते हैं।

कर्म०—मोहनाभ्यां सुख दुःखेऽनुभूयेते = Happiness and unhappiness are felt by both Mohans. दोनों मोहन से सुख और दुःख अनुभव किये जाते हैं।

कर्तृ०—ते सर्वे सुखानि अनुभवन्ति = They all feel the pleasures. वे सब सुखों का अनुभव करते हैं।

कर्म०—तैः सर्वैः सुखानि अनुभूयन्ते = Pleasures are felt by them all. उन सबों से सुख अनुभव किये जाते हैं।

मध्यमपुरुष Second person

कर्तृ०—अहं त्वामनुभवामि = मैं तुझे अनुभव करता हूँ। I feel thee.

कर्म० - मया त्वमनुभूयसे = तू मुझसे अनुभव किया जाता है।
Thou art felt by me.

कर्तृ०—अहं युवामनुभवामि = मैं तुम दोनों को अनुभव करता हूँ।
I feel both of you.

कर्म०—मया युवामनुभूयेथे = तुम दोनों मुझसे अनुभव किये जाते हो।
Both of you are felt by me.

कर्तृ०—अहं युष्माननुभवामि = मैं तुम सब को अनुभव करता हूँ
I feel of you.

कर्म०—मया यूयमनुभूयध्वे = तुम सब मेरे द्वारा अनुभव किये जाते हो।
All of you are felt by me.

उत्तम पुरुष First person

कर्तृ०—त्वं मामनुभवसि=तू मुझे अनुभव करता है।

Thou feelest me.

कर्म०—त्वया अहमनुभूये=तुझ से (तेरे द्वारा) मैं अनुभव किया जाता हूँ। I am felt by thee.

कर्तृ०—त्वं आवामनुभवसि=तू हम दोनों को अनुभव करता है।

Thou feelest both of us.

कर्म०—त्वया आवामनुभूयावहे=हम दोनों तुझसे (तेरे द्वारा) अनुभव किये जाते हैं। We both are felt by thee.

कर्तृ०—त्वमस्माननुभवसि=तू हम सबों को अनुभव करता है।

Thou feelest all of us.

कर्म०—त्वया वयमनुभूयामहे=तुझ से हम सब अनुभव किये जाते हैं।

We all are felt by thee.

कर्तृ०—युवामस्माननुभवथः=तुम दोनों हम सब को अनुभव करते हो।

You both feel all of us.

कर्म०—युवाभ्यां वयमनुभूयामहे=तुम दोनों से हम सब अनुभव किये जाते हैं। We all are felt by both of you.

सूचना—जिन शब्दों के नीचे लाइन खींची है; वे कर्मवाच्य के कर्ता कहलाते हैं।

तृतीयः पाठः

"लोट्" आज्ञावाचक

कर्तृ०—स दुःखमनुभवतु=वह दुःख को अनुभव करे।

He may feel distress (Anguish)

कर्म०—तेन दुःखमनुभूयताम्=उससे दुःख अनुभव किया जाय, अथवा वह दुःख अनुभव किया करे। Distress may be felt by him.

कर्तृ०—(त्वं) तमनुभव=तू उसको अनुभव कर। (Thou) mayest feel him.

कर्म०—त्वया स अनुभूयताम्=वह तेरे से अनुभव किया करे, अथवा तुझ से वह अनुभव किया जाय। He may be felt by thee.

कर्तृ०—अहं त्वामनुभवानि=मैं तुझे अनुभव करूँ। I may feel thee.

कर्म०—मया त्वमनुभूयस्व=मेरे द्वारा तू अनुभव किया कर, अथवा मुझसे तू अनुभव किया जा। Thou mayest be felt by me.

कर्तृ० —अहं त्वाम् पश्यानि = मैं तुझे देखूँ । I may see thee.

कर्म० - मया त्वं दृश्यस्व = मुझसे तू देखा जा (देखा जाय)।

Thou mayest be seen by me.

कर्तृ०—अहं युष्माननुभवानि = मैं तुम सब को अनुभव करूँ ।

I may feel all of you.

कर्म०—मया युयमनुभूयध्वम् = तुम सब मेरे द्वारा अनुभव किये जाओ। अथवा मेरे द्वारा आप सब अनुभव कीजिये ।

All of you may be felt by me.

कर्तृ०—(त्वं) मां पश्य = तू मुझे देख। (Thou) mayest see me.

कर्म० —अहं त्वया दृश्यै = तेरे द्वारा (तुझसे) मैं देखा जाऊँ।

I may be seen by thee.

कर्तृ० — (त्वं) मामनुभव = तू मुझे अनुभव कर । (Thou) mayest feel me.

कर्म० - त्वया अहमनुभूयै = मैं तुझसे (तेरे द्वारा) अनुभव किया जाऊँ। I may be felt by thee.

कर्तृ० — (त्वं) आवामनुभव = तू हम दोनों को अनुभव कर। (Thou) mayest feel both of us.

कर्म०—त्वया आवामनुभूयावहै = तुझ से हम दोनों अनुभव किये जावें। अथवा तेरे द्वारा हम दोनों अनुभव किया करें।

We both may be felt by thee.

कर्तृ० - युवामस्माननुभवतम् = तुम दोनों हम सबों को अनुभव करो। Both of you may feel all of us or you both may feel us all.

कर्म०— युवाभ्यां वयमनुभूयामहै = हम सब तुम दोनों से अनुभव किये जावें अथवा तुम दोनों के द्वारा हम सब अनुभव किये जाएँ।

We all may be felt by both of you.

चतुर्थः पाठः

विधि लिङ्

कर्तृ० — तौ सुख दुःखेऽनुभवेताम् = वे दोनों सुख दुःखों को अनुभव करें अथवा उन दोनों को सुख दुःख का अनुभव करना चाहिये।

They both should feel happiness and unhappiness.

कर्म०—ताभ्यां सुख दुःखेऽनुभूयेयाताम् = वे दोनों सुख दुःख अनुभव किया करें अथवा उन दोनों से सुख दुःखों का अनुभव किया जाना चाहिये। Happiness and unhapiness should be felt by both of them,

कर्तृ०—अहं त्वामनुभवेयम्=मैं तुझे अनुभव करूँ अथवा मुझे तुमको अनुभव करना चाहिये। I should feel thee.

कर्म०—मया त्वमनुभूयेथाः=मुझसे तू अनुभव किया जाए, अथवा मेरे द्वारा तुझे अनुभव करना चाहिये। Thou shouldest be felt by me.

कर्तृ०—त्वं मामनुभवेः=तू मुझे अनुभव कर अथवा तुझे मुझको अनुभव करना चाहिये। Thou should feel me.

कर्म०—त्वया अहमनुभूयेय=तुझसे मैं अनुभव किया जाऊँ अथवा तेरे द्वारा मुझे अनुभव किया जाना चाहिये। I should be felt by thee.

कर्तृ०—यूयमस्माननुभवेत=तुम सब हम सबों का अनुभव करो अथवा तुम्हें हम सबों का अनुभव करना चाहिये। All of you should feel us.

युष्माभिर्वयमनुभूयेमहि=तुम से हम सब अनुभव किया करें अथवा तुम्हारे द्वारा हमें अनुभव किया जाना चाहिये।

We all should be felt by you all.

पञ्चमः पाठः

आशीर्लिङ्

प्रेरणार्थक क्रिया (Causative verb)

ईश्वरः त्वामनुभाव्यात्=ईश्वर तुझे अनुभव करावे।

May God make you feel.

ईश्वरेण त्वमनुभाविषीष्ठाः=ईश्वर से तू अनुभव किये जा।

Thou mayest be felt by God.

षष्ठः पाठः

हेतुहेतुमद्भावभविष्यत्

यदि स अगास्यत्, तर्हि मया स अगास्यत=यदि वह गायेगा तो मेरे द्वारा वह गाया जायगा।

If he will sing "He will be sung by me."

यदि स अखादिष्यत्, तर्हि मात्रा स अखादिष्यत=यदि वह खायेगा तो माता के द्वारा वह खिलाया जायगा।

If he will eat "He will be fed by the Mother"

यदि त्वमन्वभविष्यः, तर्हि मया त्वमन्वभाविष्यथाः=यदि तू अनुभव करेगा तो मेरे द्वारा तू अनुभव किया जायेगा।

If thou wilt, feel Thou wilt be felt by me.

यदि त्वमपठिष्यः, तर्हि मया त्वमपठिष्यथाः=यदि तू पढ़ेगा जो मेरे द्वारा तू पढ़ा जायेगा।

If thou wilt read, Thou wilt be read by me.

यदि त्वमश्रोष्यः तर्हि मया त्वमश्रोष्यथाः = यदि तू सुनेगा तो मेरे द्वारा तुझे सुनाया जायेगा।

If thou wilt hear, Thou wilt be heard by me.

यदि अहमद्रक्ष्यम्, तर्हि तेन अहमदर्शिष्ये = यदि मैं देखूँगा तो मैं उसके द्वारा देखा जाऊँगा।

If I shalt see, I shall be seen by him.

यदि अहमप्रक्ष्यम्, तर्हि त्वया अहमप्रक्ष्ये = यदि मैं पूछूँगा तो तेरे द्वारा मैं पूछा जाऊँगा।

If I shall ask "I shall be asked by thee."

सप्तम : पाठ :

परोक्षभूतकाल

कर्तृ०—स ईश्वरमनुबभूव = उसने ईश्वर का अनुभव किया। He felt God.

कर्म०—तेन ईश्वरोऽनुबभूवे = उससे ईश्वर अनुभव किया गया।

The God was felt by him.

कर्तृ०—तौ रामलक्ष्मणौ अनुबभूवतुः = वे दोनों राम लक्ष्मण का अनुभव किये

They both felt Ram and Lakshman.

कर्म०—ताभ्यां रामलक्ष्मणौ अनुबभूवाते = उन दोनों से रामलक्ष्मण अनुभव किये गये। Ram and Lakshman were felt by both of them.

अष्टम : पाठ :

अनद्यतनभूतकाल (Past perfect tense)

कर्तृ०—स मामन्वभवत् = उसने मुझे मालूम (अनुभव) किया था,

He had felt me.

कर्म०—तेन अहमन्वभूये = मैंने उसके द्वारा अनुभव (मालूम) किया था।

I had been felt by him

कर्तृ०—ईश्वरः त्वामन्वभवत् = ईश्वर ने तुझे अनुभव किया।

God had been felt by thee.

कर्म०—ईश्वरेण त्वमन्वभूयथाः = ईश्वर के द्वारा तू अनुभव किया गया।

Thou hadst been felt by God.

कर्तृ०—अहं त्वामन्वभवम् = मैंने तुझे अनुभव किया था। I had felt thee.

कर्म०—मया त्वमन्वभूयथाः = तू मेरे द्वारा अनुभव किया गया था।

Thou hadst been felt by me.

नवमः पाठः

सामान्य भूतकाल

Simple past tense

कर्तृ० —किं त्वं तामन्वभूः ? क्या तूने उस स्त्री को अनुभव किया ?
Didst thou feel her?

कर्म०—किं त्वया सा अन्वभावि ? क्या तेरे द्वारा उस स्त्री ने अनुभव किया था ?
Was she felt by thee ?

कर्तृ०—स मामन्वभूत्=उसने मुझे अनुभव किया He felt me.

कर्म०—तेन अहमन्वभाविषि=उसके द्वारा मैं अनुभव किया गया।
I was felt by him.

कर्तृ०—अहं त्वामन्वभूवम्=मैंने तुझे अनुभव किया था। I felt thee.

कर्म०—मया त्वमन्वभाविष्ठाः=मेरे द्वारा तू अनुभव किया गया था।
Thou wast felt by me.

दशमः पाठः

अनद्यतन भविष्यत्काल

कर्तृ०—स श्वो राममनुभविता=वह कल राम को अनुभव करेगा।
He will feel Ram tomorrow.

कर्म०—तेन रामः श्वोऽनुभाविता=उसके द्वारा कल राम अनुभव किया जायेगा।
Ram will be felt by him tomorrow.

कर्तृ०—अहं श्वः त्वामनुभवितास्मि=मैं कल तुझे अनुभव करूँगा।
I shall feel thee tomorrow.

कर्म०—मया श्वः त्वमनुभावितासे=मेरे द्वारा कल तू अनुभव किया जायेगा।
Thou wilt be felt by me tomorrow.

कर्तृ०—त्वम् श्वो मामनुभवितासि=तू कल मुझे अनुभव करेगा।
Thou wilt feel me tomorrow.

कर्म०—त्वया अहं श्वोऽनुभाविताहे=तेरे द्वारा मैं कल अनुभव किया जाऊँगा।
I shall be felt by thee tomorrow.

एकादशः पाठः

सामान्य भविष्यत्काल

कर्तृ०—स राममनुभविष्यति=वह राम को अनुभव करेगा।
He will feel Ram.

कर्म०—तेन रामोऽनुभाविष्यते = उसके द्वारा राम अनुभव किया जायेगा।
Ram will be felt by him.

कर्तृ०—किं रामः त्वामनुभविष्यति ? क्या राम तुझे अनुभव करेगा ?
Will Ram feel thee ?

कर्म०—किं रामेण त्वमनुभाविष्यसे ? क्या राम के द्वारा तू अनुभव किया जायेगा ?
wilt thou be felt by Ram. ?

कर्तृ० त्वं मामनुभविष्यसि = तू मुझे अनुभव करेगा।
Thou wilt feel me.

कर्म० त्वया अहमनुभाविष्ये = तेरे द्वारा मैं अनुभव किया जाऊँगा।
I shall be felt by thee.

द्वादशः पाठः

गौणे कर्मणि दुह्यादेः, प्रधाने नीहृकृष्वहाम्।
बुद्धिभक्षार्थयोः शब्द कर्मकाणां निजेच्छया ॥ १ ॥
गौणे कर्मणि दुह्यादे र्नीवहादेः प्रधानके।
विभक्तिः प्रथमाज्ञेया द्वितीया च तदन्यतः ॥ २ ॥

भावार्थ :—दुह प्रभृति धातुओं के साथ 'मुष्' धातु तक गौण कर्म में प्रथमा विभक्ति होती है और प्रधान कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है। परन्तु "नी, हृ, कृष्, वह" इन धातुओं के साथ प्रधान कर्म में प्रथमा विभक्ति होती है। जैसे—

कर्तृ०—गोपो गां पयः दोग्धि = ग्वाला गाय से दूध दुहता है।
कर्म०—गोपेन गौः पयः दुह्यते = ग्वाला से गाय दुही जाती है।

यहाँ पर 'गौः' गौणकर्म है अतः गौणकर्म में प्रथमा विभक्ति हुई। और 'पयः' प्रधानकर्म है अतः इससे द्वितीया विभक्ति हुई।

कर्तृ०—तमहं गृहं नयामि = मैं उसको घर ले जा रहा हूँ।
कर्म०—स मया गृहं नीयते = वह मेरे द्वारा घर ले जाया जाता है।
कर्तृ०—स अजां ग्रामं वहति। वह बकरी को गाँव ले जाता है।
कर्म०—तेन अजा ग्रामसुह्यते, उससे बकरी गाव को ले जाईजाती है। यहाँ पर "तम् और अजाम्" प्रधान कर्म है अतः यहाँ प्रथमा विभक्ति हो गई है और "गृहं, ग्रामं" यह गौण कर्म है अतः यहाँ द्वितीया विभक्ति हुई है।

णयन्त द्विकर्मक बुद्ध्यर्थक, भक्षार्थक, शब्दकर्मक धातुओं से कर्म में प्रत्यय की विवक्षा में अपनी इच्छानुसार प्रधान कर्म में या गौण कर्म में प्रत्यय कर सकते हैं।

इसकी व्यवस्था निम्नप्रकार से है—

शिष्यो धर्मं बोधति, गुरुः प्रेरयति, इत्यर्थे, शिष्य धर्म को जानता है, गुरु प्रेरणा करता है, इस अर्थ में—

गुरुः शिष्यं धर्मं बोधयति। गुरु शिष्य को धर्म बोध कराता है।

कर्म०—गुरुणा शिष्यः धर्मः बोध्यते अथवा गुरुणा शिष्यः धर्मर्मं बोध्यते। गुरु के द्वारा शिष्य को धर्म जनाया जाता है

यहाँ पर शिष्य गौण कर्म और धर्म प्रधान कर्म है अतः यहाँ अपनी स्वेच्छानुसार प्रत्यय कर सकते हैं।

माणवकः ओदनं भुङ्क्ते, माता प्रेरयति, इत्यर्थे लड़का भात खाता है, माँ प्रेरणा करती है इस अर्थ में—

माता माणकवम् ओदनं भोजयति, माँ लड़के को भात खिलाती है।

कर्म०—मात्रा माणवकः ओदनं भोज्यते अथवा मात्रा ओदनः माणवकं भोज्यते। माँ के द्वारा लड़के को भात खिलाया जाता है।

यहाँ पर भी माणवक अप्रधान कर्म में या ओदन प्रधान कर्म में स्वेच्छानुसार प्रत्यय कर सकते हैं।

"प्रयोज्यकर्मण्यन्येषां ण्यन्तानां तादयोमताः"

बुद्ध्यर्थक, भक्षार्थक, शब्दकर्मक धातुओं से भिन्न णिजन्त जो द्विकर्मक धातु और गत्यर्थक अकर्मक धातु हैं उनसे भी प्रयोज्य कर्म में प्रत्यय होते हैं अतः प्रयोज्य कर्म में प्रथमा विभक्ति होती है। जैसे—

मोहनः ग्रामं गच्छति, रामः प्रेरयति, इत्यर्थे, मोहन गाँव जाता है, राम प्रेरणा करता है, इस अर्थ में—रामः मोहनं ग्रामं गमयति। राम मोहन को गाँव भेजता है।

कर्म०—रामेण मोहनः ग्रामं गम्यते, राम के द्वारा मोहन से गाँव जाया जाता है।

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिये और निम्नलिखित श्लोकों में क्रिया बताइए।

दधि न श्रूयते कर्णे, घृतं स्वप्नेन दृश्यते।
मुग्धे दुग्धस्य का वार्ता, तक्रं शक्रस्य दुर्लभम् ॥१॥

किं तया क्रियते धेन्वा ? या न सूते न दुग्धदा ।
कोऽर्थः पुत्रेण जातेन ? यो न विद्वान् न भक्तिमान् ॥२॥
पूज्यते यदपूज्योऽपि, यदगम्योऽपि गम्यते ।
वन्द्यते यदवन्द्योऽपि, स प्रभावो धनस्य च ॥३॥
अफला काङ्क्षिभिर्यज्ञो, विधिदृष्टो य इज्यते ।
यष्टव्यमेवेति मनः समाधाय स सात्त्विकः ॥४॥
अभिसन्धाय तु फलं, दम्भार्थमपि चैव यत् ।
इज्यते भरत श्रेष्ठ, तं यज्ञं विद्धि राजसम् ॥५॥
देव द्विज गुरु प्राज्ञपूजनं शौचमार्जवम् ।
ब्रह्म चर्य महिंसा च, शारीरं तप उच्यते ॥६॥
अनुद्वेगकरं वाक्यं, सत्यं प्रियहितं च यत् ।
स्वाध्यायाभ्यसनं चैव वाङ्मयं तप उच्यते ॥७॥
मनः प्रसादः सौम्यत्वं, मौनमात्म विनिग्रहः ।
भाव संशुद्धिरित्येतत्तपो मानसमुच्यते ॥८॥
दातव्यमिति यद्दानं, दीयतेऽनुप कारिणे ।
देशे काले च पात्रे च तद्दानं सात्त्विकं स्मृतम् ॥९॥
यत्तु प्रत्युपकारार्थं फलमुद्दिश्य वा पुनः ।
दीयते च परिक्लिष्टं तद्दानं राजसं स्मृतम् ॥१०॥
अदेश काले यद्दानमपात्रेभ्यश्च दीयते ।
असत्कृतमवज्ञातं तत्तामससमुदाहृतम् ॥११॥
गुरुणा छात्रो व्याकरणं पाठ्यते मात्रा शिशुरन्नं भोज्यते ।

संस्कृत में अनुवाद कीजिये—

वर्तमान काल

(१) मुझ से प्रति दिन भूगोल पढ़ाया जाता है । (२) मेरे द्वारा एक पत्र लिखा जाता है । (३) धन कुमार्ग में व्यय किया जाता है । (४) आज कल कचहरियों में बहुत रिश्वतें ली जाती हैं । (५) रस्सा मेरे द्वारा खींचा जाता है । (८) द्वार मेरे से खोला जाता है । (९) आज कल हमारी पाठशाला का निरीक्षण किया जा रहा है, (१०) रस्सी से धेनु बांधी जाती है (११) मेरे सत्यवचन को सुनिये । (१२) तुम्हारा नाम रजिष्टर में लिख लिया गया है ।

भूत काल

(१) उसके द्वारा एक सिंह पकड़ा गया था । (२) बढ़ई से एक कुर्सी

बनवाई गई थी। (३) रस्सा मेरे द्वारा खींचा गया। (४) उससे एक चित्र बनाया गया (५) तुम्हारा नाम रजिष्टर में लिख लिया गया (६) मेरे पहुँचने से पूर्व उन्हें दण्ड मिल चुका था। (७) मेरे द्वारा द्वार खोला गया। (८) मैं माता के द्वारा अस्पताल भेजा गया था (९) लोगों में धन बाँट दिया गया (१०) लड़कों को पाठ पढ़ाया गया। (११) नौकर द्वारा मकान साफ किया गया। (१२) उसे दण्ड दिया गया (१३) भंगी के द्वारा सड़क साफ की गई।

भविष्यत्‌काल

(१) तुम्हारे भाई को पाठशाला में प्रवेश कर लिया जायगा। (२) आज विद्यालय में पारितोषिक बाँटा जायेगा। (३) आप की घड़ी कल लौटा दी जायेगी (४) समाचार पत्र आप के पास प्रतिमास भेजा जायेगा। (५) रस्सा मेरे द्वारा खींचा जायेगा (६) उसके द्वारा खेल खेला जायेगा। (७) मेरे द्वारा द्वार खोला जायगा। तेरे द्वारा लड़के की रक्षा की जायेगी। (९) मैं उन से पकड़ा जाऊँगा। (१०) व्याध से मृग मारा जायेगा (११) ग्वाले से गाय दुही जायेगी।

त्रयोदशः पाठः

भाववाच्य क्रिया

(Impersonal passive or Neuter passive verb)

भाव = भावना, उत्पादना, क्रिया (व्यापार) को कहते हैं। भाववाच्य क्रिया का प्रयोग इंगलिश में कभी नहीं होता।

(Intransitive verb से Impersonal pssive नहीं होता)

परन्तु संस्कृत में भाववाच्य क्रिया होती है।

भाववाच्य क्रिया सदा अकर्मक क्रिया से ही बनती है।

जिस क्रिया का व्यापार कर्ता के साथ ही समाप्त हो जाता है; अन्य व्यक्ति तक नहीं पहुँचता, उन्हें अकर्मक क्रिया कहते हैं।

धातोरर्थान्तरेवृत्ते धात्वर्थेनोपसंग्रहात्।
प्रसिद्धेरविवक्षातः कर्मणोऽकर्मिका क्रिया॥

जैसे—'वह' धातु का अर्थ ढोना है परन्तु "नदी वहति" यहाँ 'वह' का अर्थ स्यन्दन (प्रस्रवण) करना है अतः यहाँ सकर्मक क्रिया भी अकर्मक हो गई।

—शी = सोना To sleep। हस = हँसना To laugh
स्था = ठहरना To stay आस् = बैठना To sit
जागृ = जागना To wake ह्री = लजाना To Shame

परन्तु भावप्रधान क्रिया सदा एकवचन और प्रथम पुरुष में ही होती है। और कर्ता में तृतीया विभक्ति होती है।

यहाँ पर धातु से परे 'य' चिन्ह जोड़कर क्रिया में आत्मनेपद, और सदा एकवचन ही होता है, द्विवचन और बहुवचन नहीं होता है। यदि अकर्मक क्रिया से वाच्य परिवर्तन (Change of intransitive voice) किया जाता है, तो उसे भाववाच्य क्रिया कहते हैं। जैसे—

कर्तृवाच्य (Active voice	भाववाच्य (Impersonal voice)
स हसति, वह हँसता है।	तेन हस्यते = उससे हँसा जाता है।
स अहसत, उसने हँसा।	तेन अहस्यत, उससे हँसा गया।
अहं तिष्ठामि, मैं ठहरता हूँ।	मया स्थीयते, मुझसे ठहरा जाता है।
अहं न तिष्ठामि, मैं नहीं ठहरता हूँ।	मया न स्थीयते, मुझसे ठहरा नहीं जाता है।
शिशुः रोदित, बच्चा रोता है।	शिशुना रुद्यते, शिशु से रोया जाता है।

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

(१) मया जागर्य्यते (२) त्वया तप्यते (३) तेन सुप्यते (४) अस्माभि र्जागर्य्यते (५) युष्मयाभिःसुप्यते (६) तैः तप्यते। (७) तेन जीयते (८) गोविन्देन स्थीयते (९) सुरेशेन आस्यते (१०) स पापेन अन्वतप्त (११) मया जीव्यते

संस्कृत में अनुवाद कीजिये—

(१) उस से ठहरा गया (३) मोहन से जागा गया (२) मुझसे बैठा गया (४) तेरे से खड़ा हुआ। (५) वह पाप से सन्तप्त हुआ है (६) उससे क्यों हंसा जाता है? (७) तुझसे क्यों हंसा जाता है? (८) बच्चे से चला नहीं जाता है (९) मुझसे सोया नहीं जाता है (१०) तुमसे ठहरा नहीं जाता है (१) शिशु से रोया जाता है।

चतुर्दशः पाठः

कर्मकर्तृ वाच्य (Reflexive)

कर्मनिष्ठ व्यापार धातु से विवक्षित होने पर कर्म कर्ता हो जाता है एवं करणादि कारक निष्ठ व्यापार धातु से विवक्षित होने पर कारणादि कर्ता हो

जाता है। अर्थात् कर्म करणादि कारकों को कर्ता जैसा स्वतन्त्र रूप से व्यवहार होता है, उसे कर्म कर्तृवाच्य कहते।

सूचना :—यहाँ पर भी धातु से परे और प्रत्यय से पूर्व "य" चिन्ह जोड़ा जाता है। जब कर्म ही को कर्ता मानने की इच्छा हो तब सकर्मक क्रिया भी अकर्मक क्रिया हो जाती है।

कर्म में रहने वाली क्रिया के समान जिस कर्ता की क्रिया हो, वह कर्ता कर्म के तुल्य होता है।

१ जैसे :—सूर्यः फलं पचति=सूर्य फल को पकाता है।

सूर्यः किं पचति ? फलं स्वयमवे पच्यते।
सूर्य क्या पकाता है ? फल अपने आप पकता है।

२ मोहनः काष्ठं भिनत्ति—मोहन लकड़ी फाड़ता है।
मोहनःकिं भिनत्ति ? काष्ठं स्वयमेव भिद्यते।
मोहन क्या फाड़ता है ? लकड़ी अपने आप फटती है।

अचिन्तित दुःख सुखागमनानि दैवमतिरिञ्चन्ति, दैवं स्वयमेवातिरिच्यते। प्रतिज्ञा खण्डनं शत मन्वन्तरं मूढं पचति, मूढः स्वयमेव पच्यते।

हिन्दी अनुवाद कीजिए :—

अचिन्तितानि दुःखानि, यथैवायान्ति देहिनाम्।
सुखान्यपि तथा मन्ये, दैवमत्राऽतिरिच्यते
प्रतिज्ञा खण्डनान् मूढो, निरयं याति दारुणम्।
शतमन्वन्तरं यावत्पच्यते नात्र संशयः॥

पञ्चदशः पाठः

अथ लकारार्थ निर्णय प्रकरणम्

(Use of progressive in the tense)

वर्तमान काल (Present tense)

ते स्ववृद्धपितरौ सेवन्ते=वे अपनी बुड्ढे माँ बाप की सेवा करते हैं।
They serve their old parents.

द्रष्टव्यः—वर्तमान काल के समीप भूतकाल के अर्थ में और भविष्यत्काल के अर्थ में, विकल्प (optionally) से वर्तमान काल होता है।

भूतार्थ में—कदा आगतोऽसि ? तू कब आया है ?
When hast thou come ?

अयमागच्छामि=मैं अभी आया हूँ I have come just now.

भविष्यदर्थ में:—कदा त्वं गमिष्यसि ? तू कब जायेगा When wilt thou go ?

एष गच्छामि=मैं अभी जाऊँगा I will go just now.

भूतार्थ में—किमर्थमागतोऽसि ? किसलिये आये हो ? Why have you come ? or what have you come for ?

भविष्यदर्थ में—किं करोमि ? क्या करूँ ? What should I do ?

क्व गच्छामि ? कहाँ जाऊँ Whither should I go ?

यावदहमागच्छामि तावत्प्रतीक्षस्व=जब तक मैं आऊँ तब तक तुम प्रतीक्षा करो। Just please wait till I come back.

यावत्स त्वां न पश्यति तावद् दूरमपसर=जब तक वह तुझे नहीं देखता है तब तक दूर हट जा। Be off, until he looks at you.

कदा (कर्हि) भवान् पश्यति (द्रक्ष्यति) ?

कब आप देखियेगा ? When will you see ?

"लङ्" लकार अथवा "लुङ्" लकार का प्रयोग निम्नलिखित है।

अनेन मार्गेण वयं प्रयागमगच्छाम (अगमाम)।

इस मार्ग से हम प्रयाग गये थे। We went to Allahabad this way.

स चैकदा पानीयं पातुं यमुनाकच्छमगच्छत्=और वह एक दिन पानी पीने के लिये यमुना के तट गया। One day he went to take water to the bank of river yamuna.

अपश्यद् देवदेवस्य शरीरे पाण्डवस्तदा=तब अर्जुन ने भगवान् के शरीर में सब देवताओं को देखा। Then Arjun saw all the gods in the body of God.

अनुमिति अर्थ में "लोट्" लकार होता है—

भवानत्राऽगच्छ=आप यहाँ आइये। Please come here.

गच्छ, विजयी भव=जाओ, विजयी हो। Go, May you be victorious.

शिवास्ते पन्थानः सन्तु अथवा सन्तु ते पन्थानः शिवाः।

आपका मार्ग कल्याण (सफल) होवे। May you be prosperous.

पुत्रं लभस्व आत्मानुरूपम्=अपने अनुरूप पुत्र प्राप्त करो। May you get a son like yourself.

किं करवाणि ते प्रिये देवि ! हे प्रिये देवि ! तेरे लिये मैं क्या करूँ। Oh dear madam what should I do for you !

(हेतु हेतुमतोर्लिङ्) भावार्थ—भविष्यदर्थ में यदि हेतु (कारण) हेतुमत् (कार्य) अर्थात् कार्य कारण भाव हो तो—लिङ्लकार होता है। जैसे—

श्रीरामं ध्यायेत् चेत् सुखं यायात् अर्थात् श्री रामं ध्यास्यति चेत्सुखं यास्यति। यदि श्रीराम को ध्यान करोगे तो सुख प्राप्त होगा। If you pray God you will feel happiness.

यहाँ पर ध्यान करना "कारण" है और सुख प्राप्ति "कार्य" है।

इच्छार्थं में लिङ् और लोट् लकार होता है।

इच्छामि भवानत्र भुञ्जीत (भुङ्क्ताम्)

मैं चाहता हूँ कि आप यहाँ भोजन करें। I want, you take your food here.

भविष्यदर्थ में सम्भावना हो तो विधिलिङ् होता है।

संभावयामि, यत्त्वमत्र भुञ्जीथाः (भोक्ष्यसे)।

मैं संभावना करता हूँ कि तुम यहीं खाओगे।

भूतार्थ में विधिलिङ् का प्रयोग होता है।

स तत्र गतो भवेत्=वह वहाँ गया होगा। He will have gone there.

विधिलिङ् का प्रयोग किसी को आदेश देने के लिये किया जाता है।

यदि आज्ञा अर्थ में प्रयोग हो तो नम्र भाव समझना चाहिये।

और यदि विधि प्रेरणा का प्रयोग होता हो तो कठोर भाव में समझना चाहिए। विधि दो प्रकार का होता है।

(१) प्रवर्तना में—सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात्, सच और प्रिय बोलना चाहिये। You should Speak the truth and lovingly.

निवर्तना में—न ब्रूयात्सत्यमप्रियम्=परन्तु सत्य अप्रिय (कठोर वाणी) नहीं बोलना चाहिये। You should not speak the unlovingly truth.

निमन्त्रण अर्थ में—भवानद्य इह भुञ्जीत (भुङ्क्ताम्)। आज आप यहीं भोजन करें। To day you may please take your food here.

आमन्त्रण अर्थ में—भवान् यथेच्छमिह आसीत (आस्ताम्)। आप अपनी रुचि के अनुसार यहाँ बैठिये (बैठ सकते हैं)। You may sit here according to your wishes.

अधीष्टार्थ में— हे गुरो ! भवान् ममपुत्रमध्यापयेत् (अध्यापयतु) हे गुरु देव ! आप मेरे बेटे को पढ़ा दिया करें। Oh my preceptor ! May you be pleased to teach my son.

संप्रश्नार्थ में—हे देव ! (हे श्रीमन्) किमहं वेदमधीयीय उत तर्कम् ? हे श्रीमान् ! जी मैं वेद पढ़ूँ या तर्कशास्त्र ? Sir ! Should I read the Vedas or the Logic ?

प्रार्थनार्थ में—भोः महाभाग ! किं भोजनं लभेय (लभै) ? हे सज्जन पुरुष ! क्या मुझे कुछ भोजन मिलेगा ?

शक्ति (Energy) और सामर्थ्य (Ability) में भी विधिलिङ् का बोध होता है। जैसे—

स तत्र गन्तुं शक्नुयात् (गच्छेत्)=वह वहाँ जा सकता है। He can go there.

"तव्य और अनीय" से भी विधि लिङ् का प्रयोग होता है। जैसे त्वं भारं वहेः अथवा त्वया भारो वोढव्यः। तुम बोझा ले जा सकते हो You can carry the load (burden).

स तत्र गच्छेत् अथवा तेन तत्र गन्तव्यम्। वह वहाँ जाय या उसे वहाँ जाना चाहिये। He should go there.

सत्यं वदेत् अथवा सत्यं वक्तव्यम्। सच बोलना चाहिए। One should speak the truth.

———

षोडशः पाठः

उपसर्ग (Prefix)

उपसर्ग वे शब्द हैं जो कि धातु के आदि में और शब्द के आदि में लगाये जाते हैं उसे उपसर्ग (Prefix) कहते हैं।

संस्कृत में कुल २२ उपसर्ग होते हैं यह निम्नलिखित हैं :—

प्र, परा, अप, सम्, अनु, अव, निस्, निर्, दुस्, दुर्, वि, आङ्, नि, अधि, अपि, अति, सु, उत्, अभि, प्रति, परि, उप।

धात्वर्थं बाधते कश्चित्कश्चित्तमनुवर्तते।
विशिनष्टि तमेवार्थमुपसर्गगतिस्त्रिधा॥

भावार्थ—कोई उपसर्ग धातु के मुख्यार्थ को बाधकर नवीन अर्थ का बोध कराता है, कोई धातु के अर्थ का ही अनुवर्तन करता है और कोई

विशेषण होकर उसी धात्वथ को और भी विशिष्ट बना देता है। जैसे—उपकार, अपकार, अधिकार, इत्यादि।

परन्तु उपसर्ग लगाने से धातु हो या शब्द हो उसका अर्थ परिवर्तन हो जाता है। (१) जैसे :—हृ (हर)=चुराना अर्थ है To steal.

प्र+हर=प्रहरति=मारता है Beats
आ+हर=आहरति=खाता है Eats.
सं+हर=संहरति=संहार करता है destroys.
वि+हर=विहरति=विहार करता है wanders or walks.
परि+हर=परिहरति=छोड़ता है Leaves.
उप+हर=उपहरति=भेंट देता है Endows or presents.

द्रष्टव्यः—अकर्मक धातुओं में भी उपसर्ग जोड़ने से सकर्मक क्रिया हो जाती है। जैसेः—अनु+भव=अनुभवति, अनुभव करता है (इंगलिश में भी उपसर्ग (prefix) धातु verb का भिन्न अर्थ हो जाता है।

(क) उपसर्ग किसी शब्द के आरम्भ में जोड़े जाते हैं उसे Prefix कहते हैं। जैसेः—Side से aside या beside, Round से around इत्यादि।

(ख) प्रत्यय (Suffixes):—किसी शब्द के अन्त में जोड़े जाते हैं जैसेः—City से Citizen, Pay से Payee.

(ग) यदि किसी शब्द के पहिले dis, un, in, im ये लगे हों तो निषेध अर्थ हो जाता है। जैसेः—(Like चाहना, से dislike नहीं चाहना) (Known ज्ञात, से unknwon अज्ञात) (Complete पूर्ण, से incomplete अपूर्ण) (possible संभव, से impossible असंभव)

(घ) यदि किसी शब्द के अन्त में less जोड़ा हो तो भी निषेध वाचक होता है। जैसेः—parent से parentless माता पिता रहित।

For+get=forget भूलना
For+give=forgive क्षमा करना।
For+bid=forbid निषेध करना।
For+bear=forbear रोकना, धैर्य रखना।
Out+bid=outbid अधिक मूल्य देना।
out+do=outdo अतिक्रमण करना, बढ़ना।
out+give=outgive उदारता से बढ़ना।
इत्यादि समझ लेना चाहिए।

(२) गम् = जाना = गच्छति = जाता है Goes.
आ + गम् = आगच्छति = आता है Comes.
प्रति + आ + गम् = लौटना = प्रत्यागच्छति = लौटता है Backs.
अनु + गम् + पीछा करना = अनुगच्छति = पीछे जाता है Follows.
उप + गम् = पास पहुँचना = उपगच्छति = पास पहुँचता है Reaches
निर् + गम् = बाहर जाना = निर्गच्छति = बाहर जाता है Gets out
सं + गम् = मिलना = संगच्छते = मिलता है Meets

(३) वह = लेजाना = वहति = ले जाता है Carries
आ + वह = देना = आवहति = देता है Gives
प्र + वह = बहना = प्रवहति = बहती है Flows
निर् + वह = निर्वाह करना = निर्वहति = निर्वाह करता है Lives

(४) नी = ले जाना = नयति = ले जाता है Leads
आ + नी = लाना + आनयति = लाता है Brings
अप + नी = हटाना = अपनयति = दूर करता है Dispels

(५) कृ = करना = करोति = करता है Does
अनु + कृ = अनुकरण करना = अनुकरोति = अनुकरण करता है Imitates
अधि + कृ = अधिकारकरना, अधिकरोति, अधिकार करता है Authorizes
अप + कृ = अपकार करना = अपकरोति = बुराई करता है maltreats
अलं + कृ = सुशोभित करना, अलंकरोति, अलंकृत करता है Decorates
तिरस् + कृ = तिरस्कारकरना, तिरस्करोति, तिरस्कार करता है Insults
आविष् + कृ = आविष्कार करना = आविष्करोति = आविष्कार करता है Discovers

६) स्था = ठहरना = तिष्ठति = ठहरता है Stays
अव + स्था = खड़ा होना = अवतिष्ठति = खड़ा होता है Stands
अनु + स्था = अनुष्ठान करना = अनुतिष्ठति = प्रयोग करता है observes
उत् + स्था = उठना = उत्तिष्ठति = उठता है Gets up

(७) भू = होना = भवति = होता है Becomes
अनु + भू = (भव) अनुभव करना, अनुभवति, अनुभव करता है Feels
आविर् + भव = पैदा होना = आर्भिवति = आविर्भाव करता है Appears
प्रादुर् + भव = प्रादुर्भाव होना = प्रादुर्भवति = प्रादुर्भाव होता है Bears
परा + भव = हारना = पराभवति = हारता है Defeats
अभि + भव = पराजित करना, अभिभवति, पराजित करता है overrules

(८) ईक्ष = देखना = ईक्षते = देखता है Sees or looks
प्रति + ईक्ष = प्रतीक्षा करना = प्रतीक्षते = प्रतीक्षा करता है Waits
परि + ईक्ष = परीक्षा करना = परीक्षते = परीक्षा करता है Examines
उप + ईक्ष = सुध न लेना = उपेक्षते = उपेक्षा करता है Neglects
(९) इ = जाना = एति = जाता है Goes
प्रति + इ = विश्वास करना = प्रत्येति = विश्वास करता है Confides
उत् + इ = उदय होना = उदेति = निकलता है Rises
अव + इ = जानना = अवैति = अवेहि = जानता है Knows
उप + इ = समीप आना = उपैति = समीप आता है Approaches
अभि + इ = सामने आना = अभ्येति = सामने आता है Faces
(१०) तॄ = तैरना = तरति = तैरता है Swimes
सं + तॄ = तैरना = सन्तरति = अच्छी तरह तैरता है swims well
वि + तॄ = बाँटना = वितरति = बाँटता है Distributes
अव + तॄ = उतरना = अवतरति = उतरता है Alights or gets down
(११) दिश = देना, आज्ञा देना = दिशति = देता है gives or Allows
आ + दिश = आज्ञा देना = आदिशति = आज्ञा देता है Commands
उप + दिश = उपदेश करना = उपदिशति = उपदेश देता है Instructs or Advices
निर् + दिश = निर्देश करना = निर्दिशति = निर्देश करता है Denotes or Designates
सं + दिश = संदेश देना = सन्दिशति = सन्देश देता है Messages
(१२) चर = चलना = चरति = चलता है Walks
आ + चर = आचरणकरना = आचरति = वर्ताव करता है Behaves
वि + चर = विचरण करना, विचरति, विचरण करता है Roams about
(१३) विश = प्रवेश करना = विशति = प्रवेश करता है enters
उप + विश = बैठना = उपविशति = बैठता है Sits
अभि + नि + विश = अभिनिविशति, शामिलकरताहै Connects or Joines
(१४) वद = बोलना = वदति = बोलता है Speaks
अनु + वद = अनुवादकरना, अनुवदति, अनुवाद करता है Translates
अप + वद = अपवाद करना, निन्दा करना, दोष लगाना, अपवदति = अपवाद करता है Blames
वि + वद = विवाद करना = विवदति = झगड़ा करता है Disputes

(१५) लप=बातचीत करना=लपति=बात करता है Talks

आ+लप=आलाप करना=आलपति=आलप करता है Sings

अप+लप=छिपाना=अपलपति=छिपाता है Conceals

वि+लप=विलाप करना=विलपति=विलाप करता है wails.

प्र+लप=प्रलाप करना=प्रलपति=प्रलाप करता है Talks

(१६) वृत=अस्तित्व होना=वर्तते=अस्तित्व होता है Exists

वृत=वर्ताव करना=वर्तते=वर्ताव करता है Deals

प्र+वृत=प्रवृत होना, लगना=प्रवर्तते=प्रवृत होता है Commences

प्रति+आ+वृत=लौटना=प्रत्यावर्तते=लौटता है Comes back

परि+वृत=परिवर्तन होना=परिवर्तते=परिवर्तन होता है Changes

अनु+वृत=पीछा करना=अनुवर्तते=पीछा करता है Follows

(१७) सीद=जाना, अलग होना=सीदति=जाता है, अलग होता है Goes or Separates

अव+सीद=विषाद करना=अवसीदति=विषाद करता है Dejects

प्र+सीद=प्रसन्न होना=प्रसीदति=प्रसन्न होता है Pleases

नि=सीद=बैठना=निषीदति बैठता है Sites

उत्+सीद=नाश होना=उत्सीदति=नाश होता है। Demolishes

इसी प्रकार प्रत्येक धातुओं के उपसर्ग जोड़ने पर भिन्न प्रकार से "अर्थ" हो जाते हैं।

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिए :—

(१) स वस्त्रं प्रसारयति (२) त्वमितः दूरमपसर (३) एतत्कार्यं निर्वहति (४) स देवसुपतिष्ठते (५) प्रभाते पक्षिणरुत्पतन्ति (६) मोहनो गङ्गामुत्तरति (७) चौराः पलायन्त (८) छात्राः स्वपाठमभ्यस्यन्ति (९) कृषकाः क्षेत्रे विवदन्ते (१०) उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मीः (११) निर्धनजनो धनमाहरति (१२) दुर्जनः सर्वदा। सज्जनानपवदति (१३) महदपि मे राज्यं सुखं नाऽवहति (१४) प्राप्ते तु षोडशे वर्षे पुत्रं मित्रवदाचरेत्॥

संस्कृत में अनुवाद कीजिये—

(१) कैसे काम चलता है? (२) चोर भाग गये। (३) मेरा बहुत बड़ा

राज्य भी मुझे सुख नहीं देता है। (४) वह वस्त्र फैलाता है (५) गंगाजी हिमालय से बहती हैं (६) निर्धन मनुष्य धन एकट्ठा करता है। (७) दुर्जन मनुष्य सज्जनों का सदा निन्दा करते रहते हैं। (८) किसान खेतों में झगड़ा करते हैं। (९) लोग एकादशी को प्रायः उपवास करते हैं। (१०) सोलह वर्ष के प्राप्त होने पर पुत्र को मित्र की तरह वर्ताव करना चाहिये।

विंशतितमोऽध्यायः

अथ कृदन्त प्रकरणम् (Participle)

प्रथमः पाठः

"शब्दो द्विधा अव्युत्पन्नो व्युत्पन्नश्च"

भावार्थ - पाणिनीय व्याकरण में 'अव्युत्पन्नः = रूढ़, व्युत्पन्नश्च = और यौगिक दो ही प्रकार के शब्द होते हैं। परन्तु लौकिक व्यवहार में तीन प्रकार के शब्द माने जाते हैं। रूढ़, योगरूढ़, यौगिक।

रूढ़ —उसे कहते हैं कि जिस शब्द में अवयवार्थ कुछ नहीं भासित हो, परन्तु समुदाय शक्ति से अर्थ निकलता है। जैसे—नूपुरम्, मणिः, धनम्, वनमित्यादि।

योगरूढ़—उसे कहते हैं कि जो शब्द अवयवार्थ सम्बन्धित होकर विशेषार्थ का प्रतिपादन करते हैं। जैसे—पङ्कजम्, पीताम्बरः, इत्यादि।

परन्तु हमारा अभिप्राय तो यहाँ केवल यौगिक शब्दों (Derivatives) से है। जिस शब्द के प्रकृति और प्रत्यय के विभाग का ज्ञान भली भाँति से मालूम हो जाय, तो उसे यौगिक शब्द कहते हैं। जैसे—पाचकः (रसोइया) यहाँ प्रकृति 'पच् और अकः' प्रत्यय है इसी प्रकार घातकः (मारनेवाला) कुम्भकारः इत्यादि।

संस्कृत भाषा में प्रायः सभी शब्द धातुओं (Roots) से बनते हैं और वे शब्द 'संज्ञा, विशेषण, अव्यय' इत्यादि कहे जाते हैं। धातुओं में उपयोगिक (खास खास) प्रत्ययों (Suffix) को जोड़ने से जो शब्द बनते हैं, उनको कृदन्त (Verbal Derivatives) कहते हैं अर्थात् इनको 'यौगिक' शब्द भी कहते हैं।

कृत्प्रत्यय चार प्रकार के होते हैं:—

१—कर्तृवाचक २—कर्मवाचक ३—भाववाचक ४—क्रियावाचक।

कर्तृवाचक -"तृच् और ण्वुल्" प्रत्यय हैं—

जिस शब्द के अन्त में कृत्प्रत्यय हों उनको कृदन्त अथवा कृत्प्रत्ययान्त कहते हैं। जैसे—'कृ' धातु से 'तृच् और ण्वुल्' प्रत्यय जोड़ने के पश्चात 'तृच्' में चकार और 'ण्वुल्' में आदि अन्त के अक्षर को लोप कर देने से शेष 'तृ और वु' बच जाता है। 'वु' के स्थान पर 'अकः' हो जाता है। पुनः 'कृ' में ऋ को 'अर्' गुणकर देने से 'कर्तृ' शब्द बना। और 'आर्' वृद्धि करने से "क्+आर्+अकः=कारकः" प्रयोग बना। अतः यहाँ 'कर्तृ और कारकः' (करनेवाला) कृदन्त शब्द हुए और इनको एक प्रकार की संज्ञा कहते हैं।

जो कृदन्त शब्द हैं, वे 'संज्ञा अथवा विशेषण' होते हैं उनका तो सातों विभक्तियों (Inflections) में रूप (Declension) चलते हैं। जैसे—'कर्तृ' शब्द के रूप "कर्ता, कर्तारौ, कर्तारः' इसका शेष विभक्तियों के रूप ४९ पृष्ठ पर देखिए।

'कारकः, कारकौ, कारकाः' इसके शेष रूप बालक शब्द के समान चलेंगे, ३१-३२ पृष्ठ पर देखिये। इसी प्रकार हर्ता, भर्ता, धर्ता, दाता, नेता, इत्यादि हारकः, भारकः, धारकः, दायकः, नायकः, पाठकः, गायकः इत्यादि के रूप चलेंगे।

क(अ) प्रत्ययान्त शब्दाः—बुधः, प्रियः, प्रज्ञः, धनदः, महीध्रः, इत्यदि जान लेने चाहिये।

परन्तु पाठकगण ध्यान रक्खें कि 'अव्यय' शब्दों के रूप तीनों लिङ्गों में और सातों विभक्तियों में एक समान ही रूप बनते हैं। जैसे—'कृ' धातु से 'क्त्वा' प्रत्यय लगाकर 'कृत्वा' शब्द बना और क्त्वा प्रत्ययान्त शब्दों के रूप नहीं चलते हैं। कर्मवाचक—"तव्यत्, अनीयर्, ण्यत् , यत्, क्त" प्रत्यय होते हैं—

कर्मवाच्य शब्दाः—पठितव्यः, पठनीयः, कार्यम्, चेयम्, लभ्यम्, कृत्यः, दृष्टः, पठितः इत्यादि।

भाववाच्य शब्दाः—पाकः, स्नातम्, कृतिः, हसनमित्यादि।

क्रियावाचक शब्दाः—गतः, कृतः, गतवान्, कृतवान् इत्यादि

द्रष्टव्य—"कृत् और तिङ्" इन दोनों प्रत्ययों में बड़ा अन्तर है क्योंकि कृदन्त शब्द क्रियावाचक नहीं होते, वे "संज्ञा, विशेषण, अव्यय"

होते हैं और तिङन्त प्रत्यय तो केवल क्रिया के लिये ही सर्वदा प्रयुक्त होते हैं। जैसे--पचति, पठति, गच्छति, लिखति, इत्यादि।

वस्तुतः कृदन्त प्रत्यय के रूप कहीं तो क्रिया होती है और कहीं विशेषण भी होता है जैसे—

क्रिया (Verb)	विशेषण (Adjective)	क्रिया (verb)	विशेषण (adverb)
दिनं गतम्	= गतं दिनम्	कन्या जाता	=जाता कन्या
सूर्य उदितः	= उदितः सूर्यः	शिशुः भीतः	=भीतः शिशुः
स गतवान्	= गतवान् सः	अन्नं भोक्तव्यम्	=भोक्तव्यमन्नम्
ग्रन्थः पठनीयः	=पठनीयो ग्रन्थः	पिता पूज्यः	=पूज्यः पिता

कुछ विशेषण शब्द सनन्त से बनते हैं :—

जिघांसुः=मारने की इच्छा वाला विवक्षुः=बोलने की इच्छा वाला
तितीर्षुः=तैरने की इच्छा वाला जिज्ञासुः=जानने की इच्छा वाला
पिपासुः=पीने की इच्छा वाला शुश्रुषुः=सुनने की इच्छा वाला
जिज्ञासा=समझने की इच्छा पिपासा=पीने की इच्छा
शुश्रुषा=सुनने अथवा सेवा करने की इच्छा

द्वितीयः पाठः

कृत्य प्रत्यय (Potential passive participle)

"तव्यत्, अनीयर्, यत्, ण्यत्, क्यप्" इन प्रत्ययों को धातु से परे जोड़ते। 'तव्यत् अनीयर् यत्' इनके अन्त के अक्षर लोप हो जाते हैं, और 'ण्यत्, क्यप्' के आदि और अन्त के अक्षर लोप हो जाते हैं। जैसे –'कृ+तव्यः' पुनः 'कृ' में 'ऋ' को 'अर्' गुण करने से 'कर्तव्यः और करणीयः' प्रयोग बना। 'कृ+ण्यत्' में आदि और अन्त के अक्षर लोप करके पुनः 'कृ' में 'ऋ' को 'आर्' वृद्धि करने से 'कार्यम्' शब्द बना। 'कृ+क्यप्' में आदि और अन्त के अक्षर के लोप करके 'कृ और य' के बीच में एक तकार जोड़ा जाता है। जैसे—'कृ+त्+यः=कृत्यः' प्रयोग निष्पन्न हुआ। इसी प्रकार प्रत्येक धातुओं से समझ लेना चाहिये। और इन प्रत्ययो के रूप तीनों लिङ्गों में(बालक, लता, फल) शब्दों के समान ही चलेंगे।

देखिये पृष्ठ ३१-३२, ५१, ६०

निचे कुछधातु और प्रत्ययों के रूप दिये जाते हैं—

धातु	तव्य	अनीय
पठ्	पठितव्यः	पठनीयः
गम्	गन्तव्यः	गमनीयः
स्मृ	स्मर्तव्यः	स्मरणीयः
जि	जेतव्यः	जयनीयः
चि	चेतव्यः	चयनीयः
लिख्	लेखितव्यः	लेखनीयः
ग्रह्	ग्रहीतव्यः	ग्रहणीयः
क्री	क्रेतव्यः	क्रयणीयः
पा	पातव्यः	पानीयः
श्रु	श्रोतव्यः	श्रवणीयः
दृश्	द्रष्टव्यः	दर्शनीयः
स्था	स्थातव्यम्	स्थानीयम्
हस्	हसितव्यम्	हसनीयम्
दा	दातव्यः	दानीयः

'यत्' प्रत्यय के रूप निम्नलिखित हैं—

दा=देयम् (देने के योग्य) गा=गेयम् (गाने के योग्य)
पा=पेयम् (पीने के योाय) स्था=स्थेयम् (ठहरने केयोग्य)
ग्लै=ग्लेयम् (ग्लानि करने के योग्य) चि=चेयम् (बटोरने के योग्य)
लभ्=लभ्यम् (प्राप्त करने के योग्य)

'ण्यत्' प्रत्यय के रूप निम्नलिखित हैं—

कृ=कार्यम् (काम करने के योग्य) हृ=हार्यम् (चुराने के योग्य)
धृ=धार्यम् (धारण करने के योग्य) भृ=भार्यम् (भरण करने के योग्य)

'क्यप्' प्रत्यय के रूप निम्नलिखित हैं—

कृ=कृत्यः (करने के योग्य) शास्=शिष्यः (शासन करने के योग्य)
स्तु=स्तुत्यः (स्तुति करने के योग्य) वृ=वृत्यः (स्वीकार करने के योग्य)
आदृ=आदृत्यः (आदर करने के योग्य)

इत्यादि अनेकानेक धातुओं के रूप समझना चाहिये।

उपर्युक्त प्रत्ययों को सकर्मक धातुओं से कर्मवाच्य में और अकर्मक धातुओं से भाववाच्व में प्रयोग करते हैं, परन्तु कर्तृवाच्य में नहीं। कर्म में प्रथमा विभक्ति और कर्ता में तृतीया विभक्ति होती है।

लिङ्ग, विभक्ति और वचन के लिये कर्म के ऊपर ही निर्भर रहता है, परन्तु भाववाच्य में सदा नपुंसक लिङ्ग और एक वचन में ही प्रयुक्त होता है। जैसे—तेन सर्वे पाठाः पठितव्याः (पठनीयाः)। त्वया मञ्जूषा दातव्या (दानीया)। मया भोजनं कर्तव्यम् (करणीयम्)। यहाँ 'पठितव्याः' में प्रथमा विभक्ति का बहुवचन पुंलिङ्ग हो गया है और 'तेन' में तृतीया विभक्ति हो गई है। 'दातव्या' में स्त्रीलिङ्ग और प्रथमा विभक्ति का एकवचन हो गया है, त्वया में तृतीया विभक्ति हुई है। 'कर्तव्यम्' में नपुंसक लिङ्ग का एकवचन प्रथमा विभक्ति है और मया में तृतीया विभक्ति है।

जहाँ किसी कार्य की अनिवार्यता हो वहाँ भविष्यत् अर्थ निकलता है। जैसे—त्वया इदमवश्यं स्वीकरणीयम्=तुझे इसे अवश्य स्वीकार करना होगा (पड़ेगा)

हिन्दी में 'चाहिये, उचित, योग्य अथवा करना होगा, पढ़ना होगा, लिखना होगा' इत्यादि अर्थ निकाले जाते हैं।

उदाहरण

१—तेन तत्र गन्तव्यम् (गमनीयम्) He should go there. उसे वहाँ जाना चाहिये अथवा उसे वहाँ जाना पड़ेगा।

२—अस्माभिरवश्यमेव गन्तव्यम् (गमनीयम्) We must go. हमें जरूर जाना चाहिये अथवा हमें जरूर जाना पड़ेगा।

३—युष्माभिरवश्यमेव गन्तव्यम् (गमनीयम्) You must go or you ought to go. तुम्हे अवश्य जाना चाहिये अथवा जाना पड़ेगा।

४—अस्माभिरिदमवश्यं करणीयम्. We must do it. हमें इसे अवश्य करना चाहिये अथवा करना होगा।

५—मया प्रातरुत्थाय भ्रमितव्यम् (भ्रमणीयम्) After getting up I must walk in the morning. मुझे प्रातः काल उठकर टहलना चाहिये।

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजियेः—

१—चिकित्सकेन रोगिणां सम्यगुपचारो विधातव्यः। २—राज्ञा गुप्तचराः सर्वत्र नियोक्तव्याः। ३—चौराः नृपैः सर्वदा दण्डनीयाः। ४—पित्रा कन्या योग्यवराय दातव्या। ५—बालकैः पुस्तकानि पठितव्यानि। ६—तस्करेण

धनं रक्षणीयम् । ७—साधुभिः कदाचन धनं न संचेतव्यम् । ८—स्वामिन् ! त्वया स्वेच्छया इदं सर्वमुपभोक्तव्यम् । ९—शिशुभिः कटिसूत्रं धारणीयम् । १०—इदमालेख्यं (चित्रं) कदापि मया न द्रष्टव्यम् ।

संस्कृत में अनुवाद कीजियेः—

१—ब्रह्म मुहूर्त में तुम्हें नित्य उठना चाहिये । २—नौकर को आज्ञा देनी चाहिये । ३—हमें अपनी इन्द्रियों को जीतना चाहिये । ४—तुमको रथ पर बैठना चाहिये । ५—हमको अपना कर्तव्य पालन करना चाहिये । ६—सूर्योदय पर मुझे जाना पड़ेगा । ७—चोरों को दण्ड देना होगा[1] । ८—कल राम को रेशमी वस्त्र भेजना होगा[2] । ९—वैद्य को रोगियों का उचित उपचार करना चाहिये ।१०—तुम्हे पानी लाना पड़ेगा[3] ।

१. दण्डनीयाः २. प्रेषणीयम् ३. आनीतव्यः ।

तृतीयः पाठः

वर्तमान कालिक कृदन्त

शतृ और शानच् (Present participle)

जो क्रिया वर्तमान समय में ही होती रहती है अर्थात् पूर्ण नहीं होने पाती, उस अर्थ में शतृ और शानच् प्रत्यय होते हैं। जैसे—स खादन् गच्छति । वह खाता हुआ जाता है यहाँ 'खादन्' पूर्ण किया नहीं है अतः इन दोनों प्रत्ययों को ही हम 'अपूर्ण वर्तमान' कह सकते हैं ।

रूप बनाने का यह नियम है कि प्रधान क्रिया (Principal verb) में परस्मैपदी धातुओं से परे शतृ (अन्) लगाया जाता है और आत्मनेपदी धातुओं से परे शानच् (मान्) लगाया जाता है। जैसे -'पठ्+अन्=पठन्' शब्द बना । इसी प्रकार "लिखन्, पश्यन्, तिष्ठन्, पिबन्, स्मरन्" आदि अनेकों शब्द बनेंगे ।

शानच् के रूप जैसे—लभ+मान=लभमानः, प्रयोग निष्पन्न हुआ । इसी प्रकार 'वर्धमानः, वतेमानः, युध्यमानः, यजमानः' इत्यादि अनेकानेक शब्द बनेंगे ।

कर्मवाच्य धातुओं से केवल 'शानच्' होता है। जैसे—पठ्यमानः, क्रियमाणः, नीयमानः, दीयमानः, सेव्यमानः, इत्यादि।

प्रेरणार्थक धातुओं से जैसे—पाठयन्=पढ़ा रहा है। कारयन्=करा रहा है। क्रीडयन्=खिला रहा है। क्रापयन्=खरीदवा रहा है। लेखयन्=लिखा रहा है। इत्यादि समझ लेना चाहिये।

सनन्त से जैसेः—पिपठिषन्=पढ़ना चाह रहा है। चिकीर्षन्=करना चाह रहा है। चिक्रीडिषन्=खेलना चाह रहा है। चिक्रीषन्=खरीदना चाह रहा है। दित्सन्=देना चा रहा है इत्यादि जान लेना चाहिये।

यङन्त से जैसे– 'देदीप्यमानः, रोरुद्यमानः, सेसिच्यमानः, दन्दह्यमानः दोदुह्यमानः, लेलिह्यमानः' इत्यादि।

क्यच् काम्यच् और क्यङ् प्रत्ययों से जैसे—पुत्रीयन्, पुत्रकाम्यन्, पुत्रायमाणः इत्यादि बहुत से रूप बनेंगे।

परन्तु इन दोनों प्रत्ययों के रूप, सातों विभक्तियों और तीनों लिङ्गों में चलते हैं।

पुंलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	पठन्	पठन्तौ	पठन्तः
द्वि०	पठन्तम्	पठन्तौ	पठतः
तृ०	पठता	पठद्भ्याम्	पठद्भिः
च०	पठते	पठद्भ्याम्	पठद्भ्यः
पं०	पठतः	पठद्भ्याम्	पठद्भ्यः
ष०	पठतः	पठतोः	पठताम्
स०	पठति	पठतोः	पठत्सु
सं०	हे पठन्!	हे पठन्तौ!	हे पठन्तः!

स्त्रीलिङ्ग

प्र०	पठन्ती	पठन्त्यौ	पठन्त्यः
द्वि०	पठन्तीम्	पठन्त्यौ	पठन्तीः
तृ०	पठन्त्या	पठन्तीभ्याम्	पठन्तीभिः
च०	पठन्त्यै	पठन्तीभ्याम्	पठन्तीभ्यः
पं०	पठन्त्यः	पठन्तीभ्याम्	पठन्तीभ्यः
ष०	पठन्त्यः	पठन्त्योः	पठन्तीनाम्

स०	पठन्त्याम्	पठन्त्योः	पठन्तीषु
सं०	हे पठन्ति !	हे पठन्त्यौ !	हे पठन्त्यः !

नपुंसकलिङ्ग

प्र०	पठत्, पठद्	पठन्ती	पठन्ति
द्वि०	पठत्, पठद्	पठन्ती	पठन्ति

शेष विभक्तियों के रूप पुंलिङ्ग के समान ही चलेंगे। इसी प्रकार के अनेकों रूप चलेंगे।

'शानच्' प्रत्यय के रूप भी सातों विभक्तियों में और तीनों लिङ्ग में चलते हैं।

पुंलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	लभमानः	लभमानौ	लभमानाः
द्वि०	लभमानम्	लभमानौ	लभमानान्
तृ०	लभसानेन	लभमानाभ्याम्	लभमानैः
च०	लभमानाय	लभमानाभ्याम्	लभमानेभ्यः
पं०	लभमानात्=द्	लभमानाभ्याम्	लभमानेभ्यः
ष०	लभमानस्य	लभमानयोः	लभमानानाम्
स०	लभमाने	लभमानयोः	लभमानेषु
सं०	हे लभमान !	हे लभमानौ !	हे लभमानाः !

स्त्रीलिङ्ग

प्र०	लभमाना	लभमाने	लभमानाः
द्वि०	लभमानाम्	लभमाने	लभमानाः
तृ०	लभमानया	लभमानाभ्याम्	लभमानाभिः
च०	लभमानायै	लभमानाभ्याम्	लभमानाभ्यः
पं०	लभमानायाः	लममानाभ्याम्	लभमानाभ्यः
ष०	लभमानायाः	लभमानयोः	लभलानानाम्
स०	लभमानायाम्	लभमानयोः	लभमानासु
सं०	हे लभमाने !	हे लभमाने !	हे लभमानाः !

नपुंसक लिङ्ग

प्र०	लभमानम्	लभमाने	लभमानानि
द्वि०	लभमानम्	लभमाने	मभमानानि

शेष विभक्तियों के रूप पुंलिङ्ग के समान चलेंगे।

निम्नलिखित धातुएँ परस्मै पदी हैं । 'शतृ' प्रत्यय के एक वचन में तीनों लिङ्गों के रूप निम्नलिखित हैं ।

	संस्कृत		हिन्दी	इंगलिश	पुंलिङ्ग	स्त्री लिङ्ग	नपुँसक लिङ्ग
१.	भू (भव्)	=	होना	To be, To become	भवन्	भवन्ती	भवत्
२.	त्यज्	=	त्यागना	To forsake, To abandon	त्यजन्	त्यजन्ती	त्यजत्
३.	क्रीड्	=	खेलना	To play	क्रीडन्	क्रीडन्ती	क्रीडत्
४.	क्री	=	खरीदना	To buy	क्रीणन्	क्रीणती	क्रीणत्
५.	कूज्	=	कूजना	To chirk To coo To warble	कूजन्	कूजन्ती	कूजत्
६.	गर्ज्	=	गर्जना=गुर्राना	To roar, To growl	गर्जन्	गर्जन्ती	गर्जत्
७.	तर्ज्	=	तर्जना } डपटना / झिड़कना	To reprove, rebuke	तर्जन्	तर्जन्ती	तर्जत्
८.	गुञ्ज्	=	गुँजना=गुँजन	To buzz To hum to echo	गुञ्जन्	गुञ्जन्ती	गुञ्जत्
९.	ग्रन्थ्	=	गठवन्धन करना	To fasten, to pack, to knot	ग्रन्थन्	ग्रन्थन्ती	ग्रन्थत्
१०.	वन्ध्	=	बाँधना	To Bind, to tie	बध्नन्	बध्नती	बध्नत्
११.	गै	=	गाना	To sing	गायन्	गायन्ती	गायत्
१२.	घ्रा	=	सूँघना	To smell	जिघ्रन्	जिघ्रन्ती	जिघ्रत्
१३.	चर्	=	चरना	To graze,	चरन्	चरन्ती	चरत्
१४.	जीव्	=	जीना	To live	जीवन्	जीवन्ती	जीवत्
१५.	पा	=	पीना	To drink	पिबन्	पिबन्ती	पिबत्
१६.	दंश्	=	डसना=डङ्क मारना	To sting, to bite	दशन्	दशन्ती	दशत्
१७.	निन्द्	=	निन्दा करना	To defame	निन्दन्	निन्दन्ती	निन्दत्
१८.	दृश्	=	देखना	To see	पश्यन्	पश्यन्ती	पश्यत्

आत्मने पदी कुछ धातुएँ निम्नलिखित हैं — 'शानच्' प्रत्यय के तीनों लिङ्गों के एक वचन में रूप निम्नलिखित हैं।

संस्कृत		इंगलिश	पुँलिङ्ग	स्त्री लिङ्ग	नपुँसक लिङ्ग
१. दय्	= दया करना	To be kind, to commiserate	दयमानः	दयमाना	दयमानम्
२. ईक्ष्	= देखना	To see, to look at	ईक्षमाणः	ईक्षमाणा	ईक्षमाणम्
३. जन्	= पैदा होना	To born, to create	जायमानः	जायमाना	जायमानम्
४. त्रै	= रक्षा करना	To protect	त्रायमाणः	त्रायमाणा	त्रायमाणम्
५. दीप्	= चमकना	To shine	दीप्यमानः	दीप्यमाना	दीप्यमानम्
६. वृत्	= बर्ताव करना	To be, to deal, to behave	वर्तमानः	वर्तमाना	वर्तमानम्
७. वृध्	= बढ़ना, बढ़ाना	To enlarge, to enhance	वर्धमानः	वर्धमाना	वर्धमानम्
८. त्वर्	= शीघ्रता करना	To hurry	त्वरमाणः	त्वरमाणा	त्वरमाणम्
९. मन्	= मानना	To accept, to honour,	मन्यमानः	मन्यमाना	मन्यमानम्
१०. आ+रभ्	= प्रारम्भ करना	To begin	आरभमाणः	आरभमाणा	आरभमाणम्
११. नि+धा	= रखना	To put, to keep	निदधानः	निदधाना	निदधानम्
१२. अव+लोक्	= देखना	To look	अवलोकमानः	अवलोकमाना	अवलोकमानम्
१३. उप+पद्य	= योग्य होना	To enable	उपपद्यमानः	उपपद्यमाना	उपपद्यमानम्
१४. व्यथ	= व्यथा होना	To be afflicted	व्यथमानः	व्यथमाना	व्यथमानम्
१५. तन्	= फैलाना, तानना	To spread	तन्वानः	तन्वाना	तन्वानम्
१६. कृ	= करना	To do	कुर्वाणः	कुर्वाणा	कुर्वाणम्
१७. क्री	= खरीदा	To buy	क्रींणानः	क्रीणाना	क्रीणानम्
१८. कम्प्	= काँपना	To shiver	कम्पमानः	कम्पमाना	कम्पमानम्

चतुर्थः पाठः

द्रष्टव्य—इंगलिश के प्रधान क्रिया (Principle finite verb) में ing लगाते हैं। जैसे Go से Going. यदि क्रिया के अन्त में व्यञ्जन वर्ण (Consonant) हो, और व्यञ्जन वर्ण से पूर्व स्वर (vowel) हो तो व्यञ्जन वर्ण के द्विगुणित (Double) हो जाते हैं। जैसे—Get से Getting. Sit से Sitting, Hop से Hopping परन्तु जिस क्रिया के अन्त में 'E' हो तो द्विगुणित (Double) नहीं होता है। जैसे—Write से Wrting. Smile से Smiling. इत्यादि संस्कृत के वाक्य बनाते समय में 'शतृ और शानच्' के रूप के आगे 'अस्' धातु के रूप जोड़ दिये जाते हैं। जैसे—'गच्छन्नस्ति' इत्यादि

वर्तमान काल पुँलिङ्ग के उदाहरण

१ स गच्छन्नस्ति = He is going. वह जा रहा है या वह जाता हुआ है।

२—तौ पठन्तौ स्तः = They both are reading. or both of them are reading. वे दोनों पढ़ते हुए हैं, अथवा वे दोनों पढ़ रहे हैं।

३— ते धावन्तः सन्ति = They are running. वे दौड़ते हुए हैं या वे दौड़ रहे हैं।

स्त्री०—सा हसन्ती अस्ति = She is laughing. वह हँसती हुई है या वह हँस रही है।

५—ते भ्रमन्त्यौ स्तः = The both are walking. or both of them are walking. वे दोनों टहलती हुई हैं या वे दोनों टहल रही हैं।

६—ताः रुदन्त्यः सन्ति = They are weeping. वे रोती हुई हैं या वे रो रही हैं।

न० पु०—तत्फलं पतदस्ति = That fruit is falling. वह फल गिरता हुआ है या वह फल गिर रहा है।

८—ते द्वे फले पतन्ती स्तः = Those two fruits are falling. वे दो फल गिरते हुए हैं या वे दो फल गिर रहे हैं।

९—त्वं कूर्दमानोऽसि = Thou art jumping. तू कूदता हुआ है या तू कूद रहा है।

१०—युवां युध्यमानौ स्थः = You both are fighting तुम दोनों युद्ध करते हुए हो या तुम दोनों युद्ध कर रहे हो।

११—यूयं निदधानाः स्थ = You all are putting. तुम सब रखते हुए हो या तुम सब रख रहे हो।

१२ - अहं त्रायमाणोऽस्मि = I am protecting. मैं रक्षा करता हुआ हूँ या मैं रक्षा कर रहा हूँ।

१३—आवां लभमानौ स्वः = We both are getting. हम दोनों प्राप्त करते हुए हैं या हम दोनों प्राप्त कर रहे हैं।

१४—वयं प्रयत्नमानाः स्मः = We all are trying. हम सब प्रयत्न करते हुए हैं या हम सब प्रयत्न कर रहे हैं।

भूत काल के उदाहरण (Past continuous)

१—सगच्छन्नासीत् = He was going. वह जाता हुआ था या वह जा रहा था।

२—द्वे बालिके ईक्षमाणे आस्ताम् = Two girls were looking at. दो लड़कियाँ देखती हुई थीं या दो लड़कियाँ देख रहीं थीं।

३—तानि फलानि पतन्ति आसन्—Those fruits were falling. वे फल गिरते हुए थे या वे फल गिर रहे थे।

४—त्वं गायन्नासीः = Thou wast singing. तू गाता हुआ था या तू गा रहा था।

५—यूयं वन्दमाना आस्त = You all were saluting. तुम सब नमस्कार करते हुए थे या तुम सब नमस्कार कर रहे थे।

६—अहं दयमानः आसम् = I was commiserating. मैं दया करता हुआ था या मैं दया कर रहा था।

७—वयं सेवमाना अस्मि = We all were serving. हम सेवा करते हुए थे या हम सेवा कर रहे थे।

अपूर्ण भविष्यत्काल (Future continuous)

१—स गच्छन् भविष्यति = He will be going. वह जाता हुआ होगा या वह जा रहा होगा।

२—त्वं गच्छन्ती भविष्यसि = Thou wilt be going. तू जाती रही होगी या तू जा रही होगी।

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिये—

१—गच्छन् पिपीलिका याति, योजनानां शतान्यपि।
अगच्छन् वैनतेयोऽपि, पदमेकं न गच्छति॥

२—लिखद्भ्यो बालकेभ्यो मसिपात्रं न अपनयेत् ३—मार्गे गच्छद्भिः

बालकैर्मम किमपि प्रयोजनं नास्ति। ४—गच्छतोः द्वयोः कतमो ज्येष्ठतरोऽस्ति। ५—मोहनः क्रीडन्नस्ति। ६—तौ पठन्तौ आस्ताम्। ७—ते वर्धमानाः सन्ति। ८-सा कम्पमाना आसीत्। ९—ते सीव्यन्त्यौ स्तः। १०—ताः क्रुध्यन्त्य आसन्। ११—त्वं श्लाघमानोऽसि। १२—युवां स्पृशन्तौ स्थः। १३—यूयं युध्यमाना आस्त। १४—अहं दयमानोऽस्मि १५— आवां प्रयत्नमानौ स्वः। १६—वयं गङ्गायां तरन्तः स्मः। १७—सा त्वां पश्यन्ती भविष्यति। १८— ते धावन्त्यौ भविष्यतः। १९—यूयं पिबन्त्यो भविष्यथ। २०—यूयं निन्दन्तो भविष्यथ। २१—किं त्वं स्निह्यन्नासीः। २२—युवां व्यथमानौ आस्तम्।

संस्कृत में अनुवाद कीजिये—

(१) ज्ञानदत्त पत्र लिख रहा है। (२) हरि दस वर्ष से पढ़ रहा है। (३) मनुष्य दुःखों से पीड़ित हो रहे हैं। (४) बच्चा सोता हुआ है। (५) शकुन्तला घनश्याम को देखती हुई है। (६) सुरेश दौड़ता हुआ आ रहा है। (७) माँ ने गिरते हुए बच्चे को बचा लिया। (८) मैंने खेलते हुए मोहन को बाग में देखा (९) तैरते हुए लड़के गंगा के पार चले गये। (१०) वह लड़की चिल्लाती हुई घर में चली गई। (११) राम ने ठण्ड से काँपते हुए गरीबों को वस्त्र दिया (१२) पानी में डूबते हुए बालक को हरि ने बचाया (१३) राम दौड़ रहा था। (१४) वे सब गा रही थीं। (१५) क्या राम तुम्हें प्यार कर रहा था? (१६) क्या वे रक्षा कर रहे थे? (१७) वह देख रहा होगा। (१८) वे दुःखी हो रहे होंगे। (१९) मोहन गा रहा होगा। (२०) वे बाजार से आ रहे होंगे। (२१) गुरु जी पाठ पढ़ा रहे होंगे। (२२) वह अपना काम करवा रहा होगा।

पञ्चमः पाठः

अपूर्ण भविष्यत्कालिक कृदन्त

"स्यतृ और स्यमान (Futrure participle) ये दोनों प्रत्यय धातु से परे लगाये जाते हैं।

जिस धातु में इकार और रेफ हो तो स्यतृ के सकार को 'ष्' हो जाता है। जैसे—गम्+इ+ष्यन्=गमिष्यन्। करि+ष्यन्=करिष्यन् इत्यादि।

कर्मवाच्य से केवल 'स्यमान' ही होता है। 'स्यतृ' नहीं और कर्म का विशेषण होता है। जैसे—'सेविष्यमाणः' इत्यादि 'स्यतृ और स्यमान, इन दोनों प्रत्ययों के रूप सातों विभक्तियों में और तीनों लिङ्गों में चलते हैं।

पुंलिङ्ग (Masculine Gender)

	एक वचन Singular n.	द्विवचन Dual n.	बहुवचन Plural n.
प्र०	गमिष्यन्	गमिष्यन्तौ	गमिष्यन्तः
द्वि०	गमिष्यन्तम्	गमिष्यन्तौ	गमिष्यतः
तृ०	गमिष्यता	गमिष्यद्भ्याम्	गमिष्यद्भिः
च०	गमिष्यते	गमिष्यद्भ्याम्	गमिष्यद्भ्यः
पं०	गमिष्यतः	गमिष्यद्भ्याम्	गमिष्यद्भ्यः
ष०	गमिष्यतः	गमिष्यतोः	गमिष्यताम्
स०	गमिष्यति	गमिष्यतोः	गमिष्यत्सु
सं०	हे गमिष्यन् !	हे गमिष्यन्तौ !	हे गमिष्यन्तः !

स्त्री लिङ्ग (Feminine Gender)

	एक वचन Singular n.	द्विवचन Dual n.	बहुवचन Plural n.
प्र०	गमिष्यन्ती	गमिष्यन्त्यौ	गमिष्यन्त्यः
द्वि०	गमिष्यन्तीम्	गमिष्यन्त्यौ	गमिष्यन्तीः
तृ०	गमिष्यन्त्या	गमिष्यन्तीभ्याम्	गमिष्यन्तीभिः
च०	गमिष्यन्त्यै	गमिष्यन्तीभ्याम्	गमिष्यन्तीभ्यः
पं०	गमिष्यन्त्याः	गमिष्यन्तीभ्याम्	गमिष्यन्तीभ्यः
ष०	गमिष्यन्त्याः	गमिष्यन्त्योः	गमिष्यन्तीनाम्
स०	गमिष्यन्त्याम्	गमिष्यन्त्योः	गमिष्यन्तीषु
सं०	हे गमिष्यन्ति !	हे गमिष्यन्त्यौ !	हे गमिष्यन्त्यः !

नपुँसक लिङ्ग (Neuter Gender)

	एक वचन Singular n.	द्विवचन Dual n.	बहुवचन Plural n.
प्र०	गमिष्यत् (गमिष्यद्)	गमिष्यन्ती	गमिष्यन्ति
द्वि०	गमिष्यत् (गमिष्यद्)	गमिष्यन्ती	गमिष्यन्ति

शेष विभक्तियों के रूप पुँलिङ्ग के समान ही चलेंगे।

"स्यमान" प्रत्यय के भी तीनों लिङ्गों में और सातों विभक्तियों में रूप चलते हैं।

पुँलिङ्ग (Masculine Gender)

	एक वचन Singular n.	द्विवचन Dual n.	बहु वचन Plural n.
प्र०	लप्स्यमानः	लप्स्यमानौ	लप्स्यमानाः
द्वि०	लप्स्यमानम्	लप्स्यमानौ	लप्स्यमानान्

तृ०	लप्स्यमानेन	लप्स्यमानाभ्याम्	लप्स्यमानैः
च०	लप्स्यमानाय	लप्स्यमानाभ्याम्	लप्स्यमानेभ्यः
पं०	लप्स्यमानात्=द्	लप्स्यमानाभ्याम्	लप्स्यमानेभ्यः
ष०	लप्स्यमानस्य	लप्स्यमानयोः	लप्स्यमानानाम्
स०	लप्स्यमाने	लप्स्यमानयोः	लप्स्यमानेषु
सं०	हे लप्स्यमान !	हे लप्स्यमानौ !	हे लप्स्यमानाः !

स्त्री लिङ्ग (Feminine Gender)

प्र०	लप्स्यमाना	लप्स्यमाने	लप्स्यमानाः
द्वि०	लप्स्यमानाम्	लप्स्यमाने	लप्स्यमानाः
तृ०	लप्स्यमानया	लप्स्यमानाभ्याम्	लप्स्यमानाभिः
च०	लप्स्यमानायै	लप्स्यमानाभ्याम्	लप्स्यमानाभ्यः
पं०	लप्स्यमानायाः	लप्स्यमानाभ्याम्	लप्स्यमानाभ्यः
ष०	लप्स्यमानायाः	लप्स्यमानयोः	लप्स्यमानानाम्
स०	लप्स्यमानायाम्	लप्स्यमानयोः	लप्स्यमानासु
सं०	हे लप्स्यमाने !	हे लप्स्यमाने !	हे लप्स्यमानाः !

नपुँसक लिङ्ग (Neuter Gender)

प्र०	लप्स्यमानम्	लप्स्यमाने	लप्स्यमानानि
द्वि०	लप्स्यमानम्	लप्स्यमाने	लप्स्यमानानि

शेष विभक्तियों के रूप पुँलिग के समान ही समझना चाहिये ।

सूचना—"स्यतृ और स्यमान" प्रत्ययों के रूप बनाने के लिये कुछ धातु पाठ और तीनों लिङ्गों के एक वचन में रूप (Declensions) निम्न-लिखित हैं—

धातु=	पुँलिङ्ग Masculiue	स्त्री लिङ्ग Feminine	नपुँसक लिङ्ग Neuter
पत्=गिरना	पतिष्यन्	पतिष्यन्ती	पतिष्यत्
दृश्=देखना	द्रक्ष्यन्	द्रक्ष्यन्ती	द्रक्ष्यत्
गम्=जाना=	गमिष्यन्	गमिष्यन्ती	गमिष्यत्
स्था=ठहरना	स्थास्यन्	स्थास्यन्ती	स्थास्यत्
क्रीड्=खेलना	क्रीडिष्यन्	क्रीडिष्यन्ती	क्रीडिष्यत्

प्र+अप्=प्राप्त करना	प्राप्स्यन्	प्राप्स्यन्ती	प्राप्स्यत्
हन् =मारना	हनिष्यन्	हनिष्यन्ती	हनिष्यत्
पठ् =पढ़ना	पठिष्यन्	पठिष्यन्ती	पठिष्यत्
रुद् =रोना	रोदिष्यन्	रोदिष्यन्ती	रोदिष्यत्
धाव्=दौड़ना	धाविष्यन्	धाविष्यन्ती	धाविष्यत्
लिख्=लिखना	लेखिष्यन्	लेखिष्यन्ती	लेखिष्यत्
गै =गाना	गास्यन्	गास्यन्ती	गास्यत्
मृ =मरना	मरिष्यन्	मरिष्यन्तीं	मरिष्यत्
युध् =युद्ध करना	योत्स्यमानः	योत्स्यमाना	योत्स्यमानम्
वच्=बोलना	वक्ष्यमाणः	वक्ष्यमाणा	वक्ष्यमाणम्
क्री =खरीदना	क्रेष्यन्	क्रेष्यन्ती	क्रेष्यत्
क्री =खरीदना	क्रेष्यमाणः	क्रेष्यमाणा	क्रेष्यमाणम्
कृ =करना	करिष्यन्	करिष्यन्ती	करिष्यत
कृ =करना	करिष्यमाणः	करिष्यमाणा	करिष्यमाणम्
दा =देना	दास्यन्	दास्यन्ती	दास्यत्
दा =देना	दास्यमानः	दास्यमाना	दास्यमानम् ।
ग्रह् =ग्रहण करना	ग्रहीष्यन्	ग्रहीष्यन्ती	ग्रहीष्यत्
ग्रह् =ग्रहण करना	ग्रहीष्यमाणः	ग्रहीष्यमाणा	ग्रहीष्यमाणम्

उदाहरण

१—योत्स्यमानानहमवेक्षे=I shall see the fighters मैं युद्ध करने वाले को देखूँगा ।

२—वक्ता वक्ष्यमाणोऽस्ति=The speaker is about to speak. वक्ता भाषण देने वाला है ।

३—अहं गमिष्यन्नस्मि=I am about to go. मैं जाने वाला हूँ ।

४—स आगमिष्यन्नस्ति=He is abotut to come. वह आने वाला है ।

५—शिशुरिदानीं शयिष्यमाणोऽस्ति=Child is now about to sleep. बच्चा अब सोने वाला है ।

६—इदानीमहमेकं पत्रं लेखिष्यन्नस्मि=Now I am about to write a letter. अब मैं एक पत्र लिखने वाला हूँ ।

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

(१) पठिष्यन्तो बालका विद्यालयं यास्यन्ति । (२) पादकन्दुक-

क्रीडिष्यन् बालः क्रीडाक्षेत्रं गमिष्यति। (३) अहं भवन्तं वक्ष्यमाणोऽस्मि। ४—स स्थास्यन्नस्ति। (५) स ग्रहीष्यमाणोऽस्ति। (६) तौ लप्स्यमानौ स्तः। (७) स्त्रियो रोदिष्यन्त्यः सन्ति। (८) श्री रामो जनकपुरं द्रक्ष्यन्नस्ति। (९) रामेण सेविष्यमाणो विश्वामित्रः। (१०) सीतया सेविष्यमाणा अरुन्धती। (११) अस्माभिर्भोक्ष्यमाणानि फलानि।

संस्कृत में अनुवाद कीजिये—

(१) फुटबाल खेलने वाले लड़के खेल के मैदान में जायेंगे। (२) बच्चा रोने वाला है। (३) मैं दौड़ने वाला हूँ। (४) राम जाने वाला है। (५) पिता जी आज्ञा देने वाले हैं। (६) शूरवीर युद्ध करने वाले हैं। (७) लड़के खेलने वाले हैं। (८) देखने वाले लड़के देखेंगे। (९) सैनिक भागने वाले हैं। (१०) गोविन्द तुमको पुस्तक देने वाला है। (११) पेड़ पर से फल गिरने वाला है। (१२) गीत गाने वाली स्त्रियाँ गावें। (१३) जाने वाली स्त्रियाँ जावें। (१४) लिखने वाले लड़के लिखेंगे। (१५) पढ़ने वाले लड़के पढ़ेंगे। (१६) मैं उसे प्राप्त करने वाला हूँ। (१७) वे दोनों स्त्रियाँ प्राप्त करने वाली हैं। (१८) रेलगाड़ी खड़ी होने वाली है। (१९) गुरु जी लड़कों को पढ़ाने वाले हैं। (२०) वह मुझे प्राप्त कराने वाला है।

———

षष्ठः पाठः

भूतकालिक कृदन्त

भूतकाल की क्रिया का द्योतक अथवा धातुज विशेषण में "क्त और क्तवतु" (Past participle or verbal adjective) प्रत्ययों के रूप होते हैं।

जैसे—'स गतः अथवा स गतवान्' यहाँ 'गतः और गतवान्' क्रिया का काम करता है, परन्तु गतः या गतवान् तो असल में कर्ता का विशेषण है, क्योंकि असली क्रिया "अस्ति" तो छिपी हुई है। जैसे—मोहनो गतोऽस्ति अथवा मोहनो गतवान् अस्ति=मोहन चला गया है। सारांश तो यह है कि 'क्त और क्तवतु' ये दोनों समाप्ति बोधक प्रत्यय हैं।

सब धातुओं से परे 'क्त और क्तवतु' प्रत्यय जोड़े जाते हैं। 'क्त' के स्थान में 'त' शेष रह जाता है और 'क्तवतु' के स्थान में 'तवत्' शेष रह जाता है। जैसे—"कृ+तः=कृतः, कृ+तवत्=कृतवत्" प्रयोग बने। इनके रूप तीनों लिङ्गों में और सातों विभक्तियों में चलते हैं।

पुँलिङ्ग (Masculine Gender)

एक वचन	द्विवचन	बहुवचन
कृतः	कृतौ	कृताः

शेष रूप बालक शब्द के समान चलेंगे, ३१--३२ पृष्ठ पर देखिये ।

स्त्री लिङ्ग में 'कृता, कृते, कृताः' इत्यादि ।

शेष रूप 'लता' शब्द के समान चलेंगे, ५१ पृष्ठ पर देखिये ।

नपुँसक लिंग में 'कृतम् कृते, कृतानि' इत्यादि ।

शेष रूप 'फल' शब्द के समान चलेंगे । ६० पृष्ठ पर देखिये ।

पुँलिङ्ग 'तवतु' के रूप निम्नलिखित हैं —

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र०	गीतवान्	गीतवन्तौ	गीतवन्तः
द्वि०	गीतवन्तम्	गीतवन्तौ	गीतवतः
तृ०	गीतवता	गीतवद्भ्याम्	गीतवद्भिः
च०	गीतवते	गीतवद्भ्याम्	गीतवद्भ्यः
पं०	गीतवतः	गीतवद्भ्याम्	गीतवद्भ्यः
ष०	गीतवतः	गीतवतोः	गीतवताम्
स०	गीतवति	गीतवतोः	गीतवत्सु
सं०	हे गीतवन् !	हे गीतवन्तौ !	हे गीतवन्तः !

स्त्री लिङ्ग (Feminine Gender)

प्र०	गीतवती	गीतवत्यौ	गीतवत्यः
द्वि०	गीतवतीम्	गीतवत्यौ	गीतवत्यः
तृ०	गीतवत्या	गीतवतीभ्याम्	गीतवतीभिः
च०	गीतवत्यै	गीतवतीभ्याम्	गीतवतीभ्यः
प०	गीतवत्या	गीतवतीभ्याम्	गीतवतीभ्यः
ष०	गीतवत्याः	गीतवत्योः	गीतवतीनाम्
स०	गीतवत्याम्	गीतवत्योः	गीतवतीषु
सं०	हे गीतवति !	हे गीतवत्यौ !	हे गीतवत्यः !

नपुँसक लिङ्ग (Neuter Gender)

प्र०	गीतवत्=द्	गीतवती	गीतवन्ति
द्वि०	गीतवत्=द्	गीतवती	गीतवन्ति

शेष रूप पुँलिङ्ग के समान ही चलते हैं । इसी प्रकार प्रत्येक धातुओं से "क्त और क्तवतु" प्रत्यय को जोड़ देने से रूप चलते हैं ।

कार्यवशात् "क्त और क्तवतु" इन दोनों प्रत्ययों के केवल पुँलिङ्ग के एकवचन में रूप (Declensions) और साथ ही धातु भी निम्नलिखित है ।

	धातु Roots	क्त	क्तवतु	इंगलिश
१.	वच् =	उक्तः	उक्तवान्	Told
२.	बन्ध् =	बद्धः	बद्धवान्	Bound
३.	इष् =	इष्टः	इष्टवान्	Wished
४.	कथ् =	कथितः	कथितवान्	Spoken
५.	कृ =	कृतः	कृतवान्	Done
६.	क्री =	क्रीतः	क्रीतवान्	Bought
७.	क्रीड् =	क्रीडितः	क्रीडितवान्	Played
८.	क्षी =	क्षीणः	क्षीणवान्	Faded
९.	चेष्ट =	चेष्टितः	चेष्टितवान्	Moved
१०.	स्मि =	स्मितः	स्मितवान्	Smiled
११.	खाद् =	खादितः	खादितवान्	Eaten
१२.	शाम् =	शान्तः	शान्तवान्	Relieved
१३.	लभ् =	लब्धः	लब्धवान्	Got
१४.	धा =	हितः	हितवान्	Held
१५.	दा =	दत्तः	दत्तवान्	Given
१६.	हन् =	हतः	हतवान्	Killed
१७.	प्रच्छ् =	पृष्टः	पृष्टवान्	Asked
१८.	स्पृश् =	स्पृष्टः	स्पृष्टवान्	Touched
१९.	शी =	शयितः	शयितवान्	Slept
२०.	ग्रह् =	ग्रहीतः	ग्रहीतवान्	Taken
२१.	गै =	गीतः	गीतवान्	Sung
२२.	पा =	पीतः	पीतवान्	Drunk
२३.	जी =	जीतः	जीतवान्	Won
२४.	जीव् =	जीवितः	जीवितवान्	Lived
२५.	धाव् =	धावितः	धावितवान्	Ran
२६.	भी =	भीतः	भीतवान्	Afraid
२७.	सेव् =	सेवितः	सेवितवान्	Served
२८.	वृत् =	वर्तितः	वर्तितवान्	Behaved
२९.	वृध् =	वर्धितः	वर्धितवान्	Increased

३०. चूष्=	चूषितः	चूषितवान्	Supped
३१. आ+नी=	आनीतः	आनीतवान्	Brought
३२. अधि+इ=	अधीतः	अधीतवान्	Studied

'क्त' प्रत्यय बहुधा सकर्मक धातुओं से कर्म वाच्य में होते हैं। इसमें कर्ता (Subject) में तृतीया विभक्ति होती है और कर्म (Object) में प्रथमा विभक्ति होती है।

निम्नलिखित दशाओं में 'क्त' प्रत्ययान्त शब्दों के प्रयोग होते हैं—

कर्मवाच्य—मया ग्रन्थः कृतः=मुझसे ग्रन्थ बनाया गया।

रामेण सीता त्यक्ता=राम से सीता जी का त्याग हुआ।

तेन धनं लब्धम्=उससे धन प्राप्त किया गया।

(क) सकर्मक धातु से भी भाववाच्य में 'क्त' प्रत्यय हो सकता है—

जैसे—मया उक्तम्=मैंने कहा। किं त्वया भुक्तम्=क्या तूने खा लिया? कृष्णेन दृष्टम्=कृष्णने देख लिया।

(ख) कर्तृवाच्य में 'क्त' प्रत्ययान्त शब्द कर्ता का विशेषण होता है—

जैसे—स स्वर्गं गतः=वह स्वर्ग को गया।

उभौ तौ स्वपाठं पठितौ=वे दोनों अपना पाठ पढ़ चुके।

ते स्व स्व गृहं गताः=वे अपने अपने घर गये।

दुहिता स्वगृहं गता=लड़की अपने घर गई।

(ग) अकर्मक धातुओं से भी 'क्त' प्रत्ययान्त शब्द कर्ता का विशेषण होता है—

जैसे—शिशुः सुप्तः=बच्चा सो गया। कन्या शयिता=लड़की सो गई। गृहं पतितम्=घर गिर गया। स्त्रियो भीताः=स्त्रियाँ डर गईं।

(घ) अकर्मक धातुओं से 'क्त' प्रत्ययान्त शब्द 'भाव' में प्रयोग होता है—

शिशुना शयितम्=बच्चा सो गया। मया स्नातम्=मैंने स्नान किया। त्वया लज्जितम्=तू लज्जित हुआ। कन्यया भीतम्=कन्या डर गई।

'क्त' प्रत्ययान्त शब्दों के उदाहरण

१—मया ग्रन्थः पठितः=The book was read by me. मुझसे ग्रन्थ पढ़ा गया।

२—तेन नगरी दृष्टा=The town was seen by him. उससे नगरी देखी गई।

३—त्वया जलं पीतम्=The water was drunk by thee. तुझसे जल पिया गया।

४—अहं मंत्रिणा पृष्टः = I was asked by the minister. मैं मंत्री द्वारा पूछा गया।

द्रष्टव्य—सकर्मक धातुओं से भाववाच्य में 'क्त' प्रत्यय के प्रयोग होते हैं।

५—गोविन्देन दृष्टम् = Govind saw or Govind had seen. गोविन्द ने देख लिया।

६—गोपालेन भुक्तम् = Gopal had eaten or Gopal has taken. गोपाल ने खा लिया।

७—मया लब्धम् = I had got (gotten) मैंने प्राप्त कर लिया।

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिये—

(१) त्वया आम्रफलानि चूषितानि। (२) बालकैः फलानि संचितानि। (३) बालकेन दीपो निर्वापितः। (४) बुभुक्षितः किं न करोति पापम्? (५) क्षीणा नरा निष्करुणा भवन्ति। (६) क्षुधा पीड़िता भारतीया नराः कथमुन्नतिं करिष्यन्ति। (७) दशबालिकाः परीक्षायामुत्तीर्णाः। (८) कुम्भकारेण घटः निर्मितः। (९) स पङ्के मग्नः। (१०) कश्चित् पथिकः तरुतले सुप्तः। (११) महाजनो येन गतः स पन्थः। (१२) वानरो महानसे गतः। (१३) पाचकेन उल्कामुखेन ताडितः। (१४) तेन क्रन्दन्ती काचित् स्त्री दृष्टा। (१५) किङ्करो गृहे प्रविष्टः। (१६) मया अपूपाः भक्षिताः। (१७) मया एतत्पुस्तकं पठितम्। (१८) तेन घटः पूरितः। (१९) मया स्नातम्। (२०) वयं स्मिताः। (२१) स विस्मितः। (२२) ते प्रस्थिताः। (२३) मया न स्थितम्। (२४) मया लज्जितम्। (२)) गृहाणि पतितानि।

संस्कृत में अनुवाद कीजिये—

(१) उसने मेरी पुस्तक फाड़ दी। (२) मंत्री ने सेनापति को भेजा। (३) दमयन्ती ने राजा नल को वर चुन लिया। (४) उन्होंने वैद्य को बुलाया। (५) उन्होंने बाजा बजाया। (६) उसने धन नाश कर डाला। (७) यह लड़का कुसंग से बिगड़ गया। (८) इसने उसका जूठन खाया। (९) उसने मोहन को रोटी दी। (१०) सोहन लौट आया। (११) नौकर ने स्वामी का आश्रय लिया। (१२) ओस से जमीन भीग गई। (१३) उसने पानी का घड़ा भरा। (१४) शङ्कर ने संसार का संहार किया। (१५) उसने धन प्राप्त किया। (१६) युद्ध में बहुत सिपाही मारे गये। (१७) राम ने वाण से रावण को मारा। (१८) रसोइया जलती हुई लकड़ी से (उलकामुखेन) वानर को मारा। (१९) वे वहाँ से चल पड़े। (२०) उसे लज्जा आ गई।

———

अष्टमः पाठः

'क्तवतु' Past participle इसी को आसन्नभूत Present perfect भी कह सकते हैं 'क्तवतु' प्रत्यय भूतकाल में सब धातुओं से कर्ता में प्रयोग होता है।

'क्तवतु' प्रत्ययान्त शब्द कर्ता का विशेषण होता है—

जैसे—स भुक्तवान्=उसने भोजन कर लिया।

तेषु भुक्तवत्सु=उन लोगों के खा चुकने पर।

बालिका भुक्तवती=लड़की खा चुकी।

क्तवतु प्रत्ययान्त शब्दों के उदाहरण

१—मोहनो ग्रामं गतवान्=मोहन गाँव गया।
Mohan went to the village.

२—तौ ग्रामं गतवन्तौ=वे दोनों गाँव गये।
They both went to the village or Both of them went to the village.

३—ते ग्रामं गतवन्तः=वे सब गाँव गये।
They all went to the village.

स्त्री लिङ्ग—बालिका कार्यं कृतवती=लड़की ने काम कर लिया है या लड़की काम कर चुकी है।
The girl has done the work.

२—ते बालिके स्वपाठान् पठितवत्यौ=उन दोनों लड़कियों ने अपना पाठ पढ़ लिया।
Both of those girls have learnt their lesson.

३—ताः स्त्रियः स्वकार्यं कृतवत्यः=उन स्त्रियों ने अपना काम कर लिया (कर चुकीं)
Those women did their work.

नपुंसक—तत्कुलं मां त्यक्तवत्=उस खानदान ने मुझको छोड़ दिया।
That family has left me.

२—ते कुले गीतं गीतवती=उन दोनों कुल की स्त्रियों ने गीत गाया।
The women of both families sang a song.

३—तानि कुलानि तां त्यक्तवन्ति=उन कुटुम्बों ने उसको छोड़ दिया।
Those families have left him.

हिन्दी में अनुवाद करोः—

(१) कृषकः क्षेत्रं कृष्टवान्। (२) सीता रामं दृष्टवती। (३) राम-लक्ष्मणौ राक्षसान् हन्तवन्तौ। (४) सा गीतवती। (५) अहमुक्तवान्। (६) श्यामो हसितवान्। (७) स जलं पीतवान्। (८) तौ शब्दं श्रुतवन्तौ। (९) आवां क्रीडितवन्तौ। (१०) यूयं पुस्तकानि हृतवन्तः। (११) वयं पुस्तकानि क्रीतवन्तः। (१२) बालकः शयितवान्। (१३) गोविन्दः पृष्टवान्। (१४) स धनं लब्धवान्। (१५) सा वस्त्रं परिधृतवती। (१६) मोहन आहुतवान्। (१७) युवां कथं युद्धवन्तौ ? (१८) मम पादे कुक्कुरः (सारमेयः) दंशितवान्। (१९) स इन्द्रप्रस्थं न प्राप्तवान्। (२०) अहं पत्रं प्रेषितवान्। (२१) किं त्वं स्नातवान् ? (२२) वयं क्रीडितवन्तः। (२३) वृक्षात् फलं पतितवत्। (२४) द्वे फले पतितवती। (२५) तानि फलानि पतितवन्ति।

अभ्यास

(१) राम और लक्ष्मण ने राक्षसों को मार दिया। (२) उसने जल पीया। (३) मैंने उसे जीत लिया। (४) बिल्ली ने चूहे को पकड़ा। (५) मैंने जंगल में एक सिंह देखा। (६) बालक बिस्तरे पर सोया। (७) हवा ने पत्तों को कँपा दिया। (८) ईश्वर ने जगत को बनाया। (९) छात्रों ने गुरु की सेवा की। (१०) राम ने वाली को मारा। (११) लड़कों ने गीत गाया। (१२) गोविन्द अपना काम कर चुका। (१३) वह चला गया। (१४) कल रात में मोहन जल्दी सो गया।

दशमः पाठः

'तुमुन्' (Gerundial infinitive)

भविष्यदर्थ में 'तुमुन्' प्रत्यय का समान कर्ता हो, तो निमित्त अर्थ को प्रकट् करने के लिये धातु से परे "तुम्" लगाया जाता है। जैसे—रामः पठितुं विद्यालयं याति। यहाँ 'पठितुं और याति' दोनों का कर्ता राम है और पढ़ना निमित्तार्थ भविष्य का सूचक है। 'कृ+तुम्=कर्तुम्' प्रयोग बना, इसी प्रकार सर्वत्र जानना चाहिये। परन्तु पाठकगण ध्यान रक्खें कि तुमुन्' प्रत्ययान्त शब्दों के रूप नहीं चलते हैं; क्योंकि यह "अव्यय" होता है।

द्रष्टव्य—जिस अर्थ में 'सन्' प्रत्यय का प्रयोग होता है, उसी अर्थ में 'तुमुन्' प्रत्यय से भी प्रयोग हो सकता है, परन्तु दोनों का हिन्दी में अर्थ एक ही होगा। जैसे—स जिगमिषति अथवा स गन्तुं वाञ्छति, He wants to go. वह जाना चाहता है।

'काम और मनस्' शब्दों के साथ 'तुम्' के 'म्' का लोप कर दिया जाता है। जैसे—पुनरपि वक्तुकाम इव आर्यो लक्ष्यते। २—द्रष्टुमना जननी मेऽत्र समागता। इत्यादि और जग जान लेना चाहिये।

निम्न लिखित कुछ धातु पाठ और कुछ 'तुमुन्' प्रत्ययान्त शब्द हैं—

धातु	हिन्दी	तुमुन्	धातु	हिन्दी	तुमुन्
गम्	=जाना	=गन्तुम्	आ+दा	=लेना	=आदातुम्
पठ्	=पढ़ना	=पठितुम्	युध्	=युद्ध करना	=योद्धुम्
लभ्	=प्राप्त करना	=लब्धुम्	सृज्	=बनाना	=स्रष्टुम्
पच्	=पकाना	=पक्तुम्	चिञ्	=एकत्र करना	=चेतुम्
शुच्	=शोक करना	=शोचितुम्	विश्	=प्रवेश करना	=प्रवेष्टुम्
नी	=ले जाना	=नेतुम्	प्रच्छ्	=पूछना	=प्रष्टुम्
हृ	=चुराना	=हर्तुम्	स्पृश्	=छूना	=स्प्रष्टुम्
स्था	=ठहरना	=स्थातुम्	रुध्	=रोकना	=रोद्धुम्
गै	=गाना	=गातुम्	छिद्	=काटना	=छेत्तुम्
क्रीड्	=खेलना	=क्रीडितुम्	पिष्	=पीसना	=पेष्टुम्
हन्	=मारना	=हन्तुम्	भुज्	=खाना	=भोक्तुम्
स्ना	=नहाना	=स्नातुम्	कृ	=करना	=कर्तुम्
शी	=सोना	=शयितुम्	क्री	=खरीदना	=क्रेतुम्
अधि+इ	=पढ़ना	=अध्येतुम्	ग्रह्	=पकड़ना	=ग्रहीतुम्
दुह्	=दुहना	=दोग्धुम्	ज्ञा	=जानना	=ज्ञातुम्
लिह्	=चाटना	=लेढुम्	कथ्	=कहना	=कथितुम्
हा	=छोड़ना	=हातुम्	प्रापयि	=पहुँचाना	=प्रापयितुम्

उदाहरण

१—स कृष्णं द्रष्टुं याति=He goes to see Krishna. वह कृष्ण को देखने के लिये जाता है।

२—किं त्वं रामं द्रष्टुं यासि? Doest thou go to see Ram? क्या तू राम को देखने के लिये जाता है?

३—इदं जलं पातुमस्ति=This water is for drinking (to drink). यह पानी पीने के लिये है।

४—इदं मिष्टान्नं भोक्तुमस्ति = This sweetmeat is for eating (to eat). यह मिठाई खाने के लिये है।

५—अहं धावितुं वाञ्छामि=I want to run. मैं दौड़ना चाहता हूँ।
६—किं भवानुपवेष्टुमीहते=Do you want to sit? क्या आप बैठना चाहते हैं?
७—असौ नरो विश्वसितुं योग्योऽस्ति= That man is to be trusted. वह मनुष्य विश्वास करने का योग्य है।

द्रष्टव्य—शब्द और धातु के पीछे "अर्थम्" लगा देने से भी 'लिये' का अर्थ हो जाता है। जैसे—

१—इदं मिष्टान्नं भवदीयार्थमस्ति=This sweet meet is for you. यह मिठाई आप के लिये है।
२—मोहनः स्नानार्थं नद्यां गतवानस्ति=Mohan has gone on the river to bathe. मोहन स्नान करने के लिये नदी पर गया है।
३—स्नानं स्वास्थ्यार्थं लाभदायको भवति=To bathe is useful for health. (infinitive) Bathing is useful for health. (Gerund) स्नान स्वास्थ्य के लिये लाभदायक है।

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिये और जस शब्द के नीचे लाईन है उसमें खास बात बताइयेः—

(१) एतदिच्छाम्यहं श्रोतुं, परं कौतूहलं हि मे।
महर्षे! त्वं समर्थोऽसि, ज्ञातुमेवं विधं नरम्॥
(२) गाण्डीवं स्रंसते हस्तात्, त्वक् चैव परिदह्यते।
न च शक्नोम्यवस्थातुं, भ्रमतीव च मे मनः॥
(३) एतान् न हन्तुमिच्छामि, घ्नतोऽपि मधुसूदन।
(४) गुरूनहत्वा हि महानुभावान्, श्रेयो भोक्तुं भैक्ष्यमपीहलोके।
(५) यावदेतान्निरीक्षेऽहं, योद्धुकामानवस्थितान्।
कैर्मया सह योद्धव्यमस्मिन् रणसमुद्यमे।
(६) भृत्यो दुग्धं क्रेतुमापणे गतवानस्ति। (७) स ग्रामं गन्तुमिच्छति।
(८) जनानां पीडां परिहर्तुमीश्वरः समर्थोऽस्ति।
(९) भाविनोऽनर्थान् ज्ञातुं कोऽपि जनः समर्थो नास्ति।
(१०) किं भवान् प्रवेष्टुमनो वर्तते। (११) मम लब्धकामोऽस्ति।

संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(१) छुट्टी में विद्यार्थी घर जाना चाहता है। (२) हरि मुझसे पूछना चाहता है। (३) वह मुझे छूना चाहता है। (४) मैं जाना चाहता हूँ। (५) मैं

भोजन करने के लिये घर गया था। (६) लोग स्नान करने के लिये गङ्गा जी जाते हैं। (७) बाल को पहुँचाने के लिये घर जाओ। (८) गोविन्द यह पुस्तक मेरे लिये लाया था। (९) यह आम मास्टर जी के लिये हैं। (१०) यह स्नान करने का समय है। (११) भरत जी श्रीराम को देखने के लिये चित्रकूट गये थे। (१२ आज मैं पुस्तक खरीदने को बाजार जाऊँगा। (१३) वह वहाँ सोने को जावे। (१४) माली फूल लेने को बाग में गया है।

एकादशः पाठः

पूर्वकालिक क्रिया

क्त्वा और ल्यप् (Perfect participle) संस्कृत में जब किसी एक वाक्य में दो क्रियाओं का एक ही कर्ता हो, तब प्रथम क्रिया का सूचक धातु में 'त्वा' प्रत्यय जोड़ दिया जाता है। जैसे—रामो रावणं हत्वा विभीषणाय राज्यं ददौ। इस वाक्य में रावण के मारने के पश्चाद् विभीषण को राज्य दिया गया। अतः 'हत्वा' पूर्वकालिक क्रिया हुई। 'हत्वा और ददौ' का कर्ता एक ही 'राम' है। इसलिये समान कर्तृक कहा जाता है।

यदि धातु के पूर्व में उपसर्ग (Prefix) लगा हो तो 'त्वा' के स्थान पर 'य' लगा दिया जाता है। जैसे—अहं भवन्तं प्रतीक्ष्य आगतोऽस्मि। मैं आप की प्रतीक्षा करके आया हूँ। यहाँ 'प्रति पूर्वक ईक्ष्' धातु है, 'प्रति=ईक्ष्+य=प्रतीक्ष्य' प्रयोग बना।

परन्तु जहाँ निषेध वाचक नञ् समास हो वहाँ 'क्त्वा' के स्थान पर 'ल्यप्' नहीं होता है। जैसे—"गुरूनहत्वा हि महानु भावान्" इस वाक्य में निषेधवाचक 'अहत्वा' नञ् समास है, अतः यहाँ 'ल्यप्' नहीं हुआ है। कुछ धातुओं के क्त्वा और ल्यप् के रूप निम्नलिखित हैं—

धातु	त्वा		हिन्दी
गम्	=गत्वा	=	जाकर
दृश्	=दृष्ट्वा	=	देख कर
नी	=नीत्वा	=	लेकर
हृ	=हृत्वा	=	चुराकर
स्था	=स्थित्वा	=	स्थित होकर
धृ	=धृत्वा	=	पकड़ कर
क्रम	=क्रमित्वा	=	टहल कर
धा	=हित्वा	=	धर कर
दा	=दात्वा	=	देकर

धातु	त्वा		हिन्दी
आप्	=आप्त्वा	=	व्याप्त कर के
ग्रह्	=गृहीत्वा	=	लेकर (पकड़ कर)
शी	=शयित्वा	=	सोकर
भुज्	=भुक्त्वा	=	खाकर
वच्	=उक्त्वा	=	कह कर
हन्	=हत्वा	=	मार कर
वञ्च्	=वञ्चित्वा	=	ठग कर
छिद्	=छित्वा	=	छेद कर

सोपसर्ग		धातु		"य"	हिन्दी
आ	+	गम्	=	आगम्य (आगत्य)	जाकर
सं	+	दृश्	=	संदृश्य	अच्छी प्रकार देख कर
आ	+	नी	=	आनीय	लाकर
आ	+	क्रम्	=	आक्रम्य	आक्रमण करके (दबा कर)
उद्	+	स्था	=	उत्थाय	उठ कर (उठा कर)
परि	+	धा	=	परिधाय	पहिन कर (धारण कर)
आ	+	दा	=	आदाय	लेकर
सम्	+	आप्	=	समाप्य	समाप्त कर
सं	+	ग्रह्	=	संगृह्य	अच्छी प्रकार पकड़ कर
आ	+	रुह्	=	आरुह्य	चढ़ कर
नि	+	धा	=	निधाय	रख कर
अपि	+	धा	=	अपिधाय	बन्द कर
प्र	+	क्षाल्	=	प्रक्षाल्य	धोकर
प्रति	+	ईक्ष्	=	प्रतीक्ष्य	प्रतीक्षा कर
उप	+	विश्	=	उपविश्य	बैठ कर
उद्	+	घाटि	=	उद्घाट्य	खोल कर
वि	+	चर्	=	विचार्य	विचार कर (समझ कर)

'क्त्वा' प्रत्यय का प्रयोग दो प्रकार से होता हैं—

(क) जिससे यह ज्ञात हो कि एक काम समाप्त हो गया है और दूसरा उसके पश्चात् ही प्रारम्भ हुआ हो—

ते भोजनं कृत्वा अस्वपन्=Hoving taken food they slept (Participle). They slept after taking food (Gerund) वे भोजन कर के सो गये।

(ख) जिससे यह ज्ञात न हो कि एक काम दूसरे की अपेक्षा पहिले ही समाप्त हो गया हो—

स मां दृष्ट्वा रोदितुमारब्धवान्=Seeing me he wept (Gerund). He began to weep (Infinitive) वह मुझे देख कर रो पड़ा।

उदाहरण

१—विश्रामं कृत्वा ते गतवन्त आसन्=They went away after taking rest (Gerund). आराम करके वे चले गये।

२—अहमत्र त्वां दृष्ट्वा प्रसन्नोऽस्मि=Seeing thee here I am glad

(Participle). I am glad to see thee here (Infinitive) मैं यहाँ तुझे देख कर प्रसन्न हूँ।

३—सप्ताहमेकं स्थित्वा अहं गमिष्यामि=I shall go after staying a week (Gerund). मैं एक सप्ताह ठहर कर चला जाऊँगा।

४—बालकाः अध्यापकं दृष्ट्वा पलायन्ते=Seeing the teacher the boys run away (Participle) लड़के मास्टर को देख कर भागते हैं।

५—स भोजनं कृत्वा नगरं गतवान्=Taken his meal he went to the city (Participle) वह भोजन कर के शहर चला गया।

६—केचिज्जनाः स्वगृहस्य विष्कम्भं पिधाय त्यजन्ति=Some men leave their houses after locking up (Gerund) some men leave their houses locked up. (Infinitive) कुछ मनुष्य अपने मकान का ताला लगा कर छोड़ देते हैं।

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

(१) दृष्ट्वा तु पाण्डवानीकं, व्यूढं दुर्योधनस्तदा।
आचार्यमुपसंगम्य, राजा वचनमब्रवीत्॥

(२) एवमुक्त्वाऽर्जुनः संख्ये, रथोपस्थ उपाविशत्।
विसृज्य सशरं चापं, शोक संविग्न मानसः॥

(३) ब्राह्मे मुहूर्ते उत्थाय, चिन्तयेदात्मनो हितम्।

(४) दरिद्राणां मनोरथाः, उत्थाय हृदि लीयन्ते।

(५) लक्ष्मणो वने सीतां त्यक्त्वा प्रत्यागच्छत्।

(६) (त्वं) ईश्वरं स्मृत्वा मोदकं भुक्त्वा विद्यालयं गच्छ।

(७) त्वं स्नात्वा ततो भुक्त्वा पीत्वा च पाठशालां गच्छसि।

(८) अहं निदानं कृत्वा औषधं दास्यामि। (९) इदं काष्ठं भित्त्वा आनय। (१०) अहं स्वकार्यं समाप्य गृहं गमिष्यामि। (११) स वञ्चको मां वञ्चयित्वा गतवान्। (१२) त्वं स्वकटि वस्त्रं परिधाय आगच्छ।

संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(१) मोहन बाजार जाकर लौट आया। (२) ठग मुझे धोखा देकर चला गया। (३) चोर मेरा सामान लेकर भाग गया। (४) किसान खेत से घास काट कर घर लाते हैं। (५) मैं हिमालय का दृश्य देख कर अत्यन्त

प्रसन्न हुआ। (६) बृद्ध मनुष्य हाथ में छड़ी लेकर चलते हैं। (७) सुरेश साइकिल पर चढ़ कर चला आयेगा। (८) रमेश ईख खरीद कर ला रहा है। (९) कुछ देर ठहर कर मैं आऊँगा। (१०) मनुष्य को विचार कर काम करना चाहिये। (११) हे बालको! पुस्तक खोल कर पढ़ो। (१२) लड़के उसे मार कर भाग गये। (१३) विश्राम करके वे चले गये। (१४) मैं टहल कर आ रहा हूँ।

द्वादशः पाठः

भाववाचक तथा क्रियावाचक संज्ञाएं

जब कोई बात सिद्ध हो जाय अर्थात पूरी हो चुके तब उसे भाववाचक या क्रियावाचक शब्द कहते हैं। जैसे—पाकः (पक गया), लाभः (लाभ हो गया), भाववाचक बनाने का यह नियम है कि धातु से परे 'घञ्' आदि प्रत्यय जोड़े जाते हैं।

भाववाचक शब्दों के कुछ भेद निम्न लिखित हैं—

(क) 'घञ्' (अ) प्रत्ययान्त, 'अच्' (अ) प्रत्ययान्त, 'अप्' (अ) प्रत्ययान्त शब्द पुँलिङ्ग होते हैं, जैसे—पाकः, लाभः, चालः, निकायः, सञ्चयः, निश्चयः, संभवः, करः, लवः, भयम्, रोगः, शोकः, भोगः, विघ्नः, इत्यादि अनेकों शब्द समझना चाहिये।

(ख) नङ् (नः) प्रत्ययान्त शब्द पुँलिङ्ग होते हैं—
जैसे—यज्ञः, यत्नः, प्रश्नः, रक्षणः, इत्यादि जान लेना चाहिये।

(ग) क्तिन् (तिः प्रत्यान्त शब्द स्त्री लिङ्ग होते हैं—
जैसे—कृतिः, स्तुतिः, शक्तिः, भक्तिः, मुक्तिः, रतिः, मतिः, संपत्तिः, विपत्तिः, आपत्तिः, इत्यादि अनेकानेक समझना चाहिये।

(घ) 'अ' प्रत्ययान्त भी शब्द स्त्री लिङ्ग में होते हैं—
जैसे—चिकीर्षा, इच्छा, ईहा, भीक्षा, दीक्षा, याच्ञा, इत्यादि

(ङ) ल्युट् (अन) प्रत्ययान्त शब्द नपुँसक लिङ्ग होते हैं—
जैसे—हसनम्, गमनम्, पठनम्, करणम्, हरणम्, पेषणम्, श्रवणम्, भरणम्, कारणम्, श्रावणम्, धारणम्, इत्यादि अनेकों शब्द बनते हैं।

भाव वाचक तथा क्रिया वाचक संज्ञा निम्नलिखित है।

(Gerund or infinitve noun)

संस्कृत		हिन्दी	इंगलिश
पठनम्	=	पढ़ना	Reading, to read.
पाठनम्	=	पढ़ाना	Teaching, to teach.

लेखनम्	=	लिखना	Writing, to write.
पानम्	=	पीना	Drinking, to Drink.
भ्रमणम्	=	टहलना	Walking, to walk.
शयनम्	=	सोना	Sleeping, to sleep.
उत्थानम्	=	उठना	Rising, to get up.
पतनम्	=	गिरना	Falling, to fall
पिधानम्	=	ढाँकना	Closing, to close.
विस्मरणम्	=	भूलना	Forgetting, to forget.
प्रेषणम्	=	भेजना	Despatching, to send.
क्रयणम्	=	खरीदना	Purchasing, to buy.
विक्रयणम्	=	बेचना	Selling, to sell.
उद्घाटनम्	=	खोलना	Inaugurating to open.
वपनम्	=	बोना	Sowing, to sow.
रोदनम्	=	रोना	Weeping, to weep.

उदाहरण

सूचना — संस्कृत के "ल्युट्" प्रत्ययान्त शब्दों को इंगलिश में Infinitive, Gerund और verbal noun कह सकते हैं।

शयनं स्वास्थ्यार्थं वरमस्ति=सोना स्वास्थ्य के लिये अच्छा है। To sleep is good for health (Infinitive)

अथवा—रात्रौ शयनं स्वास्थ्यार्थं वरमस्ति=रात में सोना स्वास्थ्य के लिये अच्छा है। Sleeping at night is good for health (Gerund) or The sleeping of at night for health (verbal noun)

सूचना—भाव वाचक संज्ञा (इंगलिश के Abstract noun, Infinitive noun, gerundal noun) इन अर्थों में कोई अन्तर नहीं है)

जैसे—कार्यं स्वास्थ्यार्थं लाभदायको भवति=कार्य स्वास्थ्य के लिये लाभदायक है। Work is useful (good) for health (Abstract noun)

कार्यकरणं स्वास्थ्यार्थं लाभदायको भवति=काम करना स्वास्थ्य के लिये लाभदायक है। To work is useful (good) for health. (Infinitive noun) working is useful (good) for health. (Gerundal roun)

सूचना—इंगलिश में Gerund और Infinitive ये दोनों ही verb और noun के काम कर सकते हैं। अर्थात् Gerund के स्थान पर Infinitive का, और Infinitive के स्थान पर Gerund का प्रयोग कर देने से वाक्य sentense के अर्थ में कोई विशेष अन्तर नहीं होता है। जैसे—

सा गानं शिक्षन्ती अस्ति=वह गाना सिखा रही है।

She is teaching to sing (Infinitive)

She is teaching singing (Gerund)

अथवा—तां गानं शिक्षय=उसे गाना सिखाओ।

Teach her singing (Gerund)

Teach her to sing (Infinitive)

सूचना—साधारण तौर से तो ing लगे हुए verb क्रिया के पूर्व the लगा हुआ हो, और पश्चात् of लगा हुआ हो, तो वह वाक्य verbal noun हो जाता है। परन्तु कहीं-कहीं पर तो केवल "of" ही लगा देते हैं और कभी-कभी "of" भी नहीं लगाया जाता है। परन्तु इंगलिश के पूर्व विद्वान् लोगों ने "Gerund" को ही verbal noun कहा है परन्तु अर्थ में कोई भेद नहीं होता है। जैसे—

१—अहं पुस्तकस्य पठने संलग्नोऽस्मि=मैं पुस्तक पढ़ने में संलग्न हूँ।
I am engaged in the reading of a book. (verbal noun)
or I am engaged in reading a book (Gerund)

२—अहं भ्रमणस्याऽनुरागी अस्मि=मैं टहलने का अनुरागी हूँ। I am fond of walking, यहाँ पर केवल of ही लगा है।

३—भिक्षुकान् निर्वाहार्थमर्पणं लाभदायकोऽस्ति=भिखारियों को केवल निर्वाह मात्र के लिये देना लाभदायक है। The offering to the beggars to pull them on is useful, यहाँ पर of नहीं लगा है।

Note—Sometims "of" is left out, even when there is a definite article going before it.

सूचना-यहाँ पर यह प्रश्न उठता है कि क्या Gerund और Participle ये दोनों एक ही बात है। नहीं, Gerund तो verbal noun धातुज संज्ञा है। परन्तु Participle तो verbal adjective धातुज विशेषण है।

क्रीडनाद् धावनं वरमस्ति=खेलने की अपेक्षा दौड़ना अच्छा है।

Running is better than playing. (यह verbal adjective धातुज विशेषण है)

अहं धावन्तं बालकं दृष्टवान्=मैंने दौड़ते हुए लड़के को देखा। I saw a boy running. (यह verbal noun धातुज संज्ञा है)

सूचना—Participle सदा verb और Adjective का काम करता है। Present participle के अन्त में "ing" होता है। Past participle किसी verb का तीसरा रूप होता है। Perfect participle में Having और verb का तीसरा रूप होता है। Participle जिस शब्द का विशेषता बताता है, उससे पहिले और पीछे भी प्रयुक्त हो सकता है।

जैसे—इयमेका रोचिका कथा विद्यते=यह एक रोचक कहानी है। This is an intersting story. यहाँ पर story की intercting विशेषता बतलाता है और story पहिले प्रयुक्त हुआ है।

२—वयं क्रीडतो बालकान् प्राप्तवन्तः=हमने खेलते हुए बालकों को प्राप्त किये। We found the children playing. यहाँ पर बालकों की Playing विशेषता बताता है और बालकों से पीछे प्रयुक्त हुआ है।

३—अहं स्वकार्यं समाप्य गृहं गतवान्=मैं अपना काम करके घर गया। Having done my Work I went home. (यह Perfect participle है)

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिये—

(१) अहं पठनं जानामि परन्तु लेखनं न जानामि। (२) किं त्वं लेखनं जानासि ? (३) प्रातः काले परिभ्रमणं लाभप्रदो भवति। (४) स पादकन्दुक क्रीडनमभिलषति। (५) तव आगमनात्पूर्वमेव अहं गमिष्यामि। (६) शिशवो दुग्धपानेऽनुरागिणो भवन्ति। (७) इदानीं बालकानां गानसमय आगमनमस्ति। (८) मह्यं गद्य पठनं रोचते। (९) अहं किञ्चिददनमभिलषामि। (१०) साम्प्रतमधर्मस्य अभ्युत्थानं भवति।

संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(१) प्रातःकाल के टहलना लाभप्रद है। (२) भूलना मनुष्य का कर्तव्य है और क्षमा करना परमेश्वर का है। (३) सोना स्वास्थ्य के लिये बहुत आवश्यक है। (४) उसे खुली हवा में सोने से बहुत आनन्द आता है। (५) शाम को पुस्तकालय में समाचार पत्र पढ़ना उसको नित्य का अभ्यास है। (६) वह उपन्यास पढ़ना पसन्द करता है। (७) पढ़ना बहुत कठिन है।

(८) गोविन्द को एक पत्र भेजना है। (९) मुझे एक पुस्तक खरीदना है। (१०) सिनेमा देखना आखों की हानि होती है। (११) छात्रों को नाचने और गाने में समय बेकार नहीं खोना चाहिये। (१२) सुरेन्द्र अच्छा लिखना जानता है। (१३) छोटे बच्चे दूध पीने के बहुत शौकीन होते हैं।

———

एक विंशतितमोऽध्यायः

अथ कारक प्रकरणम् (Cases)

प्रथमः पाठः

"क्रियाऽन्वयित्यं कारकत्वम्"

भावार्थ – जिसका अन्वय क्रिया के साथ होता है; उसे कारक कहते हैं।

अथवा—जिस विभक्ति के चिन्हों द्वारा "संज्ञा या सर्वनाम" का सम्बन्ध क्रिया के साथ या अन्य शब्दों के साथ जाना जाता है; उसे कारक कहते हैं।

कारक के चिन्हों का नाम विभक्ति (Inflection है।

संस्कृत में ६ कारक मानते हैं। जैसे—

कर्ता कर्म च करणं, सम्प्रदानं तथैव च।

अपादानाधिकरणे, इत्याहुः कारकाणिषट्॥

संस्कृत में सम्बन्ध को कारक नहीं मानते क्योंकि उसका संज्ञा के साथ सम्बन्ध होता है, क्रिया के साथ नहीं, सम्बन्ध का क्रिया के साथ अन्वय नहीं होता है। अतः इसको कारक नहीं मानते हैं और सम्बोधन को भी कारक नहीं मानते हैं।

द्रष्टव्य – कारक और संज्ञाओं का आपस में बहुत भेद है। क्योंकि संज्ञा तो किसी वस्तु के नाम को कहते हैं। परन्तु कारक के बिना पूरा-पूरा अर्थ नहीं निकाला जा सकता है।

हिन्दी में आठ कारक मानते हैं। और इंगलिश में साधारणतया तीन ही कारक होते हैं। (1) Nominative case. (2) Objective case. (3) Possessive case. इनके अतिरिक्त गौणरूप से मानते हैं।

कारकों के नाम तथा चिन्ह निम्नलिखित हैं—

संस्कृत	=हिन्दी	इंगलिश
१. कर्ता	=ने, से, जो वह	Nominative case
२, कर्म	=को, प्रति	Objective or Accusative case

३. करण =ने, से, द्वारा, साथ, कारण Instrumental case.
४. संप्रदान =के लिये, को, निमित्त, वास्ते Dative case.
५. अपादान=से, अपेक्षा, पृथक् Ablative case.
६. संबन्ध =का, की, के, रा, री रे, नाक्ष, नी, ने, Possessive case or Genititive case.
७. अधिकरण=में पै, पर, ऊपर, अन्दर, विषय में Locative case.
८. सम्बोधन=हे, अरे, भो, ओह, अयि ! vocative case.

द्रष्टव्य—कहीं-कहीं पर विशेष धातुओं के साथ वाक्य में प्रयोग होने पर पूर्वोक्त कारकों के चिन्हों का प्रयोग नहीं भी होता। जैसे—मैं घर जाता हूँ, यहाँ पर 'को' चिन्ह नहीं प्रयोग है। इसी प्रकार और जगह भी समझना चाहिये।

कर्ता कारक (Nominative or subjective case) जो अपनी इच्छा के अनुसार किसी काम को करने में पूर्ण स्वतंत्र हो, उसे कर्ता कहते हैं।

१—मोहनो गच्छति=मोहन जाता है। Mohan goes.

२—रामलक्ष्मणौ गच्छतः=राम और लक्ष्मण जाते हैं।
Ram and Lakshaman go.

३—बालका हसन्ति=लड़के हँसते हैं। Boys laugh.

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिए और कर्ता बताइये—

अत्र शूरा महेष्वासा, भीमार्जुन समायुधि।
युयुधानो विराटश्च, द्रूपदश्च महारथः॥
धृष्टकेतुश्चेकितानः, काशिराजश्च वीर्यवान्।
पुरुजित्कुन्ति भोजश्च, शैव्यश्च नरपुङ्गवः॥
युधामन्युश्च विक्रान्तउत्तमौजाश्च वीर्यवान्।
सौभद्रो द्रौपदेयाश्च सर्व एव महारथाः॥

संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(१) हरि जाता है। (२) शकुन्तला आती है। (३) क्या तू पढ़ता है? (४) तू खेलता है। (५) तुम गाते हो। (६) तुम दोनों जाते हो। (७) हम दोनों देखते हैं। (८) हम पढ़ते हैं। (९) तू क्या करता है? (१०) वे दोनों

*अपना मकान, अपनी बहिन, अपने में, इत्यादि का प्रयोग किया जाता है।

हँसते हैं। (११) वे सब नहाते हैं। (१२) तुम सब कहाँ जाते हो ? (१३) हम सब टहलते हैं। (१) हम सब खेलते हैं।

द्वितीयः पाठः

कर्म कारक (objective or Accusative case)

कर्ता अपनी क्रिया (व्यापार) के द्वारा जिसको प्राप्त करना चाहता है, उसे कर्मकारक कहते हैं और कर्म में द्वितीया विभक्ति (Inflexion) होती है।

१. मोहनो विद्यालयं गच्छति=मोहन पाठशाला जाता है।
Mohan goes to School.

२. गोविन्दः पारितोषिकं वितरति=गोविन्द पुरष्कार बाँटता है।
Govind distributes the prize.

३. ते मां नमन्ति=वे मुझे नमस्कार करते हैं।
They salute me.

४. आवां त्वां स्मरावः=हम दोनों तुझे याद करते हैं।
We both remember Thee.

५. वयं पुस्तकानि पठामः=हम सब पुस्तकें पढ़ते हैं।
We read the books.

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिए और कर्म बताइये—

तत्रापश्यत्स्थितान्पार्थ पितृनथ पितामहान्।
आचार्यान्मातुलान्भ्रातॄन्पुत्रान्पौत्रान्सखींस्तथा॥
श्वशुरान्सुहृदश्चैव, सेनयोरुभयोरपि।
तान्समीक्ष्य स कौन्तेयः सर्वान् बन्धूनवस्थितान्

संस्कृत में अनुवाद कीजिए।

(१) राम घर जाता है। (२) श्याम साँप को मारता है। (३) तुम मुझे पीटते हो। (४) माँ पुत्र की रक्षा करती है। (५) मैं तुम्हें देखता हूँ। (६) क्या तू ईश्वर को याद करता है। (७) पिता पुत्र को कहता है। (८) लड़का गाना गाता है। (९) वह पुस्तक पढ़ता है। (१०) स्वामी नौकरों को बुलाता है। (११) माँ बच्चे को प्यार करती है।

निम्नलिखित शब्दों के साथ भी द्वितीया विभक्ति (Inflexion) होती है।

संस्कृत	हिन्दी	इंगलिश
१. अन्तरेण	बिना	Without.
२. अन्तरा	बीच में	Between.
३. प्रति	ओर	Towards.
४. अनु	पीछे	Follows.
५. अभितः = उभयतः	दोनों ओर	On bothsides.
६. परितः = सर्वतः	चारों ओर	On all sides, Around.
७. समया, निकषा, समीप	निकट	Near, Besides.
८. धिक्	धिक्कार	Fie.
९. हा	खेद	Sorrow.

उदाहरण

१. सत्यमन्तरेण सुखं नास्ति = सत्य के बिना सुख नहीं है।
There is no pleasure without truth.

२. त्वां मां चाऽन्तरा ईश्वरोऽस्ति = तुम्हारे और हमारे बीच में ईश्वर है।
God is beween you and us.

३. स ग्रामं प्रति गच्छति = वह गाँव की ओर जाता है।
He goes towards the village.

४. लक्ष्मणो राममनुवनं गच्छति = लक्ष्मण राम के पीछे-पीछे वन जाता है।
Lakshaman follows Ram to forest.

५. मम गृहमुभयतः पुष्पवाटिका वर्तते = मेरे घर के दोनों ओर फुलवारी है। There is a garden on both sides of my house.

६. लङ्का परितः समुद्रो विद्यते = लङ्का के चारों ओर सागर है।
There is sea around Ceylon (Lanka)

७. वाराणसीं समया गङ्गा प्रवहति = बनारस के निकट गङ्गा जी बहती हैं। The Ganges flows besides Benares.

८, तं पापिनं धिक्! उस पापी को धिक्कार है।
Fie for that sinner !

अभ्यास

(१) खेद है कि वह नहीं पढ़ता है। (२) परिश्रम के बिना विद्या नहीं आती है। (३) अध्यापक के चारों ओर विद्यार्थी बैठे हैं। (४) प्रयाग के दोनों ओर गङ्गा और यमुना बहती है। (५) प्रयाग का किला यमुना नदी के समीप है। (६) कृपण मनुष्य को धिक्कार है।

द्रष्टव्य—"विना" के योग में द्वितीया और तृतीया, पञ्चमी, विभक्ति होती है। जैसे—रामं विना, रामेण विना, रामाद् विना, इत्यादि।

तृतीयः पाठः

द्विकर्मक धातु (The roots having two objects)

	संस्कृत		हिन्दी	इंगलिश
१.	दुह्	=	दुहना	To milk.
२.	याच्	=	माँगना	To beg.
३.	पच्	=	पकाना	To Cook.
४.	दण्ड्	=	दण्ड देना	To punish.
५.	रुध्	=	रोकना	To imped.
६.	प्रच्छ्	=	पूछना	To ask.
७.	चि	=	बटोरना	To collect.
८.	ब्रूञ्	=	बोलना	To speak.
९.	शास्	=	शासन करना	To rule.
१०.	जि	=	जीतना	To win
११.	मन्थ्	=	मथना	To churn
१२.	मुष्	=	चुराना	To steal
१३.	नी	=	ले जाना	To carry
१४.	हृ	=	चुराना	To steal
१५.	वह्	=	ढोना	To convey
१६.	कृष्	=	खींचना	To pull

द्रष्टव्य :—इन धातुओं के अर्थ में अन्य धातु भी द्विकर्मक हो जाते हैं। द्विकर्मक क्रिया की यह परिभाषा है :—

जिस क्रिया के व्यापार का फल दो कर्मों पर पड़ता है, उसे द्विकर्मक क्रिया कहते हैं। जैसे :—

सा गोधूमपिष्टीः रोटिकाः पचति यहाँ पर "पचति" क्रिया के व्यापार का फल "गोधूमपिष्टीः और रोटिका" इन दोनों शब्दों पर पड़ता है। अतः यह द्विकर्मक क्रिया हुई।

द्विकर्मक क्रिया में न तो दोनों कभी मुख्य ही कर्म होंगे और न तो दोनों गौण ही कर्म होंगे।

गौणकर्म (Indirect object अप्रधान कर्म) में "दुह, याच" इत्यादि धातुओं के साथ अन्यकारक न होकर कर्मकारक होता है।

१. जैसे :—गोपः गां पयः दोग्धि=ग्वाला गाय से दूध दुहता है। The milkman milks the cow. यहाँ पर मुख्यकर्म—"दूध" है और गाय में अपादानकारक प्राप्त है परन्तु अपादान कारक न होकर द्वितीया विभक्ति हुई।

२. सा गोधूमपिष्टीः रोटिकाः पचति=वह गेहूँ के आटे से रोटी पकाती है। She cooks the bread with the wheat-flour. यहाँ पर "गोधूमपिष्टी" में तृतीया विभक्ति प्राप्त है परन्तु तृतीया न होकर द्वितीया विभक्ति हुई।

इसी प्रकार उपर्युक्त १६ धातुओं में सर्वत्र गौणकर्म जानना चाहिये।

३. दरिद्रःश्यामं वस्त्रं याचते=दरिद्र श्याम से कपड़ा माँगता है। The poor begs clothes from Shyam.

४. सा तण्डुलानोदनं पचति=वह चावलों से भात पकाती है। She cooks the rice.

५. न्यायाधीशः चौरं शतमुद्रां दण्डयति=न्यायाधीश चोर से सौ रुपये दण्ड लेता है। The judge takes penalty of hundred rupees from thief.

६. घनश्यामो वृक्षमवचिनोति फलानि=घनश्याम पेड़ से फलों को बटोरता है। Ghanshyam gathers fruits from the tree.

७. गोविन्दः श्यामं मार्गं पृच्छति=गोविन्द श्याम से मार्ग पूछता है। Govinda asks the way from Shyam.

८. देवाः क्षीरसागरममृतमथ्नन्=देवताओं ने अमृत के लिये क्षीर समुद्र मथा। Deities (gods) churned the sea for ambrosia.

९. स व्रजमवरुणद्धि गाम्=वह गाय को गौशाला में रोकता है। He impedes the cow in the cowpen.

अभ्यास

संस्कृत में अनुवाद कीजिये—

(१) देवदत्त यज्ञदत्त से १००) जीतता है (२) अध्यापक विद्यार्थियों को नीति बताता है (३) गुरु शिष्य को धर्म का उपदेश देता है। (४) मैं

अपनी पुस्तकों को स्कूल में ले जाऊँगा (५) नौकर ग्राम में बोझ ढोता है (६) चोर ने कन्जूस का धन चुराया। (७) बैल सड़क पर गाड़ी को खींचते हैं (८) देवताओं ने क्षीर सागर से अमृत को मथा (६) लक्ष्मण ने ज्ञान का मार्ग राम से पूछा।

चतुर्थः पाठः

(कालाध्वनोरत्यन्त संयोगे)

भावार्थ :—अत्यन्त लगातार समय दूर तक होता रहे तो कालवाचक शब्द से अथवा मार्ग वाचक हो तो द्वितीया विभक्ति होती है। और "यावत्" शब्द के साथ भी द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे : —

१. स मासमधीते = वह महीना भर पढ़ता है।
   He has been reading for one month or he reads for the whole month.
२. यावज्जीवं जडो दहेत् = मूर्ख जीवन पर्यन्त दुःख देता है।
   The foolish torments in whole life.
३. छात्राः परीक्षायां घण्टात्रयं लिखन्ति = विद्यार्थी परीक्षा में तीन घण्टे तक लिखते हैं।
   The students write in the examination for three hours.
४. गोविन्दः त्रिवर्षाणि कार्यं कुर्वन्नस्ति = गोविन्द तीन साल से लगातार काम कर रहा है।
   Govind has been working for three years.
५. इयं नदी क्रोशं कुटिला प्रवहति = यह नदी कोस भर तक टेढ़ी बहती है।
   This river flows meandering for two miles.

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजियेः—

(१) दशवर्षसहस्राणि, दशवर्षशतानि च (११००० वर्ष तक) रामोराज्यमुपासित्वा, ब्रह्मलोकं प्रयास्यति ॥ (२) यावज्जीवं सुखंजीवेत (३) अयं मार्गः क्रोशद्वयं वक्रोऽस्ति । (४) अयं बालकः पठन् ग्रामात् क्रोशपर्यन्तं गच्छति। (५) स अष्टवादन समय पर्यन्तं स्वपिति।

संस्कृत में अनुवाद कीजियेः—

(१) क्या तू तीन वर्ष तक यहाँ पढ़ा था ? (२) वह कई दिनों से

इधर-उधर मारा मारा फिर रहा है (३) रामचन्द्रजी १४ वर्ष तक वन में रहे थे। (४) बनारस में योजन भर तक गङ्गा जी टेढ़ी बहती हैं (५) मैंने कल एक घण्टे तक पढ़ा था (६) अध्यापक स्कूल में पांच घण्टे तक पढ़ाते हैं (७) महेन्द्र मेरे यहाँ छः वर्ष से निरन्तर काम कर रहा है (८) संसार में जब तक जीवे तब तक सुख से रहें (९) मैं इस स्कूल में चार वर्ष से पढ़ता आ रहा हूँ या पढ़ रहा हूँ।

पञ्चम पाठः

करण कारक (Instrumental case)

जिसकी सहायता से कर्ता अपना काम पूरा करता है, उसे करण कारक कहते हैं।

१. अहं लेखन्या पत्रं लिखामि = मैं कलम से पत्र लिखता हूँ।
I write a letter with the pen.
२. इमे छात्राः कन्दुकेन क्रीडन्ति = ये विद्यार्थी गेंद से खेलते हैं।
These students play with ball.
३. अयं भृत्योऽञ्जलिभ्यां जलं पिबति = यह नौकर अञ्जलि से पानी पीता है।
This servant drinks the water with his both hands.
४. स एकेन पादेन खञ्जोऽस्ति = वह एक पैर से लंगड़ा है।
He is lame of a leg.
५. मोहनः पृष्ठेन कुब्जोऽस्ति = मोहन पीठ का कुबड़ा है।
Mohan has hump in his back.
६. अहं वायुयानेन कालिकत्तामागतोऽस्मि = मैं हवाई जहाज से कलकत्ता आया हूँ।
I has come to Calcutta by the aeroplane.

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिए और करण कारक बताइये।

दोषैरेतैः कुलघ्नानां वर्णसंकरकारकैः।
उत्साद्यन्ते जाति धर्माः कुलधर्माश्च शाश्वताः ॥
व्यामिश्रेणेव वाक्येन बुद्धिं मोहयसीव मे।
तदेकं वद निश्चित्य येन श्रेयोऽहमाप्नुयाम् ॥
बहवो दुर्लभाश्चैव त्वया प्रकीर्तिता गुणाः।
मुने ! वक्ष्याम्यहं बुद्ध्वा तैर्युक्तः श्रूयतां नरः ॥

इक्ष्वाकुवंश प्रभवो रामो नामजनैः श्रुतः।
राजमार्गेण महता सुविभक्तेन शोभिता।
मुक्तपुष्पावकीर्णेन जलसिक्तेन नित्यशः॥
प्रासादैर्रत्नविकृतैः पवनैरुपशोभितम्।
कूटागारैश्च संपूर्णामिन्द्रस्येवाऽमरावतीम्॥
हनूमान् रामलक्ष्मणौ स्वस्कन्धेन अवहत्।

संस्कृत में अनुवाद कीजिए :—

(१) सुरेश साइकिल से गाँव जाता है (२) देवेन्द्र चाकू से कलम बनाता है (३) लड़के हाथ से ताली बजाते हैं (४) श्याम पैदल जाता है (५) गोविन्द हरि के साथ जाता है (६) माली पौधों को पानी से सींचता है (७) शिकारी बन्दूक से मृग को मारता है (८) गोपाल ने डण्डे से साँप को मारा (९) विद्या से बुद्धि बढ़ती है (१०) आपके द्वारा मेरा काम हुआ (११) क्या तुमने उसके द्वारा रुपया प्राप्त किया ? (१२) हनुमान् जी राम लक्ष्मण को अपने कन्धे पर ले गये (१३) नौकर अपने पीठ के द्वारा बोझ को ढोता है।

———

संस्कृत	हिन्दी	इंगलिश
प्रासादैः	=महलों से	With houses
कूटागारैः	=स्त्रियों के खेलने का घर	Women's house to play.
विकृतैः	=जड़ित	Furnished with jewells.
द्विचक्रिकया	=पैरगाड़ी से	Cycle.
छुरिकया	=चाकू से	Knife.
पादाभ्यां=पदातिभ्यां	=पैदल	On foot.
करतालिकाः	=ताली	Clap.
बाल पादपान्	=पौधों को	Plants.
भुशुण्ड्या	=बन्दूक से	Gun.

(क) द्रष्टव्य—स्वभावादि (Nature) अर्थों में तृतीया विभक्ति होती है।

अयं प्रकृत्या सुन्दरोऽस्ति=यह प्रकृति से सुन्दर है।

This is beautiyful by nature.

अहं क्रूरेण सार्धं न गमिष्यामि=मैं निर्दयी के साथ नहीं जाऊँगा।

I shall not go with the cruel.

(ख) ऊनार्थ (Worthless) गुणहीन शब्दों के साथ भी तृतीया विभक्ति होती है। जैसे—

ज्ञानेन हीनाः पशुभिः समानाः = ज्ञान से शून्य पशुओं के समान हैं।

(ग) तुल्यार्थ (Like) शब्दों के योग में भी तृतीया विभक्ति होती है। संसारे विनयेन तुल्यमन्यत् नास्ति = संसार में विनय से बढ़ कर कोई वस्तु नहीं है।

(घ) शरीर के जिस अङ्ग में कोई विकार (Defect or alteration) हो तो उसमें तृतीया विभक्ति होती है।

जैसे स शिरसा खल्वाटोऽस्ति = वह सिर का गञ्जा है।

मन्थरादासी पृष्ठेन कुब्जा आसीत् = मन्थरा दासी पीठ की कुबड़ी थी।

(ङ) विशिष्टार्थ (Characteristic) विलक्षण चिन्ह बोध हो तो वहाँ तृतीया विभक्ति होती है।

जैसे—जटाभिः सौन्दर्येण गुणेन वा अयं तापसो वर्तते।

यह तपस्वी जटाओं से तथा सुन्दर गुणों युक्त है।

(च) खरीदने अर्थ में तृतीया और चतुर्थी विभक्ति होती है ?

जैसे—त्वया इदं पुस्तकं कियता मूल्येन क्रीतम् ?

तूने इस पुस्तक को कितने में खरीदा ?

(छ) (अपवर्गे तृयीया) भावार्थ—फल की प्राप्ति में या कार्य की सिद्धि में काल वाचक शब्द हो और मार्ग वाचक शब्द हो तो तृतीया विभक्ति होती है।

जैसे—मया द्वादशभिर्वर्षै र्व्याकरणं पठनं कृतं ततः फलं प्राप्तम्।

१२ वर्ष में व्याकरण पढ़ने के बाद मुझे फल की प्राप्ति हुई।

अहं योजनाभ्यामिदमुपन्यासं समाप्तवान्।

मैंने चार कोस में इस उपन्यास को समाप्त किया।

द्रष्टव्य—"साकं, सार्धं सत्रा, समं, सह" Together, with, by इन शब्दों के साथ तृतीया विभक्ति होती है।

अभ्यास

कुलीनैः सह सम्पर्क, पण्डितैः सह मित्रताम्।
ज्ञातिभिश्च समं मेलं, कुर्वाणो न विनश्यति॥

रामनारायण दासो द्वादशवर्षैः व्याकरणतत्त्वप्रकाशग्रन्थं लिखितवान्।

त्वया षड्भिर्मासैरङ्कगणितमधीतम्। तेन मासेन इतिहासः पठितः।

स क्रोशेन पुस्तकं समाप्तवान्। अयं शिशुः क्लेशेन स्थास्यति। अहं सुखेन जीवामि।

संस्कृत में अनुवाद कीजिये—

(१) सोहन स्वभाव से दयालु है। (२) तू यहाँ पढ़ने के हेतु रहता है। (३) वह कान का बहरा है। (४) राकेश शिर का गञ्जा है। (५) महीपाल गुण से हीन है। (६) मैंने दो वर्ष में भूगोल पढ़ डाला। (७) वह साल भर में एक इतिहास लिख चुका। (८) तूने पाँच साल में डाक्टरी पास कर ली। (९) गोविन्द ने चार वर्ष में मनोविज्ञान समाप्त कर लिया। (१०) यह कहानी दो कोस में समाप्त हुई है। (११) मैंने इस ईख को कोस भर में चूष लिया।

———

षष्ठः पाठः

सम्प्रादन कारक (Dative case)

जिसके लिये कोई वस्तु अपना अधिकार रहित दी जाय अथवा जिसके लिये कर्ता कोई काम करे, उसे सम्प्रदान कारक कहते हैं।

(१) जैसे—रामो मह्यं पुस्तकं ददाति=राम मुझे पुस्तक देता है।
Ram gives a book to me.

(२) बालकाः पठनाय विद्यालयं यान्ति=लड़के पढ़ने के लिये स्कूल जाते हैं। The boys go to school for study

(३) गोविन्दो निर्धनेभ्योऽन्नं ददाति=गोविन्द गरीबों को अन्न देता है।
Govind gives corn to the poor.

(४) जनाः स्नानाय गङ्गां यान्ति=आदमी स्नान के लिये गंगा जी जाते हैं।
People go to the Ganga for bathing.

(५) नराः स्वकल्याणाय ईश्वरं भजन्ति=मनुष्य अपने कल्याण के लिये ईश्वर को भजते हैं। People adore (worship) the God for their welfare.

(६) शिशुभ्यो मिष्टान्नं रोचते=बच्चों को मिठाई अच्छी लगती है।
Children like sweetmeats.

(७) अहं स्वकल्याणाय ईश्वरशरणं गन्तुं वाञ्छामि=मैं अपने कल्याण के लिए ईश्वर के शरण में जाना चाहता हूँ। I want to take shelter in God for my welfare.

सूचना—चतुर्थी के अर्थ में "तुम्" से भी प्रयोग हो सकता है।
जैसे—अहं जलं पातुम् ईहे=मैं जल पीना चाहता हूँ।
I want to drink water.

स क्रीडितुम् इच्छति=वह खेलना चाहता है।
He wants to play.

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिए और चतुर्थी विभक्ति बताइये:—

(१) परित्राणाय साधूनां, विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्म संस्थापनार्थाय, संभवामि युगे युगे॥

(२) इदं ते नातपस्काय, नाभक्ताय कदाचन।
न चाशुश्रूषवे वाच्यं, न च मां योऽभ्यसूयति॥

(३) नमोस्तु रामाय स लक्ष्मणाय, देव्यै च तस्यै जनकात्मजायै।
नमोऽस्तु रुद्रेन्द्रयमानिलेभ्यो, नमोऽस्तु चन्द्रार्क मरुद्गणेभ्यः॥

(४) रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय वेधसे।
रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः॥

संस्कृत में अनुवाद कीजिए.

(१) लड़के गेंद खेलने के लिये खेल के मैदान में जाते हैं। (२) पिता पुत्र के लिये अमरूद लाता है। (३) नौकर बच्चों के लिये खिलौने लेता है। (४) मेरा आपके लिये नमस्कार है। (५) मेरे लिये पानी लाओ। (६) भूखे को भोजन दो। (७) प्यासे को पानी पिलाओ। (८) पिता पुत्र पर क्रोध करता है। (९) माँ लड़के को भोजन देती है। (१०) तुम मुझे पकड़ना चाहते हो। (११) मैं पुस्तक खरीदना चाहता हूँ। (१२) यह समय स्नान के लिये है। (१३) मेरा सोहन पर १०) रुपये ऋण है। (१४) राम सुरेश का करजा देता है।

सूचना—जहाँ पर "नमः" अव्यय रहेगा, वहीं पर चतुर्थी विभक्ति होती है और जहाँ पर "क्रिया" होती है वहाँ पर द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे—

हरये नमः, तुभ्यं नमः (चतुर्थी विभक्ति है)
देवदत्तो देवान् नमस्करोति (द्वितीया विभक्ति है)

संस्कृत		हिन्दी	इंगलिश
क्रीडाप्राङ्गणे	=	खेल के मैदान में	In play ground
दृढ़बीजम्	=	अमरूद	Guava
क्रीडनकम्	=	खिलौना	Toy, Plaything

(क) (धारेरुत्तमर्णः)=भावार्थ—उत्तमर्ण=ऋणदाता (करज देने वाला) के अर्थ में "धारि" धातु के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे—

मोहनो नरेन्द्राय रूप्यकाणि-अधारयत्=
मोहन ने नरेन्द्र को रुपये करजे में दिये।

(ख) (क्रुध द्रुहेर्ष्या सूयार्थानां यं प्रति कोपः)=भावार्थ—"क्रुध, द्रुह, ईर्ष्या, असूया" इन धातुओं के योग में जिसके ऊपर क्रोध किया जाय, उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है।

जैसे – नृपः सेवकाय क्रुध्यति=राजा नौकर पर क्रोध करता है।
स मह्यं द्रुह्यति=वह मुझसे द्रोह करता है।
गोविन्दो देवदत्ताय ईर्ष्यति=गोविन्द देवदत्त से ईर्ष्या रखता है।

(ग) (क्रुध द्रुहोरुपसृष्टयोः कर्म)=भावार्थ—"क्रुध, द्रुह" धातुओं में यदि उपसर्ग लगा हो तो कर्म संज्ञा होती है।

जैसे—महीपालो देवेन्द्रमभिक्रुध्यति = महीपाल देवेन्द्र के ऊपर अधिक क्रोध करता है।

———

सप्तमः पाठः

अपादान कारक (Ablative case)

जिससे किसी पदार्थ का अलग होना पाया जावे, उसे अपादान कारक कहते हैं।

(१) जैसे—वृक्षात् पत्राणि पतन्ति=पेड़ से पत्ते गिरते हैं।
The leaves fall from the tree.

(२) अहं त्वत्तः पृथगस्मि=मैं आप से अलग हूँ।
I am separated from you.

(३) गङ्गा हिमालयात्प्रादुर्भवति=गंगा हिमालय से निकलती है।
The Ganga emanates from the Himalaya Mountains.

(४) लोभात्क्रोधो भवति=लोभ से क्रोध होता है।
The anger comes out of greed.

(५) शिशुः श्यामाद् बिभेति=बच्चा श्याम से डरता है।
The child dreads (is afraid) of Shyam.

(६) पिता पापात् निवारयति=पिता पाप से हटाता है। (निवारण करता है)
The father deters from impiousness.

(७) छात्रा अध्यापकात् पठन्ति=विद्यार्थी मास्टर से पढ़ते हैं।
Students learn from the teacher.

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिए और अपादान कारक बताइये—

ध्यायतो विषयान्पुंसः * सङ्गस्तेषूपजायते ।
सङ्गात्संजायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते ॥
क्रोधाद्भवति संमोहः† संमोहात्स्मृति विभ्रमः ।
स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो, बुद्धिनाशात्प्रणश्यति ॥
लोभात्क्रोधः प्रभवति, लोभात्कामः प्रजायते ।
यवेभ्यो गां वारयति । सर्पाद् भयमस्ति ।

संस्कृत में अनुवाद कीजिए

(१) राकेश पढ़ने से प्रमाद करता है। (२) वह कुआँ से पानी निकालती है। (३) राम घोड़े से गिर पड़ा। (४) मोहन गाँव से आता है। (५) श्याम ने मदन से पुस्तक ली। (६) आकाश से तारे गिरते हैं। (७) बीज से अंकुर उत्पन्न होता है। (८) ईश्वर से प्रजा पैदा होती है। (९) तुम घनश्याम से अलग हो। (१०) गोविन्द सुरेश से अधिक पढ़ा है। (११) मनुष्य सिंह से डरते हैं। (१२) वह तुमसे घृणा करता है।

(यतश्चाध्वकाल निर्माणं तत्र पञ्चमी)

भावार्थ—जहाँ से काल (समय) की निश्चित अवधि हो, या मार्ग का निर्माण हो, वहाँ पर पञ्चमी विभक्ति होती है।

जैसे—ते त्रिवादनकालात् क्रीडन्त आसन् = वे तीन बजे से खेल रहे थे।
They had been playing since three 'o' clock.

(२) वनाद् ग्रामो योजनं दूरेऽस्ति = वन से गाँव एक योजन दूरी पर है। The village is eight miles away from the forest.

(३) विवाहात् नवमे दिने पठनाय यास्यामि = विवाह से नौवें दिन पढ़ने के लिये जाऊँगा। I shall go for reading on the nineth day of-marriage.

(४) अहमस्मिन् विद्यालये वर्षत्रयात्पठन्नस्मि = मैं इस स्कूल में तीन वर्ष से पढ़ रहा हूँ। I have been reading in this school for three years.

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिये—

(१) स मङ्गलवारात् रुग्णोऽस्ति। (२) स दिनचतुष्टयात् ज्वरेण

*आसक्ति (प्रेम) †अविवेक।

आक्रान्तोऽस्ति। (३) मम गृहात् गङ्गा क्रोशमस्ति। (४) अहं पञ्चदिवसात ज्वरार्तोऽस्मि। (५) मोहनोऽस्मिन् विद्यालये १९४६ ईसव्याः पठन्नस्ति।

संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(१) वह रोगी दो दिन से मेरे इलाज में है। (२) मेरे घर से विश्व-विद्यालय ४ मील दूर है। (३) घनश्याम ५ वर्ष से मेरी सहायता करता है। (४) नौकर ६ दिन से काम कर रहा है। (५) सन् १९४० ईश्वी से युद्ध हो रहा है। (६) मेरे पिता जी २५ वर्ष से अध्यापकी करते हैं। (७) गोविन्द को आठ दिन से ज्वर आ रहा है। (८) पुलिस दस दिन से इधर उधर घूम रही है। (९) मैं साढ़े तीन घण्टे से सो रहा हूँ। (१०) यह तीन बजे से खेल रहा है।

अष्टमः पाठः

सम्बन्ध (Possessive case)

जिससे किसी एक वस्तु का सम्बन्ध (Relation) किसी दूसरी वस्तु के साथ प्रकट हो, उसे सम्बन्ध कहते हैं।

(१) ईश्वरस्य दया = ईश्वर की दया। Grace of God.

(२) धनस्य सदुपयोगः = धन का सदुपयोग। Right use of money.

(३) दुष्टानां दमनम् = दुष्टों का दमन। Suppression of the wicked.

(४) इमामुष्णीषिका रामस्याऽस्ति = यह टोपी राम की है।
This is Ram's cap.

(५) मम मित्रस्येदं गृहमस्ति = मेरे मित्र का यह घर है।
This is my friend's house.

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिये और सम्बन्ध बताइये—

(१) महर्षीणां भृगुरहं, गिरामस्म्येकमक्षरम्।
यज्ञानां जपयज्ञोऽस्मि, स्थावराणां हिमालयः॥

(२) कोऽतिभारः समर्थानां, किं दूरं व्यवसायिनाम्।
कोविदेशः सविद्यानां, कः परः प्रियवादिनाम्॥

(३) मम इदंगृहमस्ति। (४) असौ नद्याः तटो विद्यते।

(५) आधुनिको मासद्वयस्याऽवकाशोऽस्ति। मोहनो रजकस्य वस्त्रं ददाति।

(६) बालकानां मनः क्रीडायामधिकं रमते।

संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(१) मेरे बड़े भाई मुझे बहुत याद करते हैं। (२) श्रेष्ठ पुरुषों का

उपदेश सुनना चाहिये। (३) आज किसकी चिट्ठी आई है ? (४) राम की राजधानी अयोध्या थी। (५) तुम्हारा विवाह कब होगा ? (६) यह आपका घर है। (७) परिश्रम का फल अवश्य मिलेगा। (८) आजकल दो मास की छुट्टी है। (९) बालकों का मन खेलने में अधिक लगता है। (१०) यह नदी का किनारा है। (११) यह विद्या का मन्द है। वह धोबी को वस्त्र देता है।

(क) (कृत्यानां कर्तरि वा)=भावार्थ—चाहिये और योग्य अर्थों में विकल्प (optional) से "तव्यत्, अनीयर्, ण्यत्" इन कृत्य प्रत्ययों का योग हों तो कर्ता में तृतीया विभक्ति होती है और षष्ठी विभक्ति भी होती है।

जैसे—त्वया ग्रामो गमनीयः अथवा तव ग्रामो गन्तव्यः=तुमको गाँव जाना चाहिये। You must go to the village.

त्वया स्वपाठः स्मरणीयः अथवा तव स्वपाठः स्मर्तव्यः=तुमको अपना पाठ याद करना चाहिये।

You should learn your lesson.

(ख) (अधीगर्थ दयेशांकर्मणि)=भावार्थ—स्मरण करने अर्थ में जो धातु प्रयुक्त हो और "दय, ईश," इन धातुओं के योग में षष्ठी विभक्ति होती है अथवा द्वितीया विभक्ति होती है।

जैसे—शिशु मातुः स्मरति अथवा शिशुः मातरं स्मरति (अध्येति) बच्चा माँ को स्मरण करता है।

The child remembers mother.

दाता दरिद्रस्य दयते=दाता दरिद्र पर दया करता है।

Giver commiserates on the poor.

पिता पुत्रस्य ईष्टे=पिता पुत्र का स्वामी होता है।

The father is lord of the son.

(ग) सौगन्ध (कसम Oath) खाने अर्थ में षष्ठी होती है जैसे—अहं गंगायाः शपामि=मैं गंगा जी की कसम खाता हूँ। I speak by the Holy Ganga.

द्रष्टव्य—"सादृश, समान, दिशा, सङ्ग, अनुरूप," इत्यादि—शब्दों के साथ भी सम्बन्ध होता है। जैसे—

हरेः सादृश्यम्=हरि के सदृश (समान)

पूर्वस्य दिशा=पूर्व की दिशा।

पुत्रस्य अनुरूपम्=बेटे के अनुरूप (योग्य) इत्यादि जान लेना।

नवमः पाठः

अधिकरण कारक (Locative case)

कर्ता और कर्म के द्वारा क्रिया के आधार को अधिकरण कहते हैं। अधिकरण में सप्तमी विभक्ति होती है।

(१) जैसे—स कटे आस्ते = वह चटाई पर बैठता है।
He sits on the mat.

(२) बह्वो जना राजमार्गे विहरन्ति = लोग सड़क पर टहलते हैं।
The people walk on the road.

(३) अस्यां वीथ्यां मम गृहमस्ति = इस गली में मेरा घर है।
My house is in this street.

(४) रविवासरे विद्यालयेषु अनध्यायो भवति = रविवार को स्कूलों में छुट्टी रहती है। It is holiday in the school on Sundays.

(५) बालकाः क्रीडाक्षेत्रे क्रीडन्ति = लड़के खेल के मैदान में खेलते हैं।
The boys play in the play-ground.

(क) स्थानाधिकरण। (ख) भावाधिकरण। (ग) कालाधिकरण। जिस स्थान में क्रिया के आधार का बोध होता है, उसे स्थानाधिकरण कहते हैं।

जैसे—अहं कटे आसे (उपविशामि) = मैं चटाई पर बैठता हूँ।
I sit on the mat.

युद्धस्थलेऽर्जुनः तिष्ठति = अर्जुन युद्धस्थल में ठहरता है।
Arjun stays in the battle-field.

ईशो हृदयेऽस्ति = हृदय में ईश्वर है।
God is in the heart.

(ख) जिस भाव में क्रिया के आधार का बोध होता हो; उसे भावाधिकरण कहते हैं।

जैसे अत्र पर्यन्तमागमने किं त्वं न्यूनी भविष्यसि ?

यहाँ तक आने में क्या तुम घट जाओगे ? Will you decrease to come to this place ?

(ग) (कालात्सप्तमी च वक्तव्या) = भावार्थ—काल (समय) वाचक शब्द से सप्तमी विभक्ति होती है, और जहाँ पर घण्टा, मिनट, सेकण्ड, मास, वर्ष, ऋतु, इनके साथ प्रयोग होता है वहाँ पर कालाधिकरण कहा जाता है। जैसे—

प्रावृषि मण्डूकाः हि सर्वदा दर्दुरायन्ते (रुवन्ति)=
वर्षा काल में ही मेढक सदा बोलते हैं।
The frogs always cry during the rains.

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिये और अधिकरण बताइये—

१—उत्सवे व्यसने चैव दुर्भिक्षे राष्ट्र विप्लवे।
राजद्वारे श्मशाने च यः तिष्ठति स बान्धवः॥

२—पुष्पेषु चम्पा नगरीषु काञ्ची, नारीषु रम्भा पुरुषेषु विष्णुः।
नदीषु गङ्गा नृवरेषु रामः, काव्येषु माघः कवि कालिदासः॥

३—अस्मिन्नगरे तव गृहं कस्मिन् स्थानेऽस्ति ? ४—सर्वासु दिक्षु वायु र्वाति। ५—आसु स्त्रीषु विश्वासः कर्तव्यः। ६—एतासु ओषधिषु रसाः न विद्यन्ते। ७—नृषु ब्राह्मणः श्रेष्ठोऽस्ति।

संस्कृत में अनुवाद कीजिये—

(१) मैं एक घण्टे में आता हूँ। (२) मैं दो मिनट में पत्र लिखता हूँ। (३) वह पाँच मिनट में आता है। (४) इन ओषधियों में रस नहीं है। (५) ईश्वर सबके हृदय में स्थित है। (६) दिल्ली में बिरला मन्दिर अच्छा है। (७) सूर्य निकलने पर वह आया। (८) श्याम मुझे रास्ते में मिला। (९) आप आसन पर बैठिये। (१०) नरेन्द्र सड़क पर जाता है (११) गर्मी में दो मास की छुट्टी होती है। (१२) उस कमरे में सोहन पढ़ता है। (१३) इस जंगल में सिंह रहता है (१४) तुम्हारे सन्दूक में पुस्तकें हैं। (१५) प्रयाग में गंगा यमुना का संगम है।

दशमः पाठः

सम्बोधन (Vocative)

प्रयोजनवश जिसको अपनी ओर पुकारा जाता है उसमें सम्बोधन होता है। जैसे :—

१. हे मातः ! O' Mother ! हे माँ ! २. हे पुत्र ! O'son ! हे पुत्र !

३. हे परमेश्वर ! त्वं सर्वशक्तिमानसि=हे परमेश्वर ! तू सर्वशक्तिमान् है।
O' God ! 'thou art Almigty'.

४. हे मित्र ! त्वं किं पठसि ? हे मित्र ! तुम क्या पढ़ते हो ?
O' friend ! 'what do you read ?

५. रे भृत्य ! वस्त्राणि प्रक्षालय = रे नौकर ! कपड़े धो ।
Oh servant ! 'wash the clothes'.

६. हे भगवन् ! तुभ्यं नमः = हे भगवन् ! तुम्हारे लिये नमस्कार है ।
O' God ! 'I salute thee

७. भोः बालकाः ! अत्राऽगच्छन्तु = हे बालको ! यहाँ आओ ।
O' boys ! come here.

हिन्दी में अनुवाद कीजिये और सम्बोधन बताइये :—

१. हे विभो ! आनन्दसिन्धो ! मे च मेधा दीयताम् ।
यच्च दुरितं दीनबन्धो ! तच्च दूरं नीयताम् ॥

२. सखेति मत्वा प्रसभं यदुक्तं, हे कृष्ण ! हे यादव ! हे सखेति !
अजानता महिमानं तवेदं, मया प्रमादात् प्रणयेन वापि ॥

३. भगवन् ! त्वदीयभक्ति मनसा सदा स्मरेयम् ।
वेदोक्त धर्म कार्यं नक्तन्दिनं विधेयम् ॥

संस्कृत में अनुवाद कीजिए :—

(१) भो मित्र ! आपकी पुस्तक मैं पढ़ना चाहता हूँ । (२) हे राम ! पिताजी आपको देखना चाहते हैं । (३) हे परमेश्वर ! आपके लिये मेरा नमस्कार है । (४) हे सखे ! पढ़ो । (५) हे आर्य पुत्र ! यहाँ आओ । (६) अयि सखि ! कहाँ जाती हो ? (७) अये सखे ! देखो देखो । (८) रे नीच ! संभल कर बोल । (९) अरे बालक ! तू मेरे सामने क्या बकता है । (१०) हे मेरे स्वामिन् ! रक्षा करो रक्षा करो ।

सूचना :—हे, भोः, अयि, अरे, आर्य, अये ! O, Alas, oh, ah, इत्यादि सम्बोधन सूचक चिन्ह हैं ।

———

द्वाविंशतितमोऽध्यायः

प्रथमः पाठः

अथ समास प्रकरणम् (Compounds)

अनेकपदानामेकीभवनं समासः

भावार्थ :—अनेक पदों के एक पद होने को ही समास कहते हैं ।

जब कारक की विभक्तियों का चिन्ह हटा करके शब्द छोटे कर दिये जाते हैं, और एक या दो से अधिक विभक्ति रहित शब्द एक साथ मिला दिये जाते हैं तब उसे समास कहते हैं । समास का अर्थ है संक्षेप (Abridge-

ment) परन्तु विभक्ति रहित होने से भी पूरे-पूरे अर्थ का बोध होता है। जैसे—राजसभा = राजा की सभा।

समस्त पद के अवयवों को पृथक्-पृथक् करके विभक्ति युक्त प्रयोग दिखलाने को विग्रह कहते हैं। अथवा वृत्ति के अर्थ को बोध करने के लिये जो वाक्य बनाया जाता है उसका नाम विग्रह है। विग्रह का अर्थ है टुकड़े-टुकड़े करना। जैसे :—"राजसभा" यह समस्त पद है। "राज्ञः सभा = राजा की सभा" इसका नाम विग्रह कहा जाता है।

समास छः प्रकार के होते हैं—

द्वन्द्वोऽस्मि[1] द्विगुरस्मि[2] सततं मे गृहेऽव्ययी[3] भावः।
तत्पुरुष[4]! कर्मधारय[5] येनाऽहं बहुव्रीहिः[6] स्याम् ॥

भावार्थ—मैं स्त्री, पुरुष दोनों हूँ, और मेरे दो गायें भी हैं, मेरे घर में नित्य अव्ययी भाव (मेरे घर में खर्च करने के लिये द्रव्य नहीं) है। इसलिये हे पुरुष! वह कर्म करो कि जिससे मेरे घर में बहुत सा धान हो जाय।

दूसरा अर्थ = (१) अव्ययी भाव। (२) तत्पुरुष। (३) कर्मधारय। (४) द्विगु। (५) बहुव्रीहि। (६) द्वन्द्व हैं।

अव्ययी भाव समासः

(Adverbial compound or Indeclinable Compound)

अव्ययी भाव समास में प्रथम पद प्रधान रहता है।

अव्ययी भाव समास दो प्रकार के होते हैं।

(१) नाम पूर्व पद। (२) अव्यय पूर्व पद।

फलस्य लेशः = फल प्रति (फल का अंश)

शाकस्य लेशः—शाक प्रति (शाक का प्रमाण) यहाँ पर "फल और शाक' दोनों नाम हैं और "प्रति" अव्यय है अतः इसको नाम पूर्व पद अव्ययी भाव कहते हैं।

(२) अव्यय पूर्व पद—

शक्तिमनतिक्रम्य = यथाशक्ति (शक्ति के अनुसार)

प्रतिदिनम् = प्रत्येक दिन।

वनस्य समीपे = अनुवनं गतः (वन के समीप गया)

मक्षिकाणामभावः = निर्मक्षिकम् (मक्खियों के रहित)

हिन्दी में अनुवाद कीजिये और अव्ययी भाव समास बताइये—

(१) भीष्मपितामह आजन्म ब्रह्मचारी आसीत्। (२) मयासाध्यमहं

तुभ्यं दास्यामि। (३) भौतिकज्ञानस्य अपेक्षया अध्यात्मज्ञानं वरमस्ति। (४) यथाविधि कर्तव्यम्। (५) अयंमहोत्सवः प्रतिवर्षं भवति। (६) अयं भृत्योऽहर्दिवं कार्यं करोति। (७) अनुगङ्गं वाराणसी विद्यते।

संस्कृत में समास और अनुवाद कीजिये।

(१) मैं हर रोज स्कूल जाता हूँ। (२) वह आजन्म से रोगी है। (३) अपनी शक्ति के अनुसार काम करना चाहिये। (४) यह काम निर्विघ्न समाप्त हुआ। (५) निर्धन पुरुष क्या कर सकता है। (६) क्षण क्षण में स्वास निकला जाता है। (७) अपने अनुस्वरूप पुत्र प्राप्त करो।

द्वितीयः पाठः

तत्पुरुष समासः (Determinative Compound)

तत्पुरुष समास दो प्रकार का होता है।

तस्य पुरुषः = तत्पुरुषः। सः पुरुषः = तत्पुरुषः।

(१) व्यधिकरण। (२) समानाधिकरण।

(क) व्यधिकरण—जिस समस्त पद का विग्रह करने पर प्रथम खण्ड के अन्त में, और द्वितीय खण्ड के अन्त में भिन्न-भिन्न विभक्तियाँ आती हैं। उसे व्यधिकरण तत्पुरुष कहते हैं। जैसे—

"राजपुरुषः" इस समस्त पद में दो खण्ड हैं। प्रथम खण्ड में सम्बन्ध-कारक है और दूसरे खण्ड में कर्ता कारक का चिन्ह है, अतः यह व्यधिकरण तत्पुरुष हुआ। इसके आठ भेद हैं—

(१) प्रथमा (२) द्वितीया (३) तृतीया (४) चतुर्थी (५) पञ्चमी (६) षष्ठी (७) सप्तमी और (८) नञ् समास है।

तत्पुरुष समास में उत्तर पद का "अर्थ" प्रधान होता है।

(१) अह्नः मध्यः = मध्याह्नः = दोपहर।
रात्रेःमध्यः = मध्यरात्रः = अर्धरात्रि।
प्रगतः आचार्यः = प्राचार्य्यः।

(२) ग्रामं गतः = ग्रामगतः = गाँव गया।
सुखं प्राप्तः = सुख प्राप्तः = सुख को प्राप्त किया।

(३) शङ्कुलया खण्डः = शङ्कुलाखण्डः = सरौते से टुकड़ा किया हुआ।
हरिणा त्रातः = हरित्रातः = हरि से रक्षा किया हुआ।
विद्यया हीनः = विद्याहीनः = विद्या से रहित।

(४) पुत्राय कामना = पुत्रकामना = पुत्र के लिये कामना करना।
मुद्रिकायै सुवर्णम् = मुद्रिकासुवर्णम् = अँगूठी के लिये सोना।
(५) सर्पाद् भयम् = सर्पभयम् = साँप से डर।
आचाराद् भ्रष्टः = आचारभ्रष्टः = आचरण से भ्रष्ट।
(६) वृक्षस्य शाखा = वृक्षशाखा = पेड़ की शाखा।
गङ्गायाः जलम् = गङ्गाजलम् = गंगा का जल।
(७) पुरुषेषु उत्तमः = पुरुषोत्तमः = पुरुषों में श्रेष्ठ।
विद्यायां प्रवीणः = विद्याप्रवीणः = विद्या में चतुर।
(८) नञ् समासः।
द्वौनञौ च समाख्यातौ, पर्युदासप्रसज्ज्यकौ।
पर्युदासः सदृश् ग्राही, प्रसज्ज्यस्तु निषेधकृत्॥
नञ् दो प्रकार के होते हैं।
(१) पर्युदासः = सदृश् वाचक। (२) प्रसज्ज्य = निषेधवाचक।
पर्युदास—उससे भिन्न होने पर भी उसके सदृश हो उसे पर्युदास कहते हैं। जैसे—
ब्राह्मणभिन्नः = ब्राह्मणसदृशः। यहाँ पर यह अर्थ है कि ब्राह्मण जाति से भिन्न हो अर्थात् ब्राह्मण के सदृश हो (क्षत्रियादि हो)
(२) प्रसज्ज्य—प्रतिषेध अर्थात् जो क्रिया के साथ सीधा निषेध करे, उसे प्रसज्ज्य कहते हैं। जैसे—न गच्छेत्। इत्यादि।
सूचना—पर्युदास अर्थ में यदि नञ् हो तो उसी के साथ समास होता है। और निषेधवाचक नञ् के साथ समास नहीं होता है।

———

तृतीयः पाठः

कर्मधारय अथवा समानाधिकरण तत्पुरुष समासः

(Appositional Compound)

निम्नलिखित शब्दनिष्ठ समानाधिकरण का लक्षण है—
"भिन्न प्रवृत्तिनिमित्तानां शब्दानामेकस्मिन्नर्थे वृत्तिः सामानाधिकरण्यम्"
भावार्थ :—भिन्न प्रवृत्ति निमित्त शब्दों के एक ही में अर्थ का बोध हो तो उसे समानाधिकरण कहते हैं।
जैसे :—"नीलोघटः" यहाँ भिन्न प्रवृत्ति निमित्त नीलत्व घटत्व

सम्बन्धि नील घट इन दोनों शब्दों में जो अभेद सम्बन्ध से घटरुपार्थ की एकार्थता का बोध होता है इसी को सामानाधिकरण कहते हैं।

एकार्थनिष्ठ समानाधिकरण का लक्षण निम्नलिखित है—

"एकाधिकरणवृत्तित्वं सामानाधिकरण्यम्"

भावार्थ :—एक अधिकरण में जिसका बोध होता हो उसको समानाधिकरण कहते हैं।

जैसे :—रामलक्ष्मणौ एकासने आसाताम्। राम लक्ष्मण दोनों एक ही आसन पर बैठे। यहाँ दोनों का एक ही समानाधिकरण है। यदि अलग-अलग आसन पर बैठे होते तो व्यधिकरण हो जाता।

अभेद सम्बन्ध से जिसमें विशेष्य और विशेषण का समास हो, उसे समानाधिकरण तत्पुरुष समास कहते हैं। जैसे :—

स चासौ पुरुषः = तत्पुरुषः = वह मनुष्य। यहाँ पर "स" विशेषण है और "पुरुष" विशेष्य है; अतः यह समानाधिकरण कर्मधारय समास हुआ। कर्मधारय समास के आठ भेद होते हैं।

(१) विशेष्य पूर्वपद। (२) विशेषण पूर्वपद। (३) विशेषण उभय पद। (४) उपमान पूर्वपद। (५) उपमान उत्तर पद। (६) संभावना पूर्वपद कर्मधारय, (७) अवधारणा पूर्वपद कर्मधारय। (८) रूपक कर्मधारय रूपक में "एव" शब्द का प्रयोग होता है।

इनके क्रम से निम्नलिखित उदाहरण हैं।

१. जिसमें पहिले विशेष्य हो पश्चाद् विशेषण हो अथवा विशेष्य निन्दा करने के लिये प्रयुक्त हुआ हो तो उसे विशेष्य पूर्वपद कहते हैं।

जैसे :—वैयाकरणश्चासौ खसूचिश्च = वैयाकरणखसूचिः = वैयाकरण निन्दित है।

धनेशश्चासौ अर्थहीनश्च = धनेशार्थहीनः = धनेश होकर द्रव्यहीन है।

वीरश्चासौ भीतश्च = वीरभीतः = वीर होता हुआ डर गया।

यहाँ पर "वैयाकरण, धनेशः, वीरः" ये विशेष्य पूर्वपद है।

२. जिसमें पहिले विशेषण हो और बाद में विशेष्य हो तो उसे विशेषण पूर्व पद कहते हैं।

कृष्णश्चासौ सर्पश्च = कृष्णसर्पः = काला साँप।

सुन्दरश्चासौ पुरुषश्च = सुन्दरपुरुषः = सुन्दर मनुष्य।

उष्णं च तत् जलं च = उष्णंजलम् = गर्म पानी।

शीतं च तद् उदकं च = शीतोदकम् = ठंडा पानी।
यहाँ पर "कृष्णः, सुन्दरः; उष्णं, शीतं" ये विशेषण पूर्व पद है।

३. जिसमें दोनों पद विशेषण ही हों तो उसे विशेषण उभद पद कहते हैं।

जैसे :—शीतं च तदुष्णं च = शीतोष्णम् = ठण्डा और गर्म।
कृष्णश्चासौ शुक्लश्च = कृष्णशुक्लः = काला और सफेद।

४. जिसमें उपमान शब्द पूर्व हो और पश्चाद् उपमा (Comparison) शब्द हो तो उसे उपमान पूर्वपद कहते हैं। जैसे :—
घन इव श्यामः = घन श्यामः = मेघ के समान काला।
शंखवत् पाण्डुरः = शंखपाण्डुरः = शंख के समान श्वेत है।
यहाँ पर "घन और शंख" ये उपमान शब्द पूर्वपद है और पश्चाद् "इव और वत्" इत्यादि उपमावाचक शब्द हैं।

सूचना :—जिससे उपमेय की उपमा दी जाती है उसे उपमान कहते हैं, और जिसकी उपमा दी जाती है, उसे उपमेय कहते हैं। जाकी उपमा दीजिये, सो उपमेय प्रमाण।

५. जिसमें पहिले उपमा (Comparison) शब्द हो और बाद में उपमान (That with which some thing is compared) हो तो उसे उपमान उत्तर पद कहते हैं।

जैसे :—पुरुषः व्याघ्रः इव = पुरुषव्याघ्रः = बाघ के समान पुरुष है। नरः सिंहः इव = नृसिंहः = सिंह के समान मनुष्य है। यहाँ पर "व्याघ्रादि" उपमान शब्द उत्तर पद हैं।

६. सम्भावना पूर्व पद कर्मधारय होता है। जैसे :—
पुत्र इति ग्रहणम् = पुत्रग्रहणम् = पुत्रवत् स्वीकार करना।
गुण इति बुद्धिः = गुणबुद्धिः = जैसा गुण होगा वैसी बुद्धि होगी।

७. अवधारणा पूर्वपद कर्मधारय होता है।
जैसे :—विद्या एव धनम् = विद्याधनम् = विद्या ही धन है। सुहृद् एव बन्धुः = सुहृद्बन्धुः = मित्र ही भाई है।

८. "रूपक" कर्म धारय में भी "एव" के साथ विग्रह होता है।
जैसे :—मुखमेव चन्द्रः = मुखचन्द्रः = मुख ही मानो चन्द्रमा है।

———

चतुर्थः पाठः
द्विगुसमासः (Numeral Compound)

द्विगु समास दो प्रकार के होते हैं।

(१) एकवद्भावी द्विगु समास। (२) अनेकवद्भावी द्विगु समास। इस समास में संख्या वाचक शब्द पहिले होते हैं। जैसे :—

१. पञ्चानां गवां समाहारः = पञ्चगवम् = पांच गायों का समूह।
त्रयाणां लोकानां समाहारः = त्रिलोकी = तीनों लोकों का समूह।
द्वाभ्यां मासाभ्यां जातः = द्विमासजातः = दो मास पैदा हुए हुआ।

२. सप्त च ते ऋषयश्च = सप्तर्षयः = सात ऋषि।
चतस्रश्च ता दिशः = चतुर्दिशः = चारों दिशाएँ।

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिये और रेखांकित शब्दों को खंड करके बताइये :—

कवीन्दुं नौमि वाल्मीकिं, यस्य रामायणीं कथाम्।
चन्द्रिकामिव चिन्वन्ति, चकोरा इव साधवः॥

(१) शरणागतं जनं त्राथस्व। (२) अहं पूज्य कमल चरणेषु प्रणमामि। (३) पश्य, नीलोत्पलं तडागे कथं शोभते? (४) स परलोकगतः (लोकान्तरप्राप्तः) (५) अयं जनः तेजोरहितोऽस्ति। (६) तुलसीदासकृतो रामायणोऽतिसुन्दरोऽस्ति।

संस्कृत में अनुवाद कीजिये और रेखांकित शब्दों को समस्त पद बनाओ :—

(१) शरण में आये हुए को नहीं मारना चाहिये। (२) पिताजी के कमल रूपी चरणों में मेरा नमस्कार हो। (३) तुम्हारे जैसा मनुष्य तीनों लोकों में नहीं है। (४) पथिक मार्ग से थका हुआ है। (५) बालक जल में डूब गया है। (६) महाराज दशरथ जी पुत्र के शोक में परलोक चले गये। (७) मोहन वृक्ष से गिर पड़ा है। (८) ईश्वर की भक्ति मनुष्य के जीवन को सफल कर देती है।

पञ्चमः पाठः
बहुव्रीहि समासः (Attributive Compound)

जब समस्त पदों का स्वतंत्र अर्थ न बोध होकर किसी अन्य व्यक्ति, अथवा किसी वस्तु का बोधक होता है, तब वे शब्द किसी अन्य शब्द के विशेषण हो जाते हैं, उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं उसके दो भेद हैं (१) व्यधिकरण बहुव्रीहि (२) समानाधिकरण बहुव्रीहि।

जिसमें भिन्न-भिन्न विभक्ति वाले पदों का समास हो उसे व्यधिकरण बहुव्रीहि कहते हैं। जैसे :—

धनुः पाणौ यस्य सः=धनुष्पाणिः, जिसके हाथ में धनुष है। यहाँ पर "धनुष्" में कर्ता कारक का चिह्न है और पाणौ में अधिकरणकारक का चिन्ह है; अतः यह व्यधिकरण बहुव्रीहि हुआ। बहुव्रीहि भी तत्पुरुष के समान भिन्न-भिन्न कारक के विचार से अनेक प्रकार के होते हैं।

१. समानाधिकरण बहुव्रीहि के सात प्रकार के भेद होते हैं।
(१) द्विपद (२) बहुपद (३) संख्या उत्तरपद (४) संख्या उभयपद। (५) सह पूर्व पद (६) व्यतिहार लक्षण (७) दिगन्तराल बहुव्रीहि।

द्विपद के भी छः प्रकार के भेद होते हैं। जैसे :—

(क) प्राप्तम् उदकं यं=सः प्राप्तोदको ग्रामः। जिसको जल प्राप्त हुआ है ऐसा गाँव अथवा जिस गाँव को जल प्राप्त हुआ है।

२. निर्जितः कामो येन=स निर्जितकामः। जिसने कामदेव को जीत लिया है।
प्राप्ता विद्या यया=सा प्राप्त विद्या। जिसने विद्या प्राप्त की है।

३. दत्तः मोदकः यस्मै=स दत्तमोदकः। जिसके लिये लड्डू दे दिया गया है।

४. समाप्तं जलं यस्मात्=तत् समाप्तजलम्=जिससे जल समाप्त हो गया है।
प्रपतितानि पर्णानि यस्मात्=स प्रपतितपर्णः=जिससे पत्ते गिर चुके हैं।

५. नीलम् अम्बरं यस्य=स नीलाम्बरः=जिसका वस्त्र नीला है (भगवान्)।
महान् आशयो यस्य=स महाशयः=बड़ा है आशय जिसका (सत्पुरुष)।

६. वीराः पुरुषाः यस्मिन्=स वीरपुरुषः=जिसमें वीर पुरुष रहते हैं।
बहवो जनाः यस्मिन्=स बहुजनः=जिस नगर में बहुत मनुष्य रहते हों।

(ख) बहु पद बहुव्रीहि :—

चित्रा गावो यस्य=स चित्रगुः=जिसके चित्र विचित्र गायें हैं।

पराक्रमेण उपार्जिता सम्पत् येन=स पराक्रमोपार्जितसम्पत्=जिसने पराक्रम द्वारा सम्पत्ति प्राप्त की है।

अन्यायेन उपार्जितं धनं येन=स अन्यायोपार्जितधनः=जिसने अन्याय से धन उपार्जन किया है।

(ग) संख्या उत्तर पद बहुव्रीहि :—

उप समीपे दशानां सन्ति ये=ते उपदशाः। नौ अथवा ग्यारह।
विंशतेरासन्ना=आसन्नविंशाः=उन्नीस अथवा इक्कीस।
इसी प्रकार और भी शब्द समझना चाहिये।

(घ) संख्या उभय पद बहुव्रीहि—

एको वा द्वौ वा एकद्वाः। द्वौ वा त्रयो वा द्वित्राः।
त्रयो वा चतुरो वा त्रिचतुराः। चत्वारो वा पंञ्च वा चतुष्पञ्चाः॥
पंच वा षड्वा पञ्चषाः। द्विर्दश द्विरावृत्ता वा द्विदशाः॥
द्वौ वा त्रयो वा=द्वित्रा=दो अथवा तीन।
द्विरावृत्ता दश=द्विदशाः=दो बार दस अर्थात् बीस।

(ङ) सह पूर्व पद बहुव्रीहिः—

पुत्रेण सह आगतः=सपुत्रागतः=पुत्र के साथ आया।
खड्गेन सह अस्ति=सखड्गः=तलवार के साथ है।

(च) व्यतिहार लक्षण बहुव्रीहि में उलट-पुलट कर समास होता है।

केशेषु केशेषु गृहीत्वा इदं युद्धं प्रवृत्तं=तत् केशाकेशि।
केश पकड़-पकड़ कर युद्ध हुआ।
दण्डैः दण्डैः प्रहृत्य इदं युद्धं प्रवृत्तं=तत् दण्डादण्डि।
दण्डों से युद्ध हुआ।

(छ) दिगन्तराल लक्षण बहुव्रीहि समास होता है।

दक्षिणस्याश्च पूर्वस्याश्च दिशो यदन्तरालं=सा दक्षिण पूर्वा।
जो दक्षिण और पूर्व के दिशाओं के बीच में हो।

द्रष्टव्य—बहुव्रीहि समास द्वारा जो समस्त पद बनते हैं वे अपने आप ही स्वयं संपूर्ण अर्थ के द्योतक नहीं होते हैं। क्योंकि उनके आगे कोई न कोई विशेष्य अवश्य लगाया जाता है। तब उनका अर्थ पूर्णरूप से अवगत होता है इसीलिये इस समास में अन्य पद प्रधान रहता है।

हिन्दी में अनुवाद कीजिये—

(१) यद्यप्येते न पश्यन्ति लोभोपहतचेतसः।
(२) कुलक्षयकृतं दोषं, मित्रद्रोहे च पातकम्।

पतन्ति पितरो ह्येषां, लुप्तपिण्डोदक क्रियाः ॥

(३) वीतरागभयक्रोधः मुनिर्भवति ।

(४) रागद्वेषवियुक्तः पुरुषः शान्ति प्राप्नोति ।

(५) हे महाबाहो ! युद्धाय उत्तिष्ठ । (६) जितेन्द्रियं पुरुषं तं प्रणमामि ।

संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(१) मेरे स्कूल में चालीस के नीचे ऊँचे लड़के हैं । (२) उसने मुक्का-मुक्की युद्ध किया । (३) मेरे पास चार-पाँच लड़के आ जाओ । (४) जिसने अपनी इन्द्रियों को जीत लिया है, वही महापुरुष है । (५) जिसने धन अन्याय से उपार्जित किया है वही धनी है । (६) जिस नगर में बहुत धनी रहते हैं वही शहर होता है ।

षष्ठः पाठः

अथ द्वन्द्व समासः (Coupleative compound)

द्वन्द्व समास में दोनों पद प्रधान होते हैं, और इसमें समुच्चय बोधक "च" प्रायः करके लुप्त कर देते हैं । तब द्वन्द्व समास कहा जाता है । ये दो प्रकार के होते हैं । (क) इतरेतर योग । (ख) समाहार ।

जैसे—रामश्च कृष्णश्च = रामकृष्णौ (राम और कृष्ण)

इसी प्रकार "हरिहरौ, भीमार्जुनौ" इत्यादि ।

रामश्च लक्ष्मणश्च भरतश्च शत्रुघ्नश्च = रामलक्ष्मणभरतशत्रुघ्नाः ।

शीतं च उष्णं च = शीतोष्णे (ठण्डा और गर्म)

कन्दश्च मूलं च फलं च = कन्दमूलफलानि (कन्द मूल फल)

(ख) समाहार द्वन्द्व में समस्त पद नपुंसक लिङ्ग और एक वचन होता है ।

जैसे—हस्तौ च पादौ च = हस्तपादम् (हाथ और पाँव)

इसी प्रकार "गङ्गायमुनम् (गंगा और यमुना)

(द्वन्द्वश्च प्राणि तूर्य सेनाङ्गानाम्) = भावार्थ—द्वन्द्व समास में प्राणि तूर्य, सेनाङ्गों, के एकवत् (एकवचन) होता है ।

प्राणि से—पाणिपादम् । तूर्य से—मार्दङ्गिकवैणविकम् ।

(मृदङ्ग और बाँसुरी बजाने वालों का समूह)

सेनाङ्ग से—रथिकाश्वरोहम् (रथिक और घोड़सवारों का समूह)

(जातिरप्राणिनाम्) = भावार्थ—प्राणियों को छोड़ कर जातिवाचक से द्वन्द्व समास में एकवत् (एकवचन) होता है ।

धानाश्चशष्कुल्यश्च = धानाशष्कुलि ।

(येषां च विरोधः शाश्वतिकः) भावार्थ – जिनका स्वाभाविक परस्पर में विरोध हो उनके साथ द्वन्द्व समास में एकवचन होता है।

जैसे—अहयश्च नकुलाश्च अनयोः परस्परयोः स्वाभाविको विरोधः= अहिनकुलम् (साँप और नकुल)।

(क) एक शेष भी एक प्रकार का द्वन्द्व ही समास होता है। जैसे—
माता च पिता च=पितरौ (माता और पिता)
हंसी च हंसश्च=हँसौ (हंसी और हंस)
पुत्रश्च दुहिता च=पुत्रौ (लड़का और लड़की)
भ्राता च श्वसा च=भ्रातरौ (भाई और बहिन)

(ख) अलुक् समास।

अलुक् समास में पूर्व पद के विभक्ति का लोप नहीं होता है, अतः इसी को अलुक् समास कहते हैं।

कण्ठेकालः = नीलकण्ठ, मनसा कृतम्=मन से किया हुआ
सरसिजम् = कमल, दूरादागतः =दूर से आया।
पङ्केरुहम् = कमल, सुखादपेतः =सुख से युक्त।
युधिस्थिरः = युधिष्ठिरः, इत्यादि।

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिये और द्वन्द्व समास बताइये—

(१) जगतः पितरौ वन्दे पार्वती परमेश्वरौ। (२) धर्माधर्मयोः विचारणीयः। (३) स अहोरात्रम् अधीते। रागद्वेषौ वशं न आगच्छेताम्।

(४) सुख दुःखे समे कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ
ततो युद्धाय युज्यस्व नैवं पापमवाप्स्यसि।

संस्कृत में अनुवाद कीजिये –

(१) भाई बहिन सदा मिल कर रहो। (२) संसार के माता पिता पार्वती और परमेश्वर हैं। (३) मनुष्य सरल और कठोर दोनों ही होते हैं। (४) भीम और अर्जुन के समान शूरवीर युद्ध में थे। (५) मनुष्य को राग और द्वेष के वश में नहीं होना चाहिये।

(१) समास किसे कहते हैं? और विग्रह किसे कहते हैं?
उदाहरण देकर भली प्रकार समझाइए।

(२) समास के कितने भेद हैं? प्रत्येक समास के नाम और लक्षण समझा कर लिखिए।

(३) तत्पुरुष समास किसे कहते हैं ?
(४) द्विगु और द्वन्द्व समास में क्या भेद है ?
(५) कर्मधारय समास किसे कहते हैं ?
(६) बहुव्रीहि और तत्पुरुष समास में क्या अन्तर है ?
(७) समासों के भेद से शब्दों के अर्थों में क्या अन्तर होता है ?
(८) निम्नलिखित विग्रह किये हुये शब्दों में कौन-कौन समास है ?
विघ्नानाम् अभावः = निर्विघ्नम् । धनस्य अभावः = निर्धनम् ।
मार्गाय व्ययः = मार्गव्ययः । धनाय लोभः = धन लोभः ।
जलेमग्नः = जलमग्नः । कार्येदक्षः = कार्यदक्षः ।
न न्यायः = अन्यायः । महान् चासौ आत्मा च = महात्मा ।
करः सरोरुह इव = करसरोरुहः । अधरः पल्लव इव = अधरपल्लवः ।
चन्द्रमेव मुखम् = चन्द्रमुखम् । भ्राता च भगिनी च = भ्राताभगिनी ।
शतानाम् अब्दानां समाहारः = शताब्दी ।
त्रयाणां कुटानां समाहारः = त्रिकुटः ।
महान्त इष्वासाः धनूँषि येषां = ते महेष्वासाः ।
(९) निम्नलिखित शब्दों को विभक्तियों से युक्त करके अलग-अलग समास वताइए—

प्रतिवर्षम्, प्रत्यहम्, उपकृष्णम्, अध्यात्मम्, काशीगतः, मार्गश्रान्थः, रोगौषधिः, वृक्षपतितः, पदच्युतः, पथभ्रष्टः, सेनापतिः, मुनिश्रेष्ठः, कार्यकुशलः, पापमग्नः, अधर्मः, अच्युतः, महाराजः, परमेश्वरः, महात्मा, कमलचरणम्, चन्द्रमुखम्, सप्तसिन्धुः, त्रिभुवनम्, लोभोपहतचेतसः, जितेन्द्रियः, दिगम्बरम्, लम्बोदरम्, पञ्चाननम्, भेरीपटहम्, देवमन्दिरम्, अहर्दिवम्, अहोरात्रम्, पितरौ, कण्ठेकालः, अन्तेवासी, इत्यादि ।

सप्तमः पाठः

अथ तद्धित प्रकरणम् (Nominal Derivative)

तद्धित प्रत्यय अनन्त है परन्तु संज्ञा सर्वनाम विशेषण आदि में जिन प्रत्ययों को जोड़ कर कुछ विचित्र अर्थ निकाला जाता हैं, उन प्रत्ययों को तद्धित कहते हैं । जैसे – दितेः अपत्यम् = दैत्यः दिति के पुत्र का बोध होता है । यहाँ 'एय' प्रत्यय हुआ है । अतः एय प्रत्यय को तद्धित कहते हैं ।

अदितेरपत्यम् = आदित्यः ।
मनोरपत्यम् = मानवः, मानुषः, मनुष्यः ।

सुमित्रायाः अपत्यम् = सौमित्रः = लक्ष्मणः ।
गुणः अस्य अस्ति = गुणवान् (जिसके पास गुण है)
धनम् अस्य अस्ति = धनवान् । धन जिसके पास है ।
लक्ष्मीः यस्य अस्ति = लक्ष्मीवान् । ज्ञानमस्ति यस्य = ज्ञानवान् ।
धीरस्ति यस्य = धीमान् । यशोऽस्ति यस्याः = सा यशस्विनी ।
एतत्परिमाणमस्य = एतावान् । कियत्परिमाणमस्य = कियान् ।
अन्यस्मिन् काले = अन्यदा । कस्मिन् काले = कदा ।
एकस्मिन् काले = एकदा । येन प्रकारेण = यथा ।
केन प्रकारेण = कथम् । राजा इव = राजवत् ।
ब्राह्मणः इव = ब्राह्मणवत् । काष्टेन निर्मितं = काष्टमयम् ।
मृदो विकारः = मृण्मयम् । इत्यादि जान लेना ।

सूचना—तद्धित प्रत्ययों के योग से जो शब्द बनते हैं । वे प्रायः विशेषण होते हैं ।

विशेष्य पद		रचित विशेषण पद	
सुखम्	= Happiness	सुखी	= Happy सुखी मनुष्य
दुःखम्	= Pain	दुःखी	= Painful दुखी पुरुष
ज्ञानम्	= Wisdom	ज्ञानवान्	= Wise ज्ञानवान् मनुष्य
बुद्धिः	= Intelligence	बुद्धिमान्	= Intelligent बुद्धिमान् पुरुष
यशम्	= Glory	यशस्वी	= Glorious प्रतापी पुरुष
निशा	= Night	नैशः	= Nocturnal रात्रि संबन्धी अन्धकार ।
मनस्	= Mind	मानसिकः	= Mental मानसिक सबन्धी उद्वेग ।
मास	= Month	मासिकः	= Monthly मासिक पत्रिका
हिन्दी	= पुँलिङ्ग	हिन्दी	स्त्री लिङ्ग
मेरा	= मदीयः my mine	मेरी	= मदीया my, mine
,,	= मामकः my, mine	,,	= मामिका my, mine
,,	= मामकीनः my, mine	,,	= मामकीना my, mine
हमारा	= अस्मदीयः our, ours	हमारी	= अस्मदीया our, ours
,,	= अस्माकः our, ours	,,	= आस्माकी our, ours
,,	= आस्माकीनः our, ours	,,	= आस्माकीना our, ours
तेरा	= त्वदीयः Thy, Thine	तेरी	= त्वदीया Thy, Thine
,,	= तावकः Thy, Thine	,,	= तावकी Thy, Thin

,,	=तावकीनः Thy, Thine	,,	=तावकीना Thy Thine
तुम्हारा	=युष्मदीयः your, yours	तुम्हारी	=युष्मदीया your, yours
,,	=यौष्माकः your, yours	,,	=यौष्माकी your, yours
,,	=यौष्माकीणः your, yours	,,	=यौष्माकीणा your, yours
आपका	=भवदीयः your, yours	आपकी	=भवदीया your, yours
,,	=भावत्कः your, yours	,,	=भावत्की your, yours
उसका	=तदीयः His	उसकी	=तदीया Her, hers
चाचा, ताऊ	=पितृव्यः uncle	चाची, ताई	=पितृव्या Aunt
दादा	=पितामहः Grand father	दादी	=पितामही Grand mother
पोता, नाती	=पौत्रः Grand son	नतिनी	=पौत्री Grand child
{ धेवता, नाती	=दौहित्र. Grand child	{ धेवती, नतिनी	=दौहित्री Grand daughter.
भतीजा	=भ्रात्रीयः Nephew	भतीजी	=भ्रात्रीया Niece
भानजा	=भागिनेयः Nephew	भानजी	=भागिनेयी Niece
मामा	=मातुलः Meternal uncle	मामी	=मातुलानी meternal Aunt

इत्यादि और भी तद्धितान्त शब्द जान लेने चाहिये।

कुछ भाव वाचक तद्धितान्त शब्द निम्नलिखित हैं।

संस्कृत		हिन्दी	अंग्रेजी
स्वास्थ्यम्	=	तन्दुरुस्ती	Good health
बार्धक्यम्	=	बुढ़ापा	Old age
शिशुत्वम्	=	बचपन	Childhood
दैन्यम्	=	दीनता, गरीबी	Poverty
सत्यता	=	सचाई, ईमानदारी	Honesty
शौर्यम्	=	शूरत्वम्=वीरता	Bravery
उष्णता	=	गर्मी	Heat
शैत्यम्	=	ठंडक	Chill, Cold

सूचना :—विशेष्य पद को तद्धितान्त विशेषण बनाकर अनुवाद करने से वाक्य संक्षिप्त और श्रुति मधुर वाक्य (Sentences) होते हैं : —

जैसे :—भवदीया (भवतः) बुद्धिः कदापि प्रतिहता (व्यग्री) न भवति। आपकी बुद्धि कभी भी नहीं घबड़ाती है।

Your intelligence is never baffled.

अस्मदीया (अस्माकं) बुद्धिरधिका न प्रसरति=हमारी बुद्धि अधिक नहीं फैलती है। Our intelligence does not go further.

त्वदीयानि (तव) पुस्तकानि सुन्दराणि सन्ति । तुम्हारी पुस्तकें अच्छी हैं। Your books are beautiful.

भगवान् खलु अस्मदीयः पिताऽस्ति । भगवान् ही हमारे पिता हैं। The God is our father.

सूचना :—जहाँ समान, तथा सदृश, तुल्य वाचक शब्द हों वहाँ पर "युष्मद्, अस्मद्" के आगे "दृश" शब्द के रूप जोड़े जाते हैं। जैसे :—

स युष्मादृशो (युष्मादृक्) बुद्धिमानस्ति=वह तुम्हारे समान बुद्धिमान् है। He is as intelligent as you (are).

भवादृशो (भवादृक्) बालकोऽस्ति=आपके समान बालक है। Boy is like you.

अस्मादृशो (अस्मादृक्)ऽन्यः कश्चिद्बालकः समायातः। हमारे जैसा एक कोई अन्य बालक आया है। Another boy like us has come.

स हि अस्मादृशोऽस्ति=वह हमारे ही जैसा है। He is like us.

स खलु मादृशो विद्यते=वह मेरे जैसा है। He is like me.

स त्वादृशो (त्वादृक्) धनवानस्ति=वह तुम्हारे जितना धनवान् है। He is as rich as you are.

हिन्दी में अनुवाद कीजिए :—

(१) विद्वत्त्वं च नृपत्वं च नैव तुल्यं कदाचन ।
(२) कवीनां वाक्षु माधुर्यमस्ति ।.
(३) मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत संजय ?
(४) कुरुवृद्धः पितामहः प्रतापवानासीत् ।
(५) द्रौपदो द्रौपदेयाश्च सर्वशः पृथिवी पते ।
सौभद्रश्च महाबाहुः शंखान्दध्मुः पृथक् पृथक् ।

संस्कृत में अनुवाद कीजियेः—

(१) तुम्हारे जैसे तो हमारे नाती पोते हैं। (२) मेरा भतीजा क्या आपके घर है ? (३) मेरा पोता अपने चाचा के पास रहता है। (४) यह चीज तुम्हारी है। (५) सुमित्रा का पुत्र इतना पराक्रमी था कि उसने मेघनाद को अकेले ही मार डाला। (६) कौरवों में बड़े प्रतापी वृद्ध पितामह भीष्म थे।

अष्टमः पाठः

स्त्री प्रत्यय

द्रष्टव्य :—पुंलिङ्ग से स्त्री प्रत्यय के कुछ शब्द निम्नलिखित हैं। इसमें अकारान्त शब्दों से कहीं पर "आ", और कहीं "ई" लगाया जाता है। जैसे :—सेवक+आ=सेविका। मानुष+ई=मानुषी। इत्यादि जान लेना चाहिये।

पुँलिङ्ग के रूप,	स्त्री प्रत्यय के रूप,	पुँलिङ्ग के रूप,	स्त्री प्रत्यय के रूप
सेवकः	=सेविका	नायकः	=नायिका
मानुषः	=मानुषी	ब्राह्मणः	=ब्राह्मणी
क्षत्रियः	=क्षत्रियाणी	शूद्रः	=शूद्री
नर्तकः	=नर्तकी	नटः	=नटी
कोकिलः	=कोकिला	मूषिकः	=मूषिका
सहचरः	=सहचरी	सुन्दरः	=सुन्दरी
अध्यापकः	=अध्यापिका	कुमारः	=कुमारी
पति	=पत्नी	नरः	=नारी
नदः	=नदी	इन्द्रः	=इन्द्राणी
सखा	=सखी	युवा	=युवती
भवान्	=भवती	श्रीमान्	=श्रीमती
तरुणः	=तरुणी	मातुलः	=मातुलानी
चातुर्यम्	=चातुरी	विद्वस् (विद्वान्)	विदुषी
ब्रह्मचारी	=ब्रह्मचारिणी	प्रियंवादी	=प्रियंवादिनी
पुत्रः	=पुत्री	दौहित्रः	=दौहित्री
पौत्रः	=पौत्री	भ्रात्रियः	=भ्रात्रिया

हिन्दी में अनुवाद कीजिये :—

(१) इयं विशालापि च भूरिशाला विराजते संस्कृत पाठशाला। (२) अस्यां पाठशालायां कति अध्यापिकाः पाठयान्ति ? (३) इयं चन्द्रमुखी कन्या चपला वर्तते।

संस्कृत में अनुवाद करिये :—

(१) चुहिया कपड़ों को काटती है। (२) सब नक्षत्रों के बीच में रोहिणी नक्षत्र रहता है। (३) यह स्त्री मुसलमानी मालूम पड़ती है।

शास्त्रान्तरे प्रविष्टानां बालानां चोपकारकः रामनारायणेनायंकृतः तत्त्व प्रकाशकः
